राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक--पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेषत राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाड्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या सशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद,
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-सस्थान, होशियारपुर, निवृत्त सम्मान्य नियामक–
(आनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

सम्पादक

श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए.

उप सञ्चालक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,

जोधपुर.

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७ | प्रथमावृत्ति ५००

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२

खिस्ताब्द १९६० | मूल्य १२ ००

मुद्रक—श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर।

RAJASTHAN PURATANA GRANTHMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular

*

GENERAL EDITOR

JINA VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, Vishveshvrananda Vaidic Research Institute, Hosiyarpur, (Punjab), Gujrat Sahitya Sabha, Ahemdabad, Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay, General Editor, Gujarat Puratattva Mandir Granthavali, Bharatiya Vidya Series, Sinhghi Jain Series etc etc

* *

NO 51

A CLASSIFIED LIST OF MANUSCRIPTS

IN THE

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE JODHPUR

Pt 2

* * *

Published
Under the Orders of the Government of Rajasthan
By

Director, Rajasthana Prachya Vidya Pratisthana
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

VS 2017] *All Rights Reserved* [*1960 AD*

सञ्चालकीय वक्तव्य

प्रस्तुत सूची राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुरमे अप्रैल सन् १९५६ ई० से मार्च सन् १९५८ ई० तक सग्रहीत ३८५५ हस्तलिखित ग्रन्थोंकी है। मार्च सन् १९५६ तक सगृहीत ४००० ग्रन्थोकी सूची भाग १ के रूपमे प्रकाशित हो चुकी है। साथ ही मार्च सन् १९५८ तक सगृहीत राजस्थानी ग्रन्थोकी सूची भी राजस्थानी ग्रन्थ सूची, भाग १, के नामसे पृथक प्रकाशित की जा चुकी है।

ग्रन्थोका वर्गीकरण और विषयनिर्द्धारण ये दोनो ही कठिन एव समय-सापेक्ष्य कार्य है। हमारा विचार था कि राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानमे सगृहीत ग्रन्थोका वर्गीकृत और सविवरण सूचीपत्र तैयार कराकर विज्ञजनोके सामने लाया जाय, किन्तु ग्रन्थोकी सख्या दिनो-दिन बढती रही और आगन्तुक विद्वानो एव अनुसधित्सुओ का, सामग्रीकी उपयोगिताकी दृष्टिमे रखते हुए, यह अनुरोध रहा कि सगृहीत सामग्रीका कोई न कोई रूप जल्दी से जल्दी सामने आ जाना चाहिए। एतदर्थ यथासाध्य उपकरणोको जुटा कर विभागीय कर्मचारियो द्वारा थोडे से थोडे समयमे मोटे तौर पर वर्गीकरण एव विपय-विभाजन कराकर ये सूचियाँ वार्षिक सूचिकाके रूपमे प्रकाशित की जा रही है। आगे विवरणादि तैयार करनेका कार्यक्रम भी हमारे सामने है और राजस्थानी सचित्र ग्रन्थोके सूचीपत्रका काम इस दिशामे श्रीगणेश करनेके लिए हाथ मे लिया गया है। इस प्रकार हमारे सूची-प्रकाशन कार्यक्रममे एक तो सगृहीत-ग्रन्थोकी सूची और दूसरी विवरणात्मक सूचियाँ यथावसर निकलती रहेगी।

प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची, भाग २, का स्वरूप यद्यपि प्रथम भागके बहुत कुछ अनु-रूप रखा गया है, फिर भी इसमे आवश्यकतानुसार कुछ परिवर्तन किये गये है। यथा भाषाका कोष्ठक कम करके हिन्दी एव राजस्थानी ग्रन्थोके पृथक् विषय बना दिये गये हैं जिससे सुविधानुसार इन दोनो भाषाओके ग्रन्थोकी जानकारी मिल सके। विशेष उल्लेखनीय के कोष्ठकमे रचनाकाल, लिपिस्थान, लिपिकर्त्ता, ग्रन्थदशा और विषय-स्पष्टीकरणका सक्षिप्त ससूचन किया गया है। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट १ मे कुछ विशिष्ट ग्रन्थोके आद्यन्त अश अविकल रूपमे उद्धृत कर दिये गये हैं। साथ ही ग्रन्थके विषयमे यदि कोई विशेप सूचना प्राप्त हुई है तो वह भी समाविष्ट कर दी गई है। तात्पर्य यह है कि ग्रन्थके स्वरूप एव दशाको समझनेके लिए सक्षिप्त रूपमे जानकारी देनेका यथाशक्य प्रयास किया गया है। परिशिष्ट २ मे ग्रन्थकर्त्ता-नामानुक्रमणिका दी

गई है। स्पष्ट है कि इन दोनो ही सूचियोमे बहुतसे ग्रन्थ एव ग्रन्थकारोके नाम अद्यावधि अन्यान्य सस्थाओमे प्रकाशित ग्रन्थसूचियोमे, विशेषत राजस्थानी ग्रन्थ-सूचियोमे नही पाये जाते है, जो अद्यतन अनुसधित्सु विद्वानोंके लिए विशेष आवश्यक एव उपयोगी हैं।

प्रतिष्ठानकी वर्द्धमान प्रगतिको देखते हुए यह भी उचित समझा गया है कि राज्यमे ततत् स्थानो पर उपलब्ध हस्तलिखित ग्रन्थ-सग्रहोको भी इसी विभागके आयत कर दिया जावे। तदनुसार इन्द्रगढ पोथीखानेके २०६ ग्रन्थ प्रतिष्ठानमे प्राप्त हुए हैं जिनकी सूची इसी भागके परिशिष्ट ३ मे प्रकाशित की जा रही है। भविष्यमे भी ऐसे प्राप्त होने वाले सरकारी एव व्यक्तिगत सग्रहोकी सूचियाँ प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित की जावेगी।

इस सूचीमे समाविष्ट ग्रन्थोके आक्रमाक विशिष्ट परिचयान्त परिचय-पत्रक सन् १९५८ के नवम्बर मासमे ही श्री गोपालनारायण बहुरा एव श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी द्वारा भरे जा चुके थे, परन्तु दिसम्बर १९५८ मे प्रतिष्ठानका स्थानान्तरण जोधपुरमे हो गया। यहाँ आकर व्यवस्था आदि करने मे ५-६ मासका समय लगा। तदनतर पुन जाच आदि करके प्रेस कापियाँ तैयार की गई और मुद्रण चालू करवाया गया। इस पुस्तक का सम्पादन हमारे निर्देशनमे विभाग के उप सचालक श्री गोपालनारायण बहुराने किया तथा परिचय पत्रकाकन, प्रेस कॉपी लेखन, नामानुक्रमणिका और परिशिष्टादि सकलन और प्रूफ-सशोधनादि कार्यमे सर्व श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, लक्ष्मीनारायण गोस्वामी, रमानन्द सारस्वत, स्वर्गीय विश्वेश्वरदत्त द्विवेदी प्रभृतिने भी यथेष्ट सहयोग दिया।

आशा है, इस प्रकाशनसे विद्वज्जन एव पुरासाहित्यानुसधित्सु लाभान्वित होगे।

राज० प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर
दि० २९-७-६०

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

विषय - तालिका





क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७५८	अग्निहोत्रपञ्चाग्नि स्तोत्र		१८२७	११	लि. क –वैष्णव नृसिंहदास गढ बधणोर मध्ये
२	४५०३(१)	अपराजिता विद्या (रुद्रगीता)	विष्णुधर्मोत्तर तृतीयकाण्डगत	१८वीं श	१–६	
३	७६९८	अपराधनिरसन स्तोत्र	पद्मपुराणोक्त	१८९०	२	लि क.–रामनारायण
४	६६५२	अपराधसुन्दरस्तोत्र सटीक	शङ्कराचार्य (टी रामानन्दभिक्षु रामेन्द्रवनशिष्य)	१७६७	७	लि. क –परमानन्द
५	४४६७	अपामार्जन स्तोत्र	विष्णुरहस्योक्त (दालभ्य-पुलस्त्यसवाद)	१८०२	८	लि. क.–दवे सदाशिव
६	४४७७	,, ,,	विष्णुधर्मोत्तरे विष्णुरहस्योक्त	१९वीं श.	१०	
७	५४३८(६)	अष्टाविंशति नाम	भगवदुक्त	१८९०	६६–६७	
८	४२३४	अहल्यास्तोत्र	अध्यात्मरामायणगत	१८वीं श.	६	*
९	४२५४	अज्ञानविमोचनस्तोत्र	नन्दिपुराणगत	१९वीं श	३	*
१०	४३७०	आदित्यहृदयस्तोत्र (द्वादशावरण)	भविष्योत्तरपुराणगत	१८२०	११	लि. क –गगाधर
११	४५१२	आदित्यहृदयस्तोत्र	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१९वीं श.	२५	
१२	५०५२	,,	,,	१८९५	१६	लि क.–जोशी पन्नालाल सवाई जयपुरमध्ये
१३	५०५७	,,	,,	१९२३	१८	
१४	६७८५	आनन्दलहरी	शङ्कराचार्य	१९०८	२	
१५	४५१३	आपदुद्धारवटुकभैरवकवच स्तोत्र (अष्टोत्तरशतनाम)	रुद्रयामले भैरवतन्त्रोक्त	१८०३	७	लि. क –दवे सदाशिव
१६	६०७४	आलवन्दारस्तोत्र सटीक त्रिपाठ	यामुनाचार्य	१८२८	१३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	६२४३	आलवन्दारस्तोत्र सटीक	यामुनाचार्य	१८२६	१८	प्रथम पत्र अप्राप्त
१८	६५४७	,, ,,	,,	१९वीं श	१४	
१९	७५८२	,, ,,	,,	१८७८	१८	
२०	६३७९	इन्द्राक्षी स्तोत्र		१८वीं श	५	
२१	४९०४	(१) एकश्लोकी भागवत			६६ से ६९	
		(२) महाभारत				
		(३) दुर्गा				
		(४) सप्तश्लोकी गीता				
२२	५६४७	कर्पूरस्तवराज सटीक	महाकालसंहितोक्त	१९वीं श	१२	
२३	५४४८	कार्त्तवीर्यार्जुन कवच	अमरतन्त्रोक्त	,,	३८	
२४	५७०३	कालिका-कवच	तन्त्रोक्त	१९१२	२	लि क –व्रजवासी, अलवर
२५	५७६०	कालिकाखड्गमाला स्तोत्र	महाकालसंहितान्तर्गत	१९वीं श	३	
२६	५८१७	कालीसहस्रनाम	,,	१८वीं श.	३०	
२७	५१९२	काशीमङ्गल स्तोत्र	श्रीशंकराचार्य	१९वीं श	८	
२८	६२८०(२)	कृष्णकरुणामृत	लीलाशुक	१९०९	७-१९	लि क पुजारी हरदेवदास,गोविंदगढ
२९	७६१९	कृष्णस्तवराज		१९वीं श	१०	
३०	४२३६	कौसल्यास्तोत्र	अध्यात्मरामायणान्तर्गत	१८वीं श	४	
३१	४२३१	गंगालहरी	जगन्नाथ भट्ट	१९वीं श.	२७	
३२	५४२०(२)	गंगालहरी (सटीक)	जगन्नाथ, टी बलदेव	१९वीं श	४८–६५	हिन्दी टीका सहित
३३	५५६९	गंगालहरी बालबोधिनी टीकासहित	टी दलपतिराम	,,	३२	
३४	६०५८	गंगालहरी टीका	टी. चतुर्भुज मिश्र	१९०९	५८	लि क –साल्ग्राम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	४२३७	गगास्तोत्र	नारायण भट्ट	१८वीं श.	४	
३६	६६३६	,,	ब्रह्मवैवर्त्तपुराणगत	१८८१	५	
३७	४२६६	गजेन्द्रमोक्ष	महाभारतोक्त	१८वीं श.	२९	
३८	५२८४	,,	,,	१९वीं श.	१३	
३९	४५०६	,,	,	१८३९	१६	
४०	४४५२(३८)	गणपतिस्तोत्र		१८वीं श.	४१	लि. क.–प० प्रीतसौभाग्य
४१	४९७०	गायत्रीसहस्रनाम	रुद्रयामलोक्त	१८१२	११	लि.क.-महात्मा नाथूराम शिवपुरीमध्ये
४२	५४५९	गीता पञ्चरत्न सचित्र		१८वीं श.	२१९	चित्र सख्या ५
४३	५५०८	,,		१८३०	३६०	
४४	५८१८	,,		१८७४	१९२	
४५	७१७४	,, सचित्र		१८वीं श.	गुटका	चित्र सख्या ५१
४६	४५०८	गुरुगीता	स्कन्दपुराणोत्तरखण्डोक्त	१८१६	५	लि.क –भीकमजी
४७	७६२९	गुरुपादुकास्मृति		१९वीं श.	३	
४८	७१४८	गुरुस्मरणाष्टक		,,	४०	
४९	५३१६	गोपालविंशति	कविताकिकसिंह वेंकटनाथ शिष्य गोपाल	१८८३	२	गोपालविद्यार्थिना लिखितं नेतरामजी कृते
५०	५२०५(१४)	गोपिकागीत (रासपचाध्यायी)	भागवतोक्त	१८वीं श.	४९–६४	
५१	४२६१	गोपीनाथाष्टक	विश्वनाथ चक्रवर्ती	१९४७	२	
५२	४५०५	गोविन्दस्तोत्र	श्रीशकराचार्य	१८४३	३	
५३	७७८९	गोविन्दाष्टकम्	,,	१७५१	२	
५४	५०८३	चण्डीपाठ (सचित्र)	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१७८६	६१	आद्य चार पत्र अप्राप्त, लि क –धवल, चित्र स. ४६

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५५	५२०८	चण्डीपाठ (सचित्र)	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१८वीं श.	९८	चित्र सख्या १०
५६	५२०५(१२)	चतु श्लोकी भागवत		,,	४७–४८	
५७	४४५२(५८)	चतु षष्टियोगिनीस्तव		,,	११६वा	
५८	६३८१	जानकीनवरत्नस्तोत्र	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१९वीं श	६	लि क.–भरतदास वैष्णव,भरतपुर
५९	७७०३	जानकीस्तवराज	अगस्त्यसहितान्तर्गत	,,	६	लि क.–रामनारायण
६०	६६९७	जानकीसहस्रनामस्तोत्र	पद्मपुराणोक्त	१७६०	१८	लि क.–भगवद्दास
६१	७०६५	जानकीसहस्रनाम		२०वीं श	७	
६२	४९९९	ताराकवच	भैरवीतन्त्रोक्त	१९वीं श	४	
६३	४२४९	तारा–श्रीरामसवाद	रामायणोक्त	१८वीं श	५	वेदान्तपरक
६४	६६३४	द्वादशस्तोत्राणि	आनन्दतीर्थ	१९वीं श	११	
६५	७७०५	दशहरास्तोत्र	स्कन्दपुराणे काशीखडोक्त	१७४२	४	लि क –चतुर्भु ज व्यास,अम्बावती
६६	७६१२	दशावतारस्तोत्र		१९वीं श	१	लि क –केशवदास, गढवदनोर
६७	६०५२	दक्षिणामूर्तिस्तोत्र	शकराचार्य	१८वीं श	४	
६८	४५४४	,,	,,	१७६४	१२	
६९	५५०४	दुर्गाकीलकस्तोत्र		१८८९	१२	लि.क –हनुमदुपाध्याय
७०	४२०७	दुर्गासप्तशती		१९वीं श	३५	
७१	४४७९	,,		१७७३	५९	प्रथम पत्र अप्राप्त
७२	५३२८	,,		१८३१	५६	लि क.–रघुनाथजोशी, स जयपुर
७३	५४६३	,,		१८८९	५८	लि.क.–हनुमदुपाध्याय
७४	६९२७	,,		१७वीं श	८४	भोजपत्र पर लिखित
७५	७१५७	,,		१८वीं श.	१६१	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६७	५०६२	देवीचरित्र (दुर्गोपाख्यान, त्रयोदशाध्यायान्त)	रुद्रयामलोत्तरखंडोक्त	१६वीं श	५१	पत्र १ व ३२वां अप्राप्त तथा १५वें पत्रमें कुछ सन्दर्भ त्रुटित
७७	५५२०	देवीमहिम्नस्तोत्र	दुर्वासःप्रोक्त	१६१७	२२	लि.क.—व्यास मुकुन्ददास, जोधनगर
७८	४३११	देवीमाहात्म्य	वेदव्यास	१८५६	१८	
७६	४२६०	नदाष्टक, कृष्णाष्टक	श्रीमद्गोस्वामी (विठ्ठल?)	१८वीं श	४	
८०	७७५७(६)	नवश्लोकीस्तोत्र	शकराचार्य	१८५०	२२८—२३०	
८१	४१७२	नारायणकवच	भागवतोक्त	१८वीं श	८	
८२	४४६८	,,	,,	१६वीं श	४	
८३	५४३८(७)	,,	,,	१८६०	६७—७३	
८४	४२३३	नारायणाष्टक		१८वीं श.	३	
८५	६४५०	नारायणहृदयस्तोत्र		१६१७	१—४	
८६	४२६७	नृसिंहकवच		१८वीं श.	४	प्रथम पत्र सचित्र
८७	४१७५	पचमुखी हनुमत्कवच		१६वीं श	१३	
८८	७६५३	पचायुधस्तोत्र	ब्रह्मांडपुराणोक्त	१८३७	२	
८६	४१७०	पद्मपुष्पाञ्जलि	कवि रामकृष्ण	१८७८	१०	
६०	६८५८	,,	,,	१८वीं श	८	आद्यपत्र चित्रित
६१	४८८१	(१) पवनविजयाशनिस्तोत्र (२) रामनवमीसकल्प		१६वीं श	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त
६२	४१७८	पीयूषलहरी	जगन्नाथ पंडितराज	१६१०	१४	लि क.—गोटाराम जोसी
६३	४१७६	पीयूषलहरी	,,	१६१०	१३	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५५	५२०८	चण्डीपाठ (सचित्र)	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१८वीं श.	६८	चित्र सख्या १०
५६	५२०५(१२)	चतु श्लोकी भागवत		,,	४७–४८	
५७	४४५२(५८)	चतु षष्टियोगिनीस्तव		,,	११६वा	
५८	६३८१	जानकीनवरत्नस्तोत्र	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१९वीं श	६	लि क –भरतदास वैष्णव,भरतपुर
५९	७७०३	जानकीस्तवराज	अगस्त्यसहितान्तर्गत	,,	६	लि क.–रामनारायण
६०	६६६७	जानकीसहस्रनामस्तोत्र	पद्मपुराणोक्त	१७६०	१८	लि क –भगवद्दास
६१	७०६५	जानकीसहस्रनाम		२०वीं श	७	
६२	४९९९	ताराकवच	भैरवीतन्त्रोक्त	१९वीं श	४	
६३	४२४९	तारा–श्रीरामसवाद	रामायणोक्त	१८वीं श	५	वेदान्तपरक
६४	६६३४	द्वादशस्तोत्राणि	आनन्दतीर्थ	१९वीं श	११	
६५	७७०५	दशहरास्तोत्र	स्कन्दपुराणे काशीखडोक्त	१७४२	४	लि क –चतुर्भु ज व्यास,अम्बावती
६६	७६१२	दशावतारस्तोत्र		१९वीं श	१	लि क –केशवदास, गढवदनोर
६७	६०५२	दक्षिणामूर्तिस्तोत्र	शकराचार्य	१८वीं श	४	
६८	४५४४	,,	,,	१७६४	१२	
६९	५५०४	दुर्गाकीलकस्तोत्र		१८८९	१२	लि क –हनुमदुपाध्याय
७०	४२०७	दुर्गासप्तशती		१९वीं श	३५	
७१	४४७९	,,		१७७३	५९	प्रथम पत्र अप्राप्त
७२	५३२८	,,		१८३१	५६	लि क.–रघुनाथजोशी, स जयपुर
७३	५४६३	,,		१८८९	५८	लि क –हनुमदुपाध्याय
७४	६६२७	,,		१७वीं श	८४	भोजपत्र पर लिखित
७५	७१५७	,,		१८वीं श.	१६१	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६७	५०६२	देवीचरित्र (दुर्गोपाख्यान, त्रयोदशाध्यायान्त)	रुद्रयामलोत्तारखंडोक्त	१९वीं श	५१	पत्र १ व ३२वां अप्राप्त तथा १५वें पत्रमें कुछ सन्दर्भ त्रुटित
७७	५५२०	देवीमहिम्नस्तोत्र	दुर्वासःप्रोक्त	१९१७	२२	लि.क.—व्यास मुकुन्ददास, जोधनगर
७८	४३११	देवीमाहात्म्य	वेदव्यास	१८५६	१८	
७९	४२६०	नदाष्टक, कृष्णाष्टक	श्रीमद्गोस्वामी (विठ्ठल?)	१८वीं श	४	
८०	७७५७(९)	नवश्लोकीस्तोत्र	शकराचार्य	१८५०	२२८—२३०	
८१	४१७२	नारायणकवच	भागवतोक्त	१८वीं श	८	
८२	४४६८	,,	,,	१९वीं श	४	
८३	५४३८(७)	,,	,,	१८९०	६७—७३	
८४	४२३३	नारायणाष्टक		१८वीं श.	३	
८५	६४५०	नारायणहृदयस्तोत्र		१९१७	१—४	
८६	४२६७	नृसिंहकवच		१८वीं श	४	प्रथम पत्र सचित्र
८७	४१७५	पचमुखी हनुमत्कवच		१९वीं श	१३	
८८	७६५३	पचायुधस्तोत्र	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८३७	२	
८९	४१७०	पद्मपुष्पाञ्जलि	कवि रामकृष्ण	१८७८	१०	
९०	६८५८	,,	,,	१८वीं श	८	आद्यपत्र चित्रित
९१	४८८१	(१) पवनविजयाशनिस्तोत्र (२) रामनवमीसकल्प		१९वीं श	१९	प्रथम पत्र अप्राप्त
९२	४१७८	पीयूषलहरी	जगन्नाथ पंडितराज	१९१०	१४	लि क.—गोटाराम जोसी
९३	४१७९	पीयूषलहरी	,,	१९१०	१३	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
९४	४५१०	पीयूष लहरी	जगन्नाथ पण्डितराज	१९१०	११	
९५	५२५६	,,	,,	१८वीं श	२६	
९६	६५८५	ब्रह्मस्तुति (व्याख्यासहित)	श्रीनिवासदास	१८४०	२५	
९७	५२४८	वगलामुखीस्तोत्र		२०वीं श	७	
९८	४१३३	बटुकभैरवकवच		१९वी श	८	
९९	४१३४	बटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्र		,,	३५	
१००	४१५४	भगवती अर्गला कीलकस्तोत्र		,,	३	
१०१	४१९२	भगवती पुष्पाञ्जलि	कवि रामकृष्ण	,,	६	लि क –रामशकर, कुबेरलाल, स्थान–ग्राम मघवासना
१०२	६४२३	,,	,,	१८०७	६	
१०३	७६९४	भवान्यष्टक	शकराचार्य	१७६४	१	लि क –राघव जोशी
१०४	४१२४	(१) भवानी कवच (२) भवानीसहस्रनामस्तोत्र		१८वीं श	२२	
१०५	४२५९	भवानीसहस्रनाम		१८६१	३०	लि क –गगाविष्णु, मलारणा
१०६	५२१३	,		१८वीं श	३०	
१०७	५७९०	भवानीसहस्रनाम एव कवच		१८९८	६	लि क –हरिवल्लभ शर्मा
१०८	५४६७	भावकल्पतरु	मधुर शर्मा	१९वीं श	३४	
१०९	४२४१	भीष्मस्तवराज	महाभारतोक्त	१८वीं श	२२	
११०	५२८५	,	,,	१९वीं श	६	
१११	६९९९	,,	,,	,,	१२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
११२	४५१८	भीष्मस्तोत्र, अनुस्मृति	शान्तिपर्वोक्त	१८३१	१४	
११३	५२०५(१३)	भुजङ्गप्रयाताष्टकम्			४८–४९	
११४	४२७५	भुवनेश्वरीस्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	१६८६	८	
११५	५३८५(६)	मङ्गलाष्टक		१९वीं श		
११६	६६६०	,,	कालिदास	१८९७	५	
११७	७७०१	मधुरकुञ्जविहार्यष्टक		१८वीं श	१	
११८	५२४३	मल्लारिकवचस्तोत्र	ब्रह्माण्डपुराणक्षेत्रखडोक्त	,,	३	
११९	५०५९	महागणपतिकवच	देवीरहस्योक्त	१९वीं श.	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२०	४५१४	महागणपतिस्तोत्र	राघवचैतन्य	१८२६	३	लि क –तिवाडी वखतरामजी
१२१	४५०३(२)	महागणपतिस्तोत्र	शकराचार्य	१८वीं श.	६–८	
१२२	४२१५	महानारायणस्तोत्रचिन्तामणि		१९वीं श	१८	
१२३	५०४६	महालक्ष्मीहृदयस्तोत्र	अथर्वणरहस्योक्त	,,	११	
१२४	६६८२	महासुदर्शनकवच	सुदर्शनसहिता	,,	३	
१२५	५२५०	महिम्नस्तोत्र	श्रीविष्णुकृत	१८३१	६	
१२६	५८७०	,,	पुष्पदन्त	१९वी श	४	
१२७	६६८३	,,	,,	१७६०	११	लिपि स्थान–काशी
१२८	६६९१	,,	,,	१८८६	१०	लि क –नन्दराम
१२९	७४९६	महिम्नस्तोत्रटीका	मधुसूदन सरस्वती	१७९३	४८	आद्य दो पत्र अप्राप्त
१३०	५५६०	महिम्नस्तोत्र सटीक (त्रिपाठ)		१९वीं श	१६	
१३१	६७८४	,,		१९१९		लि क –रामदास कबीरपंथी
१३२	५७८४	महिषमर्दिनीसहस्रनाम	रुद्रयामलतन्त्रोक्त	१८८२	८	लि क –व्रजवासी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३३	६६६८	महिषमर्दिनीसहस्रनाम	विश्वसारोद्धृत	१९वीं श	१२	
१३४	५२७८	यमकाष्टक	पद्मप्रभदेव	२०वीं श	५	
१३५	४२३८	यमुनाष्टकस्तोत्र		१८वीं श	३	
१३६	६७०१	यमुनाष्टकादिस्तोत्र	श्रीवल्लभ-विठ्ठल-हरिराय-रघुनाथ	१९वीं श	५४	(४८ कृतिया)
१३७	६३७६	युगलकिशोर सहस्रनाम	नारदीयपुराण	१८वीं श	१२	
१३८	४१७३	रघुवरसहस्रनामस्तोत्र	ब्रह्मरहस्यगत	१८११	२१	लि क –रामसेवक, चित्रकूट
१३९	६७४९(५)	राधाकवच		१९वीं श	११७–११९	अतमें नवग्रहस्तोत्र आदि हैं
१४०	५४५५(२)	राधाकृष्णशतनामस्तोत्र	तत्रोक्त	,,	११	
१४१	७७००	राधाष्टकस्तोत्र	त्रैलोक्यसम्मोहनतत्रोक्त	१८वीं श	१	
१४२	६२८०(५)	राधास्तवराज	गौतमीयतन्त्रोक्त	१९०९		लि क –पुजारी हरदेवदास
१४३	५४५४	राधासहस्रनामस्तोत्र	रुद्रयामलोक्त	१८१८	३६	
१४४	५५१८	,,	,,	१९वीं श	२५	
१४५	५२४७	राधिकाष्टकस्तोत्र		,	२	
१४६	७७०२	राधिकास्तोत्र	वृहद्ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१७६९	१	
१४७	६२८०(७)	राधिकाष्टोत्तरशतनाम		१९०९	२	लि क –पुजारी हरदेवदास
१४८	५२८३	रामचन्द्रस्तवराज	नारदप्रोक्त	१९वीं श	८	
१४९	७७१८	रामचन्द्र स्तुति आदि		,,	६	
१५०	६३६९	राम महिम्न स्तोत्रम्	विजयरामाचार्य	१९०१	११	
१५१	४३३२	रामरक्षाकवच	विश्वामित्र ऋषि	१८वीं श	९	
१५२	७६४७	रामरक्षाविवरणकारिका	नीलकण्ठ	१९वीं श	३	
१५३	५०५३	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र	,,	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५४	६६७९	(१) रामवज्रकवच (२) विष्णुहृदयस्तोत्र	हिरण्यगर्भसंहितोक्त	१९वीं श	८	
१५५	६६८०	रामशरणस्तोत्र	बृहद् ब्रह्मसंहितोक्त	१८वीं श.	४	
१५६	६६३०	रामस्तव		१९वीं श	३	
१५७	४२४७	रामस्तवराज	सनत्कुमारसंहितोक्त	१८वीं श	१८	
१५८	५२३५	,,	,,	१७५९	७	
१५९	५४३८(१)	,,	,,	१८९०	१-१६	
१६०	६६९५	,,	,,	१८६०	६	लि.क.-जयजयराम
१६१	६७४९(४)	,,	,,	१९वीं श	१०५-११६	
१६२	५२३३	,,	,,	१९०९	३८	किला अमरकोट मालवामें लिखित
१६३	४२४८	रामहृदयस्तोत्र		१८वीं श.	९	
१६४	४५०४	,,	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१९वीं श	५	
१६५	७७५७(८)	,,	अध्यात्मरामायणोक्त	१८५०	२२२-२२७	
१६६	६६३६	रामानुजाष्टोत्तरशतनाम	महात्मा आड् ध्रिपूर्ण	१८वीं श	२	
१६७	७६१६	रामाष्टक, रामस्तोत्र	महेश्वर भट्ट	१९वीं श.	१	
१६८	५७१५	रुचिस्तव	मार्कण्डेयपुराणोक्त	,,	५	
१६९	७७९६	रूपचिन्तामणिस्तोत्र	चक्रवर्ती	१८९०	४	लि.क -रामनारायण
१७०	६२८०(६)	,,	,,	१९०९	२५-२८	लि.क -पुजारी हरदेवदास
१७१	५१९४	ललितादिव्यनामत्रिशती	ललितोपाख्यानगत	१९वीं श.	२०	
१७२	५८०७	ललितास्तव	दुर्वासा	१९वीं श	२६	स्तव २११ आर्याओमे है।
१७३	७६५९	लक्ष्मीपञ्जरस्तोत्र	मन्त्ररहस्योत्तरखण्डोक्त	१९१३	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७४	६६८९	लक्ष्मीस्तव	वेंकटनाथ वेदान्ताचार्य	१९वीं श	३	
१७५	६६८८	लक्ष्मीस्तोत्र		१९०१	४	
१७६	५५१६	लक्ष्मीस्तोत्र, नारायणहृदय	अथर्वणरहस्योक्त	१९२६	१२	
१७७	५३१६	लक्ष्मीसहस्रनाम	ब्रह्माण्डपुराणगत	१८२८	१०	७वा पत्र अप्राप्त
१७८	६४४०(२)	लक्ष्मीहृदयस्तोत्र	अथर्वणरहस्योक्त	१९१७	५-१७	
१७९	७७१३	व्रजविहार	श्रीधर स्वामी	२०वीं श	२	
१८०	५३३६	वरदगुरुपचाशत	नारायण	२०वीं श	६	लि क -देवकृष्ण, र का १९०१
१८१	५२३४(२)	(१) विंशतिनामस्तोत्र		१९११	१०-१४	
		(२) चतु श्लोकी भागवत				
		(३) एकश्लोकी रामायण				
		(४) सप्तश्लोकी गीता				
		(५) विहारी सतसई के २३ दोहे				
१८२	५५११	विलोम सप्तशती	मार्कण्डेयपुराण	१८वीं श	३२	
१८३	७७२१(१६)	विष्णुपञ्जरस्तोत्र		१८४४	२०३-२०५	लि क -व्यास केशा
१८४	७७५०(२)	,,	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८६०	२१-२४	लिपिकर्त्री-किशनी, लिपि स्थान-खारला
१८५	४२५१	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र	महाभारतोक्त	१८वीं श.	३२	
१८६	४४७८	विष्णुसहस्रनाम (सार्थ)	पद्मपुराणोक्त	१७वीं श	५३	टीका हिन्दीमे
१८७	५२८२	,,	महाभारतोक्त	१९वीं श	१३	
१८८	५४३८(२)	,,	,,	१८९०	१६-४०	
१८९	५४६०	,, (गीतापञ्चरत्न)		१८८२	३०१	चित्र सख्या ३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९०	६६३५	विष्णुसहस्रनाम	महाभारतोक्त	१७वीं श.	११	
१९१	६३७५	,,	,,	१७८२	१७	
१९२	४५१५	,,	,,	१८वीं श.	१६	
१९३	६८६४	विषापहारस्तोत्र व्याख्या	धनञ्जयसूरि	१९वीं श.	१०	लि.क –पण्डित हरिपाणि
१९४	५२०५(१७)	विक्षिप्त ? (विज्ञप्तिस्तोत्र)	विट्ठलेश दीक्षित	१८वी श	८६–८८	
१९५	५१८३	वृन्दावनशतकम्	प्रबोधानन्द सरस्वती	,,	२०	
१९६	५४६९	,,	,,	१८३७	११	
१९७	६४९८	वेदस्तव सटीक	विश्वनाथ	१९वीं श.	२७	
१९८	४२४६	वेदस्तुति	भागवतोक्त	१८वीं श	१४	
१९९	५४९७	वेदस्तुति (अन्वयबोधिनी टीका)		१८९२	३६	
२००	६४६३	वेदस्तुति सटीक		१६६६	९	लि.क –शिवनिधानगणि, लि० स्था०–प्रल्हादनपुर
२०१	६४९७	,, ,,	टी. श्रीधर	१८८८	५४	लि क –हरिलाल
२०२	६५९३	,, ,,	श्रीनिवासदास	१९वीं श	२८	
२०३	४१८०	वैशम्पायन सहस्रनाम	वेदव्यास	,,	२७	
२०४	४२५३	श्रीदेवीपुष्पाञ्जलि	रामकृष्ण	१८४६	३	
२०५	४१३१	श्रीसूक्त (सभाष्य)	विद्यातीर्थ	१९वीं श	६	
२०६	७७५७(१०)	श्लोकोपनिषत्	शंकराचार्य	१८५०	२३०–२३२	
२०७	५७५६	शरभसहस्रनाम (सकवच)	आकाशभैरवकल्पोक्त	१९वीं श	७	
२०८	४१७१	शारभकवच	शकरप्रोक्त	,,	१२	
२०९	६६८७	शालिग्रामस्तोत्र	भविष्योत्तरपुराणोक्त	,,	४	

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१०	७७६०	शिवताण्डवस्तोत्र	रावण	१९वीं श.	२	
२११	५५०९	शिवमहिम्न स्तोत्र	पुष्पदन्त	१८४२	६	जयपुर में लिखित
२१२	४६२१	शिवमहिम्न स्तोत्र	"	१९वीं श	५	
२१३	४१६१	शिवमहिम्न स्तोत्रटीका	अहोबल शास्त्री	"	२४	
२१४	६१६८	शिवमहिम्न.स्तोत्र (सटीक)		"	८	
२१५	६६६७	" "		१९१५	१४	
२१६	५१८६	" "	मधुसूदन सरस्वती	१९वीं श.	५०	लि क —ब्रह्मानन्द
२१७	७७७२	शिवस्तोत्र	रावण	१९वीं श	१	
२१८	४४६६	शिवसहस्रनामस्तोत्र	शिवपुराणोक्त	१८६२	१०	
२१९	५०५६	शिवाष्टक	शकराचार्य	१८६०	३	लि क —गोपीनाथ
२२०	४२१९	शीतलास्तोत्र		१८७१	३	लि क —केसोराम कान्यकुब्ज लि० स्था०—नगर बोली
२२१	७८११(३)	स्तोत्रकवचादि		१८वीं श		*
२२२	६२८०(४)	स्मरणमगल		१९०९	२१–२२	लि क —पुजारी हरदेवदास
२२३	४५०१	सकटनाशनस्तोत्र	पद्मपुराणोक्त	१९वीं श	१	
२२४	४१५३	सप्तशती दुर्गापाठ		१९२७	१०८	
२२५	७८३५	सप्तशती दुर्गास्तोत्र		१९वीं श	११२	चित्र सख्या ११२
२२६	५५१२	सप्तशती टीका	नागोजी भट्ट	१८२४	८१	
२२७	७७९२	सप्तशती भाष्यम्	"	१९वीं श	५६	
२२८	४४५२(५९)	(१) सरस्वती मास्तोत्र (२) गणपतिमन्त्र		१८वीं श	११७वा	

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपी समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२६	६३६६	सहस्रनामस्तोत्र	कृष्णदास पयोहारी	१८०८	३	
२३०	५६२५	साम्बपचाशिका विवरण	टी —राजानक क्षेमराज	१६वीं श	३२	
२३१	६६७७	सुदर्शनस्तोत्र		,,	१	
२३२	५५२७	सुदर्शनसहस्रनाम स्तोत्र	अहिर्बुध्न्य सहितागत	,,	६	
१३३	४४३६	सुधालहर्य्याख्यमिहिरस्तव	पडितराज जगन्नाथ	,,	१०	
२३४	४५०२	सूर्यस्तोत्र	शकराचार्य	,,	१	
२३५	७००६	,,	सीताराम पर्वणीकर	२०वीं श	३	
२३६	७७२१(१५)	सूर्याष्टक		१८४४	२०२	
२३७	४१७७	सौन्दर्यलहरी	शकराचार्य	१९वीं श	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३८	४४०३	,,	,,	१८५७	७	लि क —ऋषि देवचन्द
२३९	४५०७	,,	,,	१८२३	८	लि क —ऋषि श्रीकृष्ण
२४०	४५१६	,,	,,	१७३४	१५	लि क.—पलायथाग्रामस्थ ठाकुरसूरजीपुत्र वल्लभ
२४१	४५२६	,,	,,	१६वीं श	१०	
२४२	५२४४	,,	,,	१८६३	१६	लि क.—धनीराम मिश्र
२४३	५५८४	सौन्दर्यलहरी सटीक	,, टी श्री रगदास	१६वीं श	५४	
२४४	५६७६	,,	टी नरसिंह	,,	४१	
२४५	५७८८	,,	कैवल्याश्रम	१६३६	७५	
२४६	६५२३	सौन्दर्यलहरी व्याख्या	गौरीकान्त	२०वीं श	३३	
२४७	५२३१	हनुमत्सहस्रनामस्तोत्र	वाल्मीकीय रामायणोक्त	१७५६	१३	लि क.—शिवदत्त लि०स्था०—अजयदुर्ग

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४८	७६४६	हनुमन्मधुनामस्तोत्र		२०वीं श	२	लाङ्गूल शत्रुञ्जयस्तोत्र
२४९	६७०७	हयग्रीवस्तोत्र	वेंकटनाथ वेदान्ताचार्य	१९वीं श	४	
२५०	७७०६	हरिनाम्मालास्तोत्र	शंकराचार्य	,,	३	
२५१	७८१२	हरिहरस्तोत्र	हरिवंशपुराणोक्त	,,	६	(८१वा अध्याय)
२५२	७६८८	हरिहरात्मकस्तोत्र		,,	३	
२५१	६८२९(२)	(१) हस्तामलक	शंकराचार्य	१९०२	१–१४	
		(२) यमुनाष्टक	नन्ददास			
		(३) हनुमानाष्टक	तुलसीदास			
२५४	६५८२	हस्तामलक सटीक	शंकराचार्य	१९वीं श	५	
२५५	६५८४	क्षमाषोडशी	वेदाचार्य	१८९५	७	लि क –रामसुख रामनारायण
२५६	६६७८	,,	,,	१९वीं श	३	
२५७	५१०९	(१) त्रिपुरसुन्दरीहृदय	वीरमहेश्वरतन्त्रोक्त	१९२५	३१	लि क –रामकुमार, कोटा
		(२) त्रिशती				
		(३) कल्याणीस्तोत्र				
		(४) ललितास्तवराज				
२५८	५१९१	त्रिपुराकवच		१९वीं श	३	
२५९	७७२१(१७)	त्रिपुरास्तोत्र आदि		१८४४	२०५–२७७	
२६०	४१९३	त्रैलोक्यविजयकवच	उत्तरगन्धर्वतन्त्र	१९वीं श.	२४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४९४३	अथर्वण निरुक्त		१८९५	१२	लि क.–सदासुख शुक्ल,जयनगर
२	४९३७	अथर्वणसहिता अष्टादशकाड		१९०४	११	,, ,,
३	४९२८	अथर्वणसहिता		१८९२	१३४	
४	४०९५	आपस्तम्ब अग्निष्टोमसूत्र		१८वीं श.	५६	लि क.–महादेव भट्ट
५	४७०२	ऐतरेयोपनिषत्		१९वीं श.	५	
६	४९४५	ऐतरेयोपनिषद्भाष्य	माधव	,,	३०	
७	६५६२	ऐतरेयोपनिषद्भाष्यटीका	अभिनव नारायणेन्द्र सरस्वती	,,	४४	
८	४५९२	ऋग्विधान		,,	२१	लि क –भट्ट मयाराम
९	४९४६	,,		१८०६	१६	लि.क.–सवाईराम
१०	४९४४	ऋग्वेद (चतुर्थाष्टक चतुर्थाध्याय)	माधव	१९वीं श.	९४	
११	५०१०	ऋग्वेद प्रथमाष्टक		१७८१	१०५	लि.क –वीरेश्वर शुक्ल
१२	५०११	,, द्वितीयाष्टक		१७८४	७५	,, ,,
१३	५०१२	,, तृतीयाष्टक		,,	८७	,, ,,
१४	५०१३	,, चतुर्थाष्टक		१७१९	१२४	,, ,,
१५	५०१४	,, पञ्चमाष्टक		१७८४	७२	,, ,,
१६	५०१५	,, षष्ठाष्टक		१७८२	१११	लि क.–पंड्या चिन्तामणि
१७	५०१६	,, सप्तमाष्टक		,,	९९	,, ,,
१८	५०१७	,, अष्टमाष्टक		१७८२	९८	लि क.–वीरेश्वर
१९	५०१८	,, प्रथमाष्टक		१७२६	१३३	पत्र १९, ४६, ४७ अप्राप्त
२०	५०१९	,, द्वितीयाष्टक		१९वीं श	१२७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१	५०२०	ऋग्वेद तृतीयाष्टक		१९वीं श	१११	
२२	५०२१	,, चतुर्थाष्टक		१८५३	१२६	१७वा पत्र अप्राप्त
२३	५०२२	,, पचमाष्टक		१८५५	९७	
२४	५०२३	,, षष्ठाष्टक		१८५५	१०४	
४५	५०२४	,, सप्तमाष्टक		१८५६	९६	
२६	५०२५	,, अष्टमाष्टक		१८५८	११४	
२७	५५७०	,, तृतीयाष्टक		१८वीं श	९९	पत्र २७ से ३८ तक अप्राप्त
२८	७६७३	,, प्रथमाष्टक		१७७५	६६	
२९	७६७४	,, द्वितीयाष्टक		१७७३	७४	
३०	७६७५	,, तृतीयाष्टक		१७७५	६९	
३१	७६७६	,, चतुर्थाष्टक		१७७५	७२	
३२	७६७७	,, पञ्चमाष्टक		१७२०	१००	
३३	७६७८	,, षष्ठाष्टक		१७८०	८४	लि क –वीरेश्वर शुक्ल
३४	७६७९	,, सप्तमाष्टक		१७७४	७२	
३५	७६८०	,, द्वितीयाष्टक		१६६९	८२	लि क –जगन्नाथ, काशी
३६	७६८१	,, तृतीयाष्टक		१७९३	७९	
३७	७६८२	,, ,,		१७०४	१६३	लि,क –व्यास गोकुल, टोडा
३८	७३८३	,, ,,		१७२९	९१	लि क –पण्डया चिन्तामणि
३९	७६८४	,, पञ्चमाष्टक		१७७४	७१	
४०	७६८५	,, षष्ठाष्टक		,,	७२	
४१	७६८६	,, सप्तमाष्टक		१८५३	११०	लि क –तुलजो

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२	४६६७	ऋग्वेद प्रातिशाख्य (प्रथमाध्याय)		१८वीं श.	१६	
४३	४६५३	ऋग्वेद सहिता		१७६३	६३	लि क –फकीरचन्द
४४	५१९६	,,		१७३०	१५१	
४५	५०२६	ऋग्वेदानुक्रमणिका		१८५२	१२३	स्वरितं देवशकरेण
४६	५०२७	,, (ढूंढूं)		१७६६	४७	लि क.–रविदत्त
४७	५०२८	,, परिभाषाभाष्य	रघुनाथ	१७६८	१०	
४८	५०८५	ऋग्वेदानुक्रमणिका विवृति		१८वीं श.	१३	अपूर्ण
४९	४६९९	केनोपनिषत्		१९वीं श	३	
५०	७५८४	कैवल्योपनिषत्		१९वीं श	१	
५१	६१२९(२)	कौषीतक ब्राह्मण		१५४३	१३३	
५२	५४४३	गोपालतापिन्युपनिषत् त्रिपाठ सटीक		१९०१	१६	लि.क –अम्बालाल
५३	४६२८	चरणव्यूह व्याख्या		१७८०	५	लि.क –पीताम्बर, कान्हाजीसुत
५४	५७००	,,		१९२४	३	
५५	७८२०	धनुर्वेदपरिच्छेद (वीरचिन्तामणिनामा)		१७६६	२९	लि क.–हरिकृष्ण
५६	४२४५	नारायणोपनिषत्		१८वीं श	१३	
५७	७७१०	,,		१९वीं श	४	
५८	५०३०	निघण्टु		१८१२	२२	लि.क शुभराम,तुलाराम व्याससुत
५९	६७२४	,,	पाणिनीय	१९वीं श.	२९	
६०	५५७३	निरुक्तम्		१७२४	९३	पत्र ८, व २८ से ४२ तक अप्राप्त
६१	५०३४	ब्राह्मण प्रथम पचिका		१८वीं श	२३	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२	५४८२	ब्राह्मण प्रथमपचिका		१८वीं श	४६	
६३	७७०४	,, ,,		,,	२२	
६४	५०३५	,, द्वितीयपचिका		,,	२८	
६५	५५६६	,, ,,		,,	६१	पत्र १, २, ५५ अप्राप्त
६६	५०३६	,, तृतीयपचिका		,,	३०	
६७	५४८३	,, ,,		,,	५५	
६८	५०३७	,, चतुर्थपचिका		,,	२४	
६९	५०३८	,, पचमपचिका		,,	३०	
७०	५०३९	,, षष्ठपचिका		,,	२३	
७१	५०४०	,, सप्तमपचिका		,,	२०	
७२	५०४१	,, अष्टमपचिका		,,	२०	
७३	६६४४	ब्राह्मणानि (तृतीयाध्यायपर्यन्त)		१८५४	५२	
७४	४१९४	मण्डल (श्रावणीकर्माङ्गभूत)		१९वीं श	७	
७५	५१७६	मण्डल प्रकरण		१७९१	१०	
७६	४६३०	मण्डल व्याख्यान	सायणाचार्य	१७वीं श	६	लि क –माधवाश्रम शकर
७७	५५७१	मन्त्रसहिता शान्तिसूक्तानि		१८वीं श	१७१	पत्र २० से ६२ अप्राप्त
७८	५८२३	मन्त्रार्थदीपिका	शत्रुघ्नोपाध्याय	१८२५	१४२	आदिके दो पत्र नहीं हैं लि क –मित्रमणि
७९	७७१७	मन्युसूक्त		२०वीं श	४	
८०	४६०८	मनोज्योतिमन्त्र		१९१३	२	
८१	४७००	माण्डूक्योपनिषत्		१९वीं श	३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८२	७६६३	माध्यन्दिनी सहिता		१८५९	४	
८३	४७०१	मुण्डकोपनिषत्		१९वीं श.	७	
८४	५५८०	रुद्रजाप्य (रुद्राष्टाध्यायी)		१७८८	३८	लि. क –रामगोपाल दाधीच पत्र १, ५, ११, ३७ अप्राप्त
८५	४४७६	रुद्रागभूतमत्रन्यासादि		१९वीं श	८	
८६	७६६५	रुद्राध्याय		१८६६	१३	
८७	५७२८	वश-ब्राह्मण		१९वीं श	११	
८८	४५७६	वाजसनेयी शिक्षा	याज्ञवल्क्य	,,	१५	
८९	४२०३	वाजसनेय सहिता		१७९७	१९०	लि. क.–रावल वलभजी
९०	५००७	,, ,,		१८४८	१४९	लि. क –वल्लभराम दुर्लभराम नागर, विषमनगरा
९१	५२००	,, ,,		१८वीं श.	१५७	
९२	५८०३	,, ,,		१७८२	१८२	लि. क –जयचद धनेश्वरसुत
९३	४९३२	,, पूर्वार्द्ध		१८७९	१७०	लि.क –राधाकृष्ण स्थान-अम्बावती
९४	५७७८	,, ,		१८५२	१४८	
९५	४९३३	, उत्तरार्द्ध		१८७९	१०७	लि. क –रामकृष्ण
९६	५७७९	,, ,,		१८७३	९३	
९७	५१९७	,,		१८२८	१५३	लि. क.–रामशुक्ल
९८	६४६९	वाजसनेयी सहितोपनिषदीशावास्यभाष्य सटिप्पण	भा.–शकराचार्य, टि.आनन्दगिरि	१८८६	६	
९९	७८३०	वैदिक सहिता (पदसग्रह)		१५२५	१५५	लि. क –हरिभाई सूर्यपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१००	५०२६	शिक्षाज्योतिषछन्दांसि		१७२७	२४	लि क–अम्बिकेश्वर श्यामजी-शुक्लसुत, टोडावास्तव्य
१०१	५०३१	,, (शाकरीशिक्षा)		१७६७	१५	लि क–पुरुषोत्तम
१०२	७५०६	षडङ्गमन्त्रा (मन्त्रार्थदीपिकाख्या-टीकोपेता)	श्रीशत्रुघ्न	१६वीं श	७५	प्रथम पत्र अप्राप्त
१०३	५५७४	षष्ठाध्याय		१७२४	१०३	
१०४	४११६	संहिता		१८६७	१८०	लि क–करणीदत्त पालीवाल
१०५	५५७७	,, (द्वितीयाष्टक)		१७५६	१०४	
१०६	५००१	संहितैकादशप्रकाश		१६वीं श	१३	घन जटा, मण्डलादि
१०७	४६५६	सर्वानुक्रमणिकावृत्ति		१७६८	६१	लि क–दीनानाथ
१०८	४६४१	हव्यकाण्ड	ब्राह्मणोक्त	१६८७	२११	लि. क–मेदपाटज्ञातीय वासुदेव
१०९	७७७१	त्र्यृचाभाष्य		१६१७	२	
११०	७७७८	त्र्यृचाभाष्य		१६३७	२	

ग्रन्थसख्या ७८३०

ऋग्वेदसंहिता

(सग्रहके वैदिक ग्रन्थोमें प्राचीनतम ब्राह्मणलिपिमें सवत् १५२५ में लिखित ग्रन्थ)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४४६	अग्निष्टोमपद्धति	देव याज्ञिक	१८६६	८५	कात्यायनसूत्रोक्त
२	४४५०	,,	,,	१८६५	८२	लि क –उमाशकर शुक्ल
३	४६१०	अनन्तव्रतविधि	भविष्योत्तरे	१८००	११	लि.क –नन्दराम आचार्य
४	४४५१	अध्वर्युप्रयोग		१८००	५३	लि क –दुखभजन तिवाडी औदीच्य
५	४५५८	अधिदेवतादिस्थापनहोमविधि		१६वीं श	१३	
६	५३४६	अष्टमहादानप्रकरण		१६वीं श.	३	
७	४६८८	आतुरसन्यासपद्धति	अगिरोक्त	१७७३	५	लि क.–लीलाधर ठाकुर, कोटा
८	५१७५	,,	,,	१८वीं श.	१४	
९	४६३६	आरामप्रतिष्ठाविधि		१५६८	२१	
१०	४०६४	आश्वलायनगृह्यपरिशिष्ट		१८वीं श	२६	
११	४६५०	आश्वलायनगृह्यसूत्रवृत्ति	नारायण	१८०३	१०७	
१२	४६५५	,, ,,	त्रैविध्यवृद्ध	१८००	६४	
१३	४६५४	,, ,,	,,	१७६६	१०७	
१४	५०३३	आश्वलायनश्रौतसूत्र		१७६५	५२	लि क –इच्छाराम व्यास
१५	४६१६(२)	आह्निकपद्धति	देवयाज्ञिक	१७६८	४२	लि क –यदुरामं
१६	६६७४	एकोद्दिष्टश्राद्धविधि		१६०३	६	
१७	४६१३	ऋषिपञ्चमीव्रतविधि	भविष्यत्पुराणोक्त	१८वीं श.	४	लि.क –छेदालाल, पडित
१८	४६८३	कर्कभाष्य	कर्काचार्य	१८०७	१६	लि क –सुखदेव गोलवाल, सुरतबदरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४६२५	कर्मप्रदीप		१९वीं श	३३	१५वा पत्र अप्राप्त
२०	४९८७	,,	गोभिलोक्त	१५९९	३५	लि. क –कालुआ महन्त, महसाणा
२१	४९४९	कात्यायनश्रौतसूत्र		१७६३	६१	
२२	४४४८	कात्यायनसूत्रपद्धति	देव याज्ञिक	१८६४	१५९	
२३	५४६४	कात्यायनपद्धति (सौत्रामणी)	,,	१८वीं श	२०	
२४	६३६८	कार्तिकोद्यापनविधि		१८२२	६	
२५	४९६५	कुण्डकल्पद्रुम	माधव	१८१०	१८	र का –१७१२ लि क –ऋषीश्वर शुक्ल
२६	५७४९	,,	,,	१९वीं श.	१०	*
२७	४९६०	कुण्डतत्त्वप्रदीप	बलभद्रशुक्ल	१८वीं श.	१५	*
२८	४९७८	कुण्डप्रकरण (श्लोकप्रकाशिका)	रामचद्र नैमिषवासी	१८१७	३१	*
२९	५६१८	कुण्डप्रदीपक सटीक	महादेव राजगुरु	१९२९	८	
३०	४६३५	कुण्डमण्डपसिद्धि सवृत्तिक	विट्ठल दीक्षित	१९वीं श	४२	
३१	४५२७	,, विवृति	,,	१८वीं श	२५	लि क –रुद्रदत्त शुक्ल जम्बूसर
३२	५६४४	कुण्डरत्नटीका	विश्वनाथ श्रीपतिद्विवेदसुत	१९वीं श	८६	
३३	४१२८	कुण्डार्क (मरीचिमालाटीकोपेत)	मू शकर भट्ट टी. रघुवीर दीक्षित	१८६४	११	लि क –व्रजवासी सिल्लु
३४	४९९७	कुशकण्डिका		१९वीं श	६	
३५	४११५	क्रियापद्धति	विश्वनाथ	१८६०	१०६	
३६	४९५१	,,	,,	१८वीं श	७५	जीर्ण प्रति

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७	४६६३	क्रियापद्धति	देवयाज्ञिक प्रजापतिसुत	१७८२	२६	लि, क —नन्दिकेश्वर
३८	५७४१	,,	देवकीनन्दन जीवानन्दसुत	१६वीं श	११	
३६	५७२६	ग्रहजपदानविधि		१६१०	२१	लि.क राधाकिशन,मूडोता ग्राम
४०	४४८०	ग्रहशान्ति	वृद्ध वशिष्ठ	१,वीं श	१२	
४१	४१८५	ग्रहशान्तिप्रकारः (पद्धतिः)	योद्धराज	१६वीं श	८३	*पत्र ८ से १६ तक अप्राप्त
४२	४१२५	ग्रहशान्तिपद्धति		१८६३	२८	
४३	५७६५(१)	,,	हेरम्ब शिष्य	१६वीं श	१-८२	
४४	५०४४	,,		,,	१६	
४५	४६१४	गयापद्धति	नारायणभट्ट रामेश्वरसुत	१७५१	१३	लि. क.—वामदेव
४६	५७१६	,,	,,	१८वीं श.	२२	
४७	४६३६	गृह्यसूत्र		१६वीं श	३१	
४८	४६६१	गृह्यसूत्रपद्धति	वसुदेव दीक्षित	१८वीं श	६३	
४६	५७६५(२)	गोदानपद्धति		१६वीं श.	८२-८८	
५०	४१३०	घृततुलादान विधि		१८६३	३	लि क —व्रजवासीसिल्लुः, काशी
५१	४५६०	जन्मदिवसकृत्यम्		१८४०	४	लि.क —भट्टराजा यज्ञदत्त,जयपुर
५२	४६३२	तर्पणविधि		१६वीं श	५	
५३	४६३४	,,		१८६५	२	
५४	५६८१	तिलादिधेनुदानविधि	विविधपुराणोक्तसग्रह	१६वीं श	६	
५५	४६२७	तीर्थयात्राविधि	,,	,,	१४	
५६	४६८०	तीर्थश्राद्धविधि	भट्टोजिदीक्षितकृतत्रिस्थलीसेतुगत	१८७६	२२	लि क.—सदासुख शुक्ल
५७	५०५१	तुलादानविधि		,,	३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	५४५१	तुलादानविधि		१६६०	६	
५९	६६८६	तुलापुरुषपद्धति		१९वीं श	८	लि क –माणिकराम भट्ट
६०	४११२	द्वादशलिंगोमण्डलदेवतापूजनविधि		१९वीं श.	७	
६१	४९७५	दशकर्मपद्धति	गणपति रावल हरिशंकरसुत	१७१८	३६	रचना १७१६ लि क –भट्ट शंकरदत्तजी, जयपुर
६२	४१२०	दशरात्र		१९वीं .	१०३	
६३	६५७३	दशहराकृत्य		,,	४	
६४	६७१३	नवग्रहजाप्यविधि		१८३४	७	लि क –हरगोविन्द दाधीच, सवाई जयपुर
६५	६७१४	नवग्रहन्यास		१८६३	७	
६६	४६३३	नवान्नेष्टि		१९वीं श	४	
६७	४९४०	नागबलिप्रयोग		,,	२१	
६८	५८६६	नरदाहकर्त्तव्यता	आश्वलायनगृह्यसूत्रपरिशिष्ट	,,	५	
६९	४९३९	नारायणबलि	शिवप्रसाद पुष्करवल्लीवास्तव्य	,,	१०	प्रयोगसारान्तर्गत
७०	४९८९	नीलोद्वाह पद्धति		१७९०	१९	जीर्णप्रति, लि क –नन्दिकेश्वर
७१	५००२	,,		१९वीं श	१५	
७२	४१०६	प्रतिष्ठाकर्म		१८५२	४५	लि क –हरिप्रसाद शर्मा
७३	४१११	प्रतिष्ठामयूख	नीलकण्ठ शंकरभट्टात्मज	१८वीं श.	३७	
७४	४९५७	,,	,,	१८८६	३०	लि क –सम्पतराम शुक्ल, जयपुर
७५	४९९२	प्रयाणशान्ति		१८८८	६	राजाविजय प्रयाणविधि

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	५५६१	प्रयोग	अनन्त भट्ट	१८४१	१६०	यज्ञोपवीतविधि पत्र २७ से ५६ व १५५ से १५७ तक अप्राप्त
७७	४०६३	प्रयोगदीपिका	मचनाचार्य	१६वीं श	६६	आश्वलायन सूत्रोक्त
७८	५५५४	प्रयोगरत्न	नारायण रामेश्वरभट्टात्मज	१८४२	२१४	लि क –काशीनाथ, पुस्तकमिद नारायणभट्टसूनोर्देवभट्टस्य।
७६	५५७२	प्रयोगरत्नाकर	,,	१६वीं श	११२	पत्र १, ३६, ४०, ७५, ६४ व ६५ वा अप्राप्त।
८०	६५६५	प्राणप्रतिष्ठाविधि		१८८१	२	लि क.रामनारायण, सामरघाग्राम
८१	६४११	प्रायश्चित्तधेनुदानविधि		१६वीं श	८	अपूर्ण।
८२	४६०४	प्रायश्चित्तप्रयोग		१८३६	२	लि क.–करुणाशकर जोशी
८३	४६७७	प्रासाददेवताप्रतिष्ठा		१८१३	२०	लि क –आशाराम व्यास, मालपुरा
८४	४६४२	प्रेतबलि		१९वीं श	१६	
८५	४६८६	पशुवन्धप्रयोग		१७६४	६	लि. क –ऋषीश्वर।
८६	५३३१	पापघटदानविधि		१६वीं श	८	लि. क –गोविन्द शर्मा
८७	४१७४	पार्थिवपूजा		,,	६	
८८	६६८४	पार्थिवेश्वरचिन्तामणिपद्धति		१८७३	६	
८६	४११४	पार्थिवेश्वरपूजापद्धति	चन्द्रचूड	१६वीं श.	७	
६०	४२१२	पार्वणश्राद्धविधि		,,	११	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	४५६५	श्राद्धपद्धति (यजुर्वेदीय)		१९वीं श	२५	
१३३	४६१५	,,		१७९७	७	लि क.–शकरदत्त
१३४	५५१५	,, (सावत्सरिक)		१९वीं श	१९	
१३५	५७२६	,,		१९१५	७	
१३६	५०५५	श्राद्धविधि		१८२७	३१	लि. स्था –सवाई जयपुर
१३७	७२९५	श्राद्धविधिवृत्ति (कौमुदी)	रत्नेश्वरसूरि	१६वीं श	१२५	
१३८	५२५२	श्राद्धविवेक	रुद्रधर	१९वीं श	५१	२० वा पत्र अप्राप्त
१३९	४१८८	श्रावणीविधि (ऋषिपूजन)		१९वीं श	६१	
१४०	४२२१	,,		१८७२	२१	लि क –केसोराम, नगर वौली
१४१	७६९१	श्रौताधानपद्धति	गणपति रावल	१९वीं श	३३	
१४२	५६३७	शान्तिकर्म	कमलाकर रामकृष्णसुत, नारायणपौत्र	,,	१५८	
१४३	४१२३	शान्तिपद्धति	दुर्गाशकर शुक्ल	१८वीं श	७०	
१४४	४८७२	शातिविधान (पल्लीसरटपतन)	गर्गोक्त	१८४४	३	लि क.–रेवादत्त
१४५	५१७०	शान्तिभाष्य	वशिष्ठोक्त	१८०९	९	लि क –केवलजी, जयपुर, माधवसिह राज्ये
१४६	५५६४	शान्तिविधि	,,	१८वीं श	९८	३७ वा पत्र अप्राप्त।
१४७	४९५२	शुल्वसूत्र	कात्यायन	१९वीं श.	५	
१४८	४५९६	षट्पिण्डकर्म		,,	७	
१४९	५००८	षष्ठीपूजा		१८७०	११	लि क –उमाशकर
१५०	७६१३	षोडशोपचारपूजा		१८४६	६	लि क –रणछोडदास, गढ-बदनोर।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	४२०८	स्त्रीकर्तृकश्राद्धप्रयोग		१९१७	५	लि. क –नारायण शर्मा
१५२	४१६५	स्वस्तिवाचन	दानखण्डोक्त	१९वीं श.	१३	
१५३	५७१६	,,	,,	१७९९	१०	
१५४	६६८१	,,	यजुर्वेदीय	१९वीं श	९	
१५५	६६९२	,,	,,	१८९२	८	
१५६	५२५५	सध्या (यजुर्वेदीया)		१९वीं श	११	
१५७	५६९५	सध्या टीका ,,		१८९९	१५	लि क –मुरलीधर शरण
१५८	६६००	सध्यापद्धति (सामवेदीया)		१९वीं श.	५	
१५९	६५७२	सध्याभाष्य	नारायणमुनि शठकोपमुनि	१९वीं श	९	
१६०	७७७५	सध्यामत्रव्याख्या	भट्टोजिदीक्षित	१९४२	१६	लि. क –मगनराज जोशी
१६१	७६९५	सध्या सटीका (यजुर्वेदीया)		१९०१	४	
१६२	४५८१	सन्यासपद्धति		१९०८	४	लि. क –रघुनाथाश्रम, काशी
१६३	६६४८	सपिण्डीकरणविधि		१९वीं श	४०	लि. क –वसुदेवराम, मथुरा
१६४	५७४०	सर्वतोभद्रमण्डलपूजाविधि		,,	४	
१६५	५७६५(५)	सर्वदेवतास्थापनपूजाविधि		,,	११७–१३१	
१६६	४५९४	सिद्धिविनायकव्रतपद्धति		,,	४	
१६७	४९८५	सूर्यव्रतविधि		१८१२	४	लि. क –सदाशिव शुक्ल
१६८	४६३८	हरतालिकाव्रतविधि		१७२८	७	लि. क.–म. सुर
१६९	५१८२	हेमाद्रिप्रयोग		१८वीं श	१२	
१७०	४७०७	हेमाद्रिविधि (स्नान सकल्प)		१८४४	८	
१७१	४५६८	त्र्यृचाकल्प (अर्घ्यदान)	हंसवतीविधानोक्त	१९वीं श	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७२	७७८८	त्र्यृचाविधानम्		१९वीं श	७	अपूर्ण
१७३	७७७४	त्र्यम्बकमन्त्रविधि		१८६३	१९	लि क –बालमुकुन्द व्यास
१७४	५०५८	त्रिकालसंध्या (सामवेदीया)		१९२३	१३	
१७५	५७६१	,, (यजुर्वेदीया)		१९२५	१२	
१७६	६४२४	,,		१८२५	८	लि क –चैनराम मिश्र, भरतपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	५७८१	अमरनाथपटल	भृङ्गीशसंहितान्तर्गत	१९वीं श	२९	एकादशपटलात, अमरनाथकी यात्राका फल
२	५२२७	अष्टादशाक्षरमहामंत्रपद्धति		१८वीं श	१७	गोपालमंत्रपरक
३	५७८३	उच्छिष्टगणपतिचतुरङ्ग	रुद्रयामलप्रोक्त	१९वीं श	१५	आदि में गणपतियंत्र है ।
४	४१५२	उड्डीशकल्प		१९२७	६४	लि. क –रामनारायणमिश्र लि स्था –बयाना
५	५७९३	उद्धारकोश	सकलागमसारोक्त	१९वीं श.	२४	
६	५८२०	,,	,,	,,	२	
७	४४५२(५७)	औषधिकल्प (चक्र)		१८वीं श	११४–११६	
८	५७६७	कक्षपुटी	सिद्धनागार्जुन	१८७७	५०	लि क –कृपाराम
९	५६५०	कामकलाङ्गनाविलास	पुण्यानन्दमुनीन्द्र	१९१६	३३	
१०	५७९९	कार्त्तवीर्यदीपकर्मरहस्य	उड्डामरतंत्रोक्त	१६५१	५	लि क –गदाधर दैवज्ञ, लि स्था.–वाराणसी
११	६६६२	कार्त्तवीर्यनित्यदीपविधि		१९०३	५	
१२	५२२८	कालाग्निरुद्रपटलोपनिषत्		१८५०	७	लि स्था –पुष्कर
१३	६७५१	कालाग्निरुद्रोपनिषत्	नन्दिकेश्वरपुराणोक्त	१९०६	१०	लि क –रामदास
१४	५६१७	कुलाचनदीपिका	जगदानद महामहोपाध्याय	१९वीं श	२४	
१५	५६२३	कुलार्णवतंत्र		,,	७८	
१६	५७६२	,,		,,	८७	
१७	४३२६	कृष्णचरित	सम्मोहनतंत्रगत	१७६२	१६	*
१८	४८८६	कौतुकचिंतामणि	प्रतापरुद्रदेव	१८०९	६८	लि. क –आशाराम ज्ञानी

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	६९३५	कौलरहस्य (शतक)	तरुणीवीरेंद्र नरोत्तमारण्यमुनींद्र-शिष्य	१८८९	१०	लि क –रामसुख, जयपुर
२०	७६९०	गणेशपूजा		१८८१	४	लि क –शिवनाथव्यास, जयनगर
२१	६७३२	गणपत्युपनिषत्		२०वीं श	३	
२२	६३४८	गायत्रीपद्धति		१८८७	३५	द्वितीय पत्र अप्राप्त
२३	६७७३	गायत्रीपचाग	रुद्रयामलोक्त	१९०७	२०	लि क –रामदास कबीरपंथी
२४	६२४७	गवोत्तमानिर्णय	गुरुसेवक (श्रीकाल)	१८वीं श	२२	✲ रचना–१७०२
२५	५७१०	गुरुकीलकपटल	(गुप्तवतीरहस्यतन्त्रोक्त)	१९वीं श	२	
२६	७८११(२)	गौरीकल्प		१८वीं श		
२७	५१९८	घटाकर्णकल्प		१९वीं श	२०	आपदुद्धारणमन्त्रयुक्त, अपूर्ण
२८	५७०२	चण्डिकार्चनदीपिका	काशीनाथभट्ट जयरामसुत वाराणसीगर्भसंभव	१८९६	२३	लि. क –व्रजवासी ज्योतिर्वित् लि स्था –काशी
२९	५८१४	चडीप्रयोगविधि	नागोजीभट्ट	१९००	२७	लि क –दामोदरदास, सिउलपुर ग्रामवासी
३०	५८८६	चडीपाठप्रयोगविधि		१९वीं श	२३	
३१	७५०६	चडीस्तोत्रव्याख्या	नागोजीभट्ट	१८११	६१	
३२	४८९७	तन्त्रलीलावती	कर्णसिंह	१८वीं श	१९	✲ तृतीयपटलात
३३	७७११	तन्त्रस्यहृदय (स्वोपज्ञटीकोपेत)	काशीनाथभट्ट अनन्तशिष्य	"	१८	✲ लि प –बालमुकुंद
३४	७६०८	तुम्बाविवीजमन्त्र	नागपुरवास्तव्य जयरामसुत	१९वीं श	१	लि क –केशवदास

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	५७२२	तुरीयोपस्थानविधि		१६१५	५	लि क –घनश्याम ब्राह्मण लि स्था –राजपुर, मेवाड
३६	५१२६	नवार्णन्यासविधि		१९वीं श	२	
३७	४६००	नित्ययात्रा (षोडशयात्रा)		,,	६	
३८	४६२६	,,	काशीखण्डोक्त	१८४७	१४	
३९	५७६५(२)	नित्यापारायण	बुद्धिराज	१९वीं श	१–२०	
४०	५५१६	नृसिहमालामत्र		,,	२०	
४१	७६४४	प्रत्यगिरासूक्तमत्र		१६१२	१६	लि. क –ब्रजवासी सिल्लू लि स्था –अलवर
४२	४४५२(८६)	प्रभातगायत्री तथा त्रिकाल-ब्रह्म-गायत्री		१८वीं श	१२८वां	
४३	५१२३(५)	पचदशीयत्रविधान		,,	२७–२८	
४४	७७०८	परशुरामकल्पसूत्र		१८वीं श.	४८	* आदिके ११ पत्र कीटविद्ध ।
४५	५७५७	पात्रस्थापनविधि		१९वीं श	६	
४६	५६५४	पुरश्चर्यार्णव	प्रतापशाहदेव	,,	२४	प्रथम तरङ्ग
४७	५६५५	,,	,,	,,	२५२	द्वितीयसे नवमतरङ्गपर्यन्त
४८	५६५६	,,	,,	,,	११७	दशमैकादशद्वादशतरङ्ग रचना स० १८३१
४९	५६६१	पुरश्चरणचद्रिका	देवेंद्राश्रम	,,	११२	
५०	५६३८	पूजारत्न	सत्यानन्द	१६२८	२१२	
५१	५७६५(१)	,,	,,	१९वीं श	१–६	प्रथम मयूख

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२	५१६५	पूर्णाभिषेक षडाम्नाय मन्त्रादि		१८वीं श.	स्फुट पत्र	इन पत्रोंमें नृसिंहसुन्दरी महान्त्र, दशमहाविद्या, दशाम्नाय दश-श्लोक, शिवावलि विधि नाभि-विद्योद्धार और तन्त्रोक्त अपूर्ण-हवनपद्धति लिखी हुई है।
५३	६८७८	ब्रह्मकल्प (कायाकल्प)		१९वीं श	६	
५४	५००४	वटुकभैरवपद्धति	मन्त्रचिन्तामणिप्रोक्त	१९वीं श	२३	
५५	४१३५	वटुकभैरवपूजापद्धति	विश्वसारोद्धारतन्त्रोक्त	१९वीं श.	२७	
५६	६७६०	बालास्तोत्रादि		१७२८	१६–२४	बालास्तोत्र, ईश्वरीस्तुतिपूजा, भारतीस्तोत्र, अन्नपूर्णास्तोत्र, श्रीरातिकरकृष्णास्तवराजस्तोत्र, परमात्मस्तोत्र।
५७	७०५६	भुवनेश्वरीपद्धति (पञ्चाङ्ग)	रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत	१८वीं श	६६	पत्र ६ से १५ पर्यन्त
५८	५४२६	भूत-भूतिनीसाधनविधि	भूतडामरतन्त्रोक्त	१९वीं श	७४	प्रथमपत्र नहीं है।
५९	६४१६	भूतशुद्धि		,,	११	
६०	७००३	,,		,,	७	लि क–भट्ट दयारामशर्मा
६१	४१८१	भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठा मातृका-न्यास		,,	२०	
६२	५००५	भैरवपुरश्चरणविधि	शिवागमसारोक्त	,,	६	लि क–रामचन्द्र पुष्कर
६३	६४४६(१)	भौमपूजाप्रकार		,,	३६–४०	
६४	६७२३	मंगलव्रतपूजाविधि		१८१७	६	लि क–शिवाधार
६५	४८४४	मन्त्रमहोदधि	महीधर	१८०३	१४६	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६	५७४८	मत्रमहोदधि	महीधर	१८वीं श	८२	रचना स० १६४५
६७	५७४४	,,	,,	१९वीं श	७४	नौकाटीकासहित
६८	६६५६	,,	,,	१८७६	२११	लि. क.–शिवदत्त शुक्ल सनाढ्य माधोपुर काशी
६९	४८५८	मत्रसिद्धिलक्षण	गौतमतत्रोक्त	१९वीं श	३	
७०	५०४९	महागणपतिविधान (पञ्चाङ्ग)	रुद्रयामलोक्त	,,	३२	
७१	६२६२	महानिर्वाणतत्र (पूर्वकाण्ड)		१९४२	१४९	
७२	५८३२	महाविद्या		१८वीं श	५५	४१वा पत्र अप्राप्त
७३	४२९६	महाविद्यादशश्लोकीविवरण		१४९१(?)	४	*लि.स्था –सिरोही, लि.स –१८९१ प्रतीत होता है।
७४	५३३६	महाविद्यापारायणविधि		१९००	२७	
७५	५०००	मातृकानिघण्टु	नृसिंह	१९वी श	६	
७६	५६११	मानसोल्लास सटीक	टी. रामतीर्थ	१९१६	७७	
७७	६४१३	मायावीजकल्प (ह्रींकारकल्प)		१९७५	३	लि. क –भक्तिसुदर, लि स्था –विक्रमपुर
७८	५७८०	मार्तण्डमाहात्म्य	भृगीशसहितान्तर्गत	१९वीं श	१५	
७९	४११८	रामपद्धति (वेदोक्ता)	श्रीरामानुज	१८६७	८	* लि क –विप्र जयराम
८०	४२३९	,,	,,	१८वीं श.	२६	
८१	४२५५	,,	,,	,,	३९	
८२	५८७८	,,	लक्ष्मीनिवास नृसिंहाश्रमशिष्य	१७७१	१८	लि क –पुरुषोत्तमदास वैष्णव, लि स्था —गलता, जयपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८३	६७४२	रामपूजापद्धति	श्रीरामोपाध्याय	१६५६	१६१	✿ पत्र १६०वा अप्राप्त
८४	६८०४	,,	लक्ष्मीनिवास नृसिंहाश्रमशिष्य	१७६४	२६	
८५	४११७	राममंत्रपटल		१६वीं श	७	
८६	७७१६	राममंत्रविधिपटल		,	१७	लि क –वैष्णव रामप्रसाद वैष्णव
८७	४१६६	राममंत्रविधिपद्धतिपटल		,,	१५	लि क –अमरवास, खेतडी
८८	५७६२	रामार्चनदर्पण (त्रिपुरसुदरीपूजार्चविधान)		१६१०	१२२	
८६	४१६७	लक्ष्मीपञ्चाङ्ग	ईश्वरतंत्रोक्त	१८२४	३१	लि क –भवानीवत्त
६०	७०५४	ललितोपाख्यान	ब्रह्माण्ड पुराणोक्त	१८वीं श	४२	अपूर्ण
६१	५१२६	वरदगणेशपञ्चाङ्ग	रुद्रयामलान्तर्गत	१६वीं श	२६	
६२	४४५२(५६)	वश्ययंत्रादि		१८वीं श	११४वां	
६३	५२३६	वसुधारा (आर्यवसुधारा)	बौद्धकल्प	१६वीं श	७	✿
६४	५२२५	वसुधारानाम धारणीकल्प	बौद्धकल्प	१८६६	६	✿
६५	५८०६	श्यामापद्धति		१६वीं श	८	अन्तमें भैरवतन्त्रोक्त जगन्मगल कवच भी है।
६६	५६२७	श्यामार्चनमंजरी	लालभट्ट अनारगिरिशिष्य	१६१६	६३	
६७	५६०५	श्यामारहस्य	पूर्णानन्दगिरि	१८वीं श.	१०४	
६८	६२२१	,,	,,	,,	२२	पत्र २० से २२की लिखावट अर्वाचीन प्रतीत होती है।
६६	५५६२	,,	,,	,,	६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१००	५८०५	श्रीचक्रार्चनविधि	पृथ्वीधरमिश्र शाडिल्यगोत्रज जगन्नाथसुत हरपुरनिवासो	१९वीं श.	६	परशुरामकल्पसूत्रानुसार
१०१	५७५५	श्रीविद्यापटल	दक्षिणामूर्तिसहितोक्त	१९वीं श	१५	
१०२	७५०२	श्रीविद्यार्चनपद्धति		,,	४७	मन्त्रमहोदध्यनुसारिणी
१०३	५४६८	श्रीविद्यार्चनसक्षेपपद्धति	मन्त्रमहोदध्युक्त	,,	३७	
१०४	५७९८	श्रीविद्यामालामन्त्र	ललितापरिशिष्टतन्त्रोक्त	,,	१०	
१०५	५६६५	श्रीविद्यारत्नसूत्रदीपिका	विद्यारण्य	,,	४४	
१०६	४९५८	शतचण्डीविधान		१८९९	५२	लि. क.–सदाशिव शुक्ल
१०७	४९९८	,, ,,		१९वीं श	११	भट्टविश्वनाथस्य पुस्तकम्
१०८	७१२९	शतचडी-सहस्रचडी-प्रयोगपद्धति		,,	५२	(अपूर्ण)
१०९	५६४१	शरभार्चापारिजात	रामकृष्णदैवज्ञ नीलकठवशीय आपदेवसुत भवानीगर्भज	१९२६	१२२	
११०	५६९७	शिवताण्डवतन्त्र	दक्षिणामूर्तिप्रोक्त	१९११	६४	लि क –जीवणराम, द्वादश-पटलसेचतुर्दशपटलान्त
१११	६४४४	,, ,,	,,	१९वीं श	२५	
११२	६४९६	,, ,, (सटीक)	टी० नीलकण्ठ गोविंदसूरिसूनु	१८४०	४२	लि. क.–गगाधर
११३	४४६९	शिवपचाक्षरीन्यासविधि		१९वीं श	६	*
११४	६७३३	शिवाम्बुकल्प		,,	१७	
११५	७७४१(२)	स्फुटमन्त्र		१७वीं श.	१२-१३	
११६	५००६	सर्वदेवप्रतिष्ठाविधि		१८६१	१५४	लि क सदाशिव शुक्ल।
११७	५५८५	साख्यायनतन्त्र		१९वीं श.	५१	पचत्रिंशत्पटलात।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
११८	७७७३	सिद्धसिद्धान्तपद्धति	गोरक्षनाथ	,,	२६	
११९	४२०५	सिंहसिद्धान्तसिंधु	गोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट	१८२५	६०२	*रचना स० १७३१ लि स्था जयपुर
१२०	७६६२	सुमुखीविधान	रुद्रयामलोक्त	१७३४	३	लि. क गगापुरी लि स्था मागलोर ग्राम हाडौती प्रदेश
१२१	५६५८	सौभाग्यरत्नाकर	श्रीविद्यानन्दनाथ (श्रीनिवास-भट्ट गोस्वामी)	१९२७	२७२	
१२२	६३७१	हनुमत्पताकासिद्धि		१८वीं श	४६	
१२३	५१३८	त्रिकूटारहस्य	रुद्रयामलोक्त	२०वीं श.	६	अपूर्ण
१२४	६१२१	,,	रुद्रयामलगत	१७५०	५६	प्रथमपत्र अप्राप्त लि क सुखराम
१२५	५७७७	त्रिपुरार्चनमजरी	भट्टगदाधर(ज्ञानानन्दापर नामधेय विमर्शशिष्य शिवशकरसुत अम्बागर्भसभूत)	१९१९	१	प्रतिके कोण खण्डित हैं
१२६	५८१२	,,	,,	१९वीं श	२९४	
१२७	५६५९	त्रिपुरारहस्य		१९वीं श.	१०६	
१२८	५६००	त्रिपुरासारसमुच्चय	नागभट्ट	,,	५१	
१२९	५८०६	त्रिशतीनामार्थप्रकाशिका	शकराचार्य	१९३४	८६	लि क नानूराम ब्राह्मण लि स्था. जयपुर
१३०	५८२९	ज्ञानार्णवतत्र		१९वीं श	११६	८१वा पत्र अप्राप्त
१३१	६६५९	,,		१९वीं श	८६	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४३७८	अत्रिस्मृति	स्कन्दपुराणोक्त	१९वीं श	११	
२	४५३४	,,		१८४०	४	
३	४९२७	अथर्वणशांतिप्रयोग		१८९३	७३	लि. क देवकृष्ण दाधीच लि स्था जयनगरमध्ये सीता-रामजीका मन्दिर
४	४५८६	आचारदीप	नागदेव उपाध्याय	१८वीं श.	६५	
५	४६१६	,,	,,	,,	८८	ज्योतिर्वित्केवलरामजीकस्य पुस्तकमिदम्
६	४६४३	,,	,,	१९वीं श	६३	पत्र ५८, ५९ अप्राप्त
७	६५५९	आचारप्रदीप	,,	१९१५	४०	लि क रामनारायण मिश्र दाधीच
८	५२२९	आचारप्रदीप	कमलाकर कूर्परग्रामवासी	१७६०	६२	पत्र १ से ३ तथा ५४, ५५वें अप्राप्त। लि. क किशोरदास लि. स्था सागवाटकपुर
९	४३८२	आचारमयूख	नीलकण्ठभट्ट शकरसुत	१८वीं श.	८४	७४वा पत्र अप्राप्त
१०	६५१३	,,	,,	१८३८	७२	
११	४५२९	आशौचत्रिशच्छ्लोकी		१९वीं श.	५	
१२	५२५८	,,		,,	२३	
१३	४५३०	आशौचनिर्णय		१९७०	६	लि क. शीवजी केशवसुत
१४	४५३१	,, वृत्ति	श्री भट्टाचार्य ?	१८वीं श	१६	त्रिशच्छ्लोकी व्याख्या

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	४११३	आशौचदशक सभाष्य	मू विज्ञानेश्वर, टी. हरिहर	१८४२	११	*
१६	७७६१	"		१९वीं श.	१०	
१७	४६०२	आशौचसंग्रह सटीक (त्रिंशच्छ्लोकी भाष्य)	टी भट्टाचार्य	१९वीं श	३७	
१८	४६०३	"		"	६	शिवनदनजीलिखापित, जयपुर
१९	६२२८	"		१८६६	१६	
२०	५२२०	उत्सवप्रतान	पुरुषोत्तम	१८वीं श	३८	लि क मोरेश्वर
२१	४५५९	कालनिर्णयदीपिका	श्रीरामचन्द्राचार्य गोपालगुरुशिष्य	१८१३	२०	लि क दयाराम, जयनगर
२२	४९७१	"	"	१८११	३०	लि क गोविंदराम महाशकर टोडा मध्ये
२३	६९९५	कालनिर्णयप्रकाश	रामचन्द्रभट्ट विठ्ठलभट्टसुनु वालकृष्णभट्टपौत्र	१८६१	१४१	लि क अनिरुद्ध प्रश्नोरा, प्रति अपूर्ण।
२४	४३५१	कालनिर्णयसिद्धात सटीक	मू रघुराम, टी महादेव	१७४०	१४७	*पत्र ४७, ८१ से ८४तक अप्राप्त लि क हरिराम हलवद्रवासी रचना स. १७०९, १० स्थान भुजपुर। ५८वा पत्र अप्राप्त।
२५	६२४९	कृत्यरत्नावली	रामचन्द्रभट्ट, विठ्ठलभट्टसुनु	१८वीं श	६२	
२६	६३८०	गोदानविधि		"	१६	
२७	६५८७	चैत्रशुक्लप्रतिपन्निर्णय	जयसिंहकल्पद्रुमान्तर्गत	१९वीं श	८	लि. क गोपीनाथ।
२८	६९२४	जयसिंहकल्पद्रुम	रत्नाकर पुण्डरीक	१८वीं श	७५५	

ग्रन्थसख्या ७६१४

तिथिनिर्णय

(त्रिराज्य (ओरछा, जयपुर, बीकानेर) दीक्षागुरु गोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट-रचित । रचयिता के जीवनकाल में सवत् १७३२ मे लिखित प्रति)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२९	६९९३	जयसिंहकल्पद्रुम	रत्नाकर पुण्डरीक	१९वीं श	४४१	अपूर्ण, त्रुटित
३०	६६५८	जातिविवेक	विश्वम्भरीयवास्तु शास्त्रान्तर्गत	१९०२	२०	विविध कर्मकार जातियोका वर्णन
३१	७०४१	जीवत्पितृक कर्त्तव्यनिर्णय	रामकृष्णभट्ट, नारायणसूनु, रामश्वर पौत्र	१७४०	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
३२	४१२९	तिथिनिर्णय (तिथि दीधिति)	अनन्तदेव	१७५७	४८	*स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत
३३	४६१८(१)	,,	भट्टोजी दीक्षित	१८वीं श.	२७	
३४	४९०१	,,	गगाराम भट्ट	१८३४	१२	लि क वीरदेव सवत्र (त्) नेपाले ८३४
३५	७५९५	,,	शिवानन्द भट्ट	१७३२	३७	कर्ताके जीवनकालमे लिखित प्रति ज्ञात होती है
३६	४५३८	दत्तकदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं श	१४	स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत
३७	४९२९	दानचद्रिका		१८९८	६८	लि क सदासुख शुक्ल
३८	७५९५	दानधर्म प्रकरण	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१९वीं श	३०१	आद्य १५ पत्र अप्राप्त
३९	४९४७	,, खण्ड	हेमाद्रि	१७६६	३३९	चतुर्वर्गचिंतामणिगत लि. क. भगवतीदास
४०	४९८४	दानवाक्यसमुच्चय	पुरुषोत्तम	१६१९	५७	*लि. क वामनशुक्ल
४१	४५४०	देवालयगृहादिवास्तुदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं श	४२	
४२	५११३	धर्मप्रवृत्ति	रामेश्वरभट्ट, सूनु श्रीनारायणभट्ट	१८७९	१७५	लि क वैष्णव रामप्रसाद तक्षकपुर
४३	४६०५	धानतपद्धति (द्वादश्यादिव्रत-निर्णय)		१९वीं श.	९	*

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	६९५७	निर्णयसिन्धु	कमलाकरभट्ट	१८८२	३५०	लि. क हरिदास वैष्णव, जयपुर
४५	४५५३	निर्णयामृत	गोपीनारायणश्रीसूर्यसेन महीमहेन्द्र	१५३५	२३०	लि. क पाठक वानरसुत पाठक परमात्मा
४६	४५८३	,,	बल्लालदेव	१६७०	१८०	(अपूर्ण)
४७	५१६४	नीतिमयूख	नीलकठभट्ट शङ्करसूनु	१८वीं श	५०	
४८	५७०९	प्रायश्चित्तकदम्बनिर्णय	गोपाल न्यायपंचानन भट्टाचार्य	१९०७	५३	
४९	४१८४	प्रायश्चित्तमयूख	नीलकठ	१९वीं श.	१०९	# पत्र ७,६१,६२,७० से ७३ तथा अन्त्य पत्र अप्राप्त
५०	६४५४	पाराशरस्मृति सविवृतिक	विवृतिकार माधव	१५वीं श.	१५६	६६वाँ पत्र अप्राप्त
५१	४६२६	,,	,,	१८३३	५०८	लि क –रामनारायण मिश्र शाकभरीवासी
५२	७७७[illegible]	,,	,,	१७७१	१८६	
५३	४५६३	,,	,,	१७वीं श	१६०	अपूर्ण
५४	४४४६	मदनपारिजात	भट्ट विश्वेश्वर कौशिक (?)	१७८९	३८४	#लि क –वीरेश्वर शुक्ल
५५	६५७५	मलमासनिर्णयादि		१९वीं श	९	
५६	६००८	महादानपद्धति	रूपनारायण	१५७२	१४०	प्रथम पत्र अप्राप्त
५७	४९९०	महाव्रत		१८वीं श.	१२	लि. क –ऋषीश्वर
५८	६१२९(१)	महाव्रतकथा		१५४३	१३	जीर्ण, फटी हुई
५९	४४४४	महाव्रतभाष्य	गोविन्दपण्डित	१७४१	३४	#
६०	४९८२	महाशान्ति	नीलकठ	१८९६	६	लि क –सदासुख

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	६६८५	माधवीयकालनिर्णयकारिका	माधव	१८वीं श	१२	
६२	४५१६	मानवधर्मशास्त्रसहिता	भृगुप्रोक्त	१८वीं श	१३१	*
६३	४५३७	यमप्रणीतधर्मशास्त्र		१८वीं श	४	
६४	४३८३	याज्ञवल्क्यस्मृतिटीका (मिताक्षरा-प्रथमाध्याय)	विज्ञानेश्वर श्रीपद्मनाभ भट्टोपाध्यायात्ज	१५७८	६२	१ से ६ पत्र अप्राप्त
६५	४३८४	,, द्वितीयाध्याय	,,	,,	१६३	४४ से ५४ पत्र अप्राप्त
६६	४६४५	,,	,,	१८वीं श	४०	
६७	४३८५	,, तृतीयाध्याय	,,	१८वीं श	१४१	
६८	५१६३	,,	,,	१८११	१४३	आदितस्तृतीयाध्यायान्त
६९	६४५१	,, प्रथमाध्याय	,,	१७वीं श	७५	
७०	६४५२	,, द्वितीयाध्याय	,,	,,	१३२	'शुक्लविश्वेश्वरस्येदपुस्तकम्'
७१	६४५३	,, तृतीयाध्याय	,,	,,	१७६	,, १५०वाँ पत्र अप्राप्त
७२	६५४६	,,	,,	१८६६	८८	लि.क.–वैकुण्ठनाथ, व्यवहार-खण्ड मात्र
७३	४६१६	,, मूल		१७८२	४७	लि क. उद्धवजी नागोर
७४	४५४१	रजोदर्शनजातकशातिवीधिति	अनन्तदेव	१९वीं श.	९७	स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत प्रथम पत्र तथा पृ ९७ से आगे पत्र अप्राप्त, अपूर्ण प्रति
७५	४६३८	रजोदर्शनशाति		१८९५	७	लि क सदासुखशुक्ल, जयपुर
७६	४३५०	रत्नसग्रह	गोविन्दपण्डित	१७१२	५०	*

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेप उल्लेखनीय
७७	६५०७	लघुपाराशरस्मृति	पराशरमुनि	१८वीं श	३३	
७८	४५४२	व्यासस्मृति		१८वीं श	५	तृतीयाध्यायपर्यन्त
७९	६६१५	,, ,, गृहस्थाह्निकम्		,,	११	
८०	४९२६	व्रतार्क	शङ्कर नीलकण्ठ (तनय)	१८९२	५८३	लि क गङ्गाराम । लि स्था जयपुर । पत्र ५२ व ३८९से ३९४ तक अप्राप्त । प्रति मे दो तरहके पत्र हैं । ५१४ से ५७० तकके पत्र दूसरी प्रकारके व छोटे हैं तथा इनमें पत्र स. १७० तक स्वतन्त्र सख्या भी लगी है ।
८१	५८२१	वार्षिककृत्य		१९वीं श	५५२	पत्र ४७, ४८, १८६ व २२०से २२३ तक अप्राप्त
८२	४५८४	विश्वादर्श	कविकान्तसरस्वती आदित्याचार्य-सुत	१६७५	२०	११वा पत्र अप्राप्त
८३	६७१९	विश्वेश्वरस्मृति	कैवल्येन्द्र सरस्वतीशिष्य	१८वीं श	७	
८४	४५३६	वृद्धशातातपधर्मशास्त्र		१८वीं श	३	
८५	६६१५	वैष्णवचर्चा		१९वीं श.	४	
८६	६१६७	वैष्णवधर्मतत्त्वचिन्तामणि	श्रीनिवासाचार्य	१८वीं श	४	
८७	६२६६	वैष्णवोपयोगीनिर्णय		१९०५	२०	रामार्चनचन्द्रिकादिके आधार पर सगृहीत
८८	४५३३	शङ्खस्मृति (शाखशास्त्र)	शङ्खप्रोक्त	१८४१	११	*

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८९	४४४७	शाखायनसूत्रभाष्य	वरदत्तसुत ?	१९०६	१५४	*
९०	४६४८	शान्तिमयूख	नीलकठ	१७७९	१५८	कीटविद्ध। 'ठाकुर नाथूरामस्य-पुस्तकम्'।
९१	६०७५	"	"	१८७७	८७	पत्र ४६ से ५० व ८१वा अप्राप्त
९२	४६३१	शातिसार	दिनकरभट्ट रामकृष्णात्मज	१८८७	६१	लि. क सदासुखशुक्ल, जयनगर
९३	४३८०	"	"	१९वीं श.	१२३	
९४	५००३	शिवरात्रिपूजनविधि		१९वीं श.	१५	जयसिंहकल्पद्रुमोक्त
९५	५१४२	शुद्धिविवेक	रुद्रधरलक्ष्मीधरात्मज हल-धरानुज	१७६९	१४	लि क रामभक्त सारस्वत
९६	४६३४	शूद्रधर्मकमलाकर	भट्ट कमलाकर	१८९०	९५	लि क सदासुखशुक्ल, जयपुर
९७	५५७८	स्मार्तनिष्कृतिपद्धति	दिवाकर भट्ट	१७०९शक	७१	पत्र ९ से १५, २३, २४ तथा ५२ से ६२ तथा ८७वा पत्र अप्राप्त लि क सखारामभट्ट उल्लप नामक भाई भट्ट सूनु
९८	४६६८	स्मृत्यान्हिक (स्मृतिसमुच्चय)		१७५८	२४	लि. क. ठा. लीलाधर लि स्था कोटा
९९	४५३९	स्मृतिकौस्तुभ-सस्कारदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं	६७	
१००	४६१७	स्मृतिसार	याज्ञिकदीक्षित	१८१२	२२	लि क. तिवाडी शिवजीराम दायमा, लि स्था. आमेर
१०१	४६३९	"	"	१७९७	२०	
१०२	६०९३	संस्कारकौस्तुभ	अनन्तदेव	१८वीं	१३५	पत्र ३४, ३५, ३६ अप्राप्त लि. लट्टू गदाधरसुत जयकृष्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	७०४४	सस्कारप्रयोगसग्रह		१८वीं श	८१	अपूर्ण
१०४	७०४५	सस्कारपद्धतिसग्रह		,,	२५	
१०५	५२५३	सग्रहश्लोका		१९२३	२१	
१०६	४५३५	सवर्त्तस्मृति	सवर्त्तऋषिप्रोक्त	१८४०	८	
१०७	४९७६	सापिण्ड्यविवेक	श्रीशूलपाणि	१७१९	५	लि क श्रीरत्नाकर भट्टात्मज भट्ट शकर । लि स्था काशी ५१वा पत्र अप्राप्त ।
१०८	५५४९	हारीतस्मृति	हारीतऋषिप्रोक्त	१८१०	६८	लि क आशानन्द व्यास
१०९	४५८९	हेमाद्रिकालनिर्णय	भट्टोजीदीक्षित	१८वीं श	४५	लि क. नाथूराम भालूक
११०	७७७०	त्रिशच्छ्लोकीभाष्य		१८८४	३१	
१११	५३४२	त्रिशच्छ्लोकीसटीक		१८५४	१८	
११२	४९३५	,,		१८९६	१७	लि क सम्पतराम
११३	६९०३	ज्ञानभास्कर		१९वीं श	१३८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६६२८	अक्षयतृतीयाकथा	पद्मपुराणोक्त	१९३१	२	लि क देवकृष्ण दाधीच पुरोहित चक्षुपुरे (चाकसू ?)
२	४४९१	अगस्त्यकथा	पद्मपुराणोत्तरखण्डोक्त	१९वी श	८	
३	४९९४	,, (अर्घ्यदानविधि·)	भविष्योत्तरपुराणगत	१९वीं श	८	
४	६६७३	,,	,,	१८३१	४	लि. क रामचन्द्र
५	४२२०	अगस्त्यार्घ्यपूजाकथा	,,	१८१४	८	लि क केसोराम कान्यकुब्ज ब्राह्मण नगर बोली
६	५३७६(१४)	अनन्तनाथकथा	गोतमप्रोक्त	१८वीं श.	१९९ से २०२	
७	४१२२	अनन्तव्रतकथा	भविष्योत्तरपुराणगत	१९वीं श	१०	
८	६६७०	,,	,,	१८३२	८	
९	६६५४	अर्बुदमाहात्म्य	स्कन्दपुराणोक्त	१९०५	१३१	
१०	६८११	इतिहाससमुच्चय		१९४३	४६	
११	४१९०	एकलिंगमाहात्म्य	वायुपुराणोक्त	१९१३	१०४	लि. स्था.—उदयपुर
१२	४०४४	एकादशीमाहात्म्यकथा सार्थ	विविधपुराणसकलित	१८१३	२८	अर्थ राजस्थानीमें है लि. क रामचन्द ग्राम कागणी मेवाडदेशे
१३	५५५२	एकादशीकथासग्रह	,,	१९०८	९१	लि क. यज्ञेश्वरदेव, आद्य ४ पत्र अप्राप्त
१४	६४०९	,, (अपूर्ण)	,,	१९वीं श.	१६	भाद्रपद से फाल्गुन क्र एकादशी कथापर्यन्त
१५	६७२९	ऋषिपञ्चमीकथा	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८१६	७	
१६	६६६९	ऋषिपञ्चमीव्रतोद्यापन	भविष्योत्तरपुराणगत	१९वीं श.	७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	६५६६	कमलैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१९वीं श	४	
१८	६७०४	कामदैकादशीकथा	भविष्योत्तरपुराणोक्त	"	४	कामदा एकादशी पुरुषोत्तममास की एकादशी होती है
१९	५४४४	कार्तिककृष्णैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्मवैवर्तपुराणोक्त	१८४५	८	'रमा' एकादशी लि क घनश्याम
२०	४०९७	कार्तिकमाहात्म्य	स्कन्दपुराणोक्त	१६७७	४७	लि. क गोविन्दव्यास गुर्जरगौड अजयपुर
२१	४१०७	"	पद्मपुराणोक्त	१८५९	४५	लि क. नन्दूभाट्ट विद्यार्थी
२२	४२०९	"	"	१८५१	५१	लि क गंगाविष्णु कान्यकुब्ज, बोली नगर
२३	४५५४	" (एकादशी कथा संग्रह)	मत्स्याद्यनेकपुराणोद्धृत	१८६१	७१	२०वा पत्र अप्राप्त लि क रत्नेश्वरव्यास, जयपुर
२४	६५४८	"	पद्मपुराणोक्तपुराणोक्त	१९वीं श	३८	
२५	६५९७	"	"	"	५१	
२६	६६०७	"	ब्रह्मनारदीयपुराणोक्त	१८७९	५७	
२७	६६०८	"	पद्मपुराणोक्त	१९वीं श	२२	
२८	६५७८	कार्तिकशुक्लानवमीमाहात्म्य	"	१९वीं श	६	अक्षयनवमीमाहात्म्य
२९	४४४१	कूर्मपुराण	वेदव्यास	१८४८	२००	१९५वा पत्र अप्राप्त लि क मोतीराम
३०	४४४३	केदारखण्ड	स्कन्दपुराणोक्त	१७९९	९७	शैवप्रकरण
३१	४६०१	गङ्गामाहात्म्य	"	१९वीं श	७	जागेश्वरस्यपुस्तकम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४४९०	गणेशचतुर्थीकथा	स्कन्द०	१९०४	५	लि क नन्दरामव्यास
३२	४२५४	गयामाहात्म्य	वायुपुराणोक्त	१७४१	२८	लि क नृसिंह भट्ट तर्ककेक्षरी
३३	४५५५	गरुडपुराण	वेदव्यास	१९वीं श	८१	
३४	६६०६	गरुडपुराणसारोद्धार	,,	,,	९६	प्रेतमञ्जरी
३५	६४१०	,,	,,	१९१९	३६	,
३६	६६१०	गोपाष्टमीकथा	भविष्योत्तर०	१९वीं श	१	
३७	६६८५	गोत्रिरात्रव्रतकथा	स्कन्द०	१८९९	४	
३८	५५०९	चातुर्मासमाहात्म्य (अपूर्ण)	,	१९वी श	३३	
३९	६६१८	चान्द्रायणव्रतकथा	भविष्योत्तर०	,,	२	
४०	६७०८	ज्येष्ठकृष्णैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्माण्ड०	,,	२	
४१	४४८६	जन्माष्टमीकथा	भविष्योत्तर०	१८५७	७	लि क व्यास रतनेश्वर, श्रीभिनमालमध्ये
४२	५४४२	जन्माष्टमीजयन्तीनिर्णय	,,	१९०७	६	लि क. रामनारायण, हरिवल्लभजीभट्टस्य
४३	६५८०	जन्माष्टमीव्रतकथा	,,	१८६४	४	लि क देवकृष्णभट्ट
४४	५९९१	तत्त्वदीपभागवतम् (पूर्वखण्ड)	वल्लभ (विष्णुस्वामिमतवर्ती)	१७६४	११०	नवानगरे लिखितम्
४५	५९९२	,, (उत्तरखण्ड)	,,	,,	८९	,,
४६	७११९	तुलसीमाहात्म्य	पद्म०स्कन्द०विष्णुधर्मोत्तर०	१९वीं श.	३१	
४७	६७२२	तुलसीविवाहमहिमा	विष्णुपुराणोक्त	१९वीं श	६	
४८	६६२६	द्वादशीमाहात्म्य	गरुड०	१७७६	५	
४९	६६१२	दशादित्यव्रतकथा	स्कन्द०	१९वीं श	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०	६४८९	दानभागवत	कुबेरानन्दवर्णि	१९वीं श	११२	
५१	४२१८	देवप्रबोधिनीएकादशीव्रतकथा	विष्णु०	१८५३	१२	लि क गङ्गाविष्णु कान्यकुब्ज बौंलीनगर(जयपुरराज्यान्तर्गत)
५२	५२०५(१५)	धरणीशेषसवाद	ब्रह्माण्ड०	१८वीं श	६४–६६	
५३	६८३६	नासिकेतपुराण		१८६५	९२	गुटका–जिसमें रामगीता, राम-स्तोत्र, कर्मविपाक व पाण्डवगीता भी हैं
५४	५९५२	नित्यविहारलीला	लक्ष्मीधरपुत्र रामशिष्य ?	१६४५	१०१	माथुरराजद्वारकादास कारायित टिप्पणी
५५	६७०९	निर्जलैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्मवैवर्त्त०	१८६१	४	
५६	४४८७	नृसिंहचतुर्दशीव्रतकथा	पद्मपुराणोक्त	१९वीं श	७	
५७	६६०१	,,	,,	१८७७	४	लि क रामलाल
५८	६६७१	प्रदोषव्रतकथा	स्कन्द०	२०वीं श	११	
५९	४५४८	पञ्चपर्वमाहात्म्य	गरुड०वराह०नारदीय०	१९२३	११	लि क घनश्याम ब्राह्मण पाराशर
६०	५५४२	पद्मपुराण (पातालखण्ड)		१८३८	४३	१४वां पत्र अप्राप्त
६१	६५९०	पुरुषोत्तममासमाहात्म्य	स्कन्द०	१८६६	४१	लि क रामनारायण मिश्र
६२	६८०७	पुरुषोत्तमसहस्रनाम टीका (अपूर्ण)	शङ्कराचार्य	१९वीं श.	४३	विष्णुसहस्रनाम
६३	७७७७	पुष्करणोपाख्यान	स्कन्द०	,,	६	
६४	४६२२	पुष्करप्रादुर्भाव (सटीक)	टी विश्वेश्वर	१७६५	८३	'गौडज्ञातीयभट्टरामनन्दनात्मजेन वीरनन्दनेन लिखित व्यास क्षेत्रे' ३६वां ९२वां पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६५	६५८६	पुष्करमाहात्म्य	पद्म०	१७६६	६६	
६६	७०१७	,,	,,	१८३७	५६	लि क. मोतीराम मथ, रूपनगरमध्ये लालदासजीपठनार्थं सलेमाबाद
६७	७०३३	,,	,,	१८वीं श	२१	आद्यपत्र अप्राप्त
६८	७६०६	,,	,,	१७६५	६०	आद्य २ पत्र अप्राप्त
६९	४१०१	ब्रह्मवैवर्त्तपुराण (गणपतिखण्ड)		१८६१	६६	
७०	६९६०	,,		१९वीं श	१०१	
७१	६९६३	,,		,,	६६	
७२	६९५९	,, (प्रकृतिखण्ड)		,,	१७४	
७३	६९६१	,, (ब्रह्मखण्ड)		,,	७७	
७४	६५१२	बृहन्नारदीयपुराण		१७९८	१३३	लि क जतीलालजी सवाई जयपुरे महाराजाधिराज सवाई जयसिंहराज्ये
७५	५२१२	भागवत (प्रथम से दशमस्कन्धपर्यन्त) सचित्र		१८वीं श.		चित्र स० ६
७६	५४९५	भागवत (प्रथम तीन स्कन्ध)		,,	६७	
७७	४२३०	,, (द्वादशस्कन्ध)		१८७१	११३	*लि क घनश्यामपल्लीवाल
७८	४३१७(१)	,, सजिल्द सटीक (प्रथम-द्वितीयस्कन्ध)	श्रीधर स्वामी	१९वीं श	५२	लिपि सुन्दर,आद्यन्त पत्रोपर चित्र
७९	४३१७(२)	,, (तृतीयस्कन्ध)		,,	१४०	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८०	४३१७(३)	भागवत (चतुर्थस्कन्ध)		१९वीं श	१–१२१	लिपि सुन्दर आद्यन्तपत्रों पर चित्र
		(पञ्चम ,,)			१–९४	,,
८१	४३१७(४)	,, (षष्ठस्कन्ध)	टी श्रीधरस्वामी	,,	१–७८	आद्यन्त पत्र सचित्र, लिपि
		(सप्तमस्कन्ध)			१–७८	सुन्दर एक जिल्दमें
८२	४३१७(५)	,, (अष्टमस्कन्ध)	,,	,,	१–७२	,,
		(नवमस्कन्ध)	,,		१–६२	
८३	४३१७(६)	,, (दशमस्कन्धपूर्वार्द्ध)		,,	१७७	,,
८४	४३१७(७)	,, (दशम उत्तरार्द्ध)	,,	,,	१६१	,,
८५	७०२१	,, सटीक	टी०श्रीधरस्वामी	१७९८	११	लि स्था मालपुरा
८६	७०३२	,, ,,	,,	१८वीं श	९५	प्रथम स्कन्ध (अपूर्ण)
८७	७०२७	,, (दशम पूर्वार्द्ध)		१८२९	८८	प्रति कीटभुग्न
८८	७०२८	,, (दशम उत्तरार्द्ध)		,	८६	
८९	६४७७	,, क्रमसन्दर्भटीका (प्रथमस्कन्ध)		१८वीं श	२४	"तौ सन्तोषयता मन्तौ श्रीलरूप-सनातनौ। दाक्षिणात्येन भट्टेन पुनरेतद्विविच्यते ,,
९०	६४७८	,, क्रमसन्दर्भटीका (द्वितीयस्कन्ध)		,,	१७	,,
९१	६४८९	,, (चतुर्थस्कन्ध)		,,	२१	,,
९२	६४८०	,, (सप्तम ,,)		,	६	,,
९३	६४८१	,, (अष्टम ,,)		,,	९	,,
९४	६४८२	,, (नवम ,,)		,,	६	,,
९५	६४८३	,, (दशम ,,)		१७९८	१०९	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
९६	६४८४	भागवत (एकादशस्कन्ध)		१८वीं श.	३६	
९७	६४८५	भागवतक्रमसन्दर्भटीका द्वादशस्कन्ध		,,	८	*
९८	७८२२	भागवतके सचित्र पत्र		१९वीं श.	१४०–१४६	चित्र स० १२
९९	६९२५	भागवत सटीक	टी० श्रीधरस्वामी	१८वीं श.		
१००	६९६४	,, ,,	,,	१९वीं श.	५९९	
१०१	६७०६	,, मूल		,,	१५३	पञ्चमस्कधके चतुर्थ अध्याय तक
१०२	६४७४	,, (प्रथमस्कन्ध) सुबोधिनीटीका	टी० वल्लभाचार्य	१७९७	११६	
१०३	६४७५	,, द्वितीयस्कन्ध ,,	,,	१७९८	९०	
१०४	६४७२	,, सटीक द्वितीयस्कन्ध	टी० श्रीधरस्वामी	१८वीं श	५७	४८वां पत्र अप्राप्त
१०५	६५४९	,, तृतीयस्कन्ध	,,	१९वीं श.	११८	
१०६	६५५०	,, चतुर्थस्कन्ध	,,	१८०६	९७	लि क. भूधरमहाजन भानपुर-मध्ये
१०७	६५५१	,, पञ्चमस्कन्ध	,,	१७८९	८३	लि क. खुश्यालचन्द बघवाडा-ग्रामे राजश्री बेदला डुगरसिहजी राज्ये
१०८	६५५२	,, षष्ठस्कन्ध	,,	वीं श.	६२	पत्र २८ से ३० तक अप्राप्त
१०९	६५५३	,, सप्तमस्कन्ध	,,	१८१०	६७	२१वा पत्र अप्राप्त
११०	६५५४	,, अष्टम स्कन्ध	,,	१९वीं श.	५८	लि क गोवर्द्धनदास जती सवाई जयपुर मध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१११	६५५५	भागवत नवमस्कन्ध	टी० श्रीधरस्वामी	१६वीं श	५१	
११२	७८३४	„ दशमस्कन्धके सचित्रपत्र		„	६	६ पत्रोंमें ११ चित्र
११३	५१७८	भागवत दशमस्कन्ध		१६६८	४०	जीर्ण
११४	६४५०	„ „		१६८५	२६२	लि क देवजी [illegible]
११५	५१७६	„ „		१६वीं श	३	३१वाँ अध्यायमात्र लि क दुर्लभराय [illegible] सुत
११६	५१८४	„ „		१८वीं श	३६२	अन्तमें श्री[illegible] और [illegible]
११७	६४७३	भागवत दशमस्कन्ध रासपञ्चाध्यायी वैष्णवनन्दिनीटीका	टिप्पणिकार विद्याभूषण	१६वीं श	५०	
११८	६४६०	„ दशमस्कन्ध [illegible]विवृति-प्रकाश	विट्ठलदीक्षित	„	३६	
११९	६४७६	„ दशमस्कन्ध सुबोधिनीटीका	वल्लभाचार्य	१८वीं श	१८२	
१२०	६८१५	„ भागवत दशमस्कन्ध पूर्वार्द्ध सटीक	टी० श्रीधरस्वामी	१६वीं श	१११	
१२१	६८१६	„ उत्तरार्द्ध	„	१६५५	६८	लि क. [illegible]
१२२	६४४६	„ दशमस्कन्ध (उत्तरार्द्ध) सटीक	टी० परमानन्द	१७५८	१३०	[illegible]
१२३	६५५६	„ „ (उत्तरार्द्ध)		१६वीं श.	६८	
१२४	६५५७	„ एकादशस्कन्ध सटीक	टी० श्रीधरस्वामी	„	१२५	
१२५	६५५८	„ द्वादश „ „	„	१८वीं श	१८	
१२६	६४६५	„ [illegible] प्रकाश		१६वीं श	११	[illegible]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२७	६६१७	भागवतपुराणविषयशकानिरास	पुरुषोत्तम(वल्लभाचार्यचरणानुचर)	१९वीं श.	४	
१२८	४१०२	भागवतमाहात्म्य	पद्मपुराणोक्त	,,	१८	लि. क व्रजलालगौड, ब्राह्मण गुर्जरगौड, ग्राम खडारी
१२९	५५४१	भागवत माहात्म्य	पद्म०	१८वीं श	९	
१३०	५५५७	,,	,,	१९वीं श	२८	पत्र १० से १३ तक अप्राप्त
१३१	६५९८	,,	,,	१८५५	१५	लि. क. कवर कालूराम जयपुर मध्ये
१३२	७५८१	,,	,,	१८४५	२५	३रा पत्र अप्राप्त लि. क लिषमीराम जोसी नेवटा नगरमध्ये
१३३	६४८८	भागवतसन्दर्भे तत्वसन्दर्भ (प्रथम)	जीवक	१८२५	१३	*
१३४	६४८७	,, ,, भगवत्सन्दर्भ.(द्वितीय.)	,,	१९वीं श	७८	
१३५	६४८६	,, ,, कृष्णसन्दर्भः (तृतीय)	,,	,,	८०	
१३६	५२०५(११)	भागवतानुक्रमणिका		१८वीं श	४२–४७	
१३७	५७३७	भौमव्रतकथा	भविष्योत्तर०	१८९९	३	लि क व्रजवासी ज्योतिर्विद सारस्वतकुलोत्पन्न रीमा (रीवा)
१३८	६७३९	मत्स्यदेशमाहात्म्य	,,	१९वीं श.	१७	
१३९	७५९३	मथुरामाहात्म्य	आदिवराहपुराण०	१८९९	५०	आद्य ४ पत्र अप्राप्त
१४०	७३०७	,, (अपूर्ण)	,,	१९वीं श.	४९	
१४१	६६११	महालक्ष्मीव्रतकथा	भविष्योत्तर०	१९१९	९	
१४२	४५४९	माघमाहात्म्य	पद्म०	१८९२	६४	वसिष्ठ दिलीपसवाद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४३	६५६३	माघमाहात्म्य	पद्म०	१९वीं श	३६	
१४४	६५६६	,,	,,	१८८९	४१	लि क. रामसुत रामनारायण सवाईजयपुरमध्ये
१४५	५५७५	मार्गशीर्षमाहात्म्य	स्कन्द०	१८३१	३८	पत्र ३५, ३६ अप्राप्त लि क. लालविहारी
१४६	६५६७	,,	,,	१९वीं श.	१४	
१४७	६७११	यमद्वितीयाकथा		१८८७	१	लि क गिरिधारी
१४८	५८७२	रामनवमीव्रतकथा	लिङ्गपुराणोक्त	१८८९	६	लि क शंकरप्रधान [illegible]
१४९	६६६७	,,	अगस्त्यसंहितोक्त	१८९२	४	लि. क रामनारायण
१५०	६५६५	रामायणमाहात्म्य	स्कन्द०	१८८९	८	लि क रामसुत रामनारायण
१५१	६७७८	रासक्रीडा	भागवतोक्त	१९१६	२	
१५२	५१७३	रासपञ्चाध्यायी	,,	१८वीं श	३४	
१५३	४६३७	लिङ्गपुराण	वेदव्यास	१८१४	३७	लि क कृपाराम
१५४	६४६६	,,	,,	१९वीं श.	१८९	
१५५	६७४०	लोहार्गलमाहात्म्य	वराहपुराण	२०वीं श.	३	
१५६	६६६८	वटत्रिरात्रिकथा	भविष्योत्तर०	१७६६	६	
१५७	५४६५	विष्णुपुराण (६ खण्ड)	वेदव्यास	१९वीं श	१८१	
१५८	६५६४	वैशाखमाहात्म्य	स्कन्द०	१९१५	४६	लि क रामनारायणमिश्र
१५९	६६४७	,,	पद्म०	१८८२	६३	लि. क गंगाराम सवाई जयपुरमध्ये सवाई प्रतापसिंह राज्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६०	५४८५	शिवपुराण	वेदव्यास	१८१७	२०६	ग्राम खाचरोद में लिखित
१६१	४४८८	शिवरात्रिकथा	स्कन्दपुराणोक्त	१८वीं श	४	लि क संभूकचन्द
१६२	६६०९	,,	स्कन्दपुराणान्तर्गत	१९वीं श	२	लि क कँवर कालूराम
१६३	५४४५	शिवरात्रिव्रतकथा	लिंगपुराणोक्त	१८१६	१४	लिखित जयपुर मध्ये
१६४	६६१४	सक्रान्तिमाहात्म्य		१८९०	१	लि क कँवर कालूराम
१६५	६६४९	सकष्टचतुर्थीकथा	स्कन्दपुराणोक्त	१९३७	४	लि क. जोशी मोडराम पाटोद्यो बूंदी मध्ये
१६६	६७१२	संकटचतुर्थीव्रतकथा	नारदीयपुराणोक्त	१७३०	५	
१६७	५२५७	सत्यनारायणव्रतकथा	स्कदपुराणोक्त	१९३४	१२	
१६८	४१००	सत्योपाख्यान	श्रीव्यास	१९वीं श	६५	
१६९	५६७८	हरितालिकाव्रतकथा	भविष्यरोत्तरपुराणान्तर्गत	१८९५	४	लि क. व्रजवासी सिल्लुः काश्याम्
१७०	६४०३	हरितालिकाव्रतकथा	भविष्योत्तरपुराणान्तर्गत	१९वीं श	३	प्रथम पत्र अप्राप्त
१७१	४६३८	हरिवशपुराणरसकुल्याख्याव्याख्या	हितहरिवशगोस्वामी	१८३५	५२९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४५४५	अध्यात्मविद्योपदेशविधि(गीतागूढार्थ-दीपिका)	शंकराचार्य	१७६०	६	लि. क मयाराम लि. स्था मालपुरा
२	४५६४	अन्त करणबोधसविवृत्तिकविवृति	वल्लभ	१८वीं श.	१६	
३	४२४४	अनुस्मृति	महाभारतगत	,,	१३	
४	४६४६	अनुस्मृति	महाभारतशान्तिपर्वोक्त	१६वीं श	६	
५	४५८८	अपरोक्षानुभूति	शकराचार्य	१८वीं श.	७	
६	५२३२	,,	,,	,,	१०	
७	६७१०	,,	,,	२०वीं श	६	
८	७७५७(४)	,,	,,	१८५०	१७०–१८६	
९	५३५१	अभयप्रदानमार	वरवाचार्य वेंकटनायाचार्यशिष्य	१८६१	१५	
१०	६६४२	अर्जुनगीता		१८६६	१२	लि क. शिवराजगिरि
११	५५४७	अर्थपञ्चकम् (रामानुजसम्प्रदायस्य)	गोपदास	१८३७	१०	लि. क. तुलसीदास वैष्णव पुष्कर मध्ये
१२	५५४३	अष्टावक्रटीका	विश्वेश्वर	१७१४	७४	लि क गोकुल वैरागी शाहगज
१३	५२१४(२)	अष्टावक्रटीका (अवधूतानुभूति)	विश्वेश्वर	१८६०	३२	लि. क. हरिदेव
१४	६५६६	अष्टावक्रटीका (वाक्यसुधाख्या)	,,	१६वीं	४४	
१५	४६०४	अष्टावक्रसूक्त	अष्टावक्र	,,	४३	
१६	४६०६	अष्टावक्रसूक्तसटीक (त्रिपाठ)	टीका—विश्वेश्वर	१८०५	२७	लि क रामेश्वर शिवात्मज
१७	७७५७(७)	आत्मनिरूपण	शकराचार्य	१८५०	२२०–२२२	
१८	४५६१	आत्मबोध	,,	१७६६	७	
१९	४६११	,,	,,	१८वीं श	६	लि क. दयावत्स

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०	७७५७(६)	आत्मबोध	शकराचार्य	१८५०	२१०–२१९	
२१	६६७६	आत्मबोधप्रकरण	,,	१९वीं श.	१७	
२२	६६२७	आत्मबोधव्याख्या (विद्वज्जनानन्ददायिनी, बालबोधिनी	शकराचार्यनारायणतीर्थ	१७७४	२३	लि क. रामकृष्ण
२३	४१४१	आत्मबोधसटीक	शकराचार्य	१८वीं श	१७	
२४	४६१२	आत्मबोधसटीक (प्रकाशिकाख्या)	टीका गोविन्दाचार्य	,,	१६	
२५	५६१२	आत्मबोधसटीक	शकराचार्य	१९वीं श	१२	
२६	६३५४	आत्मानात्मविवेक		१८वीं श.	९	
२७	६१५४(२)	उज्ज्वलनीलमणि विवृति	रूपसनातन	१८१४	१७६	
२८	४५७८	उत्तरगीता	अश्वमेधपर्वगत	१९वीं श	१४	
२९	५६१६	उपदेशपञ्चकव्याख्या	शकराचार्य, टीका–भूधर	,,	४	
३०	५५०३	कर्णानन्दसटीक (अर्थकौमुदीनाम्नी)	कृष्णदास, टीका–प्रबोधानन्द सरस्वती	१८०६	९२	रचनाकाल स. १६३५
३१	४५७७	कुम्भकपद्धति	रघुराम शिवरामसुत	१९वीं श	२१	
३२	७०६९	कृष्णसन्दर्भ	जीवगोस्वामी	१८२०	२४३	लि. क. व्यास हरिलाल जूनियावासी; पत्र २१, २२ अप्राप्त
३३	५९८५	,,	,,	१८वीं श.	१५६	
३४	४५९७	गर्भगीता	ब्रह्मज्ञानतत्त्वसार	,,	९	
३५	७६१०	गीतासारोपनिसत्		१९वीं श.	४	लि. क. केशवदास
३६	६७८२	गोरक्षशतक		,	१२	
३७	५४०४	गोविन्दगुणानुवादसटीक	कृष्णदास	१९४९	३८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८	४५८७	चन्द्रोदयविलास	चन्द्रसिंह	१८वीं श	६४	रचनाकाल १६६५
३९	६२०१	चित्रदीपव्याख्यान	रामकृष्ण	"	३०	प्रति जीर्ण व कीटविद्ध है
४०	६०६९	चित्रदीपसटीक	"	१९वीं श	३०	
४१	६५६०	चैतन्यचरितामृत		१९०१	४१	
४२	५२०५(८)	जलभेद	वल्लभाचार्य	१८वीं श	४०-४१	
४३	६५०६	जलभेदटीका	कल्याणराम	१७२८	८	
४४	४३८१	तत्त्वभागवत		१८वीं श	१२७	अपूर्ण
४५	५५२६	तत्त्वमुक्तावली	पूर्णानन्द श्रीगौड	१८४६	६	
४६	५५९९	तत्त्वयाथार्थ्यदीपनम्	गणेशदीक्षित	१९वीं श.	२३	
४७	७१६१	तत्त्वसन्दर्भ	जीवगोस्वामी	१८वीं श	१८	
४८	७७५७(५)	तत्त्वसार	ब्रह्मचैतन्यमुनि	१८५०	१८९-२०९	
४९	५३८५(१)	"	"	१९वीं श		
५०	६०५९	तत्त्वनयचूलिका	वरदार्य	१८४७	१३	
५१	४५४६	तत्त्वानुसधान	महादेव सरस्वती मुनि	१७९५	१५	लि क. मयाराम
५२	६०७०	"	"	१९०१	३६	
५३	६१७३	"	"	१८वीं श.	४६	
५४	६४९२	"	"	१८८६	३०	
५५	६७०५	द्वादशमहावाक्यविवरण		१८७५	३८	लि क हुगेराम द्वे भावनगर
५६	७७५७(२)	द्वादशमहावाक्यसिद्धात		१८५०	५६-१४०	
५७	६८०६	दशश्लोकीटीका (तत्त्वसारप्रकाशिनी)	नन्दराम	१८२१	८	लि क हरचन्द्र, नागपुर
५८	६०६१	नाटकदीपव्याख्या	रामकृष्ण विद्वान	१९वीं श	५	०

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५९	७११७	नारदगीता		१९वीं श.	२	
६०	५२०५(१०)	निरोधलक्षण	वल्लभाचार्य		४२वा	
६१	७५७६	निरोधलक्षणटीका	,, टी० हरिराय	१७७९	२७	प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
६२	५२०५(४)	प्रबोधः	विट्ठलदीक्षित	१८वीं श	३६–३७	
६३	५६५२	प्रश्नावली	जडभरत (माधवानदशिष्य)	१९वीं श	८	
६४	५७२५	प्रस्थानभेद	मधुसूदनसरस्वती	,,	१८	
६५	५४७२	प्रीतिसन्दर्भ (षष्ठः)	जीवगोस्वामी	१८२१	७१	लि क. मोतीरामजोशी, जयनगर
६६	५४९६	प्रेमपतनाख्यसन्दर्भसटीक	रसिकोत्तस	१८वीं श	८०	
६७	६७१६	पञ्चघाटीव्याख्या		१९वीं श.	१२	
६८	७०३१	पञ्चदशीटीका	टी० रामकृष्ण	१८९०	४१	
६९	७७८७	पञ्चदशीसटीक	,,	१८वीं श	१२५	
७०	५२९४(१)	पञ्चीकरणप्रकरण (अवधूतानुभूति)	टी० विश्वेश्वर	१८९०	१५	लि क हरिदेव
७१	५७८२	पञ्चीकरणसटीक	टी० आनन्दगिरि	१९१६	१६	
७२	६१५५	पद्यावली	योगेश्वर	१८८८	४२	
७३	५३८५(२)	परमात्मप्रकाश		१६वीं श		
७४	७०६८	परमात्मसन्दर्भ	जीवगोस्वामी	१८२०	२७	लि. क. हरिलाल व्यास
७५	६१३४	परिभाषावृत्तिः	विद्याविलास	१७२४	१३	आद्य २ पत्र अप्राप्त
७६	४२१४	पाण्डवगीता		१९वीं श	१७	
७७	४२४०	,,		१८वीं श.	१७	
७८	४५५६	,,		१९वीं श.	८	लि क जयकृष्ण
७९	५११२	,,		,,	११	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८०	७७०६	पाण्डवगीता		१८०४	६	लि क. परशुराम व्यास
८१	७८१६(४)	,,		१८३३		लि क. वावा कृपाराम
८२	५२०५(५)	पुष्टिप्रवाहमर्यादा	वल्लभाचार्य	१८वीं श	३७–३८	
८३	५४७०	ब्रह्मसहितासटीक (पञ्चमाध्याय)	रूपगोस्वामी	१८२८	१६	लि क हरिलाल व्यास
८४	४५६८	ब्रह्मज्ञान	महादेव	१६वीं श	१३	
८५	५२०५(३)	भक्तिप्रकरण	वल्लभाचार्य	१८वीं श	३३–३६	
८६	४२६६	भक्तिरत्नावली	परमहस विष्णुपुरी	,,	६४	
८७	४२८६	,, सटीक	,,	१७५४	१२३	रचना १५५१ लि० स्था० जोधपुर
८८	६१५०	,,	,,	१८२८	३०	
८९	४२६८	भगवद्गीता		१८वीं श	१२६	आद्यन्त पत्र सचित्र
९०	४२६५	,, सचित्र		,,	६७	चित्र सख्या ६
९१	५०८६	,,		१८०५	६६	
९२	५११०	,,		१७११	८३	काशीमें लिखित
९३	६२६४	,, (सभाष्य)	रामानुजाचार्य	१८वीं श	१०२	अतिम अध्याय के ३६वें श्लोक तक है
९४	४५८५	,, सटीक		१५३८	८३	पत्र १, २८, ३३, ३४ अप्राप्त
९५	४५४३	,, गूढार्थदीपिकासहित	विश्वेश्वर सरस्वती	१७६०	२०५	लि. क वैष्णव मयाराम
९६	५४८०	,, सुबोधिनीटीका	श्रीधरस्वामी	१६२७	१०६	लि स्था श्री द्रव्यपुर लि क गौरीशकर पत्र ३, ४, ६, ८, ४६ अप्राप्त
९७	६३५६	,, ,,	,,	१७६६	१२५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९८	७०६६	भगवद्गीता (पञ्चोली)		१९वीं श.	१४१	
९९	४३१०	भगवद्गीता (भाषापद्यानुवाद सहित)	हरिवल्लभ	१८२०	१८८	लि. क. पिरागदास स्था० नटवाडा
१००	६०७७	,, सुबोधिनी व्याख्या	श्रीधर	१८४९	११३	लि. क. काशीनाथ भरतपुर
१०१	६०६५	भगवद्भक्तिरत्नावलीसटीकत्रिपाठ	विष्णुपुरी	१८३४	६७	पत्र ६६वा अप्राप्त लि. क. नरोत्तमदास वैष्णव
१०२	६३२४	,,	,,	१८७६	२९	लि क. मनुलाल
१०३	६६१६	,,	,,	१८८०	३५	लि क. जमुनादास, नाथद्वारा
१०४	७५२०	,,	,,	१९वीं श.	७४	लि क. वैष्णव गगादास, पलसरा ग्रामे
१०५	६५९२	,, सटीक	,,	१९वीं श.	७४	
१०६	७०१९	,,	,,	१८वीं श.	६७	प्रथमपत्रसचित्र
१०७	६१५४(१)	भक्तिरसामृतसिन्धुटीका (दुर्गम सगमनी)	रूप सनातन	१८१५	१४७	
१०८	६२३१	भक्तिरसामृतसिन्धुसटीकपूर्वविभाग	,,	१९२४	३३	
१०९	६४९४	भक्तिरसामृतसिन्धुबिन्दु		१९वीं श.	८	
११०	६७९७	भक्तिरहस्य	मल्लिनाथ	१७७९	३४	लि. क. सहजरामवैष्णव साहिपुरा
१११	७०७०	भक्तिसन्दर्भ	जीवगोस्वाम	१८२०	६३	लि. क. व्यास हरिलाल
११२	७०६७	भगवत्सन्दर्भ	,,	,,	५०	,, ,,
११३	५२८१	भगवद्गीता		१८११	५६	लि. क. गोविन्द लश्करी
११४	६६६६	,,		१७७९	७२	लि क शिवनाथ

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
११५	६७५७	भगवद्‌गीता		१८८६	५४	लि स्था डेरावसी
११६	७६०२	,,		१८५७	३५	लि. फ. गोडजी शोभजी
११७	७८०५	,,		१८वीं श.	११७	
११८	७७८५	,, (पचोली टीका)		१९४१	४४	एकादश अध्यायपर्यन्त
११९	५७०७	भगवद्‌गीतासभाष्य	शकराचार्य	१८वीं श	११७	
१२०	४५५१	,,	,,	,,	११	अपूर्ण
१२१	४३७२	भगवद्‌गीतासटीक	श्रीधर	१८७५	११३	
१२२	६६४०	,,	,,	१८७३	१०९	लि. फ रामचन्द्र
१२३	६९५८	,, (अर्थसग्रहटीक)			११२	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२४	६९६२	,, सुबोधिनीटीका	श्रीधर	१८वीं श.	११२	
१ ५	६५०५	भगवद्भक्तिविलासटीका	गोपालभट्ट	१८६७	६७१	लि. फ गोविन्दराम, जयनगर
१२६	६५२०	महावाक्यार्थविवरण		१९वीं श	८१	अन्तिम पत्र खण्डित
१२७	६०६६	मीमासा परिभाषा	कृष्णयाजी	१९१७	१७	लि. श्यामदास, मथुरा
१२८	६२८०(१)	मूलसूत्र	ब्रह्मसहितान्तर्गत	१९०९	१–६	लि पुजारी हरदेवदास
१२९	६२६५	यतीन्द्रमतदीपिका	श्रीनिवासदास	१८वीं श	२१	
१३०	५२९३	,,	,,	१८२३	५५	
१३१	५६५१	याज्ञवल्क्योपनिषद		१९वीं श.	२८	
१३२	५५५१	युगलचरितामृतकथा	यशोधर	१९वीं श	५८	पत्र २५, ४५, ४९वां अप्राप्त
१३३	७३३६	योगदृष्टिसमुच्चयवृत्ति	हरिभद्रश्वेतभिक्षु	१७१९	२३	
१३४	७७५७(३)	योगवासिष्ठसार		१८५०	१४०–१७०	
१३५	४५५२	,, (सटीक त्रिपाठ)	महीधर, टी० विश्वेश्वर	१७८८	२७	लि फ नारायणदास वैष्णव स्थान वृन्दावती

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३६	४४३०	योगशास्त्र	श्री पतञ्जलि	१८११	१२०	
१३७	७३४६	योगशास्त्रप्रकाश	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श.	१०	
१३८	५६०१	योगशास्त्र (वृत्ति)	,,	१६वीं श	२८	
१३९	७३२८	योगशास्त्र (चतुर्थ प्रकाशपर्यन्त)	,,	१७वीं श	२६	
१४०	४३५३	योगशास्त्रद्वादशप्रकाश	,,	१५३९	२४	
१४१	४३८६	,	,,	१५६७	२०	
१४२	७४०६	योगशास्त्रप्रकाश (चतुर्थ)	,,	१६७७	१४	लि. स्था. इलदुर्ग
१४३	५५९५	योगसूत्र (अभिनवभाष्य)	भवदेवमहोपाध्याय	१९१६	३६	
१४४	५५९८	योगसूत्रभाष्य	पतञ्जलि	,,	४३	
१४५	५६२०	योगसूत्रभाष्यवृत्ति	वाचस्पति	१९२३	०	लि क साधु श्रीराम, जयनगर
१४६	५५९६	योगसूत्रवृत्ति	धारेश्वर	१९१६	३५	
१४७	४४२९	योगाख्यान (योगतत्व)	याज्ञवल्क्य	१९वीं श	४८	
१४८	४२५२	रामगीता		१८वीं श	१५	
१४९	६६६५	,,		१८३६	६	लि पुरोधा देवकृष्ण
१५०	६२२४	रामगीताविवृति	महीधर	१९००	१७	लि रामचरण
१५१	६५०३	,,	,,	१८१८	१७	लि. शुभराम
१५२	७७५७(१२)	वज्रसूची	शकराचार्य	१८५०	२३३–२४४	लि भट्ट भाष्कर काश्मीरनिवासी
१५३	६२८०(३)	,,		१९०९	१९–२०	लि. पुजारी हरदेवदास
१५४	५३००	वज्रसूचीसर्दाशिनी	श्रीनिवासदास	१८५१	३	लि घासीराम
१५५	५७३३	वाक्यसुधाप्रकरण		१९वीं श.	२७	
१५६	४५८०	,, सटीक	शकराचार्य	१८३९	१४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५७	५३२३	वाक्यार्थसंग्रह (प्रमाणसार)	शठारि ?	१६वीं श	५७	
१५८	५३६३	वार्तामाला			३१	
१५९	५२१४	विद्वच्चित्तप्रसादिनीषट्पदीटीका	कविराज भिक्षु	१८वीं श.	१७	
१६०	५४०५	विद्वन्मण्डन	श्रीविट्ठल	१६०८	६४	लि माखनलाल
१६१	६०७६	,,	,,	१६००	४६	लि शालिग्राम
१६२	४१०६	विद्वन्मोदतरंगिणी	श्रीचिरजीव भट्टाचार्य	१८४६	३४	लि. जोशी जीवणराम
१६३	५५६७	,,	,,	१६वीं श	४०	
१६४	५६५३	विरोधिपरिहार	लक्ष्मणाचार्य	१८४३	३२	
१६५	५८८६	विवेकत्रयरत्न	श्रीरामानुजदास	१८वीं श	२२	प्रथम दो पत्र अप्राप्त
१६६	५६१५	विज्ञाननौका	शंकराचार्य	१६वीं श	६	
१६७	५५४५	वेदान्ततत्त्वबोध	अनन्तराम	१६२१	३२	लि ललिताप्रसाद पारीक
१६८	७५८०	वेदान्ततत्त्वसार	रामानुजाचार्य	१६वीं श	२५	
१६९	७७०७	वेदान्तप्रश्नोत्तररत्नमाला	शंकराचार्य	,,	४	
१७०	४६३१	वेदान्तपरिभाषा	धर्मराजाध्वरीन्द्र	,,	४७	
१७१	६४६३	वेदान्तरत्नावली	परमानन्ददेव	१८८८	२५	लि रामनारायण
१७२	७७५७(११)	वेदान्तषट्पदी	शंकराचार्य	१८५०	२३२–२३३	
१७३	४१०३	वेदान्तसार	सदानन्द	१६वीं श	१४	
१७४	४११६	,,	,,	१८वीं श	१७	
१७५	४५७५	,,	कृष्णानन्द	१६वीं श.	११	पत्र २, ३ अप्राप्त
१७६	४५६६	,,	सदानन्द	,,	१६	
१७७	४६२३	,,	,,	१८४१	११	लि दुर्गादत्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	५७०१	वेदान्तसार	सदानन्द	१९वीं श	१३	लि ठक्कुर नरहरबल्लाल
१७९	६२५१	,,	,,	१८३६	२३	लि रूपराममिश्र वल्लभगढ
१८०	६२८३	,,	,,	१८वीं श	१३	
१८१	६५१८	,,	,,	१७९७	२४	लि पण्डा शिवदत्त
१८२	७६१७	,,	,,	१९वीं श	१४	
१८३	४६२१	,,	शकराचार्य	१८वीं श	१४	
१८४	४६४०	,,	,,	१९वीं श	२५	
१८५	४२७८	,, (सुबोधिनीटीकायुक्त)	नर्रासिहसरस्वती	१७२६		लि श्यामदास स्थान उरपत्तनग्राम
१८६	६१७२	वेदान्तसारटीका (सुबोधिनी)	,,	१७४०	५१	
१८७	६५७९	वेदा.तसारटीका	,,	१८८६	२९	लि रामसुख रामनारायण
१८८	६१५९	वेदान्तसिद्धातसग्रह (सटीक)	वनमाली	१८वीं श	१२३	
१८९	४५७९	वेदान्तसूत्र		१९वीं श	१९	
१९०	४५९३	वेदार्थसारसग्रह	ब्रह्मानन्द	,,	४३	
१९१	६१६५	वैकुण्ठगद्य		१८९०	१६	
१९२	५७७३	वैराग्यप्रकरणम् (रामायणान्तर्गत)	वाल्मीकि	१८वीं श.	१२९	
१९३	४५५०	शतसूत्रीयभाष्य	मू०शाण्डिल्यभाष्यस्वप्नेश्वराचार्य	१८३९	३१	लि व्यास रामरतन
१९४	७६००	शारीरकमीमासा		१८४८	१३	
१९५	५९६४	शारीरकमीमासाभाष्य(प्रथमअध्याय)	शकराचार्य	१९वीं श.	१४२	
१९६	५९६५	,, (द्वितीय अध्याय)	,,	,,	१२८	
१९७	५९६६	,, (तृतीय अध्याय)	,,	,,	१३२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९८	५९६७	शारीरकमीमासाभाष्य(चतु अध्याय)	शकराचार्य	१८७४	५३	
१९९	६२२३	,,	,,	१७३१	२१८	
२००	६२३८	,,	,,	१८५१	२३७	लि. गिरधारीरामशर्म्मा गौड
२०१	६७८३	स्वयम्बोध	ईश्वरप्रोक्त	१९वीं श	१०	
२०२	६५८१	स्वरूपप्रकरण	शकराचार्य	,,	३	लि रामनारायण
२०३	६३६७	स्वरोदय	तन्त्रोक्त	१९१३	६	लि वलूराम, दीर्घपुर
२०४	६७३०	स्वात्मनिरूपण	नारदपाचरात्रतन्त्रोक्त	१९वीं श	२०	
२०५	५७८६	स्वात्मनिरूपणप्रकरणार्याशतक	शकराचार्य	,,	११	इस ग्रन्थमे १५६ आर्या छद हैं
२०६	४६४४	स्वात्मबोध		,	२१	
२०७	५२०५(६)	सन्न्यासनिर्णय	वल्लभाचार्य	१८वीं श	३८–३९	
२०८	७५७७	सन्न्यासनिर्णयविवरण	पुरुषोत्तम	१९१३	२४	
२०९	७५८३	सन्न्यासनिर्णयविवृति	गोपेश्वर	१९वीं श	२३	
२१०	५२०५(७)	सर्वसिद्धान्तबालबोध	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३९वा	
२११	६२९६	सर्वोत्तमविवृति	श्रीवल्लभ	१९३६	४९	
२१२	५९२९	समाधितन्त्र (बालावबोधिनीटीका)	पर्वतधर्मार्थीकुन्दकुदाचार्यशिष्य	१७४९	७०	
२१३	४४९८	साख्यवृत्ति	कपिलोक्त	१८वीं श.	१५	
२१४	६७९९	सामवेदरहस्योपनिषत्		१८०३		पत्र १–३ अप्राप्त
२१५	६५६१	सिद्धातदर्पण	विद्याभूषण टी० नन्दमिश्र	१९वीं श	२१	
२१६	४५४७	सिद्धातबिन्दु	मधुसूदनसरस्वती	१७६५	१२	लि साधरामदास स्या मारोठ
२१७	७३७०	,,	,,	१७७६	५५	
२१८	५२०५(२)	सिद्धातमुक्तावली	वल्लभाचार्य	१८वीं श	३२–३३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१९	७०७१	सेवाप्रकाशशतकव्याख्या	गोस्वामी श्रीव्रजलाल	१८२४	६३	रचनाकाल १७५५, लि. क श्वेताम्बर नानिगराम पत्र ७ से २६ तक अप्राप्त
२२०	५२०५(९)	सेवाफलम्	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	४१–४२	
२२१	४५६७	हठप्रदीपिका	स्वात्माराम योगीन्द्र	१९वीं श.	२२	
२२२	५८७३	,,	,,	१८६४	२६	
२२३	६०७६	,,	,,	१८९७	२७	
२२४	६७५६	,,	,,	१७६५	१७१	लि तुलाराम
२२५	७७५७(१)	,,	,,	१८५०	१–५६	लि. काश्मीरनिवासीभास्करभट्ट
२२६	५८३३	हठरत्नावली	भट्ट श्रीनिवास	१९०४	३१	पत्र ३०वां अप्राप्त लि. व्रजवासी रीमापुरे

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६९४०	अनुमानमणिदीधिति	रघुनाथ	१९०८	२१५	लि. मथुरानाथ शर्मा
२	६५१५	अनुमितिपरामर्श	रघुदेवभट्टाचार्य	१८४९	३४	
३	६१५२	आप्तपरीक्षा	विद्यानन्द	१६७८	१३३	लि जीवेश्वर
४	४४९६	कारिकानिबन्ध	विश्वनाथ	१८वीं श	१३	
५	५९२२	किरणावलीसूत्र	उदयनाचार्य	१७०५	५२	
६	५८५६	खण्डनखण्डकाव्य	श्रीहर्ष	१९वीं श	३४१	अपूर्ण
७	५९८६	,,	,,	,,	२३२	
८	६९३९	जागदीशीन्यायव्याख्या		१९०९	११६	लि मथुरानाथशर्मा
९	४३४३	तत्त्वचिन्तामणि शब्दखण्ड	श्रीगणेश्वर	१७वीं श.	१४५	
१०	६१८१	तत्वदीपिका	अमृतचन्द	१८वीं श	१०२	
११	४४९६	तर्कचन्द्रिका	विश्वेश्वराश्रम	१८१४	२१	लि शम्भूराम
१२	६८७४	तर्कप्रदीप	भवदेव	१९वीं श	९	
१३	६०२१	तर्कभाषा	केशवमिश्र	१८११	२९	पत्र १९वा अप्राप्त
१४	६०४२	तर्कभाषाटीका(भावार्थदीपिका)	गौरीकान्तभट्टाचार्य	१८वीं श.	६२	
१५	४४९५	तर्कसग्रह	अन्नभट्ट	१९वीं श	६	
१६	४५००	,,	,,	१८०५	११	लि चैनराम, गीजगढ
१७	५३२५	,,	,,	१८३६	३	
१८	६०३७	,,	,,	१८वीं श	७	
१९	६३६५	,,	,,	१९००	८	पत्र ६ठा अप्राप्त
२०		,,	,	१९००	२३	लि प पन्नालाल, लश्कर
२१	६९९४	,,	,,	७३२	९	लि श्रीगोविन्दभट्ट

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२	७७१२	तर्कसग्रह	अन्नभट्ट	१८९२	६	लि. व्रजवासी सिल्लुः
२३	६१७१	तर्कसग्रहतत्वदीपिका	मदनभट्टोपाध्याय	१८९४	२४	लि. गोस्वामी बलदेव
२४	६८९२	तर्कसग्रहन्यायबोधिनीटीका	गोवर्द्धनसुधी	१८९१	२३	
२५	४४३६	तर्कामृत	जगदीशभट्टाचार्य	१०१५	१३	लि रामनारायण मिश्र
२६	४३४१	न्यायरत्नप्रकरण	शशधर	१६वीं श.	३८	
२७	६९६६	न्यायसिद्धांतमञ्जरी	चूडामणिभट्टाचार्य	१८८४	३१	
२८	५३३५	न्यायसिद्धान्तमञ्जरीतर्कप्रकाशाख्य-दीपिका	टी० शितिकठशर्म्मा	१८वीं श	६२	
२९	५९०४	न्यायार्थमजूषा (न्यायब्रहद्वृत्ति)	हेमहस	१५१५	६७	
३०	७२४५	नयचक्र	देवसेनपण्डित	१८१५	११	पथम पत्र अप्राप्त लि साधु सुखरामदास शहर बेथममध्ये
३१	७३५७	नयचक्र (सुखबोघार्थमालापद्धति)	देवसेन	१८१३	६	लि. सुज्ञानसागर
३२	७५८९	नयचक्र	,,	१९०३	४	लि हमीरविजय
३३	७४१४	,,	सिद्धसेन	१७८६	५	लि ऋषिसुखदेव
३४	६५१६	निश्चयतत्वनिरुक्ति	रघुदेव तर्कालिकार	१९वीं श	८	
३५	५९२६	प्रमाणमजरी	सर्वदेव	१७वीं श	७	
३६	५९२३	प्रमाणमजरीटीका	टी० अद्वयारण्य	१६वीं श.	७	
३७	४४३१	पदार्थमाला	जयराम न्यायपचानन	१६९६	१५९	
३८	५१७२	भाषापरिच्छेद	भट्टाचार्य सिद्धान्तपचानन	१८२३	२८	
३९	६६५१	,,	सिद्धान्तवागीश	१९वीं श	८	
४०	६७१८	भाषारत्न	श्रीकणाद	,,	४७	११वा पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१	७७१४	मुक्तावलीकारिका	पचानन भट्टाचार्य	१८९२	६	लि व्रजवासी सिल्लु'
४२	५९३९	रत्नाकरावतारिकापजिका	देवसूरि	१७००	२५	लि तीर्थचन्द्रगणि
४३	४४३८	शब्दनिरूपण पूर्वार्द्ध		१७वीं श.	१३१	
४४	७२५५	षडदर्शनसमुच्चयवृत्ति	हरिभद्रसूरि	१६१२	२०	
४५	७३६०	षड्दर्शनसमुच्चयटीका	हरिभद्रसूरि	१७वीं श	२६	
४६	४३५०	षड्दर्शनसमुच्चयसावधूरि	हरिभद्र	१७१०	६	लि. मुनिप्रकाशपाल स्थान- सिरोही
४७	७४८६	स्याद्वादमजरी	हेमचन्द्राचार्य	१५२१	६९	
४८	७३४८	,,	,	१५वीं श	५३	
४९	४४१६	सन्देहदोलावलीसटीक	जिनदत्तसूरि	१६वीं श.	२०	लि नयनसुन्दरगणि
५०	४३४२	सप्तपदार्थी	शिवादित्य	१७वीं श	७	
५१	५१८८	,,	,,	,,	६	
५२	५९००	सप्तपदार्थीटीका	शेषानन्तपण्डित	१७०४	२५	प्रथम पृष्ठ शोभन
५३	७१६०	सप्तपदार्थीवृत्ति	बलभद्र	१७वीं श	९	प्रथम पत्र अप्राप्त
५४	५४४६	समासवाव	जयराम भट्टाचार्य	१९वीं श	११	
५५	५१३३	सिद्धान्तचन्द्रोदय (तर्कसग्रहटीका)		१८वीं श	५९	प्रथम पत्र अप्राप्त
५६	४४३७	सिद्धान्तमुक्तावली	विश्वनाथ पचाननभट्टाचार्य	१९वीं श.	१२०	
५७	६९५५	,,	,,	१८८४	७३	
५८	५६६४	,,	प्रकाशानद	१८१०	५७	
५९	६६३८	,,	विश्वनाथ	१८६४	९५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६१०२	अनिट्कारिका		२०वीं श.	३	
२	६११७	,,		१९वीं श.	३	
३	६११२	,,		,,	३	
४	५९८१	अनुबन्धफलसावचूरिपचपाठ	हेमचन्द्र	१८वीं श	१	
५	६६१९	अव्ययव्याख्या			५	लि.नन्दराम ब्राह्मण सवाईजयनगर
६	४३९३	अव्ययव्याख्यान		१९वीं श	४	
७	६७००	अव्ययार्थप्रकाश	पतञ्जलि	१८४०	७	लि. गगाविष्णु
८	५०३२	अष्टाध्यायी व्याकरण	पाणिनि	१७९९	११२	लि. महता नागेश्वर औदीच्य
९	४३७३	आख्यातवादटीका	रघुदेव	१८८३	३५	लि रामलाल
१०	४३७७	आख्यातविवेक	भट्टाचार्य शिरोमणि	१९वीं श	७	
११	७४३१	उणादिगणसूत्रविवरण	हेमचन्द्र	१५वीं श.	४०	
१२	५२१६	उणादिवृत्ति (पचमपादान्त)	उज्ज्वलदत्त	१७वीं श	३२	
१३	७४७१	उणादिसूत्रसटीक		१७६२	१२	लि. रत्नसुन्दर
१४	४३९६	ऊष्मभेद	महेश्वर कवि	१८४७	१७	लि चिमनराम तेरापथी
१५	५३८५(४)	कातन्त्रव्याख्या (दौर्गसिहवृत्ति)		१६वीं श.	१७७–१८६	
१६	५९५८	कातन्त्रविभ्रम		१७वीं श	९	
१७	५८७१	कारकखण्डनमण्डन	तर्कसिंह भट्टाचार्य	१९वीं श	९	लि. शालिग्राम
१८	६१६८	,,	,,	१७१९	४	लि. ज्ञानकल्लोल
१९	७४५६	,,	मणिकण्ठ भट्टाचार्य	१८४७	८	लि दीपचन्द्र
२०	६१६१	कारकचक्रम्	वररुचि	१८वीं श.	१३	
२१	६०३१	कारकपरीक्षा	पशुपति राढीय	१८वीं श.	९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२	४२८१	कारकविलास		१६२०	५४	
२३	७४७३	कारकविवेचन		१८वीं श	४	
२४	५४६२	कृदन्तप्रक्रिया (चन्द्रिका)	रामचन्द्राश्रम	१८६६	२४	लि बलदेव
२५	४३६४	गणरत्नमहोदधिसवृत्तिक	वर्द्धमान सूरि	१७वीं श	६६	१ से ६ पत्र अप्राप्त, रचनाकाल स० ११६७
२६	६५८३	गणपाठ (पाणिनीय)		१८६६	१४	
२७	५०८६	दशबलकारिकारूपोधातुपाठ·		१७५६	२	
२८	७३११	धातुतरंगिणी (स्वोपज्ञधातुपाठ-विवरण)	हर्षकीर्ति सूरि	१७वीं श	८५	
२६	६१००	धातुपाठ		१८६०	२१	
३०	६२७०	धातुरूपावली		१६वीं श.	६	
३१	५४८६	प्रक्रियाकौमुदी (प्रथमभाग)	रामचन्द्र	१७वीं श	६३	पत्र ६३,८७,८८,६०, ६१, ६२ अप्राप्त
३२	७४६२	,,	,,	१७०१	१६०	
३३	५१४५	,, सटीक (द्विरुक्तप्रक्रियान्त)	श्रीकृष्णनरसिंह सूरिसूनु	१८वीं श	३२१	
३४	५४८६	,, सुबन्तप्रकरण	रामचन्द्र	१७वीं श	५६	प्रथम पत्र अप्राप्त
३५	५४८८	,, तद्धितप्रक्रिया	रामचन्द्र	,,	११४	पत्र ४२,४६,६१,७३,८१ से ८६ तक, ६३ वा अप्राप्त
३६	५४८७	,, कृदन्तप्रक्रिया	,,	,,	८८	पत्र ७६ से ८६ तक अप्राप्त
३७	५००६	प्रबोधचन्द्रिका	वैजलभूपति	१६०६	४२	
३८	५२५१	,,	,,	१६२०	४५	लि श्री नृसिंह गुसाई

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३९	६५७०	प्रबोधचन्द्रिका	वैजलभूपति	१९वीं श.	१६	
४०	५१५३	प्रौढमनोरमा (पूर्वार्द्धवृत्ति	भट्टोजी दीक्षित	,,	४४९	
४१	५१५४	,, (तिडन्तकाण्ड)	,,	,,	१५३	
४२	५१४७	,,	,,	,,	१४४	अपूण
४३	४४७१	परिभाषासूत्र (सिद्धान्तकौमुद्या·)		,,	२	
४४	६६६४	परिभाषासूत्राणि		१९१९	८	लि. गोपीनाथ
४५	५१५५	परिभाषेन्दुशेखर	नागेश भट्ट	१८००	१०३	
४६	५९२४	पाणिनीयव्याकरणसूत्रपाठः	पाणिनि	१७वीं श	२१	
४७	५५७९	पाणिनीयशिक्षा	,,	१८वीं श.	२७	अपूर्ण
४८	६१६९	भाष्यप्रदीपव्याख्यान (प्रथमखण्ड)	नागोजी भट्ट	१८५५	१८९	
४९	६१७०	,, (द्वितीयखण्ड)	,,	,,	११२	
५०	६०५१	भीमसेनधातुपाठ·	भीमसेन	१९३०	६	
५१	५९६९	भूधातुवृत्ति	क्षमा कल्याण	१८२९	३४	राजनगरे लिखितम्
५२	५१५०	मध्यकौमुदी (पूर्वभाग)	वरदराज	१८वीं श.	६८	
५३	५१५१	,, (उत्तरभाग)	,,	१८१२	९३	
५४	६४५९	,, (विलासनाम्नीटीकासहित) अव्ययपर्यन्त	,, टी. जयकृष्ण	१९वीं श	११३	
५५	६४६०	,, (आख्यातप्रक्रिया)	,,	,,	८९	
५६	६४६१	,, (कृदन्तप्रक्रिया)	,,	१८३४	६८	पत्र ६६,६७वां अप्राप्त लि. जती चैनसागर, जैनगर
५७	५१४६	महाभाष्य (तृतीयचतुर्थाध्यायी	पतञ्जलि	१८वीं श	१९८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	५५४८	लघुकौमुदी (उत्तरार्द्ध)	वरदराज	१९१२	५७	लि नन्दलाल
५९	६९७०	लघुशब्देन्दुशेखर	नागेश	१८वीं श	१६५	
६०	५१४८	लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१९१०	७९	
६१	६१०३	लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१९०४	६८	
६२	७६८९	,,	,,	१८७४	६०	लि उमाशकर
६३	६८६५	लिङ्गानुशासन	हेमचन्द्र सूरि	१८वीं श.	८	
६४	७२०५	लिंगानुशासनविवरण (स्वोपज्ञ)	हेमचन्द्राचार्य	१६४५	७४	लि श्रोभा रुद्र
६५	६५२१	व्याकरणलघुभाष्य (पूर्वखण्ड)		१९वीं श.	२८२	
६६	५३१०	वाक्यप्रदीप		१७वीं श	२५	अपूर्ण
६७	६३३२	विदग्धबोध	भूपतिमिश्र	१८६०	१४	वैरिनगरमध्ये लिखितम्
६८	६११५	विपरीतग्रहणप्रकरण		१९वीं श	२	
६९	७४५७	वैयाकरणभूषणटीका	कृष्णमिश्र	१८वीं श	१७	
७०	५१५२	वैयाकरणभूषणसार (स्फोटवाद)	कौण्डिभट्ट	,,	५०	
७१	५१७४	वैयाकरणसार (शक्तिनिर्णय)		,,	७	
७२	७४५१	शब्दप्रभेदटीका	मू. महेश्वर टी ज्ञानविमल	,,	११०	
७३	६०१४	शब्दभेदप्रकाश	पुरुषोत्तमदेव	१८७६	२	
७४	५६२८	शब्दशोभा	नीलकठ शुक्ल	१७२१	२६	रचनाकाल १६८९ सागानेर-मध्ये लिखित
७५	५२१७	शब्दसचयः	केनचिज्जैनमुनिना सकलित	१७वीं श	१६	अपूर्ण
७६	७५१८	शब्दार्थसग्रह		१८९१	३	लि व्रजवासी सिलल्
७७	६५०८	षट्कारकव्याख्यान	भेयानन्द	१८५२	११	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७८	७४४४(१८)	सारस्वत (पञ्चसन्ध्यन्त)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८८६	३०३–३१०	लि. ऋषिचतुर्भुज उदैपुरमेंलिखित
७९	५१४४	सारस्वतसूत्रपाठ	,,	१९वीं श.	८	
८०	६७८०	,,	,,	१९२५	८	लि किसोरदास हमीरगढमध्ये
८१	७६६४	,,	,,	१८५६	११	
८२	४४७०	,, (क्रम)	,,	१९वीं श	८	
८३	४३९५	सारस्वत प्रथमावृत्ति (तद्धित प्रक्रियान्त)	माधव	१८४२	६६	लि मथेरण सरूपचन्द मेडतानगर
८४	६६४१	सारस्वत (द्वितीयावृत्ति)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१७वीं श.	४६	लि रघुनाथ
८५	६६४२	,, (तृतीयावृत्ति)	,,	१६९८	१२	
८६	७६४९	,, प्रथमसन्धिभाषाटीका	,,	१९वीं श.	४	अपूर्ण
८७	४४७२	सारस्वतप्रक्रिया	,,	१७६१	५६	लि स्था.-सुदामापुर
८८	५२४१	,, (पचसन्ध्यन्त)	,,	१९वीं श	२३	प्रथम पत्र अप्राप्त
८९	५०४५	,, (विसर्गसन्ध्यन्त)	,,	,,	१२	
९०	६११६	,,		,,	७३	अपूर्ण
९१	६८२३	सारस्वतप्रक्रिया (सार्थ)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८वीं श.	९	अपूर्ण
९२	६९२३	,,	,,	१७वीं	१४	
९३	६५०४	मारस्वत (ग्राख्यातप्रक्रिया)	महीदास	१८५७	५६	लि. महात्मा रामलाल नेवटा निवासी
९४	६९६५	,, ,,	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८८८	५८	
९५	६८९३	,, तद्धितप्रक्रियान्त	,,	१७४२	४४	
९६	७५६९	,, तद्धितप्रक्रिया	,,	१९वीं श.	१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
९७	६८८९	सारस्वत (कृत्प्रक्रिया)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१७४७	४९	लि मुनि तेजपाल सिलीवदग्रामे
९८	७५८८	,, (कृवन्तप्रक्रिया)	,,	१८५७		लि. महात्मा रामलाल नेवटा
९९	७५९८	,, ,,	,,	१८१९	५५	
१००	७६३६	,, ,,	,,	१९वीं श.	२७	
१०१	६००४	सारस्वतमाधवीवृत्ति (सिद्धान्तरत्नावली)	माधव भट्ट	१८२५	११२	लि देवचन्द्र
१०२	४१९५	सारस्वतसटीक	अनुभूति स्वरूपाचार्य टी पुञ्जराजनरेन्द्र	१६५४	६२	
१०३	४९५९	,, पूर्वार्द्ध	,,	१७वीं श.	५१	पत्र स० ३६ से ४२ तक अप्राप्त
१०४	६८६८	सारस्वतटीका	पुञ्जराज	१८वीं श.	१००	
१०५	५५०२	सारस्वतचन्द्रिका	चन्द्रकीर्ति	,,	२०८	आद्य २ पत्र अप्राप्त लि भैरवबकस व्यास केकडी में लिखित
१०६	६६५५	सारस्वत (चन्द्रकीर्तिव्याख्या)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१७वीं श	१८४	पत्र ९३, ९४, ९५ अप्राप्त
१०७	६८८३	सारस्वतटीका	चन्द्रकीर्ति	१७४५	१७०	
१०८	६८८७	,,	,,	१८वीं श.	२४६	आद्य पत्र १ से १० तक, ११८, १३३वा अप्राप्त
१०९	७४२२	सारस्वतसटीक	,,	१७वीं श	१८७	
११०	७२३६	,,	,,		१२८	
१११	७५११	सारस्वतदीपिका	चन्द्रकीर्तिसूरि	१६४४	९५	
११२	४१९६	सारस्वत (प्रसादटीकोपेत)	वासुदेवभट्ट	१८वीं श	७६	
११३	७४६०	सारस्वतवृत्ति (आख्यातपर्यन्त)	गोपाल	,,	११८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
११४	६०४७	सारस्वत (पूर्वार्द्ध) भाषाटीकासह	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१९वीं श	५२	
११५	६०४८	,, (कृदन्तप्रक्रिया)	,,	,,	६०	
११६	५१४९	सारस्वतधातुपाठ	हर्षकीर्तिसूरि	१८०४	४२	
११७	५८५१	,,	,,	१६६३	६२	लि स्था -मौलत्राण
११८	५६८७	,,	,,	१७४५	४१	लि मगलपुर
११९	६०२३	सारस्वतरूपमाला	पद्मसुन्दर	१८६०	९	लि. द्यानतमुनि सावतगजमध्ये लोहमण्डवी
१२०	६७९३	सारस्वतीप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१८वीं श	५३	
१२१	६९६८	सारस्वतीप्रक्रिया (कृदन्त)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१८८८	१७	लि रामदास
१२२	६७५८	,, तृतीयावृत्ति	नरेन्द्रपुरी	१९०७	६३	लि ,,
१२३	४२०१	सारसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१८६९	२१	
१२४	४२०२	,,	,	१८वीं श.	४९	
१२५	७२०८	सिद्धहैमशब्दानुशासन	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श	२५	
१२६	४३६८	,, (दुर्गपदव्याख्या)	,,	,,	८	
१२७	५९१७	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति (अष्टमोऽध्याय)	,,	१६४५	३४	लि. प. सुखनिधानमुनि
१२८	५९२०	सिद्धहैमशब्दानुशासनाध्याय चतुष्कावचूरि	,,	१६वीं श	२०	
१२९	५९१९	सिद्धहैमशब्दानुशासनषट्पादावचूरि	,,	,,	२७	
१३०	५९२१	सिद्धहैमशब्दानुशासनधातुपाठः	,,	१८वीं श.	८	
१३१	५९७९	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	,,	,,	११३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	५९१४	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श	१८	तृतीयाध्यायस्यतृतीयपादादारभ्य चतुर्थाध्यायपर्यन्तम्
१३३	५९१८	,, ,,	,,	१६वीं श	१५	
१३४	५९१५	,, ,, पचमाध्याय	,,	,,	२९	
१३५	५९१६	,, ,, षष्ठसप्तमाध्यायौ	,	,,	२५	
१३६	५८९८	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	हेमचन्द्र	१५वीं श	३९	तृतीयाध्यायस्यतृतीयपादादारभ्य चतुर्थाध्यायपर्यन्ता
१३७	५८९७	,, ,,	,,	,,	४७	तृतीयाध्यायद्वितीयपादान्त
१३८	७१९०	,, ,,	,,	,,	२५	द्वितीयाध्यायद्वितीयपादपर्यन्त
१३९	७१९४	सिद्धहैमशब्दानुशासनसूत्रपाठ	,,	१५३३	१०	लि प धर्ममगलगणि देलुलिग्राम
१४०	७१९८	,, ,,	,,	१६वीं श	५	
१४१	५४६६	सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजीदीक्षित	१८३४	३१२	
१४२	७०७४	,,	,,	१८वीं श	३५	
१४३	४३७५	,,	,,	,,	१२३	द्विरुक्तप्रक्रियान्त
१४४	५५३९	,,	,,	,,	७३	तिङन्तप्रकरण
१४५	४३२१	,,	,,	,,	३०८	कृदन्तपर्यन्त
१४६	६७९०	,,	,,	१८५४	४१	कृत्प्रक्रिया
१४७	६८०८	,,	,,	१९वीं श	२०६	
१४८	४२७९	,, तत्वबोधिनीव्याख्या	ज्ञानेन्द्रसरस्वती	,,	१२९	तिङन्तकाण्ड
१४९	६४६२	,, ,,	,,	१८३०	८७	कृदन्तमात्र
१५०	७१२४	,, व्याख्या	भट्टोजीदीक्षित	१९वीं श	३–९४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	४३७४	सिद्धान्तकौमुदी लघुशब्देन्दुशेखरसहित (त्रिपाठ)	भट्टोजि नागेश	१६वीं श	३१२	समासाश्रयविधिपर्यन्त
१५२	४३७६	सिद्धान्तकौमुदी लघुपरिभाषेन्दुशेखरसहित (त्रिपाठ)	भट्टोजि नागोजी	,,	१२६	तद्धितप्रक्रिया द्विरुक्तप्रक्रिया
१५३	६८९५	सिद्धान्तचन्द्रिका	रामचन्द्राश्रम	१७८०	६५	लि क प नरसिंह
१५४	६८९६	,,	,,	१९२३	१४५	लि क लक्ष्मीचन्द्र बलदेव
१५५	७०९२	,,	,,	१९वीं श	५९	
१५६	६७९८	,, चुरादिप्रकरण	चन्द्रकीर्ति	१८वीं श	२५	
१५७	६८८८	,, (कृत्प्रक्रियान्त)	रामचन्द्राश्रम	१९२५	११२	लि. लक्ष्मीचन्द्र
१५८	५८८२	,, सटिप्पण	,,	१८७९	१४०	लि. चक्रपाणि
१५९	५८८३	,, पूर्वार्द्ध	,,	१९वीं श	६४	
१६०	७३५०	,, सटीक	,,	१८वीं श.	३०३	अपूर्ण
१६१	६५२२	,, सुबोधनाम्नीव्याख्यापूर्वार्द्ध	सदानन्दगणि	१९वीं श.	१४२	
१६२	६२९५	,, ,,	,,	१८८३	९	
१६३	५९७१	सिद्धान्तरत्नशब्दानुशासन	जिनचन्द्र	१८८३	४३	
१६४	५३८५(५)	'सिद्धोसूत्र' (पचसंधिपर्यन्त)		१६वीं श		
१६५	५८९९	हैमधातुपारायण	हेमचन्द्र	१७वीं श	१००	
१६६	५९०८	हैमलिंगानुशासनम् (दुर्गपदप्रबोध)	श्रीवल्लभगणि	,,	४४	सवत् १६६१ मे जोधपुरमें श्री सूरसिंहके राज्यमें रचित

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४८३	अनेकार्थध्वनिमञ्जरी		१९वीं श	१३	
२	४४८४	,,		१७१४	२१	
३	६३२५	,,	काश्मीरक महाक्षणक	१८२५	१३	
४	६३३३	,,	,,	१९वीं श	१६	
५	६२२६	,,	,,	१८४७	१७	लि क कन्हीराम मिश्र
६	७००२	,,	अमरसिंह ?	१८७४	१७	लि क. नाथूराम त्रवाडी पल्लीवाल
७	६५९६	,,		१८८१	९	लि क रामनारायण
८	४३०५	अभिधानचिन्तामणिनाममाला	हेमचन्द्र	१७वीं श.	७०	
९	४३२२	,,	,,	१५३८	८१	आद्य पत्र नहीं। तृतीयमे षष्ठकाण्ड तक
१०	४३२३	,, टीका	टी वल्लभगणि	१७वीं श	२१४	सारोद्धार टीका
११	४४८१	,,	हेमचन्द्र	१८वीं श.	३१	तृतीय काण्डान्त
१२	६११८	,, सटीक	,,	१६२७	१४८	स्वोपज्ञ टीका
१३	७२१०	,,	,,	१६०२	२०७	श्री पत्तनमें लिखित
१४	५७३४	,, (शेषसग्रह)	,,	१८५२	५९	लि यशोविजय
१५	७१९५	,, (सशेषसटिप्पण)	,,	१८वीं श.	४७	
१६	७२३७	,, (बीजकसह)	,,	१७८०	७०	लि क रामकृष्ण ज्योतिर्वित् विष्णुदुर्गे (कृष्णगढ ?)
१७	७३३५	अभिधानचिन्तामणिटीका	,,	१६वीं श.	१९६	स्वोपज्ञ टीका
१८	७४५९	,, (व्युत्पत्तिरत्नाकर-नाम्नीवृत्ति)	टी. देवसागर रविचन्द्रशिष्य	१९वीं श	४०७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४३२४	अमरकोश (अमरचन्द्रिकाटीका)	टी. परमानन्द विष्णुपुरी दण्डिपुत्र	१७८३	८७	
२०	४४७३	अमरकोश (प्रथमकाण्ड)	अमरसिंह	१८२९	३८	
२१	४४७४	,, (द्वितीयकाण्डान्त)	,,	१९वीं श.	६३	
२२	४४७५	,, (तीनो काण्ड)	,,	१८६३	२६	
२३	५४४९	,, सटीक	टी क्षीरस्वामी	१६५६	८१	मघुपुरीमध्ये केशवराज्ये कालिन्दीतटे
२४	५४९३	,,	अमरसिंह	१९वीं श.	१६७	१५२ वां पत्र अप्राप्त
२५	६१२६	,, द्वितीयकाण्डान्त	,,	१८वीं श.	३९	
२६	६०२९	,, सुघाख्याटीका	टी भानुजी दीक्षित	१९वीं श.	२७७	
२७	६२६८	,, ,,	,,	१८९५	११४	लि बलदेव गोस्वामी
२८	६४५६	,, अमरविवेकाख्या	टी महेश्वर शर्मा	१९वीं श	४८	प्रथमकाण्ड
२९	६४५७	,, ,,	,,	,,	१४२	द्वितीयकाण्ड
३०	६४५८	,, ,,	,,	,,	१०८	"पुण्यपत्तने पाठशालाया शिलाक्षरयन्त्रे मुद्रितम् १७७३ शाके" ऐसा अन्तमें लिखा है
३१	६५१७	,, तृतीयकाण्ड	अमरसिंह	१८९८	६६	लि. क. वशीधर कवीश्वर
३२	६६१३	,,	,,	१९वीं श.	४४	
३३	६७४४	अमरकोषटीका (द्वितीयकाण्डान्त)	टी. वृहस्पति	१७वीं श.	४२१	५२वा व ९५ वा पत्र अप्राप्त जीर्ण प्रति
३४	६८८१	,, सटिप्पण ,,		१७वीं श.	६९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	६८८६	अमरकोषटीका सटिप्पण (द्वितीयकाण्डान्त)	अमरसिंह	१८वीं श	५३	पृथ्वीवर्ग से द्वितीयकाण्डान्त
३६	६८९१	,, (अव्ययवर्ग, सविवरण)	,,	१७४२(?)	३३	
३७	७००४	,,	,,	१९वीं श	७९से१०६	अपूर्ण
३८	७००५	,, (द्वितीयकाण्ड)	,,	१८६४	११९	
३९	७१३०	,,	,,	१८९३	११२	
४०	७७६९(३)	अमरकोश	अमरसिंह	१८५६	९७	चित्र स० २
४१	७४६१	अमरकोशोद्घाटन	क्षीरस्वामी	१६वीं श	१५१	
४२	५९६८(१)	एकाक्षरनामकोश	क्षपणक	१९वीं श	१–३	
४३	५४१४(१)	एकाक्षरीकोष		१९वीं श	१–४५	
४४	५९४८	धनञ्जयनाममाला	धनजय	१६१५	१७	
४५	५३८५(३)	,,	,,	१६वीं श	१६६–१७७	
४६	६११४	शारदीया नाममाला	हर्षकीर्ति	१८वीं श	२३	प्रदर्शनीय; चित्र २
४७	६७५४	,,	,,	१८९९	२८	लि क मोतीगरु गाव लाभूडामध्ये
४८	७३७०	,,	,,	१८९४	१९	लि. क ज्ञानसागर उदयपुरमध्ये
४९	५९५०	शिलोञ्छनाममाला	हेमचन्द्र	१६४५	३	लि क कुशलगणि वाचनाचार्य
५०	५९१०	शेषनाममाला	,,	१६वीं श.	६	
५१	५९३७	हैमलिङ्गानुशासन सविवरण	,,	१७वीं श	८०	स्वोपज्ञ
५२	६१७९	हैमलिङ्गानुशासन	,,	१८वीं श.	९	
५३	६९८३	हैमीनाममाला	,,	१७६३	६०	लि मोहणमुनि वाडोलीग्रामे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४७७१(२)	अङ्कनिघण्टु	दैवज्ञविलासगत		४५–४६	
२	६८३३(९)	अक्षतजोवानाश्लोक		१८५०	५०–५१	
३	६२८१	अक्षरचिन्तामणि		१८३०	८	
४	४४५२(७२)	अग्न्यादिचतुर्मण्डलफल		१-वीं श	१२२ वा	
५	४४४२	अद्भुतसागर	बल्लालसेन	१७८७	१७६	* प्रथम पत्र अप्राप्त लि क. पुरोहित सदाराम लि स्था शिवपुरी
६	४९३०	अद्भुतसागर प्रथमखड	,,	१९वीं	१८४	
७	४३१४	अयनाशादिकरणविधि		१७३३	२४	
८	४७६६(१)	अर्घकाण्ड (साठसवत्सरीफल)	दुर्गदेव	१७७५	१०(११)	
९	५०६६	अर्घकाण्डम्		१९४२	२	
१०	५३१५	अष्टमलग्नपरिसर		१९वीं श.	५	
११	७०९६	अष्टादशयोगाः		१८वीं श	५	
१२	४८५२	अष्टोत्तरीदशाफल	गौरीजातकगत	,,	९	लि. क जीवन
१३	४८७८	,,		१९५८	११	
१४	७०६१	आकाशपुरुषचित्र	हर्षसौभाग्य सूर्यसौभाग्यशिष्य	१८९३	१	
१५	४८६१	आयप्रश्नग्रन्थ	विघ्नराज	१९वीं श	५	
१६	५९३८	आरम्भसिद्धिवार्तिक	उदयप्रभ वार्तिककारहेमहसगणि वाचनाचार्य	१७वीं श	९७	
१७	५९२७	आरम्भसिद्धि सावचरि	उदयप्रभ	१६वीं श	१४	
१८	५२६२	इष्टशोधनप्रकार		१९वीं श.	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	५८२७	उडुदायप्रदीप (लघुपाराशरी)	टी –लक्ष्मीपति कृष्णानन्दसुत	१६२१	५५	आद्य दो पत्र अप्राप्त
२०	४७५३	उपदशाकोष्ठकानि	गौरीजातकान्तर्गत	१६८०	१०	लि क नरहरि
२१	७१०२	उपदशाफलम्		१८वीं श	२	
२२	६२८५	कर्मप्रकाशिकावृत्ति	समरसिंह वृत्तिकार अज्ञात	१८६३	१३	
२३	७६११	कर्मविपाक (भर्तृहरिराजेश्वरसवाद)		१८४४	४	लि क केशवदास गढ वदनोरमध्ये
२४	७६१५	कर्मविपाक (सूर्यार्णवगत)	ब्रह्मनारदसंवाद	१८०६	५१	लि क शिवशङ्करव्यास हन्दिुर्गमध्ये
२५	६२३५	कर्मविपाक	,,	१८३२	४१	
२६	४६६०	करणकुतूहल सस्तवक		१८५०	२१	लि क चतुरविजयगणि पुष्पावतीनगरे प्रथमपत्र अप्राप्त
२७	४८७३	करणकुतूहल	भास्कराचार्य	१७७८	११	लि क औदुम्बरज्ञातीय विश्वेश्वरात्मज केवल
२८	४८८४	,	,,	१७०२	२२	श्रीपाटणनगरे हरजीसुत मुरजीलिखितम्
२६	५७०५	,,	,,	१६वीं श	१६	
३०	६४३५	,, (मूल)	,,	१८४४	१०	लि क. अजयसुदर गेरवामध्ये
३१	६८२४	करणसारिणी (ब्रह्मतुल्य)		१८वीं श	१६	प्रथमपत्रअप्राप्त
३२	५७११	कल्पवल्लीहोरा	विट्ठल	१८६४	५	लि क व्रजवासी सिल्लु, ललिताभट्टे काश्याम्
३३	४८५६	किरणावली	सूर्यसिद्धान्तगत	१६वीं श.	३६	प्रथम ४ पत्र गलित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४	६०६४	कामधेनुपद्धति (कामधेनुजातक)	जयराम भट्ट	१८७६	७६	लि क. जगन्नाथ व्यास पत्र ६६, ६७ अप्राप्त
३५	४६६२	कामधेनुसारिणी		१८४४	१६	लि. क चतुरविजयगणि पोहकरणमध्ये
३६	५२४६	कालज्ञान		१९वीं श.	५	
३७	५५२६	केरलजातकरत्नावली		१९२५	२१	
३८	५७५८	केरलप्रश्न		१८वीं श	५	
३९	६३७७	केरलप्रश्नशास्त्र	नन्दराम	१८२४	२७	
४०	७०३५	केशवीयजातकपद्धत्युदाहरण	विश्वनाथ दैवज्ञ	१८वीं श	२९	रचनाकाल १५४०
४१	६५४०	केशवीयपद्धत्युदाहरण	"	१७६०	२५	लि क उदयविजय
४२	५३१४	केशवीयपद्धति.	केशव	१८२८	२२	लि क स्वामीबालचन्द्र ग्वालियरमध्ये
४३	७१००	केशवीयसूत्राणि (जातकपद्धति.)	,	१८वीं श	४	
४४	६०९५	कोष्ठक (नरपतिजयचर्यागत)	नरपति कवि चन्द्र	१९वीं श.	२	
४५	४८८०	खेटकर्म (करणकुतूहलान्तर्गत)	भास्कराचार्य	१७६८	९	लि.क. गणि भाग्य सौभाग्य
४६	५७६६	खेटकुतूहलोदाहृति	विश्वनाथ	१९वीं श	६६	रचनाकाल १५३४ शाके
४७	६३८४	खेटकौतूहलम्	सूरविप्र	१८वीं श.	२	रचनाकाल स० १६७६
४८	४७३१	खेटसिद्धि	दिनकर	१९वीं श	३०	रचनाकाल सवत् १६३५
४९	५७१२	ग्रहगोचरफल		१९वीं श	३	
५०	४१०४	ग्रहणपद्धति	मिश्र नन्दराम	१८३२	५	* रचनाकाल सवत् १८२० स्थान-काम्यकवन

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१	४७६१	ग्रहणपद्धति	मिश्रनन्दराम	१९वीं श	६	
५२	५३२४	ग्रहभावविचार		१८वीं श.	१०	
५३	४८५४	ग्रहलाघवटीका	विश्वनाथ	,,	५०	
५४	४६७७	ग्रहलाघवटीकोदाहरण	गणेशदैवज्ञ टी. विश्वनाथ	१८४२	४१	लि.क ऋषि भाणजी
५५	७६९३	ग्रहलाघवसिद्धान्तरहस्योदाहरण	विश्वनाथ	१९३०	१४१	
५६	५२१९	ग्रहलाघवविवरण	,,	१९२४	६२	पत्र १७वा अप्राप्त
५७	५५३८	ग्रहलाघवाख्यसिद्धान्तरहस्योदाहृति	विश्वनाथ दैवज्ञ	१८००	३८	लि क कल्हा केसोराय श्री रूपनगरमें लिखित
५८	४८९२	ग्रहसिद्धि	महादेव	१८वीं श	३	
५९	७६७१	ग्रहान्तर्विचारतत्व	दुर्गाशङ्कर पाठक	१९वीं श	१	
६०	५१७१	गणकमण्डन	नन्दिकेश्वर	१७९४	५२	
६१	४३९२	गणितनाममाला	हरिदत्त	१८वीं श.	४	* लि क जीवकीर्तिगणि लि स्था —तलवाडा
६२	४७२०	गणितकौमुदी	नारायणपडित (नृसिंह दैवज्ञसुत)	१९वीं श	३७	
६३	४७७१(१)	गणितलीलावती आदि	भास्कराचार्य	१८०५	५४१–४५	*
६४	७१११	गणितनाम्माला	हरिदत्त	१८वीं श.	६	
६५	६७६४	,,	,,	१९०६	८	
६६	७६१८	गर्गमनोरमा	गर्गऋषि	१९वीं श	१०	
६७	६६०४	गर्गमनोरमा टीका	,,	,,	१४	लि क गोपीनाथ
६८	७०७८	गुरुचार		१८८०	३७	,, भगवानदास विक्रमपुरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६९	५६३९	गूढार्थप्रकाश पूर्वखण्ड (सूर्यसिद्धान्तकी टीका)	रङ्गनाथ	१९०६	१८६	
७०	५७७५	गृहप्रवेशप्रकरण (अमिताक्षरा व्याख्यासहित, मुहूर्तचिन्तामण्यन्तर्गत)	रामदैवज्ञ	१९वीं श.	१२	र. का भुज-भुजेषुचन्द्रैमिते शके (१५२२)
७१	६७६१	गोचरग्रहप्रकाश	श्रीपति भट्ट	१९वीं श	४	
७२	५६४९	गौतमीयजातक सटीक (त्रिपाठ)	गौतम मुनि टीका-लक्ष्मीपति	१८८४	९	
७३	५८०८	चन्द्रसूर्यग्रहणविधि		१९वीं श	१९	
७४	४७४५	चन्द्रार्की		१८वीं श.	१४	
७५	४८७०	"	दिनकर	१८३९	३	लि.क. औदुम्बर शिवानद वाटेजाख्ये ग्रामे रचना
७६	४८९३	चन्द्रार्की पद्धति		१८वीं श	३	
७७	५२६३	चन्द्रोन्मीलनदीपिका		१९२१	४३	
७८	४६७२	चमत्कारचिन्तामणि	नारायण	१९००	७	
७९	६८३३(८)	"		१८५०	४०–५०	गोस्वामी भोलानाथजीकी पोथीसू लिखी
८०	५५४४	" (त्रुटित)		१८३०	८	कृष्णगढ मध्ये लि.क. राधाकृष्ण ब्राह्मण
८१	४६६८	चमत्कारचिन्तामणिटीका अन्वयार्थदीपिका	नारायण, टी० धर्मेश्वरमालवीय	१९०१	२८	लि क सायलापुर वास्तव्य औदीच्यज्ञातीय व्यास श्रीकेशवजी यादवजी, सरधर मध्ये
८२	५७७१	चमत्कारचिन्तामणिव्याख्या	मू० नारायण	१८४०	१६	लि क चन्द्र मिश्र

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८३	६६२९	चमत्कारचिन्तामणि सटीक	नारायण	१८२८	३०	लि क कवर विजयलालराम
८४	४६६४	,, सस्तवक		१८२४	१२	,, प्रमोद विजय
८५	४९७२	,, सार्थ	रार्जार्षभट्ट	१८२१	२१	प्रति कीटविद्ध है
८६	५०५१	चौरयोगप्रकरण		१९०६	११	लि क महात्मा जोशी पन्नालाल
८७	६७७७	चौरासीदोषनामानि		१९वीं श	१	
८८	५६२४	ज्योतिर्विदाभरण	कालिदास	१९०३	१००	रचनाकाल स० २४ (?)
८९	६९०४	ज्योतिर्विदाभरणटीका	,, टीका-भावमुनि	१९वीं श.	२१८	अपूर्ण
९०	५७२१	ज्योतिश्शास्त्रभाष्य	शेषनाग	१८७५	३२	
९१	६८३३ (७)	ज्योतिष के स्फुट श्लोक		१९वीं श	३७–३९	
९२	४६६९	ज्योतिश्चन्द्रार्क	महादेव (हीरामणिसुत, हेरम्बपौत्र)	१८३६	५१	रचनाकाल स० १७८३ लि क नन्दराम
९३	५२९९	ज्योतिषनिबन्ध		१८वीं श	४५–७५	अपूर्ण
९४	४८९६	ज्योतिषमकरन्द	अमरसिंहसूनुनन्दन	,,	६	
९५	७०९७	ज्योतिषमाला		१८वीं श	२	लि क यति भवानीराम ग्रामझरा मध्ये
९६	४२८६	ज्योतिषरत्नमाला	श्री श्रीपति	१७वीं श	१९	*
९७	४४०५	,,	,,	१६४६	३३	* प्रथम पत्र अप्राप्त
९८	४७६८	,,	टीका-वैजापडित	१७५७	१०७	
९९	६८७७	,,	श्रीपतिभट्ट	१७५५	१७	लि क. राजसोम
१००	७०४९	,	,,	१७४९	५७	,, व्यास चतुर्भुज
१०१	७०९९	ज्योतिषरत्नमाला (वृन्दावनशास्त्र)		१८वीं श.	३	विवाह सम्बन्धी लग्नदोषादि का वर्णन

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०२	६३५०	ज्यौतिषरत्नमाला षट्पचाशिका ज्यौतिषसार भुवनदीपक आदि		१६२०	८२	योगिनीपुरमध्ये लिखित
१०३	६२७८	ज्यौतिषरत्नमालाव्याख्या	श्रीपति	१९वीं श.	४४	
१०४	७८२५	ज्यौतिषरत्नमाला	,,	१८७१	६४	लि क. गम्भीरचन्द खिलचीपुर
१०५	६९७२	ज्यौतिषसग्रह गुटका		१९वीं श	१५५	
१०६	५८१३	ज्यौतिषसार		१९वीं श	९८	अपूर्ण
१०७	४८९१	,, सस्तवक		१८वीं श.	२०	
१०८	४४०७	ज्यौतिषसारसग्रह (सस्तबक)	अज्ञात	१७८९	२५	* लि क. प० श्री खुसालसागर गुणविजय स्थान–नरायणानगर
१०९	४४१०	,, (सार्थ)		१८वीं श.	२६	*
११०	६५३७	,, (सस्तबक)		१८१७	३३	लि क नवनिधविजय महिमापुरमध्ये
१११	५६३१	ज्यौतिषसिद्धान्तसार	मथुरानाथ मालवीय शुक्ल			रचनाकाल शके १७०४
११२	४८९४	जगद्भूषण	हरिवत्त भट्ट	१७वीं श.	४	डालचन्द्र नृपाज्ञया ग्रन्थ रचना महाराणा जगतसिंह नामाङ्कित जगद्भूषण । रचनाकाल–स० १६९५
११३	४७१०	जगदभूषणसारिणी		१८२९	६५	
११४	४७२७	,,		१९वीं श	६०	
११५	४७८७	,,		१८वीं श	५५	रचनाकाल स० १७६८
११६	४८८२	,,		१७३७	५३	लि क माणिक्यविजय ज्ञान–विजयशिष्य चन्देलाग्राममध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
११७	४४५२(३७)	जन्मग्रहफल		१८वीं श	४०–४१वा	लि क. प्रीतसौभाग्य
११८	६३९६	जन्मपत्रीप्रकार	जयगणि	१९वीं श	५१	* प्रथम पत्र अप्राप्त
११९	४६६५	जन्मपत्रीपद्धति	गोपाल ?	१८२०	८	लि क. चतुरविजय
१२०	५२१५	,,		१८वीं श	८	*
१२१	५६७७	,,				आद्य के ४ पत्र खडित
१२२	६४२९	,, (स्त्रीजातक) (अन्तर्दशाध्याय)	लब्धिचद्र	१७५१	१०	स्त्रीजातक ६ पत्र अन्तर्दशाध्याय ४ पत्र अपूर्ण
१२३	७०३९	जन्मपत्रीपद्धति		१८वीं श.	९८	कीटविद्ध प्रति है। इसमें सभी विषय सगृहीत हैं।
१२४	७०८२	,,	हर्षकीतिसूरि	,,	४५	अपूर्ण
१२५	४७५१	जन्मपत्रीपद्धतिसारोद्धार		१९वीं श	१४६	
१२६	६३८६	जन्मपत्रीविचारेकालदण्ड्राचक्रादि		१८वीं श	३२	
१२७	४४४०	जातककर्मपद्धति	श्रीपति	१४८७	१६	लि क विश्वनाथ
१२८	४६७४	,,	,,	१९००	७	,, लीलाधर देराश्री पुरुषोत्तमसुत
१२९	४७०४	,,	,,	१८३७	१५	
१३०	४८६९	,,	,,	१९९१	६	
१३१	५५१३	,,	,,	१८वीं श	४४	अपूर्ण
१३२	६४३०	,, (सव्याख्या)	,	१७४१	८२	प्रथम पत्र अप्राप्त लि स्था बीकानेर
१३३	५८२५	, (प्रौढमनोरमाटीकासहित)	केशववंवज्ञ टी विश्वाकर नृसिंहगणकसुत	१९वीं श.	१४१	आद्य २ पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३४	५५०६	जातकग्रहफल (जातकपद्धति)	महादेवदैवज्ञ	१७५२	२४	लि क. कल्याणहंसगणि अवंरगाबाद
१३५	४६९१	जातकदीपिका	हर्षविजय	१८८६	७	लि क नरेन्द्रविजय राजस्थानी भाषार्थसहित
१३६	४६९६	"	"	१८४९	६	
१३७	४८४२	" (सस्तबक)		१८२२	१८	लि.क त्रीकमजीशिष्य
१३८	४५२२	जातकदीपिकाभिधानपद्धति (सस्तबक)	"	१८६२	११	रचनाकाल स० १७६५ रचनास्थान नराकरपत्तन लि क ऋषि मेघजी स्थान पीचुमदपुर
१३९	४७०५	जातकपद्धति	केशव	१८१४	५	लि क. शिवलाल
१४०	४६६३	"	"	१८६६	९	
१४१	७१६२	" (उदाहरण)	विश्वनाथ	१८३६	३७	
१४२	५४३३(२)	जातकरत्न (जैमिनीयसूत्रसार)		१९वीं श.	५५–५६	अपूर्ण
१४३	५६१३	जातकसग्रह	मवनस्वामी	१९वीं श.	२१३	रचनाकाल स० १९००
१४४	५०४७	जातकसार		१८वीं श	३ से १६४	अपूर्ण
१४५	६३९१	" (चमत्कारचिन्तामणिभाषाटीका)	विद्वन्नारायण	१८१७	११	राजस्थानी भाषासहित श्रीकृष्णगढ में लिखित
१४६	६३९३	" "	"	१८२७	१७	राजस्थानी भाषासहित
१४७	६७९४	जातकाभरण	ढुण्ढिराज	१८७८	९०	लि कल्याणपुरीमध्ये लि.क. रामवल्लभ
१४८	५३०६	जातकालङ्कार	गणेशदैवज्ञ	१९०६	३७	अपूर्ण

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८०१	७ ३४	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२ ३४	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	पौषबद्	१६०८	४२	लि क [illegible]
[illegible]	[illegible]		"	[illegible]	[illegible]	लि क [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८८१	४६	लि क, [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	६	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८७२		लि क [illegible]
[illegible]	[illegible]		"	१८१७	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]		"	१८१८	६	लि क [illegible]
[illegible]	[illegible]		"	१८७३	७	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८८६	३४	लि क, [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१७७०माघे	४०	लि क [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	पौषबद्	१८१७	३८	लि क, [illegible]
[illegible]	[illegible]	"	"	१८३५	२६	लि.क. [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]		१६वीं श	६	लि क [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	पौषबद्	१७६८	४-४८	लि क. [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८२४	२६	लि क [illegible]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६६	६२४२	ताजिकभूषण	गणेशगणक ढुढिराजात्मज	१८२१	३१	लि मनसाराम उपाध्याय
१६७	७०५३	,,	,	१७४३	४२	लि चतुर्भुज व्यास कृष्णगढमध्ये
१६८	७१२७	,,	,,	१८९१	४३	लि आत्माराम तिवाडी पत्र ९ से १३ अप्राप्त
१६९	५४५३	ताजिकभूषणटीका बालबोधिकाख्या	मुञ्जादित्य	१९वीं श	४२	
१७०	४७७०	ताजिकसार जिणरस	हरिभट्ट	१८७१	६४	भाषार्थसहित अपूर्ण
१७१	४८४६	ताजिकसार	,,	१८०५	१९	लि क मुनि गागजी मुनिजी धनजीशिष्य
१७२	६०५५	,,	,,	१७३९	२६	
१७३	६८७८	,,	,,	१७९५	२३	
१७४	६४२०	ताजिकसारवृत्ति	सामन्तहर्षरत्नशिष्य	१८वीं श	२३	*
१७५	७४५५	ताजिकसिद्धान्तसार	समरसिंह	१८६४	२५	लि फतेहचन्द मारोठ स्था सीकर
१७६	४६६०	ताजिकालकार	सूर्यकवि	१८४१	१०	लि उदयराम ब्राह्मण
१७७	७०९५	ताजिकालङ्कार	,,	१८४६		लि. क शिवशङ्कर
१७८	५३५०	ताजिकोदाहरण	नीलकण्ठ	१९वीं श.	२३	अपूर्ण
१७९	५१२७	तात्कालिकऋजुचक्रविवरण		१९००	१२	लि अखैराम
१८०	७५७९	ताराविलास	शाम्भववैद्यनाथ	१९वीं श	२	लि रामगोपाल
१८१	४७४४	तिथिकल्पद्रुम		१८वीं श	१५	राजस्थानी भाषासहित
१८२	४७६२	तिथिचिन्तामणि	गणेशदैवज्ञ	,,	१८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८३	४७४२	तिथिमञ्जरी		१८वीं श	२२	राजस्थानी भाषासहित १६०३ शाके का उदाहरण है।
१८४	७५६६	द्वादशभावफल		१८२३	३६	
१८५	४७७२	द्वादशभावश्लोक		१६वीं श.	१४	लि क. सीताराम चांदसेणमध्ये
१८६	४७१३	दशाफल	(ताजिकरत्नान्तर्गत)	,	३	
१८७	४८६७	दीपप्रकाश (वृद्धपाराशरीय)		१६२६	४५	लि क वाछूराम व्यास जाट का कूवा जयपुर
१८८	७३८०	दोषपृच्छा		१८वीं श.	१	राजस्थानी अर्थ सहित
१८९	५७५१	ध्रुवभ्रमयन्त्र	नर्मदाप्रसादसुत	१६१४	६	लि क. व्रजवासी, जयपुर
१९०	५५५५	नरपतिजयचर्या (जयलक्ष्मीनाम्नीटीकासहित)	नरपतिकवि	१८वीं श.	१७७	प्रथम पत्र अप्राप्त
१९१	५८३०	नरपतिजयचर्या	,,	१८६६	१२६	✲ ७३वा पत्र अप्राप्त
१९२	५९४०	,,	,,	१७५८	६०	लि. परमानन्द मिश्र चित्रयन्त्रयुक्त
१९३	६०९१	,, (भूत्रलयपर्यन्त)	,,	१६वीं श.	४३	
१९४	६६१०	,,	,,	१८वीं श	६१	१ से १६ व ८४ से ८८ तक अप्राप्त
१९५	७१३२	,,	,,	१८वीं श	३६–८०	अपूर्ण
१९६	७८३६	,,	,,	१८४६	१२४	अपूर्ण, रचना १२३२ (?)
१९७	७५८७	नरपतिजयचर्याटीका		१६वीं श.	६७	पत्र ३, ६, २७, अप्राप्त
१९८	४७७१ (३)	नवग्रहयन्त्रविधि	महाभारतान्तर्गत	१८०५	४६–५२	
१९९	४८५१	नवरोजप्रकाश	शिवलालपाठक	१६वीं श	३	✲

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२००	७८१८	नष्टजातक	(रुद्रसहितान्तर्गत)	१८वीं श.	७६	
२०१	७०८८	नष्टोद्दिष्टविधि		,,	२	*
२०२	४७७१(४)	नक्षत्रनिघटु, ग्रहनिघटु		१८०५	५३–५४	
२०३	७६५२	नाडीसमुच्चय		१९वीं श.	३	
२०४	७६६६	नारचन्द्र	नारचन्द्र	१८६६	१८	लि क. अमृतविजय
२०५	६८२१	,, प्रथम प्रकरण	,,	१७५६	११	लि क रतना तिलकधीरशिष्या जैतारणमध्ये
२०६	४७४७	,, ,,	,,	१८वीं श	१४	
२०७	७०१०	, य प्रकरण	,,	१८०६	२७	*
२०८	४३५२	नारचन्द्रयत्रकोद्धार सटिप्पण	,, टी श्रीसागरचन्द्रसूरि	१६५१	३०	लि स्था कोरटानगर
२०९	६६५०	नारचन्द्र सटिप्पण (प्रथम प्रकरण)	टी. सागरचन्द्रसूरि	१८वीं श.	२६	
२१०	६७७६	नारचन्द्रसूत्र	नारचन्द्र	१७९९	१९	राजस्थानी भाषासहित
२११	५३३९	निबन्धचूडामणि	मिश्र यशोधर फसारिमिश्रात्मज	१९वीं श	६६	अपूर्ण
२१२	६२५२	,,	,,	१७५१	२०	
२१३	६७०३	प्रश्नकौमुदी (ताजिकमतानुसार)		१९२५	४८	
२१४	४८९८	प्रश्नग्रन्थ		१८वीं श	२२	
२१५	५०६३	प्रश्नचूडामणि		१९वीं श.	२३	
२१६	४६८३	प्रश्नचूडामणिसार		१९४३	७	लि. बुद्धिसागरगणि वाच्छदेशमध्ये
२१७	५८११	प्रश्नतत्व	चक्रपाणि सत्यधरात्मज	१९वीं श	१६	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१८	५५६७	प्रश्नतन्त्र	दुर्योधन	१८३८	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
२१९	५२६०	प्रश्नप्रकरण		१९वीं श	५	
२२०	५७६८	,, (ज्योतिषकौमुदीगत)	नीलकण्ठ	१८८८ से पूर्व	२८	
२२१	४८६४	,, ,,	,,	१९वीं श	४४	आद्य पत्र खडित
२२२	४७१४	प्रश्नप्रदीपक	काशीनाथ	,,	११	
२२३	५२६७	,,	,,	१८वीं श	८	
२२४	४७५५	प्रश्नमनोरमा	गर्ग	,,	२	
२२५	५२६१	,,	,,	१९वीं श	४	
२२६	५७२४	,, सटीक	,,	१८वीं श	५	लि.क विद्यार्थी लोकमणि, काश्याम्
२२७	७५०१	प्रश्नमाणिक्यमाला	परमानद शर्मा	१९वीं श.	१७८	अपूर्ण
२२८	४१८३	प्रश्नमार्ग	अज्ञात	,,	१९६	* अपूर्ण
२२९	५६३५	प्रश्नरत्न (सटिप्पण) (त्रिपाठ) (स्वोपज्ञ)	नन्दराम कामानिवासी	,,	४९	रचनाकाल १८२४ टीका रचना १८२७
२३०	५३३८	प्रश्नरत्न (केरलीय)	नवराम मिश्र	१८३७	८	
२३१	५२३९	न वद्या		१९वीं श	८	द्वितीय पत्र अप्राप्त
२३२	४७१९	प्रश्नवैष्णव	नारायणदास सिद्ध ब्रह्मदासमुत	१९१५	४७	लि क. केवलचन्द्र गोविन्दजी
२३३	५२६९	,,	,,	१८वीं श.	३४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२३४	६४३२	प्रश्नवैष्णव	नारायणदास सिद्ध ब्रह्मदाससुत	१९वीं श.	२६	
२३५	७०५०	,,	,,	१८वीं श	२७	
२३६	५५३४	,,	,,	१९वीं श.	३४	अपूर्ण
२३७	४९००	प्रश्नशत		१७९७	२३	
२३८	४७३६	,, (प्रश्नज्ञान)	भट्टोत्पल	१७९४	४	यह ग्रन्थ ७० आर्या छन्दोमें आबद्ध है।
२३९	६५११	प्रश्नशास्त्र (बादरायण) टीका चिन्तामणिनाम्नी	उत्पल भट्ट	१८५३	९	
२४०	४७४०	प्रश्नशास्त्रटीका		१७१०	७	
२४१	५५०५	प्रश्नशिरोमणि	रुद्रमणि	१९२४	१५	आद्य दो पत्र अप्राप्त
२४२	४९९५	प्रश्नसग्रह		१९वीं श.	८	
२४३	४८८३	प्रश्नसग्रहसार, हसचक्र-अवधिविचार		१८८१	८	
२४४	५२६६	प्रश्नसग्रह		१९वीं श	१७	
२४५	५५३२	प्रश्नसप्तति	भट्टोत्पल		१७	लि.क. पुरुषोत्तम मिश्र
२४६	७७१५	प्रश्नसार	जीवा गुर्जर याज्ञिक नरहरिसुत	१९०६	३	लि.क व्रजवासी सिल्लु:
२४७	६४६५	प्रश्नसार (सटीक)	गोविन्दवैवज्ञ विष्णुदैवज्ञसुत	१८९२	१३	राजस्थानी भाषा सहित
२४८	४६७०	प्रश्नसुधाकर	लालमणि (जगद्रामात्मज)	१९२७	८१	
२४९	५७४३	प्रश्नज्ञान (आर्यासप्तति)	भट्टोत्पल	१९वीं श.	४	
२५०	५४६४(२)	प्रश्नोत्तरीरत्नमाला		१८७०	४	
२५१	५७३१	प्रासादमण्डन	सूत्रधार मण्डन	१९२८	२८	लि क गोपाल

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२५२	६०९६	पञ्चतत्वविचार		१९वीं श	४	राजस्थानी भाषा सहित
२५३	५५३५	पञ्चपक्षी सटीक त्रिपाठ	रुद्रोक्त	१९२४	१५	लि.क. पुरुषोत्तम
२५४	५७६३	पञ्चपक्षीसटिप्पण	टी कल्याणकर	१९०८	२	लि क. व्रजवासी, मथुरा
२५५	४४५२(३९)	पञ्चपक्षीप्रश्न	महादेव	१८वीं श	४२–४३	* लि.क प प्रीतसौभाग्य स्था वणहेडा ग्राम
२५६	४५२३	पञ्चपक्षीशकुन		१८३१	२	लि क नागेश्वर
२५७	६५२४	,,		१९२४	११	प्रथम पत्र अप्राप्त
२५८	७६७२	पञ्चश्लोकीताजिक टीका	बालकृष्ण	१८९३	५	लि क व्रजवासी सिल्लु वाराणस्या ललिताघट्ट
२५९	६५२४	पञ्चशर (पञ्चस्वरा)	परमसुखोपाध्याय	१९वीं श	६	
२६०	५७५३	पञ्चशरनिर्णय (पञ्चस्वर)	प्रजापतिदास	,,	५	
२६१	५६४०	पञ्चशरविवृत्ति (पंचस्वरा)	,, अप्पय दीक्षित	१६७६ शाके	१४	
२६२	५७३०	पञ्चस्वरा (द्वितीयाध्याय)	परमसुखोपाध्याय	१९वीं श	६	
२६३	५६८३	पञ्चसिद्धान्तमत (भास्वत्युदाहरण टीका)	शतानन्द गगाधर	१८९२	१२	लि क. व्रजवासी सिल्लु मण्डीमध्ये
२६४	५७९६	पञ्चाङ्गसिद्धि	वावादैवज्ञ, रामपुत्र, शिवानुज	१९०७	५	सुज्ञजागेश्वरप्रीत्यै रचित लि क व्रजवासी काश्याम्
२६५	६७५९	पञ्चाङ्गाभिधपत्र (लग्नसाधनविधि)		१९वीं श	७	राजस्थानी सहित
२६६	७७१९	पञ्चाशत्प्रश्न	शङ्कराचार्य	१९वीं श.	६	
२६७	४७४८	पद्धतिप्रकाश	दिवाकर	१८६२	९	लि क. जोशी आशाराम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६८	४८६३	पद्धतिप्रकाश	दिवाकर	१९वीं श.	८	#
२६९	४८६६	पद्धतिप्रकाशोदाहरण (गणिततत्वचिन्तामणेः)	,,	,,	४९	
२७०	४६६५	पद्मकोश		,,	१०	
२७१	७६९६	,,	गोवर्द्धन कण्डोलक द्विजरामसुत	१८७२	९	रचनाकाल १६०१ लि क. घीरा, रूपनगर
२७२	६३०९	पद्मताजिक		१९वीं श.	१६	
२७३	५८१५	पवनविजयग्रन्थ	ईश्वरप्रोक्त	१९०५	१८	
२७४	५७७६	पवनविजयस्वरोदय	शिवप्रोक्त	१९वीं श	१२	
२७५	७०९१	पत्रीमार्गदर्शन, योगसग्रह		१८वीं श	८४	अपूर्ण/राजस्थानीअर्थसहित/पत्र १-१४ व १६वा अप्राप्त
२७६	६२८४	पाराशरीहोरा		१९वीं श.	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
२७७	४७३९	पाशाकेवली	गर्गाचार्य	१७९१	१०	लि.क. श्रा नागरेण द्वारा लिखित हरिदत्तजी पठनार्थ
२७८	४७५२	,,	,,	१९वीं श	६	
२७९	६२५७	,,	,,	,,	१६	
२८०	६४३१	,,	,,	,,	९	लि.क. अमरचन्द्र
२८१	६६२०	,,	,,	१९२७	११	,, गुरुदयाल सौदावादवासी
२८२	४६७८	पैतामहीसारिणी	मधुसूदन दैवज्ञ श्रीपतिशिष्य	१९वीं श	३	#
२८३	६४२८	फलकल्पलता (वार्षिक)		१७७४	५	लि.क पुण्यविजय श्रीमत्पत्तनपत्तने
२८४	४७३५	ब्रह्मतुल्यगणितक्रम	करणकुतूहलगत	१८८४	३५	लि क हेमसागरशिष्य गुमानसागर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८५	५६४२	ब्रह्मतुल्योदाहरण (कुलभाष्य)		१९वी श.	५२	
२८६	५८२६	ब्रह्मसिद्धान्त	शाकल्यसहितागत	,,	४५	आद्यपत्र अप्राप्त । लिपिस्थान काशी
२८७	६१७८	,, सटीक	टी पद्मनाभ नर्मदात्मज	१७००	७८	लि.स्था मथुरा। लि.क. जटमलगौड
२८८	४८६५	बानवोणिनी	श्रीलान्हिदत्तद्विज	१९वीं श.	७	श्रीपतिपादपद्ममधुप श्रीलान्हिदत्तोद्विज
२८९	४२७७	बालावबोध	मुञ्जादित्य	१७६९	१७	* लि क खरतरगच्छीय बालचन्द्र स्थान पारापुर/प्रथम पत्र अप्राप्त
२९०	४२५८	बालबोध	,,	१८४७	३४	लि क गगाविष्णुकान्यकुब्ज स्थान नगर वोली
२९१	४७२८	,,	,,	१९वीं श.	१२	
२९२	४८७६	,,	,,	१८७६	४८	वकपुरमध्ये लिखितम्
२९३	७०३४	,,		१९वीं श.	२१	अपूर्ण
२९४	७११२	,,	हरिकर्ण	१८वीं श	२	*
२९५	५६२६	वीजगणितबालबोधिनीटीका	भास्कराचार्य टी. कृपाराममिश्र	१८६४	९६	लि क व्रजवासी सिल्लु काशी रचनाकाल शाके १७१४
२९६	६२१२	वीजवासनाभाष्य	व्रजनाथसूनु	१७७६	१५४	* आद्य १९ पत्र अप्राप्त
२९७	५७४७	बृहच्चिन्तामणिवासनाभाष्य (संज्ञाध्यायमात्र)	मू गणेश दैवज्ञ टी चिण्णु दैवज्ञ दिवाकरसुत	१९वीं श.	२१	
२९८	४१८६	बृहज्जातक	वराहमिहिर	१९वीं श	६६	* पत्र ४३,४४,४५ अप्राप्त लि क जोसी जीवणराम
२९९	४६५८	,,	,,	१८६५	५८	
३००	४६६७	,,	,,	१८०१	२१	,, सारङ्ग नरपति

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०१	४६९७	बृहज्जातक	वराहमिहिर	१८३७	४९	लि.क महाराजा प्रतापसिंहज राज्ये
३०२	४८८९	,,	,,	१७२३	५०	आद्यन्तपत्र खडित
३०३	४९७४	,,	,,	१८६६	७२	लि क सदासुख
३०४	६१०५	,,	,,	१८३५	१९	लि.क. स्वामीबालचन्द्र स्थान—नरवर
३०५	६२०९	,,	,,	१८६३	१८९	
३०६	७०५५	,,	,,	१८४१	५५	
३०७	७०१३	,, (उपसहाराध्याय)	,,	१७८५	१६	लि क स्थान–कृष्णगढ़
३०८	५३२६	बृहज्जातकटीका	भट्टोत्पल	१९वीं श	६९	१, २, ३४, ४४ पत्र अप्राप्त
३०९	६२३९	बृहज्जातकविवरण	महीधर	१८५१	८४	
३१०	५५३१	बृहज्जातक (सटिप्पण)	वराहमिहिर	१९२२	३४	
३११	५८२८	,,	,,	१९वीं श	४९	अन्तिम पत्र अप्राप्त
३१२	७६२२	बृहत्सहिता	,,	१९वीं श.	१७४	
३१३	५५३६	बृहन्नारचन्द्रसारोद्धार	नारचन्द्र	१८वीं श.	१०	
३१४	५५४०	,,	,,	१७वीं श	१८	
३१५	५६९८	बृहस्पतिकाण्ड	शिवपार्वती सवाद	१९वीं श.	९	
३१६	४६८१	भ्रमणसारिणी		१९वीं श	१३८	
३१७	५६४८	भावविवृति	माधव	१८६०	१८	लि शिवदास वाराणसी
३१८	४७६४	भावाध्याय	ताजिकभूषणगत	१९वीं श	५	
३१९	४७१८	,,	रत्नसारान्तर्गत	१८१०	१६	लि क ऋषि नागजी
३२०	४८५३	भावेशफल		१९वीं श.	१३	

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२१	५७३५	भावेशफलाध्याय	जातककामधेनुगत	१९०२		लि क व्रजवासीसिल्लु रीमापुरे
३२२	६८९६	भास्वती	शतानन्द	१९०२	१५	,, ऋषि लाला लक्ष्मीचन्द्र
३२३	४६९३	भुवनदीपक		१७०२	४	,, मुनि दामाख्य
३२४	५७०८	,,	पद्मप्रभसूरि	१९वीं श.	६४	रचनाकाल—शाके पचरसाघने
३२५	४७५०	,, सस्तबक	,,	१८वीं श	१०	राजस्थानी भाषा सहित
३२६	४४११	,, सटीक	,, टी. सिंहतिलक	१९वीं श	५३	* टीका रचनाकाल–१३२६ स्थान—बीजापुर
३२७	४४५२(८१)	भैरवीचक्र		१८वीं श	१२३वां	इस चक्रमें दिशानुसार भैरवीके बोलने पर शुभाशुभ फलका निर्णय किया गया है
३२८	६३०१	मकरन्दकारिका	कृपाराम	१९२२	९	लि क आनदसिंह
३२९	७५१९	मकरन्दभावविवृति	नीलकण्ठ	२०वीं श	५	
३३०	५७३२	मकरन्दविवरण	दिवाकर नृसिंहसुत	१८९४	९	लि क व्रजवासी सिल्लु मणिकर्णिकातीरे
३३१	७५१५	,,	श्रीपतिभट्ट	१९३६	१२	
३३२	७५१६	,,	दिवाकर नृसिंहसुत शिवगुरुशिष्य	१९३६	२१	
३३३	६२७५	मकरन्दसाधनप्रक्रिया	चूडामणिचक्रवर्ती	१८९०	१२	
३३४	५७६४	मकरन्दोदाहरण (सूर्यसिद्धातमतानुसार)	विश्वनाथ	१९वीं श	१९	
३३५	५८२२	मकरन्दोदाहरण	,,	१८६७	२७	पत्र १ व ८वा अप्राप्त
३३६	५८१०	मकरन्दोदाहृति	,,	१९३६	५७	
३३७	६८५९	मकरसक्रान्तिपत्रक (खरडा)		१९वीं श.	१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३३८	६६४३	मयूरचित्र		१८९८	२०	लि क. मिश्र भवानीदास, जयनगर
३३९	४२८४	,, (मयूरपदपूर्वक)	नारदप्रोक्त	१८९७	१९	* लि क शीरपाणिपुत्रः
३४०	६२२२	मयूरचित्रक	,,	१८वीं श.	१०	
३४१	५७७२	मयूरचित्रकादि	वराहमिहिर	१९वीं श	२९	
३४२	४८४९	महादशाफल		,,	७	
३४३	७१३६	महादेवीवृत्तिदीपिका	धनराजगणि भुवनराजगणींद्रशिष्य	१८वीं श	९ से ३२	
३४४	४६८०	महादेवीसारिणी		१९वीं श	६१	
३४५	४७४१	,,		१८१४	१२६	आद्य न्तपृष्ठ सचित्र शोभन
३४६	४७८६	,,		१८४९	१५२	रचनाकाल अनुमानतः १२३८ शक लि क खरतरगच्छीय शोभाचन्द्रजीशिष्य चन्द्रभाण स्थान—सुभटपुर
३४७	७४७०	मानसागरीपद्धति	नानाग्रन्थोद्धृत	१९वीं श	७७	राजस्थानी भाषा सहित
३४८	६७१५	मासभावाध्याय	ताजिककल्पलनोक्त	१७६८	८	लि क. आचार्य किशोरदास औदुम्बर मोढासावासी
३४९	४२८३	माससारिणी		१८वीं श.	१५	*
३५०	६४३९	मासेश–मासभावफल	ताजिकमतानुसार	१७८७	१०	लि क. लब्धिसुन्दर कल्याणसुन्दरशिष्य, फतेपुर
३५१	४७२३	मुन्थाफल		१९वी श	१	
३५२	७८२८	मुष्टिज्ञान		१८वीं श.	२	राजस्थानी भाषार्थ सहित
३५३	४९७३	मुहूर्त्तगणपतिसार	गणपतिदैवज्ञ (रावल हरिशकर सूरिसूनु)	१८७३	५१	२४ वां पत्र अप्राप्त रचनाकाल १७५०

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५४	४८४३	मुहूर्त्तचिन्तामणि	रामदैवज्ञ	१८००	४०	रचनाकाल–१५२२ शाके लि क रूपनारायण गौड
३५५	७०११	”	”	१७६२	२६	रचनाकाल–१५२२ शाके लि.क. प० गुणमूर्ति
३५६	४११०	” (प्रमिताक्षराटीकोपेता)	”	१८६६	१५६	लि.क रामसुख, जयपुर
३५७	६२५८	” ”	”	१८३२	८२	पत्र ११ से १६,७५,७६,८१वां अप्राप्त लि क. व्यास बालकृष्ण नरवर-मध्ये
३५८	४६४८	” सटीक	”	१६०३	२१५	
३५९	५६८६	” (पीयूषधारा सहित)	”	१६वीं श.	३६	शुभाशुभप्रकरण मात्र
३६०	५६८७	” ”	”	”	३६	नक्षत्रप्रकरण मात्र
३६१	५६८८	” ”	”	”	११	सक्रान्तिप्रकरण मात्र
३६२	५६८६	मुहूर्त्तचिन्तामणि सटीक (पीयूषधारा टीकोपेत)	”	”	८	गोचरप्रकरण मात्र
३६३	५६६०	” ”	”	”	३६	सस्कारप्रकरण मात्र
३६४	५६६१	” ”	”	”	६३	राज्याभिषेकप्रकरण मात्र
३६५	५६६२	” ”	”	१६२०	८२	यात्राप्रकरण
३६६	५६६३	” ”	”	१६२१	२४	गृहारम्भप्रकरण मात्र
३६७	५६६४	” ”	”	१६२०	१७	गृहप्रवेशप्रकरण लि.क. झण्डाराम प्रश्नोरा (मधुपुरी)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६८	६२६३	मुहूर्त्तचिन्तामणि सटबार्थ	रामदैवज्ञ, टी. चतुरविजयगणि	१८३०	१०२	रचनाकाल स० १७५७ पत्र १ से ८ तक अप्राप्त
३६९	४७११	,, सस्तबक	रामदैवज्ञ	१८२७	५०	लि.क. जीवनविजयगणि
३७०	५६६६	मुहूर्त्ततत्व दीपिकाटीकोपेत	केशवदैवज्ञ टी गणेशदैवज्ञ	१७६३	१०८	
३७१	४६४७	मुहूर्त्तदर्पण	ज्योतिर्विल्लालमणि जगद्रामसुत गगाराम पौत्र	१८२२		ओरछाग्रामवास्तव्यश्यामजू-लिखितम्
३७२	४८७९	मुहूर्त्तदीपक	महादेव कान्हजीबाड़वसुत	१६६२	१०	लि क. परमानन्द
३७३	५७७०	मुहूर्त्तमञ्जरी	यदुनन्दन	१९०५		लि क. अर्जुन पण्डित रचनाकाल १७०६ (?) ,, १७२६
३७४	५३४८	,, सटीक	,, टी. मनसाराम रामकृष्णसुत	१८५९	२१	* लि क वूचाराम गढ भरतपुर मध्ये
३७५	४६६४	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड	नारायणदैवज्ञ अनन्ताख्य चातुर्मास्य पुत्र	१९००	२०	लि क. औदीच्यज्ञातीय देराश्री पुरुषोत्तमसुत लीलाधर
३७६	४७३२	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड (मूल)	नारायण	१८३७	२६	रचनाकाल १४९३ शाके
३७७	४८८७	,,	,,	१८९०	२३	लि.क विजयलाल औदुम्बरज्ञातीय
३७८	५२४६	,,	,,	१८५५	२७	संक्रान्तिप्रकरणान्त
३७९	६७६५	,,	,,	१९०३	३५	लि क. मोती
३८०	७०४८	,,	,,	१८६२	२७	लि.क दयाशङ्कर व्यास मोतीरामसुत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८१	४६७१	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड सटीक	नारायण	१७८६	८२	लि क. महाजन नरसिंह, जयपुर रचनाकाल स० १६२६
३८२	४७०६	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड टीका	"	१६वीं श.	७८	किंचिदपूर्ण
३८३	४७२६	"	"	"	१२१	रचनाकाल १६२६
३८४	६१३०	,	"	१८३७	५६	" १४९३ शाके
३८५	५५२५	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड (वल्लभाख्या टीका सहित)	"	१६वीं श	४७	अपूर्ण
३८६	७३७१	मुहूर्त्तमुक्तावली (सटबार्थ)		१८४६	१०	लछमनपठनार्थ करहेडा मध्ये
३८७	६३६४	" (सटिप्पण)		१६वीं श.	८	राजस्थानी भाषार्थ सहित
३८८	४७१७	" (सस्तबक)	हरिभट्ट	१६६७	६	लि क ऋषि नानजी
३८९	४८७४	" (मुहूर्त्तप्रदीप)		१७०२	११	लि क मेवपाटज्ञातीय जोशी सुरजीकेन लिखितम्
३९०	७६५१	" (प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित)		१८४७	८	घोडेलावग्राम मध्ये लि क रत्नसागर समेणमध्ये
३९१	५७१४	मुहूर्त्तसर्वस्व	रघुवीर	१८वीं श	१६	रचनाकाल १५५७ शाके
३९२	७१०४	मूलजातकविधान		"	२	
३९३	६३६२	मेघमाला		१६वीं श.	१६	
३९४	५६४६	यन्त्रचिन्तामणि	दामोदर	१६१८	६१	
३९५	५३१७	" सटीक	जगद्दैवज्ञ (?) टी रामदैवज्ञ	१८४५	१६	लि.क मनसाराम प्रथम पत्र अप्राप्त
३९६	५६१६	यन्त्रचिन्तामणि टीका (यन्त्रदीपिकाख्या)	"	१८६५	१३	लि क व्रजवासी मिश्र, ललिताघट्टे काश्या

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३९७	६१०८	यन्त्रचिन्तामणि सटीक	चक्रधर वामनात्मज टी. रामदैवज्ञ मधुसूदनात्मज	१८५४	२९	
३९८	६८८५	,, सटीक	,,	१९०३	३६	लि क लाला लक्ष्मीचद
३९९	४१३२	यन्त्रराज	महेन्द्रसूरि	१८४७	१९	*
४००	५६८२	,, सटीक	,, टी. मलयेन्द्रसूरि	१९३९	५०	
४०१	६२५४	यन्त्रराज टीका	,,	१९०१	४७	लि क सर्वेश्वर
४०२	७०१२	यवनजातक (जातकाभरण)	ढुण्ढिराज	१९१९	१०५	वृद्धयवनजातक
४०३	४४०९	यानयोगार्णव	शिवोवित	१८२५	२३	* लि क प. लिखमीराम स्थान नेवय मध्ये (निवाई)
४०४	६५१०	युद्धकौशल		१९वीं श	७	
४०५	७६४२	,,	श्रीरुद्रः	,,	१६	
४०६	६७७५	युद्धजयोत्सव	गंगाराम	१८९९	१७	लि क मोतीगरू
४०७	६८६१	योगचिन्तामणि (सबालावबोध)	हर्षकीर्त्तिसूरि बा नर्गसिंह रतनराज गणिशिष्य	१७२४	७३	लि.क. रङ्गविमल कालूग्रामे
४०८	५७४९	योगशतक	बलभद्र	१९वीं श.	१२	
४०९	४८६३	योगार्णव	वेंकटेश	,,	१८	
४१०	५७३६	,,	,,	१९२१	१३	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः
४११	५७६६	योगावली		१९-२०वीं श.	२०	प्रति की लिपि दो प्रकार की है
४१२	६०४०	योगिनीदशाकरण	राजऋषि	१८११	१२	लि क भैरवदास
४१३	४८९५	योगिनीदशान्तर्दशाफल		१८वीं श.	७	
४१४	४६५४	योगिनीदशाफल	रुद्रयामलोक्त	,,	७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१५	७६४५	रत्नप्रदीप		१८०९	१९	लि क हरवल्लभ पारीक जोसी भूधरजीसुत, ढाण्या
४१६	५६०९	रत्नमाला	महादेव	१८६८	२३	लि क भागीरथ ब्राह्मण रचनाकाल ११८५ शाके
४१७	५८३११	रत्नमाला (विवरणनाम्नी टीका)	श्रीपति टी. महादेव लूणिय पुत्र	१९वीं श	२१४	४६,४७,६१,२०८वा पत्र अप्राप्त
४१८	७५७२	रमलग्रन्थ (रमलेन्दुप्रकाशसम्मत)		१८वीं श	२०	
४१९	७५७५	,, (बिन्दुरमलाख्य)		१९वीं श	११	ग्रन्थस्वामी भट्ट हरिदत्त
४२०	४७५९	रमलचिन्तामणि सज्ञातत्र (प्रथम)	चिन्तामणि पडित	१८वीं श	१०	
४२१	४७६०	,, (प्रश्नतन्त्र) द्वितीय	,,	,,	१०	
४२२	५१६५	रमलनवरत्न	परमसुख उपाध्याय	,,	३७	✽
४२३	५३०४	रमलनवरत्नम्	परमसुखोपाध्याय	१८८८	२६	
४२४	५६०८	,,	,,	१९वीं श.	३५	रचनाकाल–१८६७
४२५	५७९७	रमलबिन्दु		,,	११	प्रति के कोण खडित हैं
४२६	४४५३	रमलशास्त्र	राम	१७८०	१२	भुजङ्गमध्ये लिखितं
४२७	५३२१	,,	रामरुद्र	१७१५	७	प्रथम पत्र अप्राप्त
४२८	५४७९	,,	रामदैवज्ञ	१९वीं श	४९	
४२९	६८३३(२)	,,		१८४८	६–७	लि क लाला अमृतराम
४३०	७५७४	,,	,,	१९वीं श.	१७	
४३१	६८३३(११)	,,		१८५२	५५–६९	
४३२	४७६९	रमलसार	श्रीपति	१८४२	१६	✽
४३३	४६५१	रमलेन्दुप्रकाश	रुद्रधर त्रिपाठी	१९वीं श	३४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३४	७५७३	रमलेन्दुप्रकाश	रुद्रधर त्रिपाठी	१८३८	२८	
४३५	५६०७	राजवल्लभ वास्तुशास्त्र	मण्डन सूत्रधार	१६०६	४४	
४३६	७५१२	रामविनोद	रामभट्ट	१७५५	१३	लिपिस्थान-नरायणा कूर्मवशोद्भव महाराजाधिराज श्री रामदास की आज्ञा से रचित।
४३७	५५९४	रेखागणित	जगन्नाथ सम्राट्	१९२०	२६४	सवाईजयसिंहतुष्ट्यै
४३८	७०९३	लग्नचन्द्रिका		१८वीं श.	३४	प्रथम पत्र शोभन
४३९	५५६८	,, (जन्मपत्रीलेखोदाहरण)	काशीनाथ	१९वीं श	१८	प्रथम पत्र अप्राप्त
४४०	७६०५	लग्नवाद	श्री गिरधारी मिश्र मैथिल	,,	१	
४४१	४६८२	लग्नसाधनविधि		,,	८	
४४२	६४२६	,,		१८६८	६	
४४३	४७३०	लग्नोदाहरण		१९वीं श.	४	नागोर मध्ये लिखितम्
४४४	६४६४	लघुकामधेनुसारिणी	केशव	१८वीं श	१०	लि क. धर्मविजयगणि रूपनगर रचनास्थान-काशी
४४५	५५२३	लघुजातक	वराहमिहिर	१९१६	१७	लि.क विप्र रामगोपाल, केकड़ी
४४६	६३८२	,,	,,	१८१२	७	,, पं. उदयसुन्दर श्रीबीकानगरे द्वितीय पत्र अप्राप्त
४४७	६८२२	,,	,,	१७वीं श	९	
४४८	६९०७	,,	,,	१८४४		लि.क उदयसुन्दर क्षमासुन्दर-शिष्य
४४९	७०९८	,, (अरिष्टाध्यायान्त)	,,	१८वीं श	३	आर्यापद्यबद्ध ग्रन्थ है

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५०	४१८७	लघुजातक सटीक	वराहमिहिर	१६५४	५६	*
४५१	४६८४	,, सवृत्तिक	,, टी -मतिसागर उपाध्याय	१८८५	३०	
४५२	४७४६	,, सटीक (त्रिपाट)	वराहमिहिर, टी उत्पलभट्ट	१७२३	१६	
४५३	४७५४	,, ,,	,,	१८४२	१८	लि क. सन्तोषदास वष्णव
४५४	७१०१	,, सटिप्पण		१८वीं श	२	
४५५	५६८५	लघुपाराशरी (योगाध्यायमात्र)	पाराशर ऋषि	१६३२	२	
४५६	७६४३	लघुपाराशरी (उडुदायप्रदीपोद्योत)	भैरवदत्त प हरिरामशर्मपुत्र	१६वीं श.	२६	पत्र १,२,३, अप्राप्त
४५७	५७४६	लघुपाराशरी सटीक (राजयोगाध्यायान्त)	पाराशर ऋषि	१८६४	६	लि क व्रजवासी सिल्लु मणि-कर्णिका तीरे अमृतपातालदेवालये
४५८	४७५८	लघुमातण्ड, मुहूर्त्तदीपक	नारायण दैवज्ञ कौशिक	१६वीं श	१४	*
४५९	५६१३	लघुक्षेत्र समास विवरण	चन्द्रशेखर	१४८८	३२	लि. स्था चित्रकूट दुर्ग
४६०	५७४२	लम्पाकशास्त्र	पद्मनाभ	१८६७	८	लि क. देवीचन्द्र ग्राम सल्हडी काश्याम्
४६१	५६३४	,, सटीक (त्रिपाठ)	,,	१६०५	३४	लि व्रजवासी सिल्लु काश्याम्
४६२	६३७२	लल्लवाराही	लल्ल	१८वीं श	३	
४६३	५७२३	लीलावती	भास्कराचार्य	१६वीं श.	४२	
४६४	५७०४	लीलावती विवरण	,, टीका-रामकृष्ण		६३	*
४६५	४७६७	वर्षगणितपद्धति (दिवाकरीपद्धति)	दिवाकर नृसिंहसुत	१८४७	५	
४६६	६३११	वर्षतन्त्र	नीलकण्ठ	१८३२	३०	लि मनरूप व्यास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६७	६५४५	वर्षतन्त्र	नीलकण्ठ	१८७२	४७	लि क रतनविजय
४६८	४७०६	,, सटीक	,, टी-विश्वनाथ	१७५२	३१	२७,२८ २९वा पत्र अप्राप्त
४६९	७१४२	वर्षसारिणी (वर्षफलपद्धतिसार्थ)		१८०२	१६	लि क. चिरञ्जी सीतर
४७०	४३५५	वसन्तराज शाकुन	वसन्तराज भट्ट	१७७१	३७	* लि क विद्याविलास पाठक लि स्था श्री बेनातट नगर
४७१	६२०८	,,	,,	१८२३	६३	
४७२	६७८८	,,	,,	१९१२	१५७	
४७३	७८२९	,,	,,	१८४२	८२	लि क गङ्गाराम
४७४	५५९३	वसिष्ठसहिता	वसिष्ठप्रोक्त	१९१९	१३३	
४७५	६४२१	वामवेधफल		१७९९	८	लि क देवचन्द्र, मण्डोवरमध्ये
४७६	५१३२	वास्तुशास्त्र	विश्वकर्माप्रकाशगत	१९०६	७२	
४७७	४८७७	विंशोत्तरीदशाफल		१९५८	१०	
४७८	४६५६	विजयप्रशस्ति	स्वच्छन्द शङ्कराचार्य	१८२४	१३	* लि स्था जयपुर, रचनाकाल स० १७४२
४७९	५६३३	विरोधप्रकाश	यज्ञेश्वर	१८९३	३	लि क व्रजवासी सिल्लुः
४८०	४७१२	विवाहपटल		१८५६	६	राजस्थानी भाषार्थ सहित
४८१	५५३७	विवाहपटलटीका		१९१२	१२	काशिनाथकृत शीघ्रबोधानुसार लि क इन्द्रसुन्दर
४८२	६३५२	विवाहपटलसस्तबक		१९वीं श.	१९	
४८३	७६५०	विवाहपटल		१८१८	१७	राजस्थानी भाषार्थ सहित लि क नवनिधिविजय
४८४	७६५८	,,		१७८४	२०	राजस्थानी भाषार्थ सहित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८५	६४२२	विवाहमासनिर्णयादि		१८वीं श.	२	
४८६	४८५७	विवाहवृन्दावन	केशव	१९वीं श	२८	
४८७	६०९९	,,		१७१२	२०	लि.क कल्याण
४८८	६३३९	विवाहवृन्दावन टीका	गणेश दैवज्ञ	१८६०	६२	
४८९	७०५१	विवाहवृन्दावनभाष्य	केशवार्क, भाष्य-शिवशाकर	१८२१	५७	प्रति की लिपि दो प्रकार की है
४९०	६८३४	वेगराजविवेकनिबन्ध (कर्मविपाक)		१८७८	३८	लि क सुमतिसागर
४९१	४६५७	शकुनप्रदीपचूडामणि	उपेन्द्र	१७९९	१२	लि क छबीलाराम अर्गलपुरमध्ये
४९२	६३३०	शकुनसार		१९वीं श	२	
४९३	५४५२	शकुनावली		१९१०	८	
४९४	७६३७	शरत्पद्धति	रङ्गनाथ	१७५३	५	लि क व्यास पुरुषोत्तम स्थान–मथुरा
४९५	५२२२	शिवालिखित मुहूर्त	रुद्रयामलोक्त	१८वीं श	४	
४९६	४६५३	शिवालिखित ,,		,,	६	
४९७	६४३६	शिवालिखित मुहूर्तमालिका	शिवोक्त	,,	६	प्रथम पत्र अप्राप्त
४९८	४१५५	शीघ्रबोध	काशीनाथ	१९वीं श.	४०	लि क. रामचन्द्र ब्राह्मण
४९९	४७५६	,,	,,	१७९७	२९	
५००	५०५०	,,	,,	१८९९	३१	
५०१	५७३८	,,	,,	१८८५	४६	लि क देवीदयाल कायस्थ, काशी
५०२	६३९७	,,	,,	१८५१	३४	
५०३	७१५२	शीघ्रबोध भड्डुली के दोहे	,, भड्डुली	१८६१	६३	लि क यति प्रेमचन्द, हीरापुरीमध्ये
५०४	७६२५	शीघ्रबोध	काशीनाथ	१८७३	७	,, धीरविजय, कृष्णगढ़, प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०५	४८७१	शुकजातक	शुकमुखोक्त	१८४२	३	लि.क. मुरुजित्सुत दुर्गादत्त
५०६	४४०६	शेषवासना	कमलाकर	१७८६	४४	,, रामकृष्ण कायस्थ
५०७	५१०६	षट्पचाशिका	भट्टोत्पल	१८१८	६	,, हरिकृष्ण ब्राह्मण, दशपुर-ग्राममध्ये
५०८	४६५०	षट्पचाशिका सटीक	पृथुयशाः, टी उत्पल भट्ट	१९वीं श.	२१	
५०९	४६८७	,, (सबालावबोध)	पृथुयशा	१८वीं श	१४	लि क जीवनविजय, बालीमध्ये
५१०	४६९२	,, सटीक	,,	१८१९	२२	,, ज्योतिर्विच्छभुराम
५११	४८४१	,, ,,	,,	१८२२	१०	राजस्थानी भाषार्थ साहित
५१२	५७१३	षट्पञ्चाशिकावृत्ति	उत्पल भट्ट	१८३९	२२	लि क कृष्णचन्द्र विजयराम
५१३	६५९४	,,	,,	१८८४	१७	,, रामनारायण ब्राह्मण
५१४	६८१९	,,	,,	१९४५	१९	,, ऊदा
५१५	७५७८	षट्पञ्चाशिकाटीका	मनीराम	१७६९	११	
५१६	४६७३	,, सस्तबक	भट्टोत्पल	१९०१	९	,,पुरुषोत्तमसुत लीलाधर देराश्री
५१७	४८००	,, (होराध्यायान्त)	पृथुयशाः	१९वीं श.	४	
५१८	७६२७	,, सबालावबोध		१८१९	९	,, दानसौभाग्यगणि
५१९	६८३३(१०)	षष्टिसवत्सरफलम्		१८५२	५०–५५	
५२०	४८९९	स्त्रीजातक	श्यामल	१७९७	१०	
५२१	५७९१	,,	यवनजातकान्तर्गत	१८९५	११	लि व्रजवासी सिल्लु, काश्याम्
५२२	४७६३	स्त्रीजातकपद्धति	,,	१८५८	१२	,, रावल जीवा सुत अबाराम
५२३	६७४८	स्त्रीजातक (कुण्डलीफल)		१९वीं श	१	
५२४	४५२५	स्वप्नाध्याय	प्रस्तावरत्नाकरोक्त	१८वीं श	३	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२५	४६५५	स्वप्नाध्याय		१८०८	३	लि क. वैजनाथ
५२६	५६१४	,,		१९१६	७	लि क रामगोपाल
५२७	५६०६	स्वप्नाद्भुतावर्तप्रकरण	प्रद्भुतसागरगत	१९वीं श	११	
५२८	४१०५	स्वरपञ्चाशिका	मिश्र नन्दराम	१८३२	३	रचनाकाल १८२२ स्थान–काम्यकवन
५२९	५३१८	,,	,,	१८६५	४	लि क हरदेवलाल
५३०	५३२२	,,	,,	१७१५	७	
५३१	७१२३	स्वरोदय (सटीक)	शिवप्रोक्त	२०वीं श	४०	लि.क नरहरिदास
५३२	४६७९	स्वरोदय शास्त्र	,,	१९वीं श	२१	
५३३	४८६८	,,	,,	१८३३	१०	लि क बखतराम तिवाडी, देवगढ
५३४	४८९०	,,	जीवनाथ	२०वीं श	२४	
५३५	५५१७	,, विश्वम्भरी	उमामहेश्वरसवादगत(प्रश्नोत्तरी)	१९१६	३६	
५३६	५४३३(१)	सकेतकौमुदी	हरिनाथ		१–५४	
५३७	५८०२	,,	,,	१९वीं श	१८	
५३८	४९९६	सज्ञातन्त्र	नीलकण्ठ	,,	२१	
५३९	५८०४	,,	,,	१८६६	२५	
५४०	६६९०	,,	,,	१९वीं श	२०	
५४१	५१८५	,,	,,	१९१०	५४	
५४२	५५३०	,,	,,	१९वीं श.	८९	
५४३	६०४६	सज्ञातन्त्रोदाहरणम्	,,	१८२२	१०१	लि क काशीनाथ
५४४	५४७३	सज्ञाविवेकविवृति (रसालाभिधा)	नीलकण्ठसुत गोविन्द दैवज्ञ	१८६२	३८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	गन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४५	५५८२	संज्ञाविवेकविवृत्ति (पूर्वार्द्ध)	नीलकण्ठसुत गोविन्ददैवज्ञ	१९वीं श	१४४	
५४६	५(८३	,, (उत्तरार्द्ध)	,,	,,	१२३	रचनाकाल १५४४
५४७	६०४९	सज्ञाविवेक टीका	,,	१८वीं श	३६	
५४८	५७९४	सन्तानदीपिका	भावचिन्तामणिगत	१८९४	५	लि क. व्रजवासी सिल्लुः
५४९	४४५२(८८)	सप्तनाडीचक्र		१८वीं श.	१२८वा	इसमें वर्षा सम्बन्धी योगो का वर्णन किया गया है लि.क. प. प्रीतसौभाग्य स्थान–बरणहेडा ग्राम
५५०	५७२७	सर्वतोभद्रचक्र		१८९७	१२	
५५१	५६७५	सर्वार्थचिन्तामणि (पूर्वार्द्ध)	श्री वेंकटेशशिष्य अप्पय (?)	१९वीं श.	४९	
५५२	५६७६	,, (उत्तरार्द्ध)	,,	१९०६	५१	
५५३	५२८८	सर्वार्थचिन्तामणि	,,	१८वीं श.	६२	
५५४	४१०८	समरसार	राम	१९वीं श	७	*
५५५	४२७४	,,		१७९७	११	* लि.क. हरिचयन सवाई जयपुर
५५६	४६९८	,,	रामचन्द्राचार्य सोमयाजी	१९वीं श.	१०	
५५७	४८५६	,,	रामवाजपेयी	,,	१०	
५५८	५७७४	,,	रामचन्द्र	,,	१७	
५५९	६२४१	,,	,,	१८६२	७	
५६०	६३०८	,,	,,	१८वीं श	४	
५६१	४७०३	समरसार सटीक	रामचन्द्र, टी. भरत	१८९१	३२	
५६२	५८१९	,, ,,	,,	१८९३	२३	लि क व्रजवासी सिल्लु', ८वां पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६३	५३८८	समरसार सटीक	रामचन्द्र, टी. भरत	१८५७	३१	
५६४	६१०७	,,	,,	१८४०	४१	
५६५	७५०३	,,	,,	१९१३	३०	लि क. व्रजवासी, आद्य पत्र त्रुटित
५६६	७८२१	साधितग्रह कुण्डली सग्रह		१९वीं श.	गुटका	
५६७	४३६४	सामुद्रिक (पुरुष स्त्री लक्षण)	समुद्र	१६६४	९	लि क ऋषि मति कीर्ति, स्थान–नादसमा ग्राम
५६८	४४०८	(१) सामुद्रिक, (२) नारचन्द्र (३) भावाध्याय		१७८६	१७	(१) पृष्ठ क से ७ तक, (२) ७ से १४ (३) १४ से १७ लि क. वैरागी राजपाल स्थान–पाल्हणपुर
५६९	५९६८(२)	सामुद्रिक		१९वीं श.	३–१९	
५७०	५३७३(३)	,, सटीक		१८०९	७४–९७	
५७१	४६५९	,, सार्थ	नृपति भूपति	१७०८	१३	लि क मिश्र रघुनाथ
५७२	७५१४	सारमञ्जरी पद्धति		१८वीं श	३३	,, जयकृष्ण
५७३	४७३४	सारसग्रह	महादेव राजगुरु राजगुरु	१८८४	१२	,, गुमानसागर, र.का. १७१८, स्थान–भुजपत्तन
५७४	६०१२	सारावली	कल्याण वर्मा	१८वीं श.	११८	
५७५	५३१३	सिद्धान्तज्योतिष स्फुटपत्राणि		१९वीं श.	१४–३९	
५७६	५६२२	सिद्धान्ततत्त्व	त्रिविक्रमाचार्य	१८९५	७	लि क. व्रजवासी सिल्लु
५७७	५०४३	सिद्धान्तरहस्योदाहरण	विश्वनाथ	१९वीं श	६२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७८	६२२६	सिद्धान्तरहस्योदाहरण	विश्वनाथ	१८२२	५५	
५७९	५८०१	,,	,,	१७वीं श	७६	
५८०	५२६१	सिद्धान्तशिरोमणि	भास्कराचार्य	१८२८	३३	कुम्भेर क्षेत्रे लिखितम्
५८१	५२६२	,,	,,	१९वीं श.	३०	
५८२	५३३७	,,	,,	१८७७	५५	
५८३	५६६६	सिद्धान्तशिरोमणि मरीचि	श्री रगनाथ	१७वीं श	१८३	
५८४	५६२६	सिद्धान्तशिरोमणि वार्तिक (पूर्वार्द्ध)	भास्कराचार्य	१९वीं श.	८१	
५८५	५६३०	,, (उत्तरार्द्ध)	,,	,,	५०	रचनाकाल–शाके १५४३
५८६	५७८७	सिद्धान्तशिरोमणि वासनाभाष्य	,,	१८८२	१७६	लि. स्था० कलकत्ता
५८७	४७३३	सिद्धान्तसुन्दर	ज्ञानराज	१८४३	३१	लि क हरिसुख ब्राह्मण प्रथम आठ पत्र अप्राप्त
५८८	५५४६	सुदर्शनचक्रम्		१९वीं श	७	लि क रामनारायण
२८९	५७५०	सुश्लोकशतक	मिट्ठन शुक्ल	१९०३	२	आरम्भ के १० श्लोक नहीं हैं
५९०	४४५२(८७)	सूतिकाज्ञान		१८वीं श.	१२६–१२७	
५९१	५२५९	सूर्यचन्द्रग्रहणसारिणी		१९वीं श.	५	
५९२	५६५३	सूर्यग्रहादिसाधनसिद्धान्त	दुर्गाशंकर	१८९३	९०५	लि क. व्रजवासी सिल्लु
५९३	४४५२(८)	सूर्यपुरुषचक्रादि	अज्ञात	१८वीं श.	१२वा	*
५९४	६३७४	सूर्यसिद्धान्त	मयासुर	१९२९	४७	लि.क. डालचन्द
५९५	६८६२	,,	,,	१८वीं श	१०	,, देवसुन्दर
५९६	४५२८	,,	,,	१९वीं श	३४	
५९७	५८७६	,,	,,	१८५५	१०	,, बालचन्द्र स्वामी, ग्वालियर

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५९८	४६५२	सूर्यसिद्धान्त टीका	नृसिंह दैवज्ञ	१८वीं श.	६१	
५९९	५५९२	सूर्यसिद्धान्तोदाहरणव्याख्या	विश्वनाथ दैवज्ञ	१९१२	१५०	लि क. रामजीवन
६००	४७५७	सौरवासना	कमलाकर	१८००	४९	,, हेमराजाचार्य, सवाईजयपुर
६०१	६५७४	हस्तरेखाप्रकरण		१९वीं श.	२	
६०२	६२१०	हस्तसजीवन		१९२३	१७	
६०३	५७८९	,,		१९वीं श	३३	
६०४	४१८२	हायनरत्न	बलभद्र	१८३१	१०७	* लि क हरिप्रसाद
६०५	६८३३(४)	हायनसुन्दर		१९वीं श	२६–३२	
६०६	४८६०	हिल्लाजदीपिका	नृसिंह	१९वीं श	१०	
६०७	५७१८	,,	,,	१८६५	१४	
६०८	४८८५	होराप्रदीप (कर्मविपाकोक्त)	उमामहेश्वर सवाद	१९३६	११	
६०९	४७६५	होरामकरन्द	गुणाकर	१८२४	२४	
६१०	५६७४	होरारत्न	बलभद्र	१९वीं श	४६८	रचनाकाल–१७१०
६११	४६११	त्रिपताकीचक्रादि	जातकार्णवान्तर्गत	१८२८	५	लि क चतुरविजयगणि,पालीनगरे
६१२	४२८५	त्रिकालज्ञानमनश्चितामणि	शिवोक्त	१९वीं श	८	*
६१३	४२८०	त्रैलोक्यप्रकाश (ज्ञानदर्पण)	हेमप्रभ सूरि	१७७२	२३	* लि क धीरसुन्दर गणि
६१४	४३५४	,, (अर्घ्यकाण्ड)	,,	१७१५	२६	* आद्य दो पत्र अप्राप्त लि क प विजयसोमगणि
६१५	७०३७	,,	,,	१७७५	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त लि क सुखविजय,शाकम्भरीनगरे
६१६	५७५४	ज्ञानप्रदीप (प्रश्नादर्श)		१९वीं श	१६	

क्रमाङ्क	ग्रन्याङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१७	४७७३	ज्ञानप्रदीप प्रश्नाधिकार		१९वीं श	२	
६१८	७६२४	ज्ञानप्रदीपिका		१९०९	३४	लि.क. बालमुकुन्द
६१९	४४६४	ज्ञानमजरी (प्रश्नविषयक)	महर्षि ऋषिशर्माचार्य	१८७८	२६	लि.क गोवर्द्धननाथ, जयपुर
६२०	५६२१	ज्ञानमजरी	सोमनाथ (रीवां निवासी)	१९०४	१७	रींवाभिधाने नगरे चतुर्वर्णसमाकुले । तत्रावसन् सोमनाथः करोमि ज्ञानमजरीम् ।।
६२१	७१३१	क्षेत्रसमासवृत्ति (अपूर्ण)		१७वीं	३३	२५,२६,३१वां अप्राप्त
६२२	५०८८	,,		१७५३	१३	लि.क दुर्गादास यति
६२३	४४२७	क्षेत्रसमासावचूरि	मू. सोमतिलकसूरि, अवचूरि-गुणरत्नसूरि	१६वीं	३२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६२२५	छन्द.कौस्तुभ (सभाष्य)	राधादामोदरदास भा. विद्याभूषण	१६०६	२७	लि क बलदेव गोस्वामी
२	५६६०	छन्द.पीयूष	जगन्नाथ मिश्र	१६०६	४४	लि स्था वृन्दावने आनन्दघट्टे
३	५५८१	छन्दोमञ्जरी	गङ्गादास	१६वीं श	३०	
४	४४३२	वृत्तमुक्तावली	धुरन्धरमल्लारि	१८वीं	१२	*लि क कालिंग बम्मणभट्टात्मज वराहग्रामस्थ
५	४३००	वृत्तरत्नाकर	केदार भट्ट	१८२१	६	लि स्था. कर्णपुरग्राम
६	४४६४	"	"	१६वीं श	१५	लि क लक्ष्मण, पहार
७	६६५६	"	"	१६२०	१०	लि क गुणाकर विद्यार्थी
८	४३३६	" (सटीक)	" टी सोमचन्द्र	१५८२	३८	प्रति जीर्ण, दीमक खाई हुई
९	४४३३	" "	टी भास्कर शर्मा	१८१३	३६	टीका का रचनाकाल चै.शु १ स १७३१
१०	४०३२	" सबालावबोध	टी मेरुसुन्दर	१८वीं	११	टी. गुर्ज्जर भाषा में
११	५१४१	" सटीक त्रिपाठ		"	२०	अपूर्ण, त्रुटक
१२	५५५८	" सटीक	टी श्रीकण्ठ	१६वीं श	१५	
१३	६४४७	" (सेतु टीका सहित)	टी भास्कर शर्मा वायाजिभट्टसुत	१६०३	३२	अक्षवह्निहयभूमितवर्षे टी रचना लि क. कन्हैयाराम
१४	७४८२	" सटीक पञ्चपाठ	टी सोमचन्द्र	१७वीं	२०	
१५	७५१३	" वृत्ति	वृ. समयसुन्दर सकलचन्द्रशिष्य	१७५५	३४	*
१६	४३५६	" सटिप्पण	टी क्षेमहस	१७वीं	१३	पत्र जीर्ण एव कीटविद्ध
१७	६०४३	वृत्तरत्नाकर सटिप्पण		१८वीं	६	
१८	४४६२	श्रुतबोध	कालिदास	१७६२	२	लि क मुरलीधर औदुम्बर,काश्याम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४४९३	श्रुतबोध	कालिदास	१८वीं	५	
२०	५१८०	,,	,,	,,	७	
२१	६९७१	,,	,,	१९११	४	
२२	६०२६	,,	,,	१९वीं	३	
२३	५२१८	,, (ज्योत्स्नाभिधटीकासहित)	टी माधव दैवज्ञ गोविन्दसुत नीलकण्ठपौत्र गार्ग्यवशोद्भव	,,	१४	टीका का रचनाकाल–भूतर्क-बाणेन्दुमितेशकाब्दे १५६० शाके (१६९५ वि०)
२४	५६६३	सुवृत्ततिलक	क्षेमेन्द्र	२०वीं	२३	अनन्तराजस्य राज्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६७४१	अनूपसगीतरत्नाकर (द्वितीय-रागाध्याय:)	भाव भट्ट जनार्दनसूनु	१८वीं	२५६	जीर्ण प्रति *
२	४१९९	रागमाला	व्रजनाथदीक्षित पञ्चनवीय (गोकुलस्थ)	१८९४	१०	*
३	५०९४	,,		१९वीं	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४७७४	कोकशास्त्र भाषार्थ सहित	कोक	१९वीं	१५	
२	५७२०	पञ्चसायक	कवि शेखर	१८वीं	३२	
३	४४२६	रतिरहस्य	कुक्कोक पण्डित	१६वीं	२८	
४	४७७५	,,	,,	१६८३	४२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७०२६	अद्भुतरामायण	वाल्मीकिमुनि	१८६०	४३	लि क हरिलाल
२	४३७६	अध्यात्मरामायण (सुन्दरकाण्ड सटीक)	टी. श्रीराम वर्मा हिम्मतवर्मण पुन	१६२७	१७	लि क व्यास घासीराम
३	४५२०	अध्यात्मरामायण सटीक त्रिपाठ	,,	१८वीं श	१७६	
४	५५८६	अध्यात्मरामायण (अयोध्याकाण्ड)		१६०४	३५	
५	५५८७	,, ,, (बालकाण्ड)		,,	२४	
६	५५८८	,, ,, (सुन्दरकाण्ड)		,,	१७	
७	५५८६	,, ,, (किष्किन्धाकाण्ड)		,,	२८	
८	५५६०	,, ,, (अरण्यकाण्ड)		,,	२६	
६	५५६१	,, ,, (युद्धकाण्ड)		,	५२	
१०	४३३१	अनर्घराघव	मुरारि	१७वीं श.	२०	
११	६६६८	,, ,, टीका	मू. मुरारि, टी महोपाध्याय रुचिपति	१८वीं श	४१से१८६	टी. खीप्रालकुलोद्भव वेंजोलिया ग्रामवास्तव्य हरि-नारायण-पद-समलकृत महाराजाधिराज श्रीगङ्गरवसिंहदेव-पोत्साहित
१२	६४०२	अन्यापदेशशतक	मधुसूदन	१८वीं श.	६	लि क दवे विश्वेवर गोलवाल जयपुरमध्ये
१३	७५१७	अभिज्ञानशाकुन्तल	कालिदास	,,	२१	पञ्चमांकपर्यन्त
१४	४३२५	अमरुशतक सटिप्पण	श्रीशङ्कराचार्य (अमरुक)	१८६१	३६	
१५	५६६५	अमरुशतकम्	अमरुक	१८२७	६	लिखित पडितदेवदत्तेन नाहटा जसरूपपठनार्थम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	६६८१	अमरुशतक (भावचिन्तामणि व्याख्यासहित)	अमरुक, टी. चतुर्भुज मिश्र	१८६०	६२	लि क. नैणसागर
१७	५१६८	उद्धवसन्देश	श्रीरूप गोस्वामी	१८वीं	८	खण्डित। ६ से ८ तक पत्र कीटविद्ध
१८	४३३०	ऋतुसंहार	कालिदास	१७६८	८	लि क. मुनि श्रीराघव लि स्था. हिसार
१९	७४९९	कर्णामृत सटीक	मू लीलाशुक, टी. चैतन्यदास	१८वीं	१८	१२वा पत्र अप्राप्त
२०	५१६७	कादम्बरी (पूर्वभाग)	बाण भट्ट	,,	१८५	प्रति सुन्दर है
२१	६१७४	,, उत्तरार्द्ध	बाण भट्ट तनय (पुलिन्द)	१८१५	८२	लि क. लालविहारी माथुर
२२	६९२९	,, ,,	,,	१८८०	८२	प्रथम पत्र अप्राप्त लि क. वैष्णव हरिदास जयपुरमध्ये
२३	६९७४	,, पूर्वखण्ड	बाण भट्ट	१८व	१५९	
२४	४२०४	किरातार्जुनीयम्	भारवि	१८११	११८	
२५	५१२५	,, सटीक	मू भारवि, टी मल्लिनाथ	१८२५	१३४	लि.क चूडामणि सलावदनगरे
२६	६००१	,, ,,	टी. अज्ञात	१७वीं	४३	आदितः अष्टमसर्गपर्यन्त, प्रथम पत्र अप्राप्त
२७	६३१३	,, ,,	,,	,,	१३	पञ्चदशसर्गपर्यन्त
२८	६७९१	,, सावचूरि	भारवि	१८वीं	५४	आद्य ८ पत्र अप्राप्त
२९	६९८२	,, मूल	,,	१७७१	९०	लि क. 'साकवाटा (सागवाडा?) ग्रामस्थितेन रणात्स्वौरस वसदादसात्मजेन देवकृष्णेन-लिखितमिदम्, लवणपुरे'
३०	४३६५	कुमारविहारशतक	रामचन्द्र	१७वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४३६७	कुमारसम्भव सटीक	मू. कालिदास, टी मल्लिनाथ	१६८४ १७५४	५०	लि.क उदयनिधान मुनि लि स्था. योधपुर, आदि के २ प्रत्र अप्राप्त, सप्तम सर्गपर्यन्त
३२	७५८६	,,	,,	१८३१	६६	लि क राधाकृष्ण, लि.स्था कृष्णगढ १०वाँ पत्र अप्राप्त
३३	४१९७(१)	,, मूल	कालिदास	१८४२	५४	सप्तम सर्ग पर्यन्त, लि क पुरुषोत्तम आचार्य
३४	६००५	,, ,,	,,	१७वीं श	३८	सप्तमसर्गपर्यन्त, ३७वाँ पत्र अप्राप्त
३५	६८७०	,, सवृत्तिक	,,	१८वीं श.	७०	सप्तसर्गात्मक
३६	५५१०	,, सटीक	मू. कालिदास, टी मल्लिनाथ	१७१२	१११	
३७	४१६३	,, अष्टम सर्ग	कालिदास	१६१४	५	लि क अलवेश्वर नागर ब्राह्मण
३८	४४८५	,, अष्टमसर्गपर्यन्त	,,	१८६१	४६	लि क व्यास रतनेश्वर लि स्था जयपुर
३९	७००१	,, सटीक	मू कालिदास, टी. मल्लिनाथ	१८वीं श	१३३	षष्ठसर्ग के ७४वें श्लोकपर्यन्त
४०	५१०७	,, ,,	मू कालिदास, टी परमहस परिव्राजकाचार्य सरस्वतीतीर्थ	१७वीं श	३२	प्रथम पत्र अप्राप्त, प्रथम सर्ग के छठे श्लोक से पञ्चमसर्ग के २०वें श्लोक तक टीका है
४१	७७९४	कृष्णगणोद्देशदीपिका		१९वीं श.	६	
४२	५२७१	खण्डप्रशस्ति	हनुमत्कवि	१७५९	२८	लि.क. धर्मेश्वर अम्बावतीवास्तव्य
४३	४३३८	,,	,,	१८वीं श	३०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	५६६८	खण्डप्रशस्ति	हनुमत्कवि	१६वीं श	६	जीर्ण और प्राचीन प्रति
४५	४२७६	खण्डप्रशम्तिवृत्ति	वृत्तिकार गुणविनय	१८वीं श.	२०	
४६	५०६०	गीतगोविन्द	जयदेव	१९वीं श	३४	
४७	५२०५(१६)	,,	,,	१८वीं श.	६६सेद६	
४८	६०६०	,, (सटीक त्रिपाठ)	,, टी चैतन्यदास	१९वीं श.	४६	
४९	६७३४	,,	जयदेव	१८१८	३४	
५०	६०६८	,, सटीक	मू. ,, टी. चैतन्यदास	१८७७	५१	बालबोधिनी टीका,लि.मथुरामध्ये
५१	६७८६	,,	जयदेव	१९वीं श.	६५	१ २,११,१२,१३,१४ ६१,६२ ६३ वां पत्र अप्राप्त
५२	६८५७	,,	,,	,,	७२	अपूर्ण, प्रथम पत्र शोभन
५३	७६२८	,,	,,	१८वीं श	१०	
५४	७७५१	,, सार्थ, पदसग्रह	,,	१६८३	१७७	गुटके के अतमें सूरदास, हरदास परमानन्ददास, कृष्णजीवनी, लच्छीराम आदिके पद व परशुराम कविके दोहे तथा तुलसी बीजमत्रादि लिखे हुए हैं।
५५	७७५५	,,	,,	१९वीं श.	५७	
५६	५१५७	,, सटीक	जयदेव, टी. शेष कमलाकर	१८३०	९२	साहित्यरत्नमालाख्या टीका लि क. हरिचद मथेन (मथेरी) रूप नगरमध्ये
५७	६९८०	गोवर्द्धनसप्तशती सटीक	मू गोवर्द्धन, टी. अनन्तपण्डित	१८१२	३०५	टीका नाम'व्यङ्ग्यार्थसदायन'है

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	४४८६	घटखर्पर	कालिदास	१८०५	२	लि क भवानीशङ्करात्मज उदयशङ्कर
५९	५१६६	,,	,,	१८वीं श	४	
६०	६३०६	,, सटीक	मू ,, टी अज्ञात	१८१६	६	
६१	५६४५	चौरपञ्चाशिका	चौर कवि	१८वीं श	३	
६२	६९२८	जयवशमहाकाव्य	सीताराम पर्वणीकर	१९४१	१३३	जयपुर के इतिहास से सम्बद्ध काव्य
६३	७७९३	दुर्जनमुखचपेटिका	रामाश्रम	१९वीं श	४	
६४	४४०१	द्रौपदीवस्त्रदानप्रबन्ध	गोवर्द्धन	१८१४	८	
६५	५९०२	धर्म्मशर्म्माभ्युदय	हरिश्चन्द्र (आर्द्रदेव कायस्थसुत)	१८२३	३९	
६६	५८७७	नलोदयकाव्य	कालिदास	१८५७	२०	चतुर्थाश्वासपर्यन्त
६७	४०९२	नलोदयटीका	मू ,, टी मनोरथ कवि	१८वीं श	३८	विबुधचन्द्रिका टीका
६८	७४५८	,,	मू ,, टी कविशेखर केशव	१८३५	३२	साहित्यदीपिकानाम्नी विदुषा वषतरामेण लिपीकृतम्
६९	६१६३	,, सटीक त्रिपाठ	मू ,, केशव नृसिंहाश्रम-कृत टीका सहित	१८५५	४८	लिखितं भरतपुरमध्ये तृतीयोच्छ्वास के अन्त में कर्ता केशव लिखा है
७०	५९४५	नेमिदूतम् (विक्रमकाव्यम्)	विक्रम	१७वीं श.	५	कालिदासकृत मेघदूत काव्य के श्लोको के अन्त्यपादपूर्तियुक्त
७१	५१६२	नैषधीयचरित	श्रीहर्ष	१८वीं श	२२०	अन्त्य पत्र अप्राप्त
७२	७०४२	,,	श्रीहर्ष	,,	६९से१९०	पञ्चमसर्ग के १४वें श्लोक से नवमसर्गान्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७३	६२९१	नैषधीयचरित टीका (पञ्चमसर्ग)	टी. विद्यारण्य योगी	१८वीं श	१९	
७४	४३८८	नृसिंहचम्पू	केशव भट्ट	१९वीं श	१५	
७५	५११५८	प्रसन्नराघव	जयदेव	१८१५	७३	लि क जोशी रघुनाथ, जयपुर सवाईमाधोसिंहजीराज्यं
७६	५३६४	,,	,,	१८५०	३८	लि.क चतुर्भुज मिश्र
७७	७२९८	परिशिष्टपर्व (स्थविरावली-चरित्र)	हेमचन्द्र	१८वीं श	१२०	
७८	७२१९	पाण्डवचरित्र	देवप्रभ सूरि	१६४१	२४१	लि.क राव श्री दुर्गभाणजी विजयराज्ये, रामपुरामध्ये
७९	५९४२	ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिचरित्र	हेमचन्द्र	१६६९	१३	त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रान्तर्गत। लि क प० विद्याकीर्ति-पुण्यतिलकशिष्य
८०	७७८६	भट्टिकाव्य (तृतीयसर्गपर्यन्त)		१९वीं श.	८	
८१	५१६०	भामिनीविलास	जगन्नाथ पण्डितराज	१८११	३६	अति सुन्दर प्रति
८२	५२४०	भावशतक	नागराज टाकवशीय	१८वीं श	६	प्रथम पत्ररहित
८३	६६५३	,,	,,	१९वीं श.	१५	
८४	७१३५	मधुकेलिवल्ली	गोवर्द्धन	१९वीं श.	३७	पत्र ३ से १० अप्राप्त
८५	७०२२	महाभारत	श्रीवेदव्यास	१८३७	१७१७	लि क हरिदत्तनागर सावरमध्ये
८६	६८१०	,, आदिपर्व	,,	१९वीं श.	२१५	अपूर्ण, खाण्डववनदाहपर्यन्त
८७	७४९५	,, ,,	,,	१७वीं श.	३५९	
८८	७८३२	,, ,,	,,	१७७३	३७१	लि क. हीरानन्द औदीच्यजातीय

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८९	६२४४	महाभारत सभापर्व	श्रीवेदव्यास	१६९४	१४२	लि क. गोवर्धन
९०	६०६७	,, ,,	,,	१८१०	६६	लि क. मनोहरदास
९१	६१८५	,, ,,	,,	१८वीं श	१६	
९२	६६११	महाभारत सभापर्व	,,	१६४५	१५१	लि क हरिदास व्यास गागात्मज माडलमध्ये
९३	७४६४	,, ,,	,,	१६वीं श.	६२	
९४	६१८६	,, मौशलपर्व सटीक	टी नीलकठ	१८वीं श	१	
९५	५४७५	,, ऐषिक, आश्रमवासिक, मौशलपर्व	श्रीवेदव्यास	,,	ऐषिक ९ आश्रम ३५ मौशल १२	
९६	७४५८	,, मौशलपर्व	,,	१६वीं श.	१३	
९७	६१८८	,, आश्रमवासिकपर्व सटीक	टी. नीलकठ	१८वीं श	१	
९८	६१८९	,, सौप्तिकपर्व सटीक	,,	,,	१	
९९	६४७०	,, ,, मूल	श्रीवेदव्यास	,,	१५	
१००	७१२०	,, ,,	,,	१८२९	३२	रायचन्द्र ब्राह्मण को शक्तिसिंह-सुत भोपतिसिंह द्वारा प्रदत्त प्रति
१०१	६१८७	,, आरण्यक पर्व सटीक	मू ,, टी नीलकठ	१८वीं श.	३९	श्रन्त में लिखित 'जयश्री चतुर्भुज-रायजी', स्थान-सावर
१०२	५४९८	,, ,, मूल	श्रीवेदव्यास	,,	३४७	
१०३	६१९०	,, विराटपर्व सटीक	टी नीलकठ	,,	९	
१०४	६१९१	,, उद्योगपर्व ,,	,,	,	३५	
१०५	७४५३	,, ,, मूल	श्रीवेदव्यास	१५३१	१७६	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०६	५४८१	महाभारत कर्णपर्व	श्रीवेदव्यास	१८२८	२२५	लि क. विद्याधर गुर्जरगौड पचोली लिखायित भोपालसिह शक्तावत, ३रा पत्र अप्राप्त
१०७	६१९२	„ कर्णपर्व सटीक	टी नीलकठ	१८वीं	६	
१०८	६४७१	„ „ मूल	श्रीवेदव्यास	१७६३	११६	
१०९	५४७७	„ भीष्मपर्व „	„	१९वीं	३१९	२४वां पत्र अप्राप्त
११०	७४९३	„ „	„	१५वीं	१५४	पत्र ५९ से ७१ तक तथा १३२ से १५४ तक स० १७५८ में लिखित, शेष १५वीं शती के हैं
१११	५५०१	„ द्रोणपर्व	„	१९वीं	५५१	
११२	५४९२	„ विशोकपर्व	„	१८२९	१२	
११३	५१९५	„ आश्वमेधिकपर्व सटीक	टी. नीलकठ	१८वीं	१२	
११४	६१९३	„ शान्तिपर्व राजधर्म सटीक	„	„	१९	
११५	६१९४	„ „ आपद्धर्म „	„	„	६	
११६	६८९७	„ „ राजधर्म	श्रीवेदव्यास	१९वीं	११०	लि.क. साधु निरजनी उत्तमराम
११७	७१२१	„ स्त्रीपर्व	„	१८२९	३५	लि स्था. खावर
११८	६१९६	„ मोक्षपर्व सटीक	टी. नीलकठ	१८वीं (?)	८४	
११९	७४५२	„ हरिवश	श्रीवेदव्यास	१६३०	७०९	
१२०	६७००	महारामायण सटीक त्रिपाठ		१८वीं	१०९	त्रुटित
१२१	६५८८	महारामायणान्तर्गत (सीतारामाघ्रिलक्षणानुवर्णन)		१९वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२२	५६७३	महारासोत्सव	हनुमत्सहितान्तर्गत	१८३६	१८	भगवान् श्रीरामचन्द्रजीकी रासलीला वर्णनपरक
१२३	६२३६	,,	,,	१८वीं	१४	,,
१२४	५१६१	मिथ्याज्ञानखण्डन (नाटक)	रविदास	,,	१७	श्रीद्वारकापते प्रसादार्थ-रचितमिदन्नाटकम्
१२५	४३६१	मुद्राराक्षस सटीक त्रिपाठ	मू विशाखदत्त, टी ढुढियज्वा	१६वीं	८०	
१२६	६६०६	मूलरामायण	वाल्मीकि	१७६७	१३	
१२७	५०६७	मेघदूत	कालिदास	१६७४	१८	लि. स्था जोधपुर, व्यास माधव-सुत परमानन्द पठनार्थम्
१२८	५१६३	,,	,,	१६वीं	२ से १७	प्रथम पत्र रहित, लि क हरिकृष्ण
१२९	५७०६	,,	,,	१८६४	२१	
१३०	६१२३	,,	,,	१८वीं	११	लि क मुनि विनीतसागर भाव-सागरशिष्य सूरतमध्येलिखित
१३१	६२४८	,,	,,	,,	१८	
१३२	६१३७	,, टीका		,,	२२	लि क मुनिवीरविजय सघ-विजयगणिशिष्य
१३३	७२३५	,, वृत्ति		१६८३	४१	
१३४	४३८६	,, सटीक		१८०१	२७	लि क चतुरविजय गणि लि. स्था. श्री कर्णपुर
१३५	४३६०	,,	टी धनेश्वर	१७६३	२६	लि क श्री दर्याब
१३६	५१५६	,, ,	टी. पूर्णानन्द यतीन्द्र	१७वीं	६२	

क्रमाङ्क	ग्रन्याङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३७	५६२५	मेघदूत सटीक	मू कालिदास, टी. अज्ञात	१७वीं	३०	
१३८	६०५३	,,	,,	१९वीं	२४	
१३९	६१९९	,,	,,	,,	३९	
१४०	६८६६	,,	,,	१७५२	३१	लि क मुनि लालचद पाटलिपुत्र पत्तने
१४१	५९४१	,, सावचूरि त्रिपाठ		१७८९	२४	लि क फतेविजय गणि रगविजय-शिष्य, बिलाडास्थाने लिखितम्
१४२	६००३	,, ,, पचपाठ		१६वीं	६	विशिष्ट प्रति
१४३	७२९९	,, सावचूरि	अवचूरिकर्त्ता श्री लक्ष्मीनिवास	१८०७	२२	लि क. अमरहसगणि कल्याण-हंसगणिशिष्य, विशिष्ट प्रति
१४४	५१८१	,, सटिप्पण		१७वीं	१६	
१४५	६६९३	मोहमुद्गर	श्री शङ्कराचार्य	१७४३	३	लि क. राघव शर्मा
१४६	५७५९	रघुनाथार्यारत्नमाला	महामुद्गल भट्ट	१९१२	५	लि क. ब्रजवामी अलवरमध्ये
१४७	४१९८	रघुवंश	कालिदास	१८४९	१४२	लि क. पुरुषोत्तम आचार्य स्था जयनगर
१४८	५१२४	,,	,,	१८३९	११६	लि क लाला मयाराम कृपाराम-सुत । लि. स्था हिडिम्बानगर यति सुखानन्दपठनार्थं
१४९	६२११	,,	,,	१८४५	१२२	आरम्भ के कुछ पत्रो में टिप्पणिया हैं।
१५०	६५९१	,,	,,	१८९८	८७	लि क. मनीराम पण्डित कश्मीरनगरे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	६७८६	रघुवश	श्री कालिदास	१६वीं	८३	द्वादशसर्गपर्यन्त
१५२	६८४७	,,	,,	,,	५	प्रथम सर्ग मात्र
१५३	६८६६	,,	,,	,,	७४	
१५४	७०५२	,,	,,	१६३३	११६	पत्र १ से ६ अप्राप्त। लि क गोपाल व्यास, श्री रङ्ग-स्यात्मज नरसिंहदास, मान्धातु-पुरमध्ये, श्रीमदकबर पात-साहिराज्ये
१५५		,, सटीक (सुगमान्वयबोधिका टीका)	टी सुमतिविजय	१६०१	१६६ से ३४७	सर्ग १२वें से १६ तक लि क. विरधीचद बीकानेरमध्ये
१५६	५४६६	रघुवश सटीक	टी मल्लिनाथ	१८वीं	२२१	पत्र ५४ से ५८ अप्राप्त
१५७	६७६२	,,	,,	१७वीं	१४२	चतुर्दशसर्ग के ७२वें श्लोकपर्यन्त
१५८	६८१४	,,	टी समयसुन्दर	१६वीं	६१	नवम सर्ग पर्यन्त
१५६	७३०२	,,	टी धर्ममेरु गणि	१८३५	२०३	
१६०	५४६१	,, सटिप्पण पाठान्तरसहित		१८वीं	३८ से १८२	८१वा पत्र अप्राप्त
१६१	६६७६	,, सटिप्पण		१५४७	१०६	लि क वाचक तिहुणकीर्ति चारुचद्र शिष्य श्री मरुस्थलदेशे शुद्धदन्तो श्रीश्रीनगरे सातल-विजयराज्ये मत्रीश्वर वणवीर दूला श्रीचैत्रगच्छे
१६२	४३२६	,, सावचूरि पचपाठ		१६२६	११४	लि क वीरहस आद्यपत्र त्रुटित
१६३	७०८३	राधाकृष्ण प्रेमसम्पुट काव्य		१८वीं	१७	
१६४	७५८५	राधामाधवलीला	राधागोविंद मिश्र, किशोरीरमण-शिष्य नवनन्दशर्मासुत	२०वीं	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६५	५२७६	रामकृष्ण काव्य		१९वीं श.	२	
१६६	५६५७	,, सटीक	सूर्यकवि	१९२३	२९	लि.क घनश्याम व्यास पाराशर सवाईजयपुरमध्ये
१६७	५६८४	रामकृष्णकाव्य सटीक त्रिपाठ	,,	१९१९	१८	
१६८	५९०६	,, सटीक	,,	१६वीं श.	९	अन्वयदीपिकानाम्नी स्वोपज्ञ टीका
१६९	५९०७	,,	,,	१७वीं श.	७	लिपिकार ने भूल से सम्भवतः टीका का नाम 'अनूपदीपिका' लिख दिया है
१७०	६२७३	रामरास क्रीड़न (सुदर्शनसहितान्तर्गत)		२०वीं श.	२४	
१७१	४४००	रामहनुमन्नाटक		१७वीं श.	८	लि.क हर्षहसमुनि
१७२	७८३३	रामानुजचरित्र (प्रपन्नामृताभिधान काव्य)		१८३२	१४६	लि क जोशी रघुनाथ सवाईजयपुरमध्ये
१७३	७०२०	रामायण	वाल्मीकि	१७९९	८३३	
१७४	५४७१	,, बालकाण्ड	,,	१८वीं श	६०	
१७५	५५१४	,, ,, (मूलरामायण मात्र)	,,	,,	१५	
१७६	४२५०	,, ,,	,,	,,	२०	आद्य पत्र सचित्र
१७७	५६६७	,, ,,	,,	,,	१२३	आद्यन्त शोभन
१७८	६२६१	,, ,,	,,	१८६०	७४	
१७९	७०२५	,, ,,	,,	१८वीं श.	६३	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८०	६१४२	रामायण बालकाण्ड	वाल्मीकि	१९ वीं	२०३	तिलकव्याख्यायुक्त
१८१	६५००	,, ,,	,,	,,	१५५	,,
१८२	५६६६	रामायण अयोध्याकाण्ड	,,	१८वीं	२२५	
१८३	७०२६	,, ,,	वाल्मीकिमुनि	१८०८	११५	तिलकव्याख्या सहित अपूर्ण
१८४	६४९९	,, ,,	,,	१९वीं	३३०	अपूर्ण
१८५	५४४७	,, ,,	,,	१८वीं	२३१	दोनो काण्ड एक ही जिल्द में हैं
१८६	६१४४	,, अरण्य और किष्किन्धाकाण्ड	मू. वाल्मीकि, टी. महेश्वर	१९वीं	३४+२६	
१८७	५६७०	,, आरण्यकाण्ड	वाल्मीकि	१८वीं	१२३	तिलकव्याख्या सहित
१८८	६१४३	,, ,,	,,	१९वीं	१७८	
१८९	६५०१	,, ,,	,,	,,	११७	,,
१९०	५०४२	,, किष्किन्धाकाण्ड	,,	१७६२	७९	पत्र ६, ६९वा अप्राप्त, पत्र २६ से ८० तक प्राय त्रुटित, प्रति जीर्णशीर्ण, लि.स्था तुंगानगर आद्यन्तपत्र शोभन
१९१	५६६८	,, ,,	.	१८वीं	१२७	
१९२	६०१८	,, ,,	,,	१८६६	१२२	प्रति अपूर्ण, अन्त के कुछ पत्र भीगे हुए हैं
१९३	६२६०	,, ,,	,,	१९वीं	१२१	
१९४	६५०२	,, ,,	,,	,,	१५२	तिलकव्याख्या सहित
१९५	६२०४	,, सुन्दरकाण्ड	,,	,,	१००	भीकाजीलक्ष्मणस्येदं पुस्तकम्
१९६	६०१७	,, ,,	,,	१७६६	१३७	पत्र स० ११६ तक पत्र प्राचीन हैं और १८वीं श. के प्रतीत होते हैं, स० ११७ से १२८ तक नये पत्र हैं
१९७	६१८४	,, ,,	,,	१८वीं	१२८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९८	५६७१	रामायण युद्धकाण्ड	वाल्मीकि मुनि	१८वीं श.	२८८	
१९९	६०१९	रामायण युद्धकाण्ड	,,	,,	२८६	
२००	७८०७	,, ,,	,,	,,	१९६	
२०१	५६७२	,, उत्तरकाण्ड	,,	,,	१९६	अमृतसरे लिखितम्
२०२	६०२०	,, ,,	,,	१८६७	१८६	लि क. लक्ष्मण
२०३	४५२१	रामायणसार	श्रीअग्निवेशमुनि	१९वीं श.	१२	
२०४	५३६६	राक्षसकाव्य सटीक त्रिपाठ		१८वीं श	६	विद्वज्जनविनोदिनी टीका प्रति सुन्दर है
२०५	५९६२	,,	टी. सुरदेव भट्ट गोपीनाथसुत	,,	२	अपूर्ण
२०६	६००६	वासवदत्ता	सुबन्धु	१७५३	६९	गोकुलचन्द्रगोस्वामिना लिपीकृतम्
२०७	५३०२	विदग्धमाधव		१७५८	१००	लि क. हृदयराम कायस्थ
२०८	५२३०	विप्रमुखचपेटासस्तवक		९ वीं श.	२९	प्रथम पत्र अप्राप्त
२०९	६०६२	विश्वगुणादर्शचम्पू	वेंकटाचार्ययाजी काञ्चीनगर–वास्तव्य	१९१८	६०	
२१०	४३३७	वेणीसहार	नारायण भट्ट	१७वीं श.	५४	
२११	६७१७	शतश्लोकी रामायण	अग्निवेश्यमुनि	२०वीं श.	११	लि.क गोपीनाथ
२१२	५९१२	शत्रुञ्जय माहात्म्य	धनेश्वर	१५११	१८५	आशापल्ली में लिखित
२१३	७२५३	,,	,,	१६७१	२२५	
२१४	७०४०	शिशुपालवधम्	माघकवि	१६८३	१३८	आद्य २० पत्र अप्राप्त
२१५	६००९	शिशुपालवध टीका	टी. वल्लभ (आनन्ददेवायनि)	१८वीं श.	२४३	प्रति सुन्दर है
२१६	७०८७	,, सटिप्पण	माघ वणिक् (?)	१५५२	१२८	* विशिष्टतम प्रति

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१७	७६६०	शिशुपालवध टीका	टी मल्लिनाथ	१८वीं	१३१	नवमसर्गान्त, दो लिपियाँ मिल गई हैं
२१८	५१११	,, सटीक	,,	,,	३३	
२१९	७८०६	,, ,,	,,	,,	१२	प्रथम सर्ग मात्र
२२०	६५६८	शृङ्गारतिलक	कालिदास	१९वीं	२	
२२१	६१७६	शृङ्गारमाला	सुखलाल	,,	७	रचनाकाल १८०१
२२२	४२९७	शृङ्गारवैराग्यमुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	१७वीं	६	
२२३	५३०३	सवित्प्रकाश	गोविन्द कवीश्वर	१९२२	२५	प्रथम पत्र अप्राप्त
२२४	४१२६	सप्तशती (आर्यावृत्तबद्धा)	गोवर्द्धन	१८०७	५३	लि क. जोसी परसराम
२२५	६०६३	सुन्दरमणि सन्दर्भ	मधुराचार्य	१७७९	४०	
२२६	४७१५	सूर्यशतक	मयूर कवि	१९वीं	१६	
२२७	५९५४	हसदूत सटीक	रूप गोस्वामी	,,	२४	
२२८	५१६६	हनुमन्नाटक सटीक	टी. मोहनदास मिश्र, कमलापति-माथुरचतुर्वेदसुत	१८५९	१११	लि क पुजारी राघोदास
२२९	५५५३	,, मूल		१८वीं	४०	३९वाँ पत्र अप्राप्त
२३०	७५०५	हरिलीला सटीक (भागवतानुक्रमणिका)	मू. वोपदेव मधुसूदन	१७९२	३६	३५वाँ पत्र अप्राप्त
२३१	६११७	हरिवश टीका	टी. नीलकठ	१८वीं	५३	भावार्थप्रकाशाभिधान व्याख्यान
२३२	६९९९	हरिविलास प्रथम सर्ग	लोलिम्वराज	,,	४	
२३३	५९४३	त्रिषष्टिशलाका-पुरुष-चरित्र (परिशिष्ट पर्व)	हेमचन्द्राचार्य	१४८६	७०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६११३	अलङ्काग्कौस्तुभ सटीक	मू लक्ष्मीधर, टी विश्वेश्वर	१६वीं	१२५	
२	४३६६	अलङ्कारचन्द्रिका(कुवलयानन्दटीका)	वैद्यनाथ	,,	१२३	
३	७७८३	,,	,,	१६०२	१५७	
४	५६८३	काव्यकल्पलतावृत्ति (कवि शिक्षा)	अमरचन्द्र	१६४८	१०२	सेरपुरामध्ये लिखितम्
५	५६६६	,,	,,	१७वीं	१२०	रायद्धनपुरे लिखितम् लि क श्रीहर्षसोमगणि
६	५२७५	काव्यचन्द्रिका (समस्यापूरणोपाय)	न्यायवागीश भट्टाचार्य	१८वीं	६	
७	५८७६	,,	,,	१८११	११	
८	६००७	काव्यप्रकाश श्लोकार्थदीपिका	गोविन्द ठक्कुर	१६५६	२५	
९	५६५५	कुवलयानन्द	अप्पय्य दीक्षित	१८६५	४८	लि क गोस्वामी नदात्मजबलदेव
१०	६२४६	,,	,,	१८६७	४६	लि.क. केशवराम
११	४७०८	कुवलयानन्दकारिका		१८१५	१८	लि.क. लक्ष्मीचद ब्राह्मण
१२	५१४०	कुवलयानन्द (अलकारचन्द्रिका)		१८वीं	२१ से ५६	
१३	६०७३	चन्द्रालोक सटीक त्रिपाठ (चन्द्रालोकप्रकाश)	मू जयदेव, टी. प्रद्योत्तम भट्टाचार्य	१८६६	३६	लि क. सालगराम
१४	६१६४	रसगङ्गाधर	जगन्नाथ पण्डितराज	१८वीं	२७६	किंचिदपूर्ण
१५	६१२४	रसचन्द्रिका	विश्वेश्वर लक्ष्मीधरपुत्र	१८३३	३६	
१६	६३०५	रसतरङ्गिणी	भानुदत्त	१६३१	५१	लि क चुन्नीलाल
१७	७७८०	,,	,,	१६वीं	३६	यह पुस्तक गुजरात पाटण वास्तव्य राव कान्हजी उमेदसिंहजी ने अपने पढने के लिये जोधपुर में लिखाई
१८	७७८१	रसतरङ्गिणीनौका टीका	जड्यपनामक गङ्गाराम कवि	१६०२	१०७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४३२७	रसदीर्घिका	विद्याराम	१८वीं	४८	र का. स. १७०६, लि.स्था. कोटा
२०	६२९४	रसमञ्जरी	भानुदत्त मिश्र	१९०४	२४	लिखित रामचरणेन
२१	६३१४	,,	,,	१८५३	३२	
२२	६४०४	,,	,,	१७०५	५	लि क. मेघराज ऋषि
२३	६६३१	,,	,,	१९वीं	१७	
२४	६४६८	रसमञ्जरी टीका व्यङ्ग्यार्थकौमुदी	मू भानु कवि, टी. अनन्तपण्डित त्र्यम्बकपण्डितात्मज	१९०९ (?)	४९	काशिराज श्रीचंद्रभानु-कुतूहलार्थ निर्मित
२५	७५००	रसमञ्जरी सटीक	मू. भानु कवि, टी शेषचिंतामणि	१६२१	२४	पत्र १–२ अप्राप्त
२६	७७८२	,, रसिकरञ्जिनी टीका	मू. भानु कवि, टी. गोपाल भट्ट	१९वी	७२	
२७	६९९७	,, सटिप्पण	भानु कवि	,,	४४	अपूर्ण
२८	७५०७	रसमञ्जरीप्रकाशस्वोपज्ञ टीकासहित	नागेश भट्ट श्रीकालोपनामक शिव भट्टसुत	१८३८	४२	लि स्था कृष्णगढ व्यास मोतीराम पठनार्थम्
२९	७७८४	रसमञ्जरीव्याख्या व्यङ्ग्यार्थकौमुदी	अनन्त पण्डित त्र्यम्बकात्मज	१९०२	१७४	लि क. साधु प्रभुदास वारहठ पच कान्हजी उमेदसिंहजी पाटणवासी वाचनार्थं जोधपुरे लिखितम्
३०	६२६३	रसिकमञ्जरी टीका रसिकरञ्जिनी	मू भानु कवि, टी गोपाल भट्ट	१९वीं	३९	
३१	६००२	वाग्भटालंकार टीका		१७वीं	१९	
३२	६८७२	वाग्भटालंकार (पञ्चपाठ) पदभंजिका व्याख्या	मू० वाग्भट	,,	२०	
३३	७१९१	वाग्भटालंकारसावचूरि	,,	१६वीं	८	

ग्रन्थसंख्या ७१९१

वाग्भटालङ्कार (सटीक)

(पन्द्रहवीं शताब्दीमे लिखित पंचपाठ पुस्तक)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४	४३०६	वाग्भटालकारवृत्ति		१६वीं	१५	२,६,७ और १३ पृष्ठ नहीं हैं
३५	६६४५	विदग्धमुखमण्डन	धर्मदास	१६५७	२८	
३६	६६४६	,,	,,	१८१२	२४	सूर्याष्टमहीभियुते विक्रमे लि.क राधाकृष्ण गुरजी शिवरामसुत
३७	७६८७	,,	,,	१८४२	३६	
३८	७६६२	,, सटिप्पण	,,	१६८२	१५	लि.क गङ्गदास हीरानन्द-सूरीश्वर शिष्य पल्लीवरपुरे (पाली—मारवाड)
३९	६५१६	,, सावचूरि	अवचूरिकर्ता अज्ञात	१८३६	४५	लि क शिवनाथ शिवजीरामसुत
४०	६३१०	वृत्तिवार्तिक	अप्पय्य दीक्षित	१७वीं	१६	
४१	६६६६	,,	,,	१८वीं	१७	
४२	५६०३	श्रवणभूषण (विदग्धमुखमण्डन टीका)	नरहरिभट्ट हरिरल्लालनन्दनः	१६वीं	८	
४३	५३११	साहित्यरत्नाकर (प्रथम तरङ्ग)	श्रीधर्मसुधी पर्वतनाथसुत पल्लमाम्बागर्भज हारीत गोत्रज	१९वीं	१६	वाराणसी में रचित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	५६६२	उपदेशशतक (चारुचर्याख्य)	क्षेमेन्द्र	१६३६	६	रसाग्न्यङ्केन्दुहायने लिखित गोपरामेण शुक्लकृष्णेग्निभूतियौ
२	७२७२	एकषष्टियुतप्रश्नशत	जिनवल्लभ	१७४१	७	
३	४३४७	कर्पूरप्रकरसावचूरि	मू हरिकवीश्वर टी जिनसागर सूरि	१६वीं	२५	
४	५६४७	,,	सोमचंद्र रत्नशेखरशिष्य	१५६७	२८	रचनाकाल १५०४ लि क सघमाणिक्यगणि लि स्था. चम्पकनेर महानगर
५	५६५६	,,	हरिमुनि वज्रसेनशिष्य	१५५८	५४	अणहिलपुरमध्ये लिखित
६	७३६५	दृष्टान्तशतक (राज भाषार्थ सह)	तेजसिंघ गणि	१७६६	१६	लि.क. सोमचद्रगणि लि स्था पत्तननगर (पाटण गुजरात)
७	७३६७	,, मूल	,, लूकागच्छीय	१८वीं	१८	
८	७५४८	,,	,, ,,	,,	६	लि क कान्हजी मुनि
९	४५३२	नीतिशतक सटीक	मू. भर्तृहरि, टी धनसार	१८२२	२५	लि क गगाधर
१०	४४५२(३४)	,, सस्तबक	भर्तृहरि	१८०७	१–१३	
११	४५६५	प्रश्नोत्तरमणिमाला	श्रीशङ्कराचार्य	१८वीं	५	
१२	७३७८	प्रश्नोत्तरमाला	विमलसूरि	१७५७	१	लि क. विनोदसागर लि.स्था. श्रीकृष्णगढमध्ये
१३	७४३२	प्रश्नोत्तररत्नमालाविवरण	देवेंद्रसूरि	१६वीं	१३८	प्रथम पत्र अप्राप्त
१४	४४१५	प्रश्नोत्तरषष्टिशतक सटीक	जिनवल्लभसूरि	,,	२३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	५०५४	पद्यावली	विल्वमगलश्रावित	१६७६	४५	त्रुटित
१६	५१५६	भर्तृहरिशतक (वैराग्य शृंगार)	भर्तृहरि	१६वीं	२२	अपूर्ण
१७	४४८२	रत्नकोश	वैशम्पायनोक्त	१७४६	६	
१८	४६०७(२)	लघुचाणक्य	चाणक्य	१८३७	२३–३४	
१६	४५७१	,,	,,	१८०५	४	लि.क सामन्त ऋषि स्था राजपुर
२०	६७५०	वृद्धचाणक्य	,,	१६वीं	१६	लि.क बालकदास कबीरपंथी
२१	६७७२	वैराग्यशतक	भर्तृहरि	,,	६	
२२	४५६१	,, सटीक	मू भर्तृहरि, टी धनसार	१८६०	५१	
२३	४४५२(३६)	,, मूल		१८०७	२५ से ३६	लि क प्रीतसौभाग्य गणि स्था बणेडा ग्राम
२४	५४३७	शतकत्रय	भर्तृहरि	१८वीं	६२	
२५	६१२७	,,	मू भर्तृहरि, टी रूपचद	,,	६३ नीतिशतक १–२० शृ.श.२०-३६ वै श ३६–६३	
२६	७०८०	शृंगारशतक	भर्तृहरि	१७५६	२०	लि क किशोरदास मुरलीदास-शिष्य
२७	४४५२(३५)	,,	,,	१८०७	१३ से २५	लि क प्रीतसौभाग्य गणि स्था बणेडा ग्राम
२८	६६६४	सभारजन सुभाषित		१६१४	१७	१३वा पत्र अप्राप्त लि'क रामनारायण
२६	४५७२	सभाशृंगार		१७५१	१४	लि.क ऋषि धनजी स्था राजपुर नगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०	५२७७	सस्कृतमजरी	अनन्तपण्डित	१८वीं	२४	
३१	५२७९	,,	,,	,,	४	
३२	५५२१	,,	,,	१९१७	६	लि.क. रामगोपाल, स्था. बूंदी
३३	६५७७	,,	,,	१९वीं	३	
३४	५९७७	,,	,,	,,	३	
३५	६२५३	,,	,,	,,	१६	
३६	६४०५	सस्कृतविधि (ज्ञानक्रिया सवाद पत्र)		१७६८	३	लि.क प सुखानन्द
३७	४५७४	सिंदूरप्रकर	सोमप्रभ	१७वीं	५	
३८	६३८७	,,	,,	१६६४	५	लि.क वीरसुन्दरगणि
३९	७३१९	,,	,,	१५वीं	५	
४०	४४०४	,, सबालावबोध	मू सोमप्रभ, टी. पाठकवर राजशील	१८५२	६१	लि.क क्षमासौभाग्य लि स्था श्रीवातानगर
४१	४४५६	,, सटीक	मू सोमप्रभ, टी हर्षकीर्ति	१८वीं	१७	
४२	६२७६	,, ,,	,,	१८७२	४३	लि क ऋषि नगराज गोपाचल मध्ये
४३	७३२९	,, ,,	मू सोमप्रभ, टी पाठक राजशील	१८३०	५०	लि.क दौलतसौभाग्य श्रीविलाडानगरे
४४	७२६२	,, ,, मूल	सोमप्रभ	१७५९	२२	लि क लक्ष्मीचद्र जादवनगरे
४५	४३६७	,, सावचूरि	,,	१७६२	१४	१३वां पत्र अप्राप्त लि क ऋषि भावशेखर
४६	४४१७	,, ,,	,,	१७वीं	१२	
४७	४५७०	,, सस्तवक	मू. सोमप्रभ, स्त वीरसागरगणि	१८४७	१९	लि क चोखाजी, बांकानेरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८	७१४६	सिन्दूरप्रकरसूक्तिमुक्तावली	सोमप्रभ	१८६०	७	लि क. प्रमाणविजय स्था. पोहकरण
४६	७४४४(१६)	,, ,,	,,	१८८६	३१०–३२४	
५०	५३५२	,, सूक्तिरत्नकोश	,,	१६०१	६	
५१	४८११	सुभावित (प्रास्ताविक)		१८३३	१८	
५२	४४५२(१०१)	सुभाषितश्लोकाः		१८वीं	१३६वां	
५३	४५६६	,,		१६वीं	८	
५४	७१५३	,,		१६वीं		प्रतिलिपि योग्य, जीर्ण खरडा
५५	४३४६	सुभाषितसग्रह		१४०८	२५*	लि क मुनिदाम शिष्य, राणपुर एक हजार से अधिक सुभाषितों का सग्रह, महत्वपूर्ण, विशिष्ट और प्राचीन प्रति
५६	७१०३	,,		१८वीं	२	
५७	४३४८	सुभाषितसूक्तावली		१६८२	२७	लि.क. विमलहर्ष भीमजी-पठनार्थम्
५८	५६८४	सुभाषितार्णव		१७३६	६१	लि क सावल पण्डित
५६	६३२२	,,		१८१०	२२	
६०	७७४१(६)	सुभाषितावली		१७वीं	४३–७७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	४४१४	सूक्तावली		१५वीं	३५	
६२	६३६०	सूक्तिमुक्तावली (सिंदूरप्रकरबालावबोध)		१८वीं	७६	
६३	५१३५	सूक्तिरत्नावलीव्याख्या		१६वीं	११	६२ श्लोकों की व्याख्यापयन्त, अपूर्ण
६४	७५६०	ज्ञानप्रकाश सस्तबक	तेजसिंघ	१८४२	४	लि क ऋ. मेघजी

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४३३२	अबडचरित्र	मुनिरत्नसूरि	१६४९	३१	
२	६१३२	अजापुत्रकथा	माणिक्यसुन्दर	१७१४	७	
३	७२५०	अमरसेन वज्रसेनकथा		१७६३	२१	लि.क. लक्ष्मण, जिहानाबादनगरे
४	७२७०	आदिनाथचरित्र		१८वीं	७	लि.क. रगहर्ष, बाहड़मेर
५	७३३७	आमराजा वप्प-भट्ट-सूरि-धर्मकथा		,,	३	प्रतिलिपि योग्य, अन्त में राजस्थानी भाषा में स्तवन आदि लिखे हैं। (लिपिकर्ता का नाम मिटाया हुआ है)
६	५९४४	उत्तमकुमारचरित्र		१६६७	१०	
७	४३३५	उत्तराध्ययनकथा (प्राकृत उत्तराध्ययनसूत्रगता)	पद्मसागरगणि	१७वीं	११६	रचनाकाल १६५७
८	५९९३	,, ,,	,,	१७२३	८४	पीपाडग्रामे,स. १६५७ मध्ये रचित
९	७२८१	,, ,,	,,	१८५९	८२	लि क. कुशलकल्याणगणि रचनाकाल १६५७ रचनास्थान पीपाडग्रामे
१०	७८५२	कालककथा	नेमिप्रभ	१६वीं	८	चित्र स० ७
११	५९६३	कालकाचार्यकथा		१७६२	१३	
१२	७८५३	,, ,,		१६वीं	९	चित्र सं० ५
१३	७८५४	,, ,,		,,	१ से १० तक	चित्र स० ७
१४	७०८१	चतुर्दानशीलादिकथा (मेघनावराज्ञः)		१८वीं	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	५३७६(९)	चन्दनषष्ठिविधानकथा		१८वीं	१०७–११०	
१६	४३८७	चित्रसेन पद्मावतीकथा	बुद्धिविजय	१८५३	२३	लि क. रामविजय गणि लि स्था श्रीराधनपुरनगर (गुर्जरप्रांत)
१७	७२९२	,,	राजवल्लभ पाठक	१८वी	१३	
१८	६९२०	,, सटिप्पण	,, महिमानिधान शिष्य	१८४६	५०	लि क ऋषिचन्द्रभाण, बीदासर-मध्ये, रचनाकाल १७२२
१९	४३९८	,, चरित्रसस्तवक	मू. राजवल्लभ, स्तबककार भक्तिविजय	१८५३	१५४	
२०	७१४५	दीपमालिकाव्याख्यान		१९वीं	६	
२१	५३७६(१०)	दुग्धरसकथा		१८वीं	११०–१११	
२२	४४३५	देवकुमारकथा		१५३४	७	विशिष्ट प्रति
२३	७३९६	धर्मवत्तकथा		१६१२	१८	मलाणाग्रामे लिखित
२४	७३६३	धर्मबुद्धि पापबुद्धिकथा		१७००	१४	लिखित नन्दरवारनगरे
२५	४४३४	धर्मबुद्धिमत्रिकथा		१६७४	६	लि क जयविजय गणि स्था. भाहरजा ग्राम
२६	६४०७	धर्मदत्तकथा	माणिक्यसुन्दरसूरि मेरुतुग सूरींद्रशिष्य	१६३३	१०	
२७	६८२०	धर्मसवाद (महाभारतीययज्ञकथान्तर्गत)		१७८६	१७	आद्य पत्रद्वय अप्राप्त लि.क. ऊधोदास, हिंडोलीमध्ये
२८	५३७६(८)	निशल्यकथा		१८वीं	१०५–१०७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२९	६१५३	पापवुद्धिमत्रीकथा		१९वीं	९	
३०	७२१३	पार्श्वनाथचरित्र	भावदेव	१७५९	१३९	लि क दाणाऋषि समार्णनगरमध्ये
३१	५९३३	पार्श्वनाथचरित्र	भावदेवसूरि	१५०४	१४७	प्राचीन प्रति
३२	६३१८	मणिमजीराख्यान (वाल्मीकि-रामायण बालकाण्डान्तर्गत)		१९३०	२२	
३३	४५९०	मथुरामाहात्म्य सग्रह (गोपालोत्तरतापिन्यादिगत)		१९०८	३३	
३४	६१४९	मल्लिनाथचरित्र	सकलकीर्ति	१८१३	५२	लिखायित श्रीनथमलजी खण्डेलवाल, विलाला
३५	७७७६	माधवनाटककथा		१९१५	२६	लि क. नानूराम जोशी जोधपुरमध्ये
३६	५९९४	मुनिपतिचरित्र		१९वीं	२२	लि क. भावप्रमोद, जिनरत्नसूरि-शिष्य
३७	४३३३	युवराजऋषिचरित्र		१६६३	७	
३८	५३७६ (७)	रत्नत्रयविधानकथा	रत्नकीर्ति	१८वीं श.	९४,९५ १००–१०५	
३९	४४०२	रूपसेनकथा		१७वीं	२६	
४०	५३७६ (४)	रोहिणीकथा गोतमोक्त		१८वीं	८०–८७	
४१	४४६०	वत्सराजकथा		१६४०	११	लि क पंकवर्धनशिष्य लालवर्धन, लि स्था पाडलाग्राम
४२	४४५८	वरदत्तगुणमंजरीकथा	कनककुशल	१८वीं	३	लि स्था। मेड़ता नगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३	६७९६	वैतालपञ्चविंशिका		१८वीं	६८	२५वीं कथा अपूर्ण
४४	६१८२	श्रीपालचरित्र	सकलकीर्ति	,,	२५	पत्र ११, २१ और २३वां अप्राप्त
४५	४३३४	शातिनाथचरित्र	अजितप्रभ सूरि	१६५१	६५	
४६	५९८०	,, ,,	,,	१६५४	६२	
४७	७२७९	,, ,,	,,	१६३३	१५३	प्रथम पत्र अप्राप्त
४८	७३२२	,,	भावचंद्र (?)	१८वीं	१३३	
४९	७२६६	शालिभद्रचरित्र	धर्मकुमार	१६०५	२९	झोटापलीवासी हुम्बडज्ञातीय शाहादेवसहेन श्रीगुरूणामुपदेशेन मत्री चापाकेत लिखित कल्पमेरुषु, प्रथमपत्र अप्राप्त (विशिष्ट प्रति)
५०	७३८८	,,	,,	१६वीं	१७	
५१	४३३६	,, सावचूरि	,,	,,	१९	
५२	७३८३	सम्यक्त्वकौमुदी		१७०५	३२	लि क शिवचद्रगणि, माणिक्यचद्रसूरिशिष्य
५३	७३५४	,,		१४९९	३१	प्राचीन प्रति
५४	७३४२	,,		१६वीं	३७	
५५	७४३०	,,		१५वीं	४९	
५६	७०८६	,,		१८वीं	२८	अपूर्ण
५७	४३२८	सागरचन्द्रकथादि		१७वीं	१–१२	इस प्रति मे तीन कथाएँ हैं पृ. १ से ३ तक (१) सागरचन्द्रकथा पृ ३ से ६ तक (२) मङ्गलकलशकथा पृ. ६ से पृ १२ तक (३) सुदर्शनश्रेष्ठिकथा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	६४०६	सिंहासनद्वात्रिंशतिका	बल्लालसेन	१७७५	१४६	प्रथम पत्र अप्राप्त, जीर्ण प्रति
५९	५३४४	सौभाग्यपंचमीकथा	कनककुशल विजयसेनसूरिशिष्य	१८वीं	५	रचनाकाल स० १६५५ भूतेषुरसेन्दुवत्सरे
६०	७२६३	हरिश्चन्द्रचरित्र	भावदेवाचार्य	१६वीं	३२	
६१	६७८७	हितोपदेश	विष्णु शर्मा	१८वीं		पत्र १, २, २०, २१, २३, २४ और २७ से ३५ तक अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६०६४	अञ्जननिदान	अग्निवेश	१८८८	६७	लि क चतुर्भुज
२	५२६८	अग्निवेशनिदान (सटीक)	,,	१८५९	२६	स्थान–नेनवा
३	५८४२	अनुपानमञ्जरी,	पीताम्बर	१९०७	११	
४	५८५४	,,	,,	१९२८	४	लि क लक्ष्मीनारायण
५	४१६२	,, सस्तबक	,,	१९वीं	९	लि क खीमचन्द
६	५८६०	अमृतमञ्जरी (अजीर्णमञ्जरी)	काशिनाथ	,,	३	
७	५११५	अर्कचिकित्सा	रावण	१८वीं	६३	रावण मन्दोदरीसवाद, इसमें गर्भ-रक्षण के उपाय बतलाये गये हैं
८	५८५०	अर्कप्रकाश	,,	१८३९	३८	
९	५८५१	,	,,	१९२६	२१	लि क. लक्ष्मीनारायण
१०	५४९०	अरिष्टनिदान (रागविनिश्चय)		१९वीं	५४	
११	५६१०	ऋतुचर्या	त्रिमल्ल	१८९५	५	लि क सिल्लु व्रजवासी
१२	६५१४	कल्पस्थान	वाग्भट	१७३५	१९	
१३	५७५२	कालज्ञान	शिवप्रोक्त	१९४३	१६	लि क रामविलास नायलावास्तव्य
१४	६८९०	,,	,,	१९०४	३६	लि क. लक्ष्मीचन्द्र
१५	५८६८	कालज्ञानवैद्यक (सस्तबक)	,,	१८४३	४६	लि.क ब्राह्मण चतुर्भुज
१६	४१५०	,, मूत्रपरीक्षा आदि	अनेक	१८५१	१६२	लि क परसराम
१७	५८५२	कूटमुद्गर (सटीक)	माधवपण्डित	१९२५	५	लि क भक्तावर
१८	६८७९	गणपाठचिकित्साकलिका		१८वीं	२	
१९	७५०४	गोपालविनोद	गोपालदास	,,	७२	प्रथम व सप्तम पत्र अप्राप्त
२०	५८६२	चमत्कारचिन्तामणि	लोलिम्बराज	१९३४	९	लि क लक्ष्मीनारायण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१	६८९४	चिकित्सामहार्णव	वंगसेन	१८११	३९०	
२२	७४९८	ज्वरतिमिरभास्कर	कायस्थ चामुण्ड	१७४३	५४	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३	४७८०	ज्वरप्रतीकार (ज्वरघटमहिमा)		१८०५	३	
२४	४७८२	द्रव्यगुणशतश्लोकी	त्रिमल्ल	१८वीं	६	लि क वैष्णव नारायणदास
२५	७६६१	,,	,,	१९५१	१६	,, रामनारायण, कृष्णगढ
२६	६६६३	धातुरत्नमालाव्याख्या		१९वीं	१५	
२७	५२४५	नागार्जुनवैद्यक	नागार्जुन	१८वीं	६४	पत्र ८, २०, ३५, ६१ अप्राप्त
२८	७७२२(११)	नाडीपरीक्षा		,,	११५-११६	
२९	५४७८	निघण्टु	मदनपाल भूपति	१९०६	१२५	
३०	५८४९	निघण्ट (धन्वन्तरीय)	त्रिमल्ल	१९वीं	३३	
३१	६८१२	,,		१८७०	५१	लि क भागीरथराम
३२	६८८२	,,	मदनपाल	१७२५	११६	लि.क रामचन्द्र
३३	७०३६	,,		१८वीं	४७	पत्र ४, ५, ६ अप्राप्त
३४	५६५८	पथ्यनिर्णयलघन	वाचक दीपचन्द्र	१९वीं	१०	लि क लक्ष्मीनारायण
३५	५८५७	पथ्यनिर्णय	,,	१९२७	२	लि क भक्तावर
३६	७००८	पथ्यलङ्घननिर्णय	,,	१९३७	२०	
३७	६९८७	पथ्यापथ्यविचार		१८वीं	२५	
३८	५६०४	पथ्यापथ्यविनिश्चय		१९१५	४६	
३९	५८४४	,,		१९वीं	१६	लि क लक्ष्मीनारायण
४०	४०९६	पथ्यापथ्यविबोधक	कैयदेव	१८८७	१९९	
४१	६८७१	,,	,,	१८वीं	१०३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२	५८४०	बालग्रहचिकित्सा	रावण	१९वीं	२१	
४३	५८६४	,,	,,	१९२८	२१	लि क लक्ष्मीनारायण
४४	४२००	बालतन्त्र	कल्याण	१८वीं	३८	
४५	५८४१	,,	,,	१९वीं	२३	
४६	५८६३	,,	,,	१९२८	१२	लि.क लक्ष्मीनारायण
४७	६६५७	,,	,,	१८९४	६०	लि क. पोकरमल ब्राह्मण झालरापाटण
४८	५८३४	भावप्रकाश	भावदेव	१९वीं	३३४	
४९	६८०५	भावप्रकाश (मध्यमखण्ड)	भावसिंह	१८७२	१७९	लि क. भागीरथ
५०	६८०९	,, ,,	,,	१९वीं	३५०	
५१	७८०८	भावप्रकाश उत्तरकाण्ड	,,	२०वीं	५७४	
५२	७०२३	मदनपालनिघण्टु	मदनपाल	१८८२	६८	लि क. प मतिमदिर, विक्रमपुरनगर
५३	५८३७	मदनविनोद (निघण्टु)	मदननृपति	१९०५	११५	
५४	६८०३	मदनविनोदनिघण्टु	मदनपाल	१९वीं	२–८१	प्रथम पत्र अप्राप्त
५५	६१२०	मधुकोश	वैद्य महामहोपाध्याय जयपारदीक्षित	१८५९	५१–६५	
५६	५८३८	माधवनिदान	माधव कवि	१८९०	११०	
५७	६७४३	,,	,,	१५६२	६८	
५८	७०२४	,,	,,	१७५३	३९	लि क महेश सूरि, बीकानेर
५९	५२८९	,,	,,	१७३६	१२२–१८४	
६०	६८१३	,,	,,	१८वीं	१७०	
६१	६०१३	,, सटीक	,, टी वाचस्पति	१८७३	२३७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२	५६२८	माधवनिदान सटीक	टी. वाचस्पति	१९११	२२९	लि क भगवान विप्र
६३	६८९८	,, ,,	,,	१८७४	२१६	लि क रामवुल मिश्र
६४	४०९८	योगचिन्तामणौवैद्यकसारसग्रह	हर्षकीर्ति सूरि	१९६६	४७	लि क जगजीवन
६५	४७६६(३)	योगचिन्तामणि	हर्षकीर्ति	१७७५	१–१६८	
६६	५८४३	,,	,,	१९२०	५०	लि.क. लक्ष्मीनारायण
६७	६४४१	,,	,,	१८व	४३	७वा पत्र अप्राप्त
६८	६८७३	योगचिन्तामणि सटीक	हर्षकीर्ति	१८३१	१३७	
६९	४२९०	,, गुर्जरभाषा टीकायुक्त	,,	१८९६	४६	
७०	६८१७	योगतरगिणी		१९वीं	४–२४	प्रथम तीन पत्र अप्राप्त
७१	५८५९	योगशत		१९२३	६	लि.क भक्तावर शर्मा
७२	४७७९	योगशतक		१७१२	१६	
७३	६६०३	,,		१८५६	९	
७४	५८७५	,, सबालावबोध	वैद्यनाथ	१८४२	२७	लि क• चतुर्भुज गोपाल
७५	६३१२	योगसार (योगमालिका)		१८वीं	५	
७६	६८१८	रत्नसागर		१९वीं	२–६२	आद्य पत्र अप्राप्त
७७	६८३२	,,		१८८१	३१८	लि.क चौधरी खूबकृष्ण
७८	७५९७	रसचिन्तामणि	अनतदेवसूरि	१८०३		प्रथम पत्र अप्राप्त, १५५ व १५६वा पत्र भी अप्राप्त लि क ब्रह्मजैनसागर, नागपुर
७९	५६४३	रसमञ्जरी	शालिनाथ	१९वीं	५२	
८०	६०८७	रसमंजरी तन्त्र	,,	,,	५०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८१	७६४१	रसरत्नाकर तन्त्र	नित्यनाथ	१९वीं	३७	
८२	५८५३	राजमार्तण्ड	भोजनरेश	१९४२	१६	लि.क. लक्ष्मीनारायण
८३	५५७६	रामनिदान	राम	१८वीं	१८	
८४	६८०२	रोगविनिश्चय		,,	१-६९	
८५	४१६१	व्याधिनिग्रह सस्तवक	विश्राम	१८५३	४९	
८६	५८६१	विश्ववल्लभ	मिश्र चक्रपाणि	१९२५	११	लि क लक्ष्मीनारायण
८७	६४५५	विश्वप्रकाश कोश	श्रीमहेश्वर	१७वीं	५५	
८८	५४७४	विषरोगपथ्यापथ्यविचार		१९वीं	३९	
८९	७३८६	वैद्यकउद्धार	राजमार्तण्ड	१६३४	१५	लि क. शिवदास
९०	४७७६	वैद्यजीवन	लोलिम्बराज	१८१६	१०	
९१	४८४४	,,	,,	१७००	१६	
९२	५२६४	,,	,,	१८७९	२७	
९३	५८३५	,,	,	१८९३	१५	लि क लक्ष्मीनारायण
९४	५८८०	,,	,,	१८४८	५३	लि क ठण्डीराम
९५	५५५९	,,	,,	१६वीं	१२	
९६	६०८१	,, सटीक	,,	१९०५	४१	पत्र १ से ३ तक अप्राप्त
९७	६२८८	वैद्यजीवन टीका	टी. हरिनाथ गोस्वामी	१९२२	५०	लि.क मिश्र कल्याण शर्म्मा
९८	६३२६	वैद्यजीवन सटीक त्रिपाठ		१८८९	५७	३२वा पत्र नहीं है
९९	४७७८	,, सस्तवक	लोलिम्बराज	१७३४	२७	लि स्या बगडी
१००	५८८१	,, ,,	,,	१९वीं	१७	
१०१	६९००	,, ,,	,,	१८६८	२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०२	५२७३	वैद्यरत्न	शिवानद भट्ट	१८वीं	४४	
१०३	७८२६	वैद्यवल्लभ (सटबार्थ)	हस्तिरुचि	१७६८	२१	लि.क राजविजयगणि विवोरा नगरे
१०४	५३०८	वैद्यविनोद	शकर भट्ट	१८वीं	६९	आद्य दो पत्र अप्राप्त
१०५	५८३६	,,	,,	१९वीं	४७	लि क. लक्ष्मीनारायण
१०६	५८४८	,,	,,	१९०४ १९१२	८०	,, ,, गोपालमहात्मा
१०७	६६०५	,	,,	१८५७	७४	
१०८	७८१३	,,	,,	१९वीं	२४	प्रतापसिंहसुत रामसिंहाज्ञयारचित
१०९	७८१४	,,	,,	,,	३८–११५	,,
११०	५८५८	वैद्यामृत	मोरेश्वर	१९२६	७	लि.क भक्तावर रचनाकाल (१६०३)
१११	५८४६	शतश्लोकी (सटिप्पण)	त्रिमल्ल भट्ट	१९१२	१०	लि क. लक्ष्मीनारायण
११२	५८५५	,, ,,	बोपदेव	१९२३	७	लि.क भक्तावर
११३	६९०१	,,	,,	१९वीं	३८	
११४	६६३२	,,		१८वीं	७	
११५	६०८०	,,	त्रिमल्ल, टी कृष्णदत्त	१९०३	६१	पत्र १ से ४ व ९, १०, २१, २२, ३१, ३३, ३४ अप्राप्त
११६	६५८६	शतश्लोकी टीका	,,	१९वीं	१०	
११७	४३०३	शार्ङ्गधरसहिता	शार्ङ्गधर	,,	१३१	
११८	५५६३	,,	,,	१९०६	१७३	पत्र १ से १६ व १६५ से १६६ तक अप्राप्त
११९	५८४७	,,	,,	१८९१	१०१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२०	६०३०	शार्ङ्गधरसंहिता	शार्ङ्गधर	१६७८	४७	राजलदेसरे लिखित
१२१	६७६५	,,	,,	१८६४	१२७	लि क रूपचन्द्र
१२२	६८६०	,,	,,	१७वीं	६६	
१२३	५८२४	,,	,,	१६१०	४७१	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२४	६०८४	,, सटीक (प्रथमखड)	,, टी काशीराम	१६वीं	७५	
१२५	६०८५	,, ,, (द्वितीय)	,,	,	१४०	पत्र १, २६, २५, ३६, ३७, १००, १०१ अप्राप्त
१२६	७७६५	,, (षष्ठाध्यायपर्यन्ता)	टी आढमल्ल	,,	५७	
१२७	७०३८	,, (अपूर्ण)		,,	१२०	
१२८	५४१४(२)	शारीरनिबन्धसंग्रह		,,	१–७१	
१२६	४७८३	शोथनिदानचिकित्सा		१८वीं	३	
१३०	६६७२	सन्निपातचिकित्सा		१६वीं	११	
१३१	६३००	सन्निपातप्रकरण		,,	१२	लि क फतेचंद, जयपुर
१३२	५७४५	सिद्धमन्त्रप्रकाश	बोपदेव	१८वीं	२८	आद्य पत्र शोभन
१३३	४१३७	,, (सटीक)	,,	१८४५	८२	लि क. सेठ आदित्यराम
१३४	६०८२	हिकमतप्रकाश (द्वितीयखड)		१६वीं	५५	पत्र २१ से २३ व ३०वा अप्राप्त
१३५	६०८३	,, (तृतीयखण्ड)		,,	४४	
१३६	६८०१	हितोपदेश	शिव पण्डित	१८७०	६२	
१३७	५६३२	क्षेमकुतूहल	क्षेम शर्म्मा	१६वीं	६६	
१३८	७४६२	,,	,,	१८वीं	३६	
१३६	६६३८	त्रिशतिका	वास पण्डित	१८५६	१८	लि.क. देवीदत्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४०	५८४५	त्रिशती	शार्ङ्गधर	१९वीं श.	१३	
१४१	६६६१	,, (सटिप्पण)	,,	१७७०	५०	लि क मनसाराम
१४२	६०८६	त्रिशत्श्लोकी सटीक	,,	१९वीं श	११०	पत्र ९, १२, १३, १९, २८ से ३१, ६९, ७६, ८३, ८५ व ८६वा अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७५३ (१-१५)	अकपाटी		१८३७	१३-२६	* पाटियो के नीचे नीति विषयक "दूहा" हैं
२	४६०७(१)	अकपाटी		,,	१८-२२	
३	४६१६(५)	अकपाटी		१८७५		
४	४४५२(५२)	अगफुरकणविचार	हीररतन	१८वीं	१०८वां	
५	५८६३	अञ्जनाचौपई (सचित्र)		१६वीं	४३	चित्र स० ४३, प्रारम्भ के १० दूहे पुण्यसागर वाली प्रतियो से मिलते हैं
६	६५२५	अञ्जनाचौपई	पुण्यसागर	१८६८	२४	* स० १६८७ में रचित। लिपि-कर्त्ता ऋषि नोलचन्द, पीही ग्राम, ऊदावत राज्ये
७	४८१८	अजनाचौपई	पुण्यसागर	१७०२	२०	
८	४१६४(१)	अजनासतीरास		१६२६	१३	अन्तिम पत्र त्रुटित
९	४०४०	अजनारास		१८४६	१७	
१०	५०६३	अजनासतीनो रास		१८वीं	२१	
११	४०३६	अजनासुन्दरीचौपई	भुवनकीर्ति	१६वीं	१८	अपर नाम पवनजयप्रिया अजनासुदरी हनुमंत चरित्र
१२	४३१६	अजनासुन्दरीचौपई (सचित्र)	भुवनकीर्ति	१८६१	३४	चित्र स० ४०
१३	७०४३	अञ्जनासुन्दरीचौपई		१८वीं	१४	लि क आर्या हीरा
१४	७२१६	अञ्जनासुन्दरीचौपई	पुण्यसागर	१८५०		बीकानेर में लिखित
१५	६३६२	अञ्जनासुन्दरीरास		१८६५	२५	पोरबदर में लिखित। बाई साकर पठनार्थं
१६	५२०२(१)	अकबरनामा		१८८५	४-८७	जयपुर में लिखित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	४६२०	अकवरनामो		१६वीं	१४	
१८	४२८७ (१०)	अदीतवारकी कथा	भाव कवियण (?) गर्गगोत्रीय अग्रवाल मल्लपुत्र	१८वीं	४६–७७	
१९	५३१२	अध्यात्मगीता		१८८३	८५	अपूर्ण, प्रथम ८ पत्र अप्राप्त। पाली में लिखित
२०	७७४३(१)	अध्यात्मरामायण भाषा	रार्जासंघ	१७८४	१–३२	* बाई सिरेकवरीलिखित, सावर मध्ये
२१	७५२४	अध्यात्मविचार		१८२७	१६	श्रीगारियाधामध्ये लिखित
२२	५४१८(१६)	अनन्तचतुर्दशी कथा		१६वीं	१२१–१२४	
२३	४६१४(१८)	अनन्तव्रतरास	ब्रह्माजिणदास	१८७१	२१२–२१८	
२४	४०३६	अनाथीसधि	खेमो	१८वीं	६	गीत दूहाबद्ध
२५	५१०८	अब्जदीप्रश्न		२०वीं	८	अपूर्ण
२६	५४१८(३६)	अबजदीपाशावली			१–१०	जैन विनतिसहित
२७	४४५२(१६)	अभिसारिकावर्णन गीत आदि		१८वीं	१८वां	
२८	७१४१	अमरदत्त मित्रानन्दचरित्ररास	देवगुप्त चन्द्रसूरीश्वर	१७००	२८	१६०६ (?) में रचित। सारण-मध्ये ऋषि कचरा भाभण-शिष्यलिखित
२९	४३६१	अमरदत्तमित्रानन्दरास	,,	१६१७	१६	स० १६०७ वै कृ ६ रवि-रचना काल
३०	५११७	अमरसेनवीरसेनचौपाई	विजयहर्ष	१८४६	२०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	६६०२	अमृतसागर	सवाई प्रतापसिंह	१६वीं	२२८	पत्र २,३,४,५ अप्राप्त
३२	६८३१	अमृतसागर	,,	,,	४६७	*
३३	५८३६	अमृतसागर	,,	,,	३३८	अपूर्ण
३४	४२०६	अमृतसागर	,,	१८७६	२७८	
३५	७१३७	अयवतीसुकुमाल चौपई		१६वीं	५	रचनाकाल १७४१
३६	४०४८(२)	अयवतीसुकमाल स्वाध्याय	शान्तिहर्ष	१८६२	१६–२०	लि क धनरूपहंस, सऊपरा ग्रामे
३७	७७४४(२)	अर्जणगीता	रघनराम	१७५८	३–८	
३८	४४६१	अर्बुदाचलश्लोक	विनीतविमल	१८वीं	२	
३९	४०३४	अरहन्नकमुनिचरित्र	जिनहर्ष सूरि (?) (सुमतहंस)	१६वीं	६	
४०	७७२४	अवतारचरित	नरहरिदास बारहठ	१७८६	२६७	*
४१	७७२६	अवतारचरित	,,	१६१८	६४६	
४२	७७३३	अवतारचरित	,,	१६१४	४४५	वदनोर में हरिदास कबीरपंथी द्वारा लिखित
४३	७३८७	अवन्तिगजसुकमाल चौपाई	जिनहर्ष	१६वीं	६	रचनाकाल १७४१
४४	७७४५	अश्वपरीक्षा		१६४३	३६	लि क वजैसिंह, पहला लख्या सो ब्रह्म रामगोपालजी का
४५	४७८४	अष्टप्रकारपूजारास	उदयरत्न	१८२६	६१	
४६	५४१८(१६)	अष्टमीकथा		१६वीं	१४०–१४३	
४७	४६१४(२४)	अष्टाणीवरतनोरास (ऊठाई)	शुभचन्द्र	१८७१	२३१–२३२	
४८	४८२३(१)	आणदश्रावकसंधि	श्रीसार	१८१६	१–६	
४९	५६०२	आत्मप्रकाश चौपाई	धर्ममन्दिर	१८वीं	२३	रचनाकाल १७४२

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०	५४१८(४)	आतमसबोधरास	बनारसी	१८वीं	८८-९१	
५१	४६१४(२०)	आदित्यकथाव्रत	सूरजी शाह	१८७१	२२२-२२९	
५२	५३७६(२)	आदित्यवारकथा			३१-४२	
५३	५३७६(१३)	आदित्यवारकथा छोटी			१९७-१९९	
५४	४४२०	आनन्दमन्दिररास	ज्ञानविमल	१८वीं	२१३	ढाल दूहाबद्ध। अन्तिमपत्र अप्राप्त
५५	७०९४	आनन्दश्रावक	मुनि श्रीसार	१८७०	२२	लि.क साध्वी रतन बावडीनगर मध्ये
५६	४०४२	आनन्दसंधि (अनाथीसंधि)	,,	१७५४	१५	लि क आर्या रुषमा
५७	५४१८(३२)	आनन्दाके दोहे		१९वीं	१७१-१७३	४१ दोहे
५८	४६११(२)	आभूषणहणा चिन्तावणी		१८७६	४१-४२	लि क भागचन्द
५९	४०३५	आर्द्रकुमारचऊढालिया	समुद्र मुनि	,,	३	
६०	४८२३(२)	आर्द्रकुमाररास	मान कवि	१८१९	९-११	
६१	६०४५	आराधना प्रकरण	सोम सूरि	१८वीं	६	सुलिखित प्रति
६२	४४५२(९)	आवडीजी आदिके छन्द	अनेक कवि	१८वीं	१३ वाँ	
६३	७३४४	आवश्यक विधिप्रकरण	जिनवल्लभ गणि	१५वीं	६	
६४	४०५१	आषाढाभूत चतुष्पदिका	भावप्रभ	१९वीं	२	ढाळ गीतबद्ध
६५	५४१८(७)	आषाढाभूति चौपई		,,	९७-१०७	
६६	५१२१	आषाढाभूति धमाल	कनकसोम	१८वीं	५	रचनाकाल १६३८
६७	४५७३	इन्द्रियपराजय शतक		स १६२८	६	
६८	७२७३	इन्द्रियपराजय शतक		१७वीं	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६९	४०४३	इलाकुमर चौपाई	ज्ञानसागर	१८४३	५	रत्ननाकाल १७१९ आसोज सुदि २ बुधवार
७०	६५३०	इलाकुमार चोपाई	,,	१८वीं	७	
७१	४९१४(२८)	उणतीसी भावना		स १८७७	२४६–२४७	
७२	५९७४	उत्तमकुमार चोपाई	तत्त्वहस	१७९५	३१	जोधपुर मे लिखित
७३	५०९८	उत्तराध्ययन गीत		१७२२	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त
७४	४२८७(१३)	उपदेश को रासो	रामचन्द्र	१८वीं	९८–११४	स्वय कवि द्वारा लिखित । रचनाकाल १७२९
७५	६१०६	ऋषभविवाहलो	सेवक	१७२२	२१	
७६	६१६६	ऋषिवत्ता चौपाई	चौथमल	१८७९	२५	बील मध्ये लिखितम्
७७	७३३३	ऋषिभाषित कुलक		१८वीं	२	
७८	४९१५(६)	एकलगिड दाढाळारी वात		१८८७	१३६–१३९	
७९	४४५२(५५)	एकलगर वाराहरी वारता			१११–११३	अपूर्ण
८०	७२६१	एकविंशति स्थान प्रकरण	सिद्धसेन सूरि	स १७६६	१०	लि क. सुमति हस
८१	७७४६	एकादशीकथा भाषा (गद्य)		१९१३	५१	२६ कथाओ का सग्रह
८२	४२९३(२)	एकादशीकथा सग्रह			१८	२० कथाओ का सग्रह
८३	४०५५	एकांतरा तावरी वात		१८७६	३	
८४	७४४४(२०)	कका सज्झाय	श्रावक चोथो		३२४–३२६	
८५	५२११	कछवाहोकी वशावली		१८८४	११४	*
८६	४०४६	कनकावती चोपई	जिनहर्ष	१९वीं	२३	अन्तिम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८७	७७२०(२२)	कपडकुतूहल		१८वीं	६	*
८८	४०४७	कपोतकपोतणीरी वारता		१८५४	१२	*
८९	६६३७(२)	कबीरजीकी बाणी	कबीर	१८११–१८१६	१०६–१८७	लि क रामदास, टीकोदासशिष्य निराणा ग्राम
९०	६७३६	कयवन्ना चोपई	गुणसागर	१७१६	१०	लि क ऋषि भरथ
९१	४०४८(१)	कयवन्ना चौपाई	जयरग	१८९२	२२	रचनाकाल १७४१ वै शु ८ शनिवार
९२	४०४९	कयवन्ना रास	सुन्दरसूरिचन्द्र (?)	१८वीं	५	आर्या हीरा, श्रीमानाजीनी शिष्यणी द्वारा लिखित
९३	५९७६	कर्मग्रन्थ पचक बालावबोध	मतिचन्द्र	१८वीं	११२	
९४	४६१४(३३)	कर्मविपाक काड	गुणकीर्ति	१८७७	२५१–२५५	
९५	४४२५	कलावतीचरित्र	विजयचन्द्र	१६७६	४	चौपाईबद्ध, दूसरा पत्र अप्राप्त
९६	४०२०	कविकल्पलता	श्रीसार	१८७८	९	* रचनाकाल स १६८९
९७	४४५२(२६)	कवित्तबावनी	उदयराज	१८वीं	२४ से २६	
९८	४४५२(९५)	कवित्त	उदैराज	,,	१३१ वां	
९९	४४५२(४५)	कवित्त सवैया	गग, वृन्द	१८वीं	६१ वां	
१००	४४५२(५४)	कवित्त	अनेक कवि	,,	१०९–११०	५० कवित्त
१०१	४४५२(१०३)	कवित्त दूहा आदि	केसरसिंघ आदि	,,	१३६–१४१	
१०२	४६१५(२)	कवित्त गीत आदि		१८८७	२०–४१	जगदम्बा आदि के छन्द हैं

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	४४५२(७३)	कवित्त गीत आदि		१८वीं	१२२वा	दाडिम-फल, मुहम्मद स्तुति आदि
१०४	४४५२(६६)	कष्टावलीचक्र		,,	१२६वा	वार और नक्षत्रो से वने योगो का फल-निरूपण
१०५	४६१५(१६)	कागदरी नकल		१८८७	३६८–४०६	# स्त्री, पुरुष आदि के प्रति पत्र
१०६	४०५१	कानड कठियारा री चौपई	मानसागर	१८वीं	८	रचनाकाल १७४७
१०७	४०५०	कान्हण विवाहलो		१७०२	८	लि.क आर्या हीरा
१०८	७३७७	कालज्ञान भाषा	लक्ष्मीवल्लभ गणि	१९वीं	७	
१०९	४०५२	कालीनागदमण पवाडो		१८वीं	७	
११०	५४३०	काव्यविधान		१९वीं	३३–४०	मत्र-साधनो को काव्य कहा गया है
१११	७७२२(७)	कुतुबशतरी वात		१७२०	६६–१०४	लि क मथेन माधा
११२	७७२१(१०)	कुबदीन शाहजादारी वात		१८२५	१६६–१७७	
११३	५९६१	कुमतिविध्वसण चौपाई	हीरकलश	१७वीं	७	रचनाकाल १६७७ कनकपुरी मध्ये
११४	६४२५	श्रीकृष्णजीरो व्याहलो		१९वीं	४	
११५	७०३०	श्रीकृष्णजीरो ब्याहलो	पदम कवि	,,	६४	
११६	४८३८	कृष्णरुक्मिणी वेली सटीक	म पृथ्वीराज	१७४५	२४	लि क भाग्यविजय, तेजविजय-शिष्य, खोमेल नगरे
११७	४४५२(४७)	कृष्णरुक्मिणी वेली सटीक	,,	१८१७	८५–१००	लि.क. प्रीत सोभाग्य गणि बोहला ग्रामे मही उपकठे
११८	७७६६(४)	श्रीकृष्णलीला वर्णन		१८५६	२–७	चित्र—१
११९	४६०४(१)	केरडावाली चौथ माताजीरी कथा		१८६१	१–३४	लि.क कल्याण सौभाग्य

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२०	७१७२(१)	केवाटराजाकी कथा		१९३६	२७	
१२१	५४१८(३०)	खिचडीरासा		१९वीं	१६८–१७०	
१२२	४०९०	खीची अचलदासकी वात		१८वीं	६	
१२३	४६८८	खेटसिद्धि		१८४८	६	लि.क. चतुरविजय गणि पोहकर मध्ये
१२४	४६८९	खेटसिद्धि	महिमोदय	१८४८	६	लि क. ज्ञानविजय, रचनाकाल स १७३१
१२५	४४५२(१३)	खेजडला माताजीरी नीसाणी	मान कवेसर	१८०८	१६ वां	
१२६	४४५२(८४)	खेतरपालजीरो छन्द	कवि देद	१८वीं	१२५ वां	
१२७	५२७९	ग्रहणविचार टीका		,,	३	
१२८	६४३७(२)	गजसिंहकुंवर कथा		,,	२४–४८	अपूर्ण
१२९	४०५६	गजसुकुमाल चरित्र		,,	१८	त्रुटित
१३०	६५४१	गजसुकमाल रास		१८८७	८	लि.व. सरूपचद
१३१	४९१४(१४)	गजमुनिवीनती		१८७१	२०८ वां	
१३२	४४५२(६९)	गणेशजी छन्द अमृतध्वनि		१८वीं	१२०	
१३३	६०४१	गर्भोत्पत्तिस्तवन	श्रीसार	,,	३	
१३४	४९१५(५)	गीत		१८८७	१३४–१३५	
१३५	४१३६	गीतगोविन्द सटीक	टी. चैतन्यदास	१८वीं	४७	अन्त का पत्र अप्राप्त
१३६	४९१५(१५)	गीतकवित्त		१८८७	३९५–३९७	
१३७	७५५९	गीतसज्झाय		१८वीं	४	
१३८	४४५२(९०)	गीत, सवैया आदि		१८वीं	१२८वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३९	४९०४(३)	गीतामाहात्म्य			६५वाँ	
१४०	५४५८(४)	गींवोलीकी वारता	जगमाल मालावत	१८५६	१-२७	
१४१	४०२२	गुणकरडगुणावली चौपई	ऋषि दीप	१८२१	२२	
१४२	४०५३	गुणकरडगुणावली चौपई	,,	१९वीं	२७	लि क आर्या नाथी
१४३	४८२०	गुणकरडगुणावली रास	दीप (?)	१८७४	२०	रचनाकाल स १७५७
१४४	६०२७	गुणकरडगुणावली		१८३९	१५	,,
१४५	६५४२	गुणकरडगुणावली चौपाई	दीप ऋषि	१८३३	३६	लि क प नवनिधविजय, सथाणा नगरे
१४६	४०१३	गुणहरिरस		१७९६	७	राबडियास ग्रामे लिखितम्
१४७	५०६४	गुणावली रास	गजकुशल	१९वीं	२६	पत्र २ से ९ और अन्त्य अप्राप्त रचनाकाल स १७१४
१४८	४०५५	गुणावलीचरित्र चौपई	शान्तिहर्ष	१८७४	२१	रचनाकाल स १५१३ आश्विन कृ ३, बडलू ग्रामे लिखितम्
१४९	५१०३	गुरुचेलारी कथा		१७वीं	२	त्रुटित
१५०	७१८०	गुरुपरपरा ढाळ	ज्ञानविमल	१९वीं	१२	
१५१	५४५८(३)	गोतमरासा		१८३८	४	
१५२	७५६७	गोतमपृच्छा चौपाई		१७५६	१३	लि क मुनि गङ्गजी
१५३	६१२८	गोतमपृच्छा बालावबोध	जिनसूरि	१८८३	६८	
१५४	५४३६(७)	गोतमलघुस्तवन	समयसुन्दर		३८-४०	
१५५	५०६६(२)	गोतमस्वामीरास	उदयवन्त	१९०६	३-८	
१५६	५४३६(३)	गोतमस्वामीरास			१७-२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५७	४४५२(५)	गोरखपतडा	गोरखजी	१८वीं	१० वाँ	
१५८	४१५१	गोराबादलकथा आदि गुटका		,,	६०	१४ कृत्तियो का सग्रह
१५९	७७२२(६)	गोराबादल चौपई	हेमरतन	,,	५७–६५	सावडीमें रचित
१६०	४६२४(२)	गोराबादलरी बात	जटमल	१७८७	६–१५	लि क. जयसौभाग्य सिरियारी मध्ये
१६१	७४४४(११)	गौतमरासो		१८८५	२०५–२१२	
१६२	४४५२(७६)	घूघूचक्र		१८वीं	१२३ वाँ	उलूकके सम्बन्धमें शकुन-विचार
१६३	४६२४(१०)	घोडारा बखाण		१७६३	११–१२	अन्तमें 'नाहरखान राजसिघोतरो छद' है
१६४	४४५२(६३)	घोडारा बणाव		१८वीं	१३० वाँ	
१६५	४७२९	घटीज्ञान		१९वी	१	
१६६	५१२३(२)	चक्रकेवली		१८वीं	२–११	
१६७	६६१२	चर्चासमाधान		१८१८	२३६	र का. स १७८१
१६८	७१५४	चतुर्मुकुटचन्द्रकिरणरी कथा		१८७७	३१	जीर्ण प्रति
१६९	५३·६(२१)	चतुर्विंशतिस्थानकसूची			२४३–२४८	
१७०	४६१५(१०)	चदकवररी वात		१८८७	३४८–३६०	रचनाकाल स १७४०
१७१	५३४१(२)	चदकवररी वात तथा स्फुट कवित्त		१९वीं	५८–६७	
१७२	७७५३(११)	चदकवररी वात	कलश कवि	१८३७	४७–६०	
१७३	५४५८(१)	चदकवररी वारता	सकलकीर्ति	१८३८	४	चित्र स १ लि.क. प मनरङ्गसागर
१७४	४६१६(३)	चदकुमररी वार्ता	हंस कवि	१८७५	४७–५४	लि क प हुकमसौभाग्य

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७५	४१४८	चदकुवरकी वात		१८१६	१८	*
१७६	४६११(३)	चदकुंवरकी वारता	कवि राय	१८३० से १८३२	१–६	
१७७	७३७६	चदनबालाभगवती गीत	भक्तिलाभ	१८वीं	१	
१७८	४०५८	चदनमलयागिरिकी चौपई	भद्रसेन मुनि शिष्य (?)	१८६५	१०	लि क ऋषि उमेदचद, स्थान-ओरगाबाद, लसकर मुगजादे मध्ये
१७९	४४२१	चदनमलयागिरि चौपई	यशोवर्द्धन	१७८६	११	रचनाकाल स. १७४७ श्रा कृ ६
१८०	४४५२(४८)	चदनमलयागिरिरी वारता	भद्रसेन	१८०६	१०१–१०२	
१८१	६३३६	चदनमलयागिरि चौपई	भद्रसेन	१८३४	८	
१८२	७०७६	चदनमलयागिरि चौपई		१८वीं	५	
१८३	५०८४(२)	चदनमलयागिरिरी वात (सचित्र)		१८३६	२६–३५	३४वां पत्र अप्राप्त, बीकानेर–कलमके चित्र
१८४	५४१८(२४)	चन्द्रगुप्तस्वप्न		१९वीं	१५०–१५२	
१८५	४६१४(३५)	चन्द्रप्रभविवाहलानी ढाळ		१८७७	२५६–२५७	
१८६	४६१८(१)	चद्रराजाकुमरकी कथा		१७६६	४–२०	प्रथम तीन पत्र अप्राप्त
१८७	७०७२	चद्रराजाचरित्र	मोहनविजय	१९वीं	१८५	अपूर्ण, प्रथम व अन्तिम पत्र अप्राप्त
१८८	६८५०	चद्रराजाचौपई	विद्यारुचि	१८०६	४१	रचनाकाल स. १७७७, सिरोही नगरे
१८९	४०५६	चद्रराजा रास	मोहनविजय	१८१०	८२	रचनास्थान–राजनगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९०	६३४९(२)	चदराजानो रास	मोहनविजय	१९०६	७०-३५४	लि क हरकचद पाण्डे
१९१	७२४९	चदराजानो रास	,,	१८४७	६८	रचनाकाल स १७८३
१९२	७४२०	चदराजानो रास	,,	१८४९	१२३	लि.क पृथीराज
१९३	७४०७	चद्रलेखाचौपाई	मतिकुशल	१७७८	१८	
१९४	४०६०	चद्रलेहाचरित्र चौपई	,,	१८०५	१९	रचनाकाल स. १७२८
१९५	४७९५	चद्रलेहारास	,,	१८वीं	२९	
१९६	४७८९	चद्रलेहारास	,,	१९वीं	२४	
१९७	५०९६	चद्रायण कथा	ऋषि कर्मचद	१८वीं	२	
१९८	५३७६(१८)	चद्रायण कथा	मलयकीर्ति		२११-२१३	
१९९	४७४६	चद्रार्की		१८वीं	११	
२००	४९१४(५७)	चरित्ररत्नत्रयगीत		१८७७	३१२-३१३	
२०१	६३६३	चातुर्मासिक व्याख्यानपद्धति		१९११	२४	लि क टेकचद
२०२	५१०५	चार जणारी वात		१९वीं	३	
२०३	७२३१	चार भावना (गद्य)		१७वीं	११	
२०४	६२९२	चारिप्रत्येकवुद्धचरित्र	समयसुन्दर	१६७६	२७	प्रथम पत्र अप्राप्त
२०५	४४५३(३)	चित्तोडगढकी गजल	खेतल	१८वीं	६	रचनाकाल स १७४८
२०६	४८०६	चित्तोडगजल	,,	१९वीं	२	
२०७	४८२२	चित्तोडगजल	,,	१७८३	५	तीसरा पत्र अप्राप्त
२०८	४४५२(१००)	चित्रवधकाक		१८वीं	१३४-१३५	
२०९	४७९७	चित्रसभूति चौपई	ज्ञानसागर	,,	३५	
२१०	४२८७(१४)	चेतनगीत	मनराम	,,	११५-११६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२११	७८१०(३)	चेतनदासकी वाणी	चेतनदास	१८वीं	२३०–२६८	
२१२	४४५२(६१)	चोबोलीराणीरी कथा	जिनहर्ष	,,	११८वां	
२१३	७४४४(१३)	चौढालियो (दानशील तप सवाव)	समयसुदर	१८८५	२४५–२५३	
२१४	४०६१	चौथमाताजीरी कथा		१८वीं	३	बीलाडामें लिखित
२१५	६०६७	चौबीसचौक	अमृत कवि	१८५३	७	लि क. भानुकीर्ति, जयनगरे
२१६	६६१८	चौबीस तीर्थंकरोकी पूजाविधि		१९वीं	६६	
२१७	७४२५	चौसठमार्गणाविचार		,,	१३	
२१८	५०६१	छत्तीस अध्ययनगान	सागरचद	१६४२	१५	लि क प हर्ष, मुलतानमध्ये
२१९	४४५२(७८)	छींकचक्र		१८वीं	१२३वां	छींकके सबधमें शुभाशुभ फलका परिचय
२२०	४३०८(३)	छीतरदासजीका सवैया	छीतरदासजी	,,	४४७–४५५	३५ छद
२२१	४८४७	ज्योतिषवर्त्तारो		१८४३	३०	लि क ऋषि भाणजी
२२२	५५२८	ज्योतिषसार	कवि कृपाराम	१९०७	४७	लि क रामकुवार
२२३	४४५२(६४)	जगदेवपमाररा कवित्त	ककाळी भाटण (?)	१८वीं	११९वां	
२२४	७१७२(२)	जगदेवपरमाररी वात		१९३६	१–३५	
२२५	७७५२३(१४)	जगदेवपुवाररी वात		१८३७	७१–८८	अपूर्ण
२२६	४९१६(१)	जगदेवरी वात		१८७५	४४	अन्त मे ५ अन्य वार्ताएँ हैं।
२२७	४४५२(७१)	जड भरथरा कह्या श्लोक आदि		१८वीं	१२१ वां	सवाई कूरम नरेश (जयपुर) की पराजय और मारवाडके वखत-सिंहकी विजयका वर्णन, बुधसिंह हाडाका वर्णन भी है।
२२८	४८४८	जन्मपत्रीगणित		१९वीं	२९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२९	४५२४	जन्मपत्रीगणितक्रम (ब्रह्मतुल्य)		१९वी	२५	
२३०	६४३४	जन्मपत्रीप्रकार		१७५९	६	
२३१	७४२७	जम्बूअज्झयण		१८८०	५८	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३२	६२९८	जम्बूगुणरत्नमाल		२०वीं	३६	
२३३	४२७३	जम्बूगुणरत्नमाल	आणद जेठूमल	१९वीं	४३	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३४	४१५७	चम्बूचरित्र रास	पदमचद मुनि	,,	३३	लि क परताबाई, स्थान–अजमेर
२३५	७०४६	जम्बूचरित्र		१८७२	५५	
२३६	७५३३	जम्बूचरित्र		१७९६	६०	
२३७	७६०३	जम्बूचरित्र		१८९१	११३	
२३८	५३७६(३)	जम्बूस्वामी कथा			४२–८०	विहारी विप्रेण लिखित
२३९	६७३५	जम्बूस्वामी कथा		१८५६		लि क. ऋषि माणकचद
२४०	६७८१	जम्बूसरकी कथा		१९वीं	४	
२४१	४०६३	जम्बूस्वामीचरित्र चौपई	पद्मचद	१८५६	३३	लि.क जीवनराम ऋषि, स्थान–नागोर
२४२	७३५२	जम्बूस्वामीकथा		१८६६	२०	चुरू मध्ये लिखित
२४३	६८८४	जयसुखवैद्यक		१७३३	८	लि.क. मतिविमल
२४४	५४१८(१३)	जलगालणविधि		१९वीं	११४–११६	
२४५	४४५२(३२)	जलाल गहाणीरी वात		१८०७	३५ से ४०	लि क प प्रीतसौभाग्य गणि
२४६	४०६२	जलाल गहाणीरी वारता		१८६०	२०	लि.क. ऋषि टेकचद सरियारीग्रामे
२४७	७७६९(५)	जलाल गहाणीरी वारता		१८५६	२–४२	
२४८	५८९५	जलालबूबनावारता सचित्र		१८वीं	३२	चित्र स १२

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४९	४०६४	जांमवतीचौपई	सूरसागर	१८४७	७	बीकानेरमें लिखित
२५०	४८१७	जिणरस	वेणीराम	१८४१	१७	
२५१	७१०७	जिनेश्वरपूजापद्धति		१८वीं	१९८	र का स १६५१
२५२	५०७३	जीवदयासज्झाय	सोमसुन्दर सूरिशिष्य	,,	१	
२५३	७४४४(३)	जीवविचार		१८८५	१२१–१२९	
२५४	४९१४(२६)	जीवसिखामण रास	प्रभुवत्त	१८७७	२४२–२४४	,, स १८५८
२५५	४९०५ (७-९)	जुवानीरा दूहा आदि			३१–३६	अर्थ सहित पहेलियाँ भी है।
२५६	५४५३	जैनबोलसग्रह		१९वीं	५३	
२५७	४९१४(५४)	जोगीरास	जिनदास	१८७७	३००–३०२	*
२५८	५४१८(२०)	जोगीरासा	,,	१९वीं	१४३–१४५	
२५९	५४१८(२५)	जोगीरासा	भगोतीवास	,,	१५२–१५४	
२६०	४२८७(४)	जोगीरासो	जिणदास	१७२६	१४–१८	लि क रामचन्द्र
२६१	५४१८(३१)	टण्डाणा गीत		१९वीं	१७०–१७१	*
२६२	६८४१	ढाल, पट्ट आदि		,,	६६	
२६३	४०६७	ढालसार	चोयमल	,,	१९	रचनाकाल स १८५६
२६४	६७३७	ढालसागर		१८६७	११९	लि क ऋषि खुशालचद
२६५	६१२२	,,	केशराज	१८वीं	१०१	देशी रागोंमें पद
२६६	७२२४	,,	गुणसागर	,,	७७	रचनाकाल स. १६७६ हरिवश-गाथा
२६७	७३७५	,,	,,	१७९८	७६	
२६८	४०३३	ढालसागरप्रबन्ध	,,	१७४०	१०४	ढाल १५१

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६९	४०६६	ढालसागरप्रबन्ध	गुणसागर	१७५६	८६	लि क. ऋषि जोधनजी स्थान–मेदपाट श्रीसाहबा नगर
७०	५०८४(१)	ढोलामारू, सचित्र, अपूर्ण, त्रुटित		१८३६	१४	चित्र स. ३६ बीकानेर में लिखित पत्र स. ४० पर ग्रन्थ का अन्तिम अंश है
२७१	७७२०(१)	ढोलामारूचौपई	कुशललाभ	१७५९	१–२३	
२७२	६४३८	ढोलामारवणीचौपई	वाचक कुशललाभ	१८वीं	२४	रचनाकाल स १६७३ स्थान–जैसलमेर, अमरसी पठनार्थ
२७३	५८९६	ढोलामारवणीरा दूहा, सचित्र		,,	६१–११४	रचनाकाल स १५३०, चित्र स. ३३
२७४	७७४७	ढोलामारूनी वात	कुशललाभ		५६	रचनाकाल स १६१७, भवरजी अजयसिंहजी पठनार्थ जैसलमेर में लिखित।
२७५	६७२०	ढोलामारूरा दूहा		१९वीं	४७	
२७६	४९२४(१३)	ढोलामारूरी चौपई	कुशललाभ	१७७०	१–३४	
२७७	७७४८	तर्कप्रबन्ध	सरूपवास	१९वीं	५७	
२७८	७००७	ताजिकसार	हरि भट्ट	१८५०	२९	
२७९	४८७५	तुरकशकुनावली (रमलग्रन्थ)		१७९९	३	लि क. देवेन्द्र सौभाग्य
२८०	७५३५	तेजसिंहजीरा सवैया		१७४३	१७	प्रथम पत्र अप्राप्त
२८१	४९१४(५०)	तेरहकाठिया		१८७७	२७९वां	
२८२	७६०४	तडुलवेयालियपइन्न	पाशचन्द्र	१८३३	४१	लि क ऋषि मोतीचंद डूगरसी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८३	७२६५	थावच्चाचौपई सविवरण	सययसुन्दर	१८वीं	१८	रचनाकाल १६९१
२८४	४६०४(२)	थावरवेवतारी वात		१८६१	३५-६५	लि क कल्याणसौभाग्य
२८५	४०६८	थूलभद्रनवरसो	उदयरतन	१८४६	५	रचनाकाल स. १७५९
२८६	४८३२	थूलभद्रनवरसो	"	१८५२	८	लि क राजविजय
२८७	६२५५	थूलभद्रनवरसो	"	१८वीं	२	
२८८	७४४४(१४)	थूलभद्रनवरसो		१८८५	२५३-२६०	
२८९	७४२१	वण्डक सस्तवक		१९वीं	६	
२९०	६५३१	द्रौपवीरास	फनककीर्ति	१८वीं	४१	जैसलमेर में रचित
२९१	६३५९	द्रौपवीरास चौपई	"	१८१५	४०	जयपुर मे लिखित
२९२	६४१९	द्वावशभावफल		१९वीं	४	
२९३	७४४४(५)	वण्डकप्रकरण सटवार्थ		१८८५	१३६-१४३	लि क. नेमविजय
२९४	६४४६(५)	वत्तलाल की फवको	वत्तलाल	१९वीं	५-११	
२९५	४६१४(४९)	वर्शन बत्तीसी		१८७७	२७७-२७८	स १८५४ मे रचित
२९६	६५४४	वशार्णभद्र चौढाळियो	वीप ऋषि	१९वीं	३	लि. स्थान-अहिपुर
२९७	६३९९	दशावली		"	६	लि क उपाध्याय पद्मउदय गणि
२९८	६९४८	वादूजीका शब्द	वादूजी	१९००	७८	आद्यन्त पत्र शोभन
२९९	६९२६	वादूजीकी वाणी आदि गुटका	वादूजी आदि	१७८७	२९८	गुटके में विविधि कृतियो का सग्रह है
३००	६९४९	वादूजीकी साखी	"	१८वीं	९६	
३०१	६९५०	वादूजीकी साखी	"	१८९९	६७	लि क लक्ष्मणवास
३०२	४३०८	वादूवाणी आदि	"	१८वीं	४१०	विभिन्न सन्तो के ४४४० पदो का सग्रह

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०३	६९३७(१)	दादूवाणी आदि	दादूजी आदि	१८११–१८१६	१०९	लि क रामदास, निराणा ग्रामे
३०४	६९५४(१)	दादूशब्द	,,	१९वीं	६५	दादू, कबीर, सूर, मीरा आदि के पदो का सग्रह
३०५	४१४९	दाढाळारी वात		१८१७	२३	
३०६	५४३६(९)	दानशील तपभावना			४४वां	
३०७	५४३६(११)	दानशील तपभावना	दशार्ण भद्रराज		४६–५९	
३०८	६८४५	दानशील तपभावनासवाद	ऋषिकुशलशिष्य	१९वीं	४५	
३०९	५९९७	दानादिकसवाद	समयसुन्दर वाचक (?)	१६६२	५	सागानयर मध्यादि
३१०	५४१८(१७)	दानाधिकार	समयसुन्दर	१९वीं	१२४–१३४	
३११	७७२०(२४)	दिल्लीपातसाहीरो विवरो		१८वीं	१२–१८	
३१२	४०१७	दिवालीकल्प बालावबोध	जिनसुन्दर	१९वीं	२६	
३१३	४४५२(२८)	दूहा	कवि ज्ञान	,,	२६वां	पुरुष-शृ गार और स्त्री-शृ गार के १६-१६ दूहा
३१४	७७२१(१३)	दूहो श्रीमहाराज जसवन्तसिहजीरो	म. जसवन्तसिहजी	१९३१	२००वा	हदिरस की प्रशसा में रचित
३१५	६०१५	देवकीरी चौपाई		१९वीं	९	
३१६	४४५२(७९)	देवीचक्र		१८वीं	१२३वां	
३१७	७३७३	देशना शतक		१७वीं	१९	
३१८	४८५५	दोषकेवली		१८वीं	१	लि क मानसिह
३१९	४९१४(५)	दोहाशतक	रूपचद	१८७१	१६२–१६५	
३२०	४९१५(१३)	धमाळ		१८८७	३८४–३८९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२१	४४५२(५१)	धमाळ वसन्त		१८वीं	१०७ वां	
३२२	७३६९	धर्मवुद्धि चोपाई	लालचद	१७६०	१६	लि स्था जैसलमेर
३२३	५४१८(१५)	धर्मवत्तीसी		१९वीं	११९–१२१	
३२४	७७५३(१२)	धर्मवावनी		१८३७	६०–६६	अपूर्ण
३२५	४०६९	धर्मवुद्धि पापवुद्धि चोपाई	लालचद	१८२५	२५	र का स० १७४२
३२६	५२२३	धर्मोपदेश		१९वीं	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त
३२७	४८०८	धामनो वर्णन		,,	६	
३२८	५४३६(१२)	नरक रो चोढाळियो	गुणसागर		३	
३२९	६९५४(२)	नरसीमाहेरो		१८८८	६५–६९	६८वा पत्र अप्राप्त
३३०	५२०२(२)	नरसीजीको माहेरो	वसन्त	१८८५	८७–९१	
३३१	४०७०	नलदवयन्तीचोपई	समयसुन्दर	१८३९	२५	रचनाकाल स १६७३
३३२	६९१३	नवकारमत्रदर्शन		१९वीं	१३५	
३३३	७६६७	नवकारवालीनी सज्झाय	लब्धिविजय	,,	१	
३३४	६४१२	नवपदपूजा		१८८५	१४	
३३५	५४६१	नसीहतनामा और वेधीवासके कवित्त		१९वीं	१३८	स्फुट
३३६	४४५२(४)	नागदमण		१८वीं	७ से ९	
३३७	७०७३	नागदमणचोपई	साईदास	१८२४	६	
३३८	६३९०	नागदमण छद		१८वीं	४	
३३९	४९२४(३)	नागदमणकथा		१७८७	१५–१८	
३४०	४४५२(२२)	नागमतर		१८वीं	७३ वां	सर्प-विष उतारनेके २० मत्र
३४१	५०९९	नागिला भवदेव रास	समयसुन्दर	१७४१	५	लि क प ईश्वर, अहमदावादे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४२	४३१२	नाथियाका सोरठा	नाथिया (?)	१९वीं	११	१४० सोरठे
३४३	६९३७(३)	नामदेवजीका सवद	नामदेव	१८११–१८१६	१८७–२०१	लि.क रामदास, निरोणा ग्रामे
३४४	४८३१	नामप्रताप	रामचरण	१९वीं	१२	
३४५	७८१६(३)	नारायणलीला	माधवदास	१८३१		लि.क कायस्थ भावसिंह
३४६	४४५२(५०)	नासिकाविचार		१८वीं	१०७वां	
३४७	६७४९(१)	नासिकेतपुराणकथा	वार्तिक नन्ददास	१९वीं	८८	
३४८	६११०	नासिकेतपुराण भाषा	नन्ददास	,,	५१	
३४९	४२९३	नासिकेतमहापुराण भाषा	स्वामी नन्ददास	१८३७	४४	लि स्था लालुवास प्रतापसिंहराज्ये
३५०	५४१८(३३)	निर्वाणकाड		१९वीं	१७३–१७५	
३५१	४४५२(२५)	निसाणी	सूरज	१८वीं	२४वां	
३५२	५०७७(२)	नेमराजीमती सज्झाय	यशोदेवसूरिशिष्य	१८०२	१ ला	
३५३	४९१४(३४)	नेमिनाथनी साखी		१८७७	२५५–२५६	र का स १६७० सूरतबदर
३५४	५३३०	नेमराजुलका सवैया		१९वीं	२५	
३५५	७३०३	नेमराजुल बारामास	कवियण (?)	,,	१	
३५६	६३०४	प्रत्येकवुद्धचौपई	समयसुन्दर	१८६७	२४	लिखित जैपुरमध्ये
३५७	६५२९	प्रत्येकवुद्धचौपाई	,,	१८२५	२८	लि क. परमानन्द शिष्य जैतसी
३५८	५२७०	प्रद्युम्नप्रबन्ध	कमलवधु	१८१३	२८	र का स १७२२ चूडामणिने लिखवाया
३५९	५२७४	प्रद्युम्नप्रबन्ध	समयसुन्दर	१७३९	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
३६०	५०६८	प्रदेशीरायचौपाई		१८९०	२९	पाटणमध्ये लिखित

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६१	६०३३	प्रबोधचिंतामणिचौपई	धर्ममंदिर गणि	१८५८	७७	लिखित बीकानेरमध्ये
३६२	५१३७	प्रश्नोत्तरसार्द्धशतकनो बीजक		१९वीं	५७	
३६३	४९१५(१४)	प्रश्नोत्तरीरत्नमाला	मगनीराम		३८९–३९५	र का स १८८६
३६४	५१०१	प्रहेली	जिनहर्ष	१९वीं	५	आद्य २ पत्र मसील्लुत
३६५	५३२९	प्रश्नशकुनावली		,,	१२	
३६६	६३४९(१)	प्रश्नोत्तरसार्द्धशतकनो बीजक	क्षमाकल्याण	१९०६	७०	लि क हरकचद पाडे
३६७	६८५४	प्राकृतप्रबन्धसग्रह	मोहनविजय	१८६८	११९	लि क वरतावर, बीकानेरमध्ये
३६८	४७९२	प्रास्ताविक दूहा	जनराज आदि	१८वीं	३	
३६९	५३६५	प्रास्ताविक दूहा		,,	६	
३७०	४८०९	प्रास्ताविक दोहरा	वृन्द आदि	१९वीं	३	
३७१	४८१५	प्रास्ताविक दोहरा	,,	१८३९	३	लिखित राजपुरमध्ये
३७२	५३४५	प्रास्ताविक पत्र		१९वीं	८	पत्नी का पति के प्रति आदि
३७३	४४५२(९९)	प्रास्ताविक श्लोकदूहा आदि	उदैराज आदि	१८वीं	१३२–१३४	
३७४	४७९३	प्रियमेलकचौपई	समयसुन्दर	,,	७	ऋषि भीकमजीपठनार्थं
३७५	४८२१	प्रियमेलकचौपई	,,	२०वीं	६	
३७६	६८७५	प्रियमेलकचौपई	,,	१९वीं	८	लि क नविनकीर्ति गणि गागपुरमध्ये
३७७	५४१८(२८)	पचगतिकी वेली	मुनि हर्षकीर्ति	,,	१९५–१९७	र का स १६२३
३७८	४८५०	पचांगानयनविधि भाषा	मेघराज गणिशिष्य	,,	२	र का. १७२३
३७९	४९१४(५८)	पचेन्द्रियकी वेली	ठाकुरसी	१८७७	३१३–३५	र. स. १५८५
३८०	५२९५	पचेन्द्रियचौपाई		१८७७	५	उदयरामध्ये लिखित
३८१	५३४१(१)	पन्नावीरमदे वात		१९वीं	२ से ५७	लि क गोरा भैरवानन्द

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८२	४६१५(४)	पन्नावीरमदेरा वात	शेरसिंह	१८८७	७६–१३४	७८वा पत्र खडित
३८३	७१६६(१)	पन्नावीरमदेकी वात		१६७७		गुटका
३८४	४८०७	पद्मिनीचौपई	हेमरतन	१८२७	५१	
३८५	४६१०	पद्मिनीचौपाई	हेमरतन	१६वीं	३१	
३८६	४६१४(१०)	पद	सकलकीर्ति	१८७१	२०७वां	
३८७	४६१४(३१)	पद		१८७७	२४८–२४६	स्फुट
३८८	४०७२	पदमसीपदमावतीचौपाई	मुनि माल	१८वीं	२२	
३८६	७७२१(५)	पनरवादशाशकुनावली		१८२५	११८–११६	
३६०	४६१६(६)	पनरमी विद्या		१८८१	८४–६६	
३६१	४४५२(४६)	पनरमी विद्या स्त्री-चरित्र		१८०५	१०३से१०७	लि क प प्रीतसौभाग्य गणि
३६२	४०७६	परदेसीप्रवन्ध	ज्ञानचद	१८४८	३१	
३६३	७४१२	परदेसीप्रवोधचौपई	,,	१७५५	२२	
३६४	४८२७	परदेशीराजारी चौपई		१८८५	२६	लि.स्था वड़ली
३६५	५४१८(२६)	परमादि (प्रमाद)	गोपालदास	१६वीं	१६७–१६८	
३६६	४०७३	पलकदरियावरी वात		,,	३६	लि क. अखुजी
३६७	४०७४	पाडवचरित्रचौपई	लाभवर्द्धन	१७८५	५६	र.का १७६७
३६८	७७२३	पाडवविजय	मलूकदास	१६२६	३७७	लि.क जीताराम, फतेहपुर मध्ये
३६६	४६१४(५५)	पार्श्वनाथआदित्यवारकथा		१८७७	३०२–३११	स १६७० की प्रति से प्रतिलिपि की गई
४००	६४३३	पाशाकेवली	गर्ग ऋषि	१६६६		लि क रूपां साध्वी
४०१	७६७०	पाशाकेवली		१६वीं	५	जोधपुर में लिखित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४०२	५१२३(३)	पाशाकेवली अवजदी		१८वीं	१२–१६	
४०३	६२८२	पाशाकेवली अबयद		१६वीं	१६	
४०४	७८२३	पिङ्गलरो समीयो	चन्द (?)	१८वीं	८	चि॰ स ७ ग्र स ५४५७ के साथ संयुक्त।
४०५	४४५५	पिङ्गलशास्त्र टीका		१८७१	२३	थानलानगरे, मालवदेसे लिखित
४०६	७१४३	पुण्डरीककुडरीकनी ढाळ	मुनि हर्ष	१६वीं	५	
४०७	५११६	पुण्यसारचरित्र	हर्षचन्द्र गणि	१८७५	३	र का स. १६६२ सागानेर मे रचित
४०८	७५३०	पुण्यसारचोपाई	पुण्यकीर्ति	१८वीं	५	जीर्ण और त्रुटित प्रति
४०९	६४३७(१)	पुरन्दरकुवरकथा	मालदेव	,,	४८	
४१०	४८२६	पुरन्दरकुवरचोपई	रतनविमल	१६वीं	२१	
४११	४६७६	पूर्णिमाविचार		,,	४	
४१२	५३३२	पूर्वदेशचैत्यप्रवाडी		,,	३	जीर्ण और त्रुटित प्रति
४१३	४६०३	पृथ्वीराजरासो	चन्द कवि	,,	१२६	
४१४	७१२८	पृथ्वीराजरासो	,,	१७४७ से १७५३	६६	,,
४१५	७१५०	पृथ्वीराजरासो	,,	१८वीं	१६२	जीर्ण गुटका
४१६	७१६४	पृथ्वीराजरासो (पद्मावतीको समो)	,,	१६४१	७६	लि क निरञ्जो त्रुकमलाल तेरुवी निवासी
४१७	७१६८	पृथ्वीराजरासो आदि		२०वीं	११८	कई रचनाओं का संग्रह
४१८	७१६६	पृथ्वीराजरासो आदि		,,	,,	
४१९	७१६६(२)	पृथ्वीराजरासो (महोवाको समो)		१६७७	,,	
४२०	४६१४(१६)	पोरतीनोरास	ज्ञानभूषण	१८७१	२१८–२२२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२१	४०७१	पोस्तीरा रासो	बखतो	१८८२	४	
४२२	७७२२(१२)	फुटकर औषध		१८वीं	११६–१२५	बधिरता, बायगाठ आदि रोगो की औषध
४२३	४६२४(१८)	फुटकर कवित्तादि		१८वीं	२७–२६	
४२४	४६२४(७)	फुटकर ज्योतिष		१७६३	१४–१५	पन्द्रह तिथियो के दोहे आदि
४२५	५२७२	फूलकुवर फूलकुवरीरी वात		१६१२	१४	र का स १८५२
४२६	५०८१	फूलकुवर फूलकुवरीरी वात		१८६०	७२	चित्र स ४५; र का. स १८३०
४२७	५५००	फूलजी फूलमतीरी वात		१८४६	२६	अन्त में चौढाळिया आदि
४२८	४६१४(३७)	ब्रह्मजिणदासनी वीनती	ब्रह्म जिणदास	१८७७	२५८–२५६	
४२६	७७४३(३)	ब्रह्मनिरूपण	राजसिंघ	१७८४	४६–५३	लि क बाई सिरेकवरी
४३०	५८६७	बगसीराम प्रोहित हीराकी वात	कवि तेण	१६वीं	६५	*
४३१	७७५३(७)	बामणवाडरो स्तवन	कमलकलश शिष्य (?)	१८३७	३६–४१	
४३२	४६१४(६२)	वाई जतन नै लीलवणनी विगत		१८७१	३२१ वाँ	
४३३	७१३६	वाईस परीक्षाकी चौपाई	ऋषि रायचन्द्र	१८२२	४	र.का. स. १८२२
४३४	४३२०	वातसग्रह		२०वीं	५२२	राजस्थानी भाषा की चौवीस प्रकीर्ण वार्ताओ का सग्रह,
४३५	७८१७	वादशाही हाल		१६वीं	८–५०	
४३६	४६१४(२७)	वारह अनुप्रेक्षा	चन्द्रकीर्ति	१८७७	२४४–२४६	
४३७	४७२१	वारह पुनमरो विचार		१६वीं	१	
४३८	४७३७	वारह भवनफळ		१८४०	५	लि क सुमतिसागर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३९	७४४४(१५)	बारहभावना	जयसोम शिष्य	१८८५	२६०–२७०	जैसलमेर में रचित
४४०	७७५४ (१,२,३)	बारहमासीसंग्रह		१९२२	१५	भरतराजाका बारह मासा र का स १८९०
४४१	४२८७(१५)	बारहमासो	रामचन्द्र	१८वीं	११६–१२७	
४४२	७६२१	बालचन्द्रबत्तीसी	बालचन्द्र	२०वीं	७	
४४३	४१४२	बुद्धिसेणचौपाई	तिलक सूरि	१९वीं	६६	
४४४	७५४२	बोलविवरण	आचार्य केशवजी (?)	१७वीं	६२	
४४५	७७५३(१०)	भमरागीत	महमद	१८३७	४५–४६	
४४६	५८८५	भक्तसार	शालिग्राम	१९वीं	२२	
४४७	७७२१(१)	भङ्गीपुराण	हरदास	१८२५	१–२५	र का स १८५५ शिव स्तुति, कई स्थानो पर चित्र भी है।
४४८	७७४४(४)	भजनसंग्रह	चैना	१७५८	१८–२२	
४४९	५१२३(७)	भड्डुली	भट्ट कवि	१८वीं	२६–४१	लि क. जैनकुवरी
४५०	४४५२(१७)	भड्डलीदूहापचीसी	,,	,,	१६ वां	
४५१	६७२८	भड्डलीपुराण		१८८१	१७	
४५२	५१२२	भड्डलीरा दूहा	भड्डु कवि	१८२८	३	
४५३	४४५२(९८)	भड्डलीवाक्य	,,	१८वीं	१३२ वां	१५ दूहा
४५४	५८००	भड्डलीवाक्य	,,	१९१३	१४	लि क. प्रजारामो पंसार
४५५	७६३०	भरताधिकार		१७९३	५३	लि क गोकलजी, गङ्गाणामध्ये
४५६	४८३०	भवानीछन्द		१९वीं	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५७	४७६६(२)	भाषा लीलावती (पद्यानुवाद)	लालचद	१७७५	१ से १५	म रायसिंह, बीकानेर के अमात्य कोठारी नेणसी पुत्र जैतसी की प्रार्थना से उनके गुरु द्वारा रचित
४५८	७४१०	भुवनद्वारविचार		१६वीं	२०	
४५९	७७२२(१०)	भैरव आदि की बोलीविचार		१८वीं	१०७–११४	
४६०	६७०२	भोगलपुराण (उमामहेश्वरसवाद)		१७७२	३०	लि.क टीकूदास
४६१	४८२५	मच्छोदरचौपई	शान्तिहर्ष	१८४८	२३	लि.क क्षमा सौभाग्य
४६२	४७९८	मदनवार्ता	खुश्यालचद जालधरी	१८वीं	१०	
४६३	४४५२(१)	मदनशत (अपूर्ण)		,	२	
४६४	४३१५	मधुमालतीकथा	चतुर्भुजदास कायस्थ	१८८८	८१	लि क तुलसीराम कनौजिया, सवाई जैनगर
४६५	४९११(१)	मधुमालतीकथा	,,	१८३२	१ से ४१	
४६६	५४५७	मधुमालतीकथा (सचित्र)	,,	१९वीं	२–८७	चित्र स. ८७
४६७	५०७८	मधुमालतीकथा (सचित्र)	,,	१८८१	२१६	चित्र स २२३ लि.स्था. पालनपुर
४६८	५०७९	मधुमालतीकी वात		१८वीं	८८	चित्र स. ९०
४६९	४०८४	मधुमालतीचौपई	चतुर्भुजदास	१९वीं	९०	लि क सेसमल्ल, कापरडा नगर
४७०	५०८०	मधुमालतीरी कथा	,,	१८वीं	१२५	हाडोती कलम के २७० चित्र
४७१	४९१५(८)	मधुमालतीरी वात	,,	१८८७	१४१–१९९	लि क हररूप, जालोर
४७२	५४१८(१२)	मनभवरा गीत	कवि माल	१९वीं	११३–११४	
४७३	४९१४(२९)	मनोरथमाला		१८७७	२४८ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४७४	७७२२(४)	मयण भट्ट दूहा		१९वीं	४८–५२	३० पद्य
४७५	४९१४(४४)	मरुदेवीनो सुखडी		१८७७	२७२–२७४	
४७६	५४२७(५)	मलयासुन्दरीचौपई	गोपालदास		६४–१४८	र का. १६६६
४७७	४४५२(१८)	महादेवजीरो छन्द	गाङ्गला	१८वीं	१९ वां	
४७८	४९१४(५३)	महापुराणनी वीनती	गङ्गदास पर्वतसुत	१८७७	२८८–३००	
४७९	६८५१	महाव्रतमलयसुन्दरीरास		१९वीं	२१	
४८०	४७४३	महाराजा दौलतसिंहजीजन्मोदाहरण		१८वीं	८	
४८१	५४३६(५)	महावीरजीरो पारणो		१९वीं	३३–३६	
४८२	७३५९	महावीर वधोठण जीमणवार विगत		१७६८	२	
४८३	७०५८	महासती सीताचरित्र	पुन्ह कवि	१८७१	८८	लि स्था ग्रयोध्यापुरी र. का १७७३ (?)
४८४	४४५२(१०)	माताजीरी चरचा		१८वीं	१३ वां	
४८५	४४५१(१२)	माताजीरो गीत		१८०८	१६ वां	नि क प्रीतसौभाग्य
४८६	४४५२(११)	माताजीरो छन्द	बीकाजी	१८०७	१४–१६	नि क प्रीतसौभाग्य, च[illegible] ग्राम
४८७	४४५२(८५)	माताजीरो छन्द	कवि सारंग	१८वीं	१०६ वां	
४८८	७७२१(११)	माताजीरो छन्द	चारण [illegible]	१८३१	१७७–१७९	नि क अमरसिंह लिखियो
४८९	६९११(४)	माधवानल कामकन्दलाचौपई	कुशललाभ	१८३०	६	विजयपुरमध्ये लिखित
४९०	६९२४(१६)	,,	,,	१७६२	१–२२	
४९१	५११८	मानतुङ्ग मानवतीचौपाई	मोहनविजय	१८वीं	२१	[illegible]पुर पाटण, दुर्गादास राठौड़ राज्ये रचित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४९२	६१३८	मानतुङ्ग मानवती रास	मोहनविजय	१८०९	४४	र.का. स० १७१०
४९३	६१३९(१)	मानतुग मानवती रास (सचित्र)		१८७८	६५	चित्र स० ८८
४९४	६२९७	मानतुग मानवती रास	,,	१९१४	३६	
४९५	६३३५	,,	,,	१८२४	५०	लि क आलमचद मकसूदाबाद, अजीमगजमध्ये
४९६	६५३४	,,	,,	१८७९	७९	
४९७	७३९९	,,	अभयसोम	१८२८	११	र.का स १७२०
४९८	७५२८	मानवतीरास	मोहनविजय	१८९२	८४	
४९९	७५५७	,,	,,	१७९७	३५	र स्था अणहिलपुर पाटण
५००	४४५२(८०)	मासधिचक्र		१८वीं	१२३ वा	बोलने के फलाफल का विचार
५०१	६५२६	मुनिपति चरित्र (गद्य)		१९वीं	२१	
५०२	६३५५	मुनिपति चरित्र बालावबोध		१७६६	३१	
५०३	५४३६(४)	मुनिमालिका			२६–३३	
५०४	६२७२	,,	कल्याण	२०वीं	२०	र का सं. १६३६
५०५	५८९१	मृगलेखाचौपाई (सचित्र)	मुनि सागरचन्द्र	१८३८	५३	चित्र सं ४८
५०६	६७४५	मृगाङ्कलेखाचौपाई (सचित्र, अपूर्ण)		१९वीं	३९	चित्र स ४२
५०७	७०५७	मृगावतीचरित्र	समयसुन्दर	१८वीं	३८	र का सं १६२८,प्रथम पत्र अप्राप्त
५०८	४०८६	मृगावतीचरित्र चोपई	,,	१८वीं	२४	र का सं १६६१ (?)
५०९	६५३३	,,	,,	,,	२३	
५१०	६२५०	मृगावतीचौपाई	,,	,,	१३	
५११	६८३८	मेघकुमार चौढाळियो आदि		१७३८–४९	५३	जीर्ण प्रति, १२ कृतियोका सग्रह

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१२	४२८२	मेघमाला		१६वीं	५	लि क भगवानदास
५१३	४६१४(१६)	मेरुजयमाला		१८७१	२०६वां	
५१४	४४५२(६०)	मेघसक्रांति आदि		१८वीं	११७वां	
५१५	६६२२	मैणरेहा चौपई		१९४९	७	लि.क मुनि केशरीचंद
५१६	५१०२	मोती कपासिया वाद	श्रीसार	१८वीं	५	लि क मुनि नित्यसागर रोडामध्ये
५१७	७०७७	मौनएकादशीकथा (गौतममहावीर-सवाद)		१८२४	५	
५१८	६७६२	मोहमरदराजाकी कथा (पद्य)		१९५३	१३	लि क. गरीबदास
५१९	५६०१	मोहविवेक चौपाई	धर्ममन्दिर	१७६८	६६	लि क भीमविजय
५२०	६४००	योगदृष्टिस्वाध्याय	नयविजय	१६वीं	५	दीमक से कटे जीर्ण पत्र
५२१	५४१८(१८)	योगसारके दोहे	योगचन्द्र मुनि	,,	१३४–१६०	१०७ दोहा
५२२	५४५०	योगासनमाला (सचित्र)		१८४६	११०	लि.क स्वामी तोलाराम नागौरमध्ये
५२३	६०३८	रत्नकुमाररास	सहजसुन्दर	१८वीं	११	
५२४	४०८७	रत्नचूड़ चौपई	कनकनिधान	१८१९	१२	र का स, १७३८
५२५	४८१९	रत्नपालरास	मोहनविजय, बुधरूपविजयशिष्य	१८६७	५४	लि क. हितसौभाग्य अमा-सौभाग्यशिष्य
५२६	६०५७	,,	सुरविजय	१९००	७६	
५२७	४६१९(३०)	रत्नपाल		१८७७	२४८वां	
५२८	६५३२	रतनपालरास	सेवक सूर	१८३७	३२	र का स. १७३२, पोथी गादू-मायें, प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२९	४८३३	रतन महेशदासोतरी वचनिका	खडियो जगो	१७४१	७	लि क प्रमोद मुनि, रोहितासपुरे
५३०	४९१५(३)	रतनाहमीररी वात (पद्यबद्ध)	कवियण (?)	१८८७	४२–७५	२०० पद्य, लि क. प्रभुदान
५३१	५४१८(२६)	रविकथा	तिहुरा गिरिनिवासी गर्गगोत्रीय म लूकपुत्र (?)	१९वीं	१५४–१६३	लि क रामसागर
५३२	५४१८(२७)	,,	भानुकीर्ति	,,	१६४–१६५	
५३३	७४४४(१६)	रागपदबहोत्तरी	आनन्दघन	१८८५	२७०–२९४	लि.क नेमविजय
५३४	४२८७(९)	रागपदसग्रह		१८वीं	१७–२८	
५३५	५१००	,,		१९वीं	३	
५३६	५४१८(३४)	रागरासाष्टक		,,	१७५–१७६	
५३७	७७२०(२३)	रागानामोपरि विरहसुभाषित		१७६५	९–११	
५३८	४९०६(२)	राजसभारजन	रसिक (?)	१७९८	१–२५	* र का स १७५९, ३७० दोहा
५३९	४९१५(१७)	राजाचचरी वातरा दूहा		१८८७	४०६–४१०	
५४०	४९१६(२)	राजाभोज, माघपडित नै डोकरीरी वात		१८७५	४५–४६	लि क सौभाग्य गणि
५४१	७७२१(६)	राजा रतनरी वचनिका	खिडियो जगो	१८२५	११९–१४१	
५४२	७७२०(२१)	राजावली			७ वां	स १२९७ से १७७० तक के सीसोदिया राणाओका वशपरिचय
५४३	४७९९	राणारी वशावली		१८वीं	१	नागधरानरेश से अमरसिहपुत्र सग्रामसिह तक
५४४	४९१४(८)	राजुलपचीसी वारहमासी	राजुल	१८७१	१६७–१६८	
५४५	५४१८(३५)	राजुलपच्चीसी	आनन्दचद	१८०६	१–६	लि क दयानिधि

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४६	७१४४	राजुलपचीसी	लालचद	१८५८	४	लि क सरूपा, आगरामध्ये
५४७	७२४३	राजुलपचीसी	,,	१९वीं	२	
५४८	५१०४	राठोड रतनमहेसदासोतर वचनिका	खिडियो जगो	१८०२	३७	लि क धर्मसुन्दर,प्रथम पत्र अप्राप्त
५४९	४४५२(६१)	राठोडारी वशावली		१८वीं	१२९ वां	१११ राजाओ के नाम
५५०	४८३४	राठोड नाहरखानरो छन्द	गाडण माधोदास	१९वीं	१	*
५५१	६४४६(७)	राधाजीकी बारहखडी		,,	१४–१६	
५५२	७७४४(३)	राधाविलास		१७५८	८–१७	
५५३	४४५२(१६)	रामकिशनजीरो छन्द		१८वीं	१६ वां	
५५४	५६०३	रामकृष्णचौपाई	लावण्यकीर्ति	१७११	३०	र का स १६७७
५५५	६४६७	श्रीरामचन्द सवारी (गद्य)	रामनाथ	१९वीं	६	
५५६	७८१०(२)	रामचरणदासजीका कृतिसग्रह	रामचरणदास	१८वीं	२६–२३०	७ कृतियो का सग्रह
५५७	६८५३	रामजसरसायन		१८६४	११४	र का स १६८७
५५८	७७४४(१)	राममञ्जरी	गोविन्ददास	१७५८	१–२	
५५९	६३५७	रामयशोरसायन	केशराज	१७६४	८६	
५६०	६७४६(२)	रामरक्षाभाषा	रामानन्द	१९वीं	८८–६२	
५६१	७६०६	रामरक्षामत्र	,,	,,	३	लि क केशवदास
५६२	४६२४(५)	रामगुणरासो	माधोदास दधवाडिया	१७८८	१–३२	लि क जयसौभाग्य गणि
५६३	७७२१(२)	रामरासो	,,	१८२५	२५–६६	
५६४	७७३५	रामरासो	,,	१८वीं	८१	गुटका, अपूर्ण
५६५	७१४०	रायप्रश्नश्रेणीमध्ये ईग्यारह प्रश्न		२०वीं	७	
५६६	७७२२(८)	राव सत्रसालरो गीत		१८वीं	१०५ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६७	४४५२(७५)	रासभचक्र		१८वीं	१२३ वाँ	गधे के विषय में शकुन-विचार
५६८	४४५७	रात्रिभोजन चऊपई	धर्मसमुद्र	१७२३	७	लि.क. भक्तिविशाल
५६९	४९१४(४३)	रात्रिभोजन रास		१८७७	२६८–२७२	
५७०	४९१४(४१)	रात्रिभोजन सज्झाय		१८७७	२६६ वाँ	
५७१	४९१४(४२)	रात्रिभोजन सज्झाय	कवियण	१८७७	२६७–२६८	
५७२	४९०५(१,२)	रीसालुकुवररी वात स्फुटदोहा	नर्बदो चारण	१८७५	१–२५	लि क अनूपविजय
५७३	७१२२	रुक्मिणीमगळ(कृष्णको व्याहलो)		१९वीं	१२–४२	अपूर्ण
५७४	६९७५	रुक्मिणीव्याहलो		१८६७	१३२	गुटका, स. ४८ से ६४ तक के पत्र अप्राप्त
५७५	४०७६	रुक्मिणीवेली (सबालावबोध)	मू पृथ्वीराज, टी. कुशलधीर गणि	१८२६	४३	लि.क जीवणदास, रेवा ग्राम
५७६	४०७७	रुक्मिणीवेली (सस्तवक)	मू पृथ्वीराज, टी. लब्धिविज्ञान शिवनिधान	१७८९	२८	
५७७	७१६५	रुक्मिणीवेली, नागदमण आदि		२०वीं	गुटका	जीर्ण
५७८	४०७८	रुक्मिणीवेली (राजस्थानी अर्थसहित)	पृथ्वीराज	१८वीं	२७	
५७९	५२२१	रुक्मिणीहरण रास		१९वीं	१५	पत्र १, १२ अप्राप्त
५८०	५८९४	रूपसेनकुमार रास (सचित्र)		१८वीं	१३	लि क साध्वी मेरुश्री, चित्र स.१६
५८१	६९३७(४)	रैदासके पद	रैदास	१८११–१८१६	२०१–२०९	लि क रामदास, निराणाग्राम
५८२	४०२७	रोहिणीतपस्तवन आदि	श्रीसार, राज आदि	१८वीं	२२	
५८३	६११९	लीलावती चौपाई	लाभवर्द्धन	१७४२	१४	पत्र १ से ३ अप्राप्त
५८४	६३७८	लीलावती चौपाई	,,	१९वीं	३६	
५८५	६०५६	लीलावती भाषा	लालचन्द	१७८३	२०	र.का. स. १७३६

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८६	४८३६	लीलावती रास	उवयरतन	१८०७	१६	लि क मुनि जेठा
५८७	५२८६	लीलावती रास	,,	१९वीं	१२	र का स १७६७
५८८	४६१४(२५)	लूंकामतनिराकरण प्रतिमास्थापन रास	सुमतिकीर्ति	१८७७	२३४ से २४२	
५८९	४०८८	वच्छराजहस चौपाई	जिनोदय	१८६१	३३	लि क रूपविजयजी बातानगर
५९०	४७८१	वध्याकल्प		१८१४	४	
५९१	७७२६	वशभास्कर	सूर्य्यमल्ल	१९४३	१८४	लि.क बारहठ बालावक्सजी, ग्राम हणूत्या, काशी ना प्र सभा में ग्रन्थमाला के सस्थापक
५९२	७७२७	वशभास्कर	,,	१९४०	१८४	
३९३	७७२१(३)	वमेकवारतारी नीसाणी.		१८२५	९९–११०	लि क श्वेताम्बर पञ्चायण
५९४	७१५१	वर्षाऋतुका कवित्त आदि		१८७६	७५	लि क भैरूदास, जोधपुरमध्ये
५९५	४७१६	वर्षोत्पत्ति		१९वीं	२	
५९६	५३७६(२०)	वारसेनमुनिकथा			२२९–२४२	
५९७	६७३८	विक्रमखापरा चौपई	अभयमोम	१९वीं	१६	खण्डित
५९८	६४१४	विक्रमचरित्र (वैतालपचीसी)	हेमानन्द	,,	२७	
५९९	६६१५	विक्रमचरित्र (चौवोलीसतीचौपई)	उभयसोम	१८९५	११	र का स १७२४
६००	७०१४	विक्रमादित्यभूपालपञ्चदण्डकचरित्र	लक्ष्मीवल्लभ गणि	१७६२	५५	र का स १७२८
६०१	६४१५	विक्रमादित्य लावणी	धर्मदेव (?)	१९७७	६	लि स्था देवगढ
६०२	७६२०	विजयसेठ विजयासेठाणीलावणी	लालचद	२०वीं	३	र का स. १८६१
६०३	६१११	विद्याविलास चौपाई	जिनहर्ष	१८२९	१८	
६०४	४०९९	विनयभट्ट श्रेष्ठिपुत्रकथा	ऋषभसागर	१९वीं	७०	र.का. स. १८१०

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०५	४९२४(६)	वभेक (विवेक) वाररी नीसाणी	केशवदास	१७९३	१–१४	लि क जयसौभाग्य, आठपहरराा दूहा आदि भी हैं।
६०६	४४५२(४१)	विमलशाहजीरो सिलोको	शांतिविमल	१८वीं	४५–४८	
६०७	४१४५	विमलसाहाको सिलोको	पंडित विमल	१९वीं	१४	
६०८	४४५२(५३)	विषहरा विचार		१८वीं	१०९वां	
६०९	४९१४(४)	विषापहार स्तोत्र	अचलकीर्ति	१८७१	१६०–१६१	
६१०	६३३४	विषापहार स्तोत्र		२०वीं	१३	
६११	७७२२(१४)	वीरम देईडरिया आदिके कवित्त		१८वीं	१५२–१५६	* लि क आणदराम
६१२	७७६६(१)	वीरमदे पत्नीरी वार्ता (सचित्र)		१८५६	१–३७	चित्र सं० १८
६१३	४१३९	वीरसेन राजकथा आदि		१९२४	८	लि क प० जीवो
६१४	४४५२(६२)	वृद्धजुवानको झगड़ो		१८वीं	११८वां	लि क. प० प्रीतसौभाग्य
६१५	७७४३	वेदस्तुति भाषा	राजसिंघ	१७८४	३३–४६	* लि क बाई सिरेकवरी, सायरगढमध्य
६१६	५३६८	वैतालपच्चीसी		१९वीं	४०	लि स्था –जोधपुर
६१७	६४४३	वैतालपच्चीसी	म अनूपसिंह	१८९१	४४	लि क पुरुषोत्तम व्यास
६१८	७०४४	वैतालपचीसी	शिवराम	१७२६	५२	६१ कवित्त
६१९	७७२२(२)	वैतालपचीसीरा कवित्त		१९वीं	३७–४५	
६२०	७४४४(८)	श्रावक अतिचार		१८८५	१८०–१९०	
६२१	७१२२	श्रावक कथाकोश भाषा (अपूर्ण)		१९वीं	२१	
६२२	७७५३(८)	श्रावकरी सज्झाय	जिनहर्ष	१८३७	४२–४४	
६२३	७८१६(१)	श्रीधरलीला		१८३१से १८३३	४८	
६२४	६०२४	श्रीपालकथा	रत्नशेखर	१७२७	२६	लि.क. शान्तिलाभ, जेतारणमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२५	६२०५	श्रीपालचरित्र चौपाई	परमल्ल	१८५८	१००	लि.क ब्राह्मणगुलाब, भगवतगढ़मध्ये
६२६	४००२	श्रीपाल चौपाई	जिनहर्ष	१८२३	२५	
६२७	६९१९	श्रीपालचरित्र	सुजसविजय	१९२८	७८	लि क मगूमल,प्रथमपत्र अप्राप्त
६२८	६३५१	श्रीपालचरित्र भाषा		१९१७	१०२	
६२९	६५२७	श्रीपाल चौपाई	ग्यानसागर	१७९१	३४	र का स० १७२६
६३०	४१३८	,,	जिनहर्ष	१८९४	३५	
६३१	७२४८	श्रीपाल नरेन्द्रकथा		१६वीं	३१	
६३२	७०८९	,,	हेमचन्द्र, रत्नशेखरशिष्य	१८२३	१३७	लि क. गोडीचन्द्र
६३३	४४६३	श्रीपाल रास	ज्ञानसागर	१७३२	१३	र का. स० १७२६
६३४	६५२८	,,	विनयविजय	१८५७	५५	र का १७३८
६३५	६७४६	,,		१८७७	गुटका	र का. १७३८
६३६	५३७३(५)	श्रीपाल रास (अपूर्ण)		१८०९	१०९–११८	
६३७	४४५२(७७)	श्वानचक्र		१८वीं	१२३ वां	कुत्तेके कान फडफडानेके विषय में फलाफल-विचार
६३८	६८६३	शकुनदीपिका चौपई		१९वीं	८	
६३९	४४५२(६२)	शकुनरा कवित्त तथा जैंसिह सवाई-बखतेसयुद्ध		१८वीं	१२० वां	
३४०	४४५२(३०)	शकुनरी चौपाई (अपूर्ण)		१८वीं	३१–३२	
६४१	४४५२(७)	शकुनविचार		,,	११ वां	
६४२	४१६०	शकुनावली		१७वीं	२	४ यत्रो का फल
६४३	५१२३(४)	,,		१८वीं	१९–२७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६४४	४६८६	शतसवत्सरी		१९वीं	९	
६४५	४७२५	,,		१९वीं	४६	
६४६	४४५२(६५)	शनीसररो गुणछन्द	हेम कवि	१८वीं	११९ वां	लि क प्रीतसौभाग्य
६४७	४१६९	शनैश्चरकथा (स्नेहलीला) आदि		१८४०	२१	लि क गोपाल-मिश्र, पीरागपुरा वाला
६४८	४७८८	शनैश्चर कथा		१९वीं	६	
६४९	४८२४	,,		१८३६	२	आसोपनगरे लिखितम्
६५०	६३०७	शनैश्चर छन्द		१९वीं	२	
६५१	६३८९	शत्रुञ्जयउद्धार	भानुमेरु	१६६७	६	* र का. स० १६३८
६५२	५४३६(२)	शत्रुञ्जय रास		,,	५–१७	
६५३	६५३८	शत्रुञ्जयोद्धाररास	नयसुन्दर	१८वीं	६	लि क. दानविजय, श्राविका लाडमरेपठनार्थम्
६५४	५८९०	शान्तिनाथ रास		१८५४	२२०	१०४, १०५ पत्र अप्राप्त
६५५	७७२०(७)	शारवाष्टक		१८वीं	४५ वां	
६५६	४०२४	शालिभद्र चरित्र	मतिसार	१८वीं	१२	र का स० १६७८
६५७	४८०४	शालिभद्र चौपई		१८वीं	१२	
६५८	५०६५	शालिभद्र चौपाई		१८४३	१८	लिखित सवाईजयपुरमध्ये
६५९	६१३१	,,		१७७५	२५	लिखित ग्वालियरमध्ये
६६०	६१४०	,,		१८१८	४८	
६६१	६५४३	,,	,,	१८५१	२३	लि क शिवदत्तसागर
६६२	६८४६	,,	,,	१८२८	१७	लि क खुश्यालचंव

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६३	७५६३	शालिभद्र चौपाई	मतिसार	१७७२	१३	लि क ऋषि चापो
६६४	७५६४	,,	,,	१८०६	२६	लि क खुशाल, बेगमपुरमध्ये
६६५	५४५८(५)	शालिभद्र श्लोक		१८५६	१–१०	
६६६	४७७७	शालिहोत्र		२०वीं	६०	
६६७	६८२६	,,		१९१५	१०५	पत्र १ से ३ अप्राप्त
६६८	७७३०	शालिहोत्र ग्रंथ (गुटका)		१९४३	३४	लि क राव जयसिंह,दनोर, फतहबुर्जमध्ये
६६९	७७६७	शालिहोत्र (सचित्र गुटका)		१९वीं	१३९	चित्र सं० ११८
६७०	७८३७	शालिहोत्र (सचित्र)	महाराज नकुल पंडित	,,	६–७२	चित्र सं० ४८
६७१	७७२२(१३)	शिवरात्रि कथा		१७२७	१२५–१५२	लि क. कासटीहा
६७२	५२६६	शीयलबावनी		१९वीं	२	५८ दोहे
६७३	४०७१	शीलरास (नेमिनाथ रास)	विजयदेव सूरि	१७९२	७	लि क लब्धिसागर
६७४	५४१८(२३)	शीलरासा	कवि जैत	१९वीं	१४९–१५०	
६७५	४०१०	शकबहोत्तरी	देवीदान	१८९९	४७	लि क विजयसमुद्र, जेसलमेर
६७६	४४१९	,,	देवदत्त	१७९०	५०	प्रथम पत्र अप्राप्त
६७७	७०१८	षट्पञ्चाशिका भाषा	मूल-पृथुयशा, टी उत्पल भट्ट	१७६९	१५	
६७८	५३७६(६)	षोडश कारण कथा	शुद्धकीर्ति	,,	९०–९४	
६७९	५३७६(१७)	,,		,,	२०६–२११	
६८०	५३७६(१६)	षोडश कारण रासा	सकलकीर्ति	,,	२०३–२०६	
६८१	६९३७(६)	सर्वंगी	दादूजी	१८१६	२९३–४३०	
६८२	६५३९	साम्बप्रद्युम्न चौपाई	समयसुन्दर	१७२४	१९	लि क मनि सुन्दरसौभाग्य कृष्णदुर्गमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्याङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६८३	७४०१	साम्वप्रद्युम्न चौपाई	समयसुन्दर	१६७३	३१	लिखितं आर्या मरुपठनार्थम्
६८४	४६१८(२)	सावलिगा सदैवच्छकी वात		१७६६	२१–५२	लि क प्रोहित जोधा, मनोहरपुर का
६८५	७१७३	सावलिगारी वात		१६७६	२७	लि.क. मथुरालाल
६८६	७७२२(५)	सावलिगासूरेरी वात		१६वीं	५३–५६	६८ पद्योमे रचित
६८७	५४५८(२)	सदैवच्छसावलिगारी वात (सचित्र)		१८३८	१–५४	चित्र स० ७
६८८	४६२४(१)	सदैवच्छ सावलिगारी वात		१७८७	१–८	जीर्ण प्रति
६८९	४६१६(४)	,,		१८७५	५४–७२	लि.क सौभाग्य गणि
६९०	४१४७	,,		१८१६	३६	
६९१	६६८६	,,		१८५६	१६–१०८	लि.क. राधाकृष्ण ब्राह्मण
६९२	७७२०(२०)	,,		१८वीं	१–७ १६-२५	
६९३	७७६८	सदैवच्छ सावलिगारी वात (सचित्र-गुटका)		१८५४	७५	चित्र स० ७७
६९४	७८४५	,,		१८४८	७–८४	चित्र स० १४
६९५	५२०२(७)	सदैवच्छ सावलिगारी वात (अपूर्ण)		१८८५	१२३–१४१	
६९६	४६१५(११)	साहजादा कुतुबुदीनरी वात		१८८७	३६१–३७६	
६९७	४४५२(६६)	सिखामण		१८वीं	१३१ वां	७३ शिक्षाके वाक्य
६९८	७२४७	स्थूलभद्रस्वाध्याय	सिद्धिविजय	१६वीं	१	
६९९	४६२४(१४)	स्थूलभद्र सज्झाय	,,	१८वीं	३५–३६	
७००	७४४४(१२)	स्नात्रविधि	देवचन्द्र	१८८५	२१२–२४५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७०१	४४५२(७४)	स्यालचक्र		१८८५	१२३वां	सियार के बोलने का शुभा-शुभ विचार
७०२	५१२३(८)	स्फुटज्योतिषचक्रादि		१८८५	४१–४९	गोरखचक्र, धातुचक्र आदि
७०३	७७५३(१५)	स्फुटपद्य		१८३७	८९–१०६	सोरठ, राजुल आदिके दूहा, पद आदि
७०४	४४५२(८२)	सक्रान्तिफलचक्र		१८वीं	१२४वां	
७०५	४६७५	सक्रान्तिविचारआदि		१९वीं	५	
७०६	४६८५	,,		१८वीं	५	
७०७	७३३२	सस्तारकप्रकीर्णकसबालाबोध		१७वीं	१६	
७०८	४९१५(१२)	सज्जनप्रेमदूहा		१८८७	३३७–३८४	११० दूहा हैं
७०९	७४४४(१)	सज्झायसग्रह		१८८६	३२७–३७३	
७१०	७५३८	,,		१८वीं	४	लि क ऋषि रामाजी
७११	६२८६	सत्तरभेदीपूजा	साधुकीर्ति	१८५३	१४	
७१२	७४८०	सत्तरीशयठाणप्रकरण		१६२३	४०	
७१३	४०५४	सतीगुणावलीचोपई	गजकुशल	,,	१२	र का स० १७१४
७१४	७८१०(१)	सन्तदासकीवाणीआदि	सन्तदास	,,	४–२६	आद्य ३ पत्र अप्राप्त
७१५	६७४७	सन्तवाणीगुटका		१८९४	९९७	जीर्ण प्रति
७१६	७०९०	सन्ध्याप्रतिक्रमणविधि		१९वीं	१४	
७१७	४४५२(६)	सन्यासीरादशनाम		१८वीं	१०वां	
७१८	५११६	सनत्कुमारप्रबन्धचौपई		१८४०	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
७१९	४९१४(५१)	सम्बोधसन्तानू दूहा	वीरचन्द लक्ष्मीचन्दशिष्य	१८७७	२७९–२८३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२०	४७२४	समयरे राजारो फळ (वर्षपतिफल)		१९वीं	१	
७२१	५३७६(१५)	समाधि रास		१७६१	२०२–२०३	
७२२	४९१४(३)	सम्मेद शिखर निर्वाणकाड		१८७१	१५८–१६०	
७२३	४८०२	सरस्वती छन्द		१९वीं	३	
७२४	४२८७(१६)	सवाई जैंसिघजीकीजोधपुर चढाई		१८वीं	१२७–१३०	
७२५	४४५२(८३)	सवैयासग्रह	श्याम, काशीराम आदि	,,	१२४ वां	
७२६	७७५३(१३)	सवैया		१८३७	७० वां	
७२७	४२८७(३)	सवैया इकतीसा	बनारसीदास	१७२६	१२–१३	स्वय बनारसीदास के अक्षरो मे लिखित ५ पद्य
७२८	४०८१	सवैयाबावनी	राजसी	१९वीं	५	
७२९	४९०६(४)	,,	राज कवि	१७९८	२५–३४	लि क केवलसौभाग्य
७३०	४४५२(१४)	सवैयासग्रह	प्रताप, ब्रह्मगुलाल आदि	१८वीं	१७ वां	लि क प्रीतसौभाग्य
७३१	४४५२(२०)	सवैया, सपखरो आदि		,,	२० वां	
७३२	५५२४	सत्रह भेद पूजा	साधुकीर्ति	१८६४	९	र का १६१८, लालमण ढोलीरी पोशाळमध्ये
७३३	५४१०	साठी सवच्छरी आदि		१८वीं	८३	प्रश्नावली और मुहर्रम के चाद आदि का फल
७३४	४९२४(१२)	सात वारारा विघडिया		१७९०	१३–१४	लि.क जयसौभाग्य गणि
७३५	४९२४(११)	सात सखीरो सवाद		१७९३	१२–१३	
७३६	४४५२(९४)	सात सखीरो सवाद (प्रहेली)		१८वीं	१३० वां	
७३७	७३०५	सिद्धान्तवोल		१९१०	४७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७३८	७५४६	सिद्धातसारोद्धार		१७७६	५९	अन्तिम तीन पत्र त्रुटित
७३९	६३८३	सिरी सातणी भास	लावण्यसमय	१८वीं	२	सा चन्द्रावलि पठनार्थं
७४०	४००६	सिहलसुत चौपई	समयसुन्दर	१७९४	६	लि क कुशलहर्ष
७४१	४८२८	सिहलसुत चौपई	,,	१७वीं	६	
७४२	६५३६	सीताराम चौपाई	,,	१८वीं	६२	
७४३	७७५३(२)	सीतासज्झाय	जिन हर्ष	१८३७	३०–३१	
७४४	५३७६(१)	सुदर्शनसेठकी कथा	नन्द (?)	१७६१	१–३१	र का स० १६६३
७४५	४००७	सुदर्शनसेठरा कवित्त	दीयो कवि	१८८०	२१	लि क ऋषि इन्द्रभाण
७४६	४०८९	सुदर्शनसेठरा कवित्त	,,	१८८४	२०	लि क बाई चपा
७४७	६२७४	सुबाहुचरित्र आदि		१९वीं	८	
७४८	६३८८	सुबाहुचरित्र	जिनमाणिक्य सूरि	१८वीं	६	र का स १६००, जैसलमेरमध्ये
७४९	४००८	सुभद्रासतीरो चौढाळियो	मानसागर	१८७९	५	लि क स्थाविरजी श्रीचैन-रामजी
७५०	४९१२	सुभाषित		१९वीं	४	९५ पद्य हैं
७५१	५४१८(३)	सुरतपवनी कथा	वनवारीदास	१९वीं	१–८७	
७५२	५९३०	सुरसुन्दरी चौपई	धर्मवर्धनदास	१८४२	२८	
७५३	५९७५	सुरसुन्दरी चौपाई	,,	१७८२	२५	पत्र स० २० से २३ अप्राप्त
७५४	४००९	,,	शुभशील	१९वीं	१७	लि क नेमचन्द
७५५	७२४४	,,	धर्मवर्धन	१८४८	२१	
७५६	४८०१	सुरसुन्दरी रास	नयसुन्दर	१६८८	२६	लि क. राघवकेशव, राजकोटमध्ये
७५७	७३७४	सूक्तिमुक्तावली	केशरविमल गणि	१९वीं	२५	लि क इष्टहस

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७५८	६४१८	सूरजजीरो सलोको		„	२	
७५९	७७२५	सूरजप्रकाश	करणीदानजी	१८४१	३००	र का स १७८७ लिपिस्थान–बदनोर
७६०	६७५२	सेऊसमनकी परची	गोविन्दराम (?)	१९२९	३	
७६१	४०११	सोमवती अमावसरी वार्ता		१८४३	३	लि क जीवणराम
७६२	७७२२(३)	सोरठरा दूहा		१८वीं	४६–४८	४३ दूहा
७६३	५४१८(२२)	सोलह कारण का रासा		१९वीं	१४७–१४९	
७६४	४९१४(४५)	सोलह स्वप्न वीनती		१८७७	२७४ वा	
७६५	६३५८	सौभाग्यपचमी चौपई	जिनरग	१८वीं	२५	
७६६	५८६२	हसराज वच्छराज चौपई (सचित्र)	जिनोदय सूरि	१८३५	४४	र का स० १६८०, चित्र स. १०३
७६७	५४३१(२)	हसराज वच्छराज चौपई (अपूर्ण)		१६१०	६४ से ९९	१४३ पद्य
७६८	७४०२	हसराज वच्छराज चौपई	जिनोदय सूरि	१८६६	३४	लि क ऋषि वृद्धिचन्द
७६९	६५३५	„	„	१९वीं	४२	
७७०	७२२७	हसराज वत्सराज रास	„	१८८३	४६	र.का स १६८०
७७१	५२०९	हसवत्स चौपई (सचित्र)		१८वीं	६२	चित्र स ६५
७७२	५४३१(१)	हसावली (अपूर्ण)		१६१०	१५–६४	
७७३	४४५२(७०)	हणमतरो छन्द		„	१२० वां	
७७४	७७२१(१४)	हनुमान छन्द	नरहरदास	१९३१	२०१–२०२	
७७५	४९०२	हम्मीर रासो	कवि महेश	१७८७	५९	लि क पाडे नाथूराम गौड
७७६	५३८४(१)	„	„	१९४४	१–७०	लि.क मनसाराम ब्राह्मण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७७७	७१६७	हमीरहठ वार्ता		१८९७	९६	गुटका
७७८	६४४६(४)	हरजस		१९वीं	१–४	
७७९	४०१२	हरिचंद रास	जिनहर्ष	१८८२	२५	लि क प क्षेमाब्धि
७८०	४८२९	,,	कनकसुन्दर	१८८५	१७	र का स १६९७
७८१	७७२१(९)	हरिजस नाममाळा	रतनूहमीर	१८२५	१४४–१६५	
७८२	४९०५ (१०,११,१२)	हरियालीरा दूहा आदि		१९वीं	३६–३८	
७८३	४९२४(८)	हरिरस	ईसरदास	१७९३	१–१०	अंतिम पत्र पर सोलह शृंगारो की सूची
७८४	७७२१(१२)	,,	,,	१९३१	१८०–१९९	लि क फूलगिरि
६८५	७७५०(१)	,,	,,	१८६०	१–२१	लि.स्था. वीरधार
७८६	५३४३	,, आदि	,,	१८वीं	५	
७८७	४९१४(२)	हरिवशपुराणनो रास	ब्रह्मजिणदास	१८७१	७–५७ १७१–२०१	लि क चन्द्रकीर्ति, एहमदाबादनगरे
७८८	४४५२(९२)	हाथियारा बखाण	नाहरखान राजसिंहोत	१८वीं	१३० वां	रोमकद छन्दो में वर्णन
७८९	४९२४(९)	हाणीरा बणाव		१७९३	११वां	
७९०	४४५२(२४)	हिंगुलाष्टक		१८वीं	२४ वां	
७९१	७४१७	हिंडोलण आदि	रामसरण (?)	१७वीं	१	लि क प खेतसी
७९२	४१६८	हीर राझ्या को तमासो		१९५४	३२	लि क नाथूनारायण शर्मा
७९३	४८३९	क्षेत्रसमास	रत्नशेखर सूरि	१७८२	७१	पत्र स. १,२ अप्राप्त, जैसलमेरनगरे लिखित
७९४	७३६७	,,		१७वीं	१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७९५	७४०३	क्षेत्रसमास		१८५१	९	र.का स. १५३६
७९६	७५२३	,, गणित		१८३९	१२	ताजिब ग्रामे लिखित
७९७	४४२४	,, चौपाई	मतिसागर	१६८२	१४	र.का स १५९४
७९८	४०२१	,, प्रकरण सबालावबोध	रत्नशेखराचार्य	१८२१	२०	र का स. १६८६ (?) उदयपुर नगरे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४५२(१०२)	अकडमचक्र	हीर	१८वीं	१३६वां	
२	४०३८	अगद बसीठी सवैया	कवि भान	१९वीं	३	अगद रावण सवाद का वर्णन है
३	७७२०(६)	अध्यात्मछत्तीसी	बनारसीदास	१८वीं	४३–४५	
४	४९१४(६)	अध्यात्मबत्तीसी	,,	१८७१	१६६-१६७	
५	७७२०(५)	,,	,,	१८वीं	४२–४३	
६	५३९२	अध्यात्मरामायण भाषा (बालकाड)	भगवान अर्जुन नागा शिष्य	१८वीं	३२	रचनाकाल स० १७४१
७	५३९३	अध्यात्मरामायण भाषा (अयोध्याकाड)	(निरजनी)	,,	४८	
८	५३९४	अध्यात्मरामायण भाषा (वनकाड)	,,		३७	
९	५३९५	अध्यात्मरामायण भाषा (किष्किंधाकाण्ड)	,,	,,	३१	
१०	५३९६	अध्यात्मरामायण भाषा (सुन्दरकाड)	,,	,,	२१	
११	५३९७	अध्यात्मरामायण भाषा (युद्धकाण्ड)	,,	,,	६५	
१२	५३९८	अध्यात्मरामायण भाषा (उत्तरकाण्ड)	,, ,,	१७८३	३९	* रचनाकाल स० १७२८ लि.क. मेघा, नागपुरमध्ये
१३	४२१६(३)	अनेकार्थी	नन्ददास	१८५९	१६२–१६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४	६७५३	अमृतधारा	भगवानदास निरजनी	१८२२	५६	
१५	४८०३	,,	,,	१६वीं	५२	अपूर्ण
१६	७४६१	अलङ्कारदीपक	शभूनाथ मिश्र (सुखदेव शिष्य)	,,	२८	
१७	४०३७	अलङ्कारमाला	सूरत मिश्र	१८वीं	५	र.का स० १७६६ आगरा में रचित
१८	४२७०	अलङ्काररत्नाकर	दलपतिराय	१६वीं	६०	वशीधर कवि की व्याख्या सहित
१६	६६५३	अष्टावक्र प्रकरण भाषा		१८६४	१४	लि क बुधराम दादूपथी
२०	४२८७(१)	अक्षरबत्तीसी		१७२६	१–४	लि क रामचन्द्र
२१	४२८७(१२)	अक्षरबावनी	सुन्दरदास	१७२८	६३–६८	,,
२२	५६८०	आत्मप्रकाश	आत्माराम (दौलतरामजी शिष्य)	१६वीं	३६२	
२३	६२४०	आत्मानुशासन भाषा	गुणभद्र	१८८८	१३८	लि क ताराचद ब्राह्मण डागरवाडा का, नगर महुवा मध्ये
२४	७७२०(१७)	आत्माराम गीत		१८वीं	५१ वा	
२५	५४१८(६)	आदीश्वर के रेखते		१६वीं	१०५–१०६	
२६	४६१७	आनन्द विलास	महाराजा यशवन्तसिंह	१७४३	११	
२७	६७२१	इतिहाससमुच्चय भाषा	लालदास	१८१२	८६	
२८	४२६३(३)	इश्क दरियाव	रसराशि	१८८२	६–१६	कवि जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह का आश्रित था
२६	४२६३(४)	इश्कफद	,,	,,	१७–१६	
३०	४६२४(१७)	उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	१८वीं	२२–२७	लि क. जयसौभाग्य गणि

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	६३२३	उपदेश बावनी	कृष्णदास	१९वीं	१०	र का स० १७७२
३२	५१९९	उपाख्यान सहित दश लीला		१९२१	३-२६	लि क ब्राह्मण बालमुकुन्द, मथुरा मध्ये
३३	४३१३	ऐन पचीसी	लाला सुन्दरलाल	१८६७	८	जयपुर में रचित
३४	५४०१	कर्मविपाक		१९०७	२५	लि क. हरिदास
३५	७७४४(५)	करुणाभरण नाटक	कृष्णजीवन लच्छीराम	१७५८	२३-५१	लि क चैनकुवरी
३६	७७५६(२)	कालको अग	सुन्दरवास	१९वीं	२२-३१	
३७	४४५२(२७)	कवित्त कुण्डलिया	केशव, गङ्ग	१८वीं	२६वां	
३८	४४५२(२१)	कवित्त बावनी	खेमचव आदि	,,	२१-२२	
३९	५३७४	कवित्त सग्रह	आनवघन	१८४६	५६	५३२ कवित्त हैं
४०	५३८२	,,	जगदीश कवि	१८६३	१९३	० १००० कवित्तो का सग्रह
४१	४२१७(२)	कविप्रिया	केशववास	१८वीं	११२	पत्र स० ७६ से ८४ अप्राप्त
४२	५३८०(१)	,,	,,	१८४६	९६	
४३	७०६४	,,	,,	२०वीं	१६६	
४४	६९७६(२)	काव्य सिद्धात	सूरति मिश्र	१८६०	७४-८८	
४५	४१४०	,,	,,	१९०१	३१	लि क ऋषि देवराज
४६	४२९४	किशोर कल्पद्रुम	शिव कवि	१८वीं	१९६	प्रथम पत्र अप्राप्त
४७	५२०१	किस्सा गुलबकावली		१९वीं	३-७६	
४८	७७४४(७)	कृष्णजीकी रसोई		१७५८	५७-६२	
४९	६८२८	कृष्णसागर		१९वीं	२००	
५०	५४१७	कृष्णायन कथा चोपई		,,	१७५	१८४६ पद्य। र का सं० १८३६ स्थान-आगरा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१	५३७१(५)	केनोपनिषद् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१८वीं	१–२४	
५२	५४२०(७)	कोकमजरी		१९१२	१०७–१११	लि क इन्द्र मिश्र
५३	७७५२	,,	कवि आनन्द	१८१३	४१	लि.क विजय गणि
५४	४१५८	कोकसार	आनन्द कवि	१९०९	११	लि स्था रतलाम
५५	४४५२(२९)	,,	,,	१८०४	२७–३१	लि क. प्रीतिसौभाग्य गणि
५६	४९२२	खिल प्रकरण (योगवासिष्ठान्तर्गत)		१८५३	४८	
५७	५११०	खालिकबारी		२०वीं	३	
५८	५३७०	गङ्गा आगमन कथा	रस आनन्द	१८९३	६	स्वय कवि द्वारा भरतपुर मे लिखित
५९	६३४३(२)	गङ्गालहरी	पद्माकर	१८८९	१२–२७	
६०	५४०२	गणितसार	हेमराज	१७९४	७	कोटा में लिखित, त्रुटित
६१	५८७४	गणेशपुराण भाषा	मोतीलाल	१९वीं	१६	
६२	५४०६	गीतगोविन्द टीका	चिन्तामणि	,,	४०	चन्द्रकुलसभूत पहाडसिंहप्रीतये
६३	४२८८(४)	गीता भाषा (पद्यानुवाद)	हरिवल्लभ	१८८९	११३	
६४	७१७१	गीतामृत सार	मकरन्द	२०वीं	१७३	आद्य २ पत्र अप्राप्त
६५	४९०५	गुरुदेव को अग	सुखसागर	१९वीं	२५–३१	
६६	६४४६(३)	गुरुस्तुति		,,	४१–४२	
६७	५८६६(३)	गुलजार इश्क अनवर इकबाल का किस्सा		,,	१२–८२	
६८	५२०४	गुसाईंजी की वन-यात्रा		,,	४१	
६९	४९०६(५)	गूढार्थ दोहरा	वृन्द आदि	१७९८	३४–४५	
७०	७७४४(८)	गोपाल लीला	तुलछीदास	१७५८	६२–६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७१	६९८८	गोपीजनवल्लभोत्सव प्रकाशिका		१९वीं	४२	जयपुर के गोपीजनवल्लभ मदिर की निम्बार्कीय पूजा प्रणाली
७२	७७२०(१६)	गोरखवचनिका		१८वीं	५१वां	
७३	७७३४	गोवर्द्धननाथजी की प्राकट्य वार्ता		१९२३	४८	ववनोरमध्ये लिखित
७४	५३६७	गोविन्दविलास	कृष्ण कवि	१८९७	११६	र का स० १८९३, कवि गोपाल-सुत, ग्वालियर वासी
७५	५३८१	गोविन्दानन्दघन	गोविन्द नाटाणी	१९वीं	३०	कवि जयपुर वासी र.का. स० १८५८
७६	५३८३	चकत्ता पातशाही की परपरा		,,	१४१	
७७	५३४७(१)	चन्द्रमुकुट चन्द्रकिरण रानीकी वात		१८३७	१–३०	लि क लाला तुलसीराम सेनवशी
७८	६३४६	चरनाई की पाटी आदि		१८८७	८५	
७९	५४३८(५)	चिन्तामणि माला	नन्ददास	१८९०	६२–६६	
८०	४९१३	चितावणी सग्रह	रामेश्वरदास आदि	१९वीं		र.का स० १८०८
८१	७७२०(१८)	चेतन सुमति गीत	बनारसीदास	१८वीं	५१–५२	
८२	७११५	चौरासी वैष्णवो की वार्ता		१९वीं	२७०	रूपनगर मे उम्मेदकुवर वाकावती ने लिखवाई
८३	५३८२(२)	छक पचीसी	जगदीश कवि	१८६३	१८९–१९३	लि क भट्ट श्यामसुन्दर
८४	५३७७	छद्मषोडशी	वृन्दावनहित	१८९०	७१	राधाकृष्ण लीला वर्णन, वृन्दावनमें लिखित
८५	६७६३	छन्दरत्नावली	हरिराम	१९२०	१०	र का स० १८२५, पुरनगर में लिखित
८६	५८१६	छन्दलता	चिन्तामणि	१९०९	३१	लि क. व्रजवासी, वृन्दावन मध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८७	४२१३	छन्द विचार	सुखदेव मिश्र	१८७६	२५	लि क सगम कवीश्‍र
८८	५३७६(२२)	ज्येष्ठजिनवर कथा		१८वीं	२४८–२५३	
८९	६३०३	जिनदत्तचरित्र चौपई	विश्वभूषण	१७९६	७१	
९०	७७४९(१)	जोग लीला	उदय (?)	२०वीं	१–७	
९१	४२८७(७)	तर्क चितावनी	सुन्दरदास	१७२८	२६–३३	लि क आनदराम
९२	५३७१(२)	तैत्तिरीयोपनिषत् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट		३४	
९३	७७२०(१०)	दसदान		१८वीं	४६ वां	
९४	५४०७	दक्षनविलास	दक्षन कवि (अहमदउल्लाह, बहरियाबाद के)	१८९४	३७	र का स० १७२२, राधाकृष्ण के शृगार का वर्णन
९५	४३१६	दानलीला	कृष्णदास	१९२८	१४३–१५२	
९६	५४३८(४)	,,	परमानददास	१८९०	५६–६२	
९७	४२६३(१५)	दुखहरण वेलि	म प्रतापसिहजी	१८वीं	३४, ३५	
९८	४३०९(१०)	,,	,,	१९वीं	१९, २०	
९९	७४४१(११)	,,	,,	१९१४	५९, ६०	
१००	५३९१	दोहासार		१८८४	१०३	सग्रह समय–१७२०, भरतपुर में लिखित, प्रथम पत्र अप्राप्त
१०१	५४५५(१)	ध्यानमञ्जरी	अग्रदास	१९वीं	१६	
१०२	६०८८	,,	,,	,,	५	
१०३	६३६४	,,	,,	,,	९	
१०४	४२८८(२)	ध्रुवचरित्र	गोपाल	१८८९	१७–४५	
१०५	५४१२(२)	,,	शशिनाथ माथुर (सोमनाथ)	१८५७	१–२०	र का स० १८१२, कवि भरतपुर वासी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०६	७१५८	ध्रुवचरित्रादि		१८०५	८८	आद्य पत्र अप्राप्त
१०७	६३१६	धर्मपरीक्षा	मनोहरदास सोनी	१८६०	८७	र का स० १८११
१०८	६३१६	धर्मसार चौपाई	प० शिरोमणिदास	१६वीं	३४	र का स० १७३२
१०९	६१४५	नयचक्र भाषा	विलास	१६०७	४७	र का स० १८६७ करौलीमध्ये लिखित
११०	७३५१	नयतत्त्वविचार सार्थ		१६वी	११	
१११	७७६६(२)	नयनसुख (वैद्यमनोत्सव)	नयनसुख केशवपुत्र	१८५६	१–४४	चित्र स० २
११२	७००६	नयनसुख	,	१८८४	२६	
११३	६८३५(१०)	नवकारमन्त्र		१८६६	३	
११४	७४४२(१)	नवतत्त्वभेद		१७६४	१–४६	
११५	७७२०(८)	नवदुर्गाविधान		१८वीं	४५ वां	
११६	७७२१(७)	नवरत्नकवित्त	बनारसीदास	१८२५	१४१–१४२	
११७	६८३५(५)	नागोरीगच्छपट्टावली		१८६६	१	
११८	७७२०(६)	नामनिर्णयनिधान		१८वीं	४५–४६	
११९	६३४३(४)	नाममजरी (मानमजरी)	नन्ददास	१८८६	४२–६६	
१२०	७७६७	,,	,,	१८१३	१८	लि क उदयराम ब्राह्मण
१२१	६८३३(१)	नायिकाभेद		१८४८	२–५	अपूर्ण, प्रथम पत्र अप्राप्त
१२२	५४१६	नासिकेतकथा भाषा	नन्ददास	१८८५	४७	लिखित जिगनीमध्ये
१२३	४५५७(१)	नीतिमजरी	म. प्रतापसिंह	१६वी	१–१३	लि क महात्मा ज्ञानीराम
१२४	७४४१(१)	नीतिमञ्जरी	,,	१६१४	१–२	लि स्था उदयपुर, सेठ गभीरमल पठनार्थं
१२५	७७४६(१)	,,	,,	२०वीं	१–१३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२६	५३७२	नेहनिदान	रस आनन्द	१८६६	१२	स्वय कवि द्वारा भरतपुर में लिखित
१२७	४४५२(४०)	नैनबत्तीसी	वृन्द कवि	१८वीं	४४–४५	र का स० १७४३
१२८	७७२१(८)	प्रकीर्ण कवित्त		१८२५	१४३–१४४	
१२९	७७२०(१९)	प्रकीर्ण पद	बनारसीविलासान्तर्गत	१८वीं	५२ वां	
१३०	५४०८	प्रतापविलास	वृन्द कवि	१९वीं	१९	काव्यप्रकाश पर आधारित रस-ग्रन्थ
१३१	६२६२	प्रबोधपचाशिका	पद्माकर भट्ट	१८६३	२०	
१३२	४८०५	प्रबोधपचीसी	सुन्दर कवि	१९वीं	२	कवि खरतरगच्छीयशातिदास-का शिष्य है
१३३	४२८८(३)	प्रल्हादचरित्र	गोपाल	१८८९	४२–८८	
१३४	५३७१(३)	प्रश्नोपनिषत् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१८वीं	३५–६४	
१३५	७७२०(१२)	प्रास्ताविक सवैया		१८वीं	४७–४८	
१३६	५२२४	प्रास्ताविक सवैया (प्रश्नोत्तर)		१९वीं	६	५१ सवैया हैं
१३७	४३०९(१२)	प्रीतिपचीसी	म. प्रतापसिंहजी	,,	२३–२७	
१३८	७४४१(१६)	,,	,,	१९१४	७५–८०	
१३९	७७४९(६)	,,	रसराशि	२०वीं	१–५	
१४०	४२६३(११)	प्रीतिलता	म प्रतापसिंहजी	१८वीं	१०–१६	
१४१	४३०९(६)	,,	,,	१९वीं	१०–१३	
१४२	७४४१(८)	,,	,,	१९१४	४६–५२	
१४३	४२६३(८)	प्रेमतरङ्गिणी	मुरलीधर भट्ट	१८वीं	१–२३	कवि म प्रतापसिंहका आश्रित था

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४४	४२६३(१२)	प्रेमप्रकाश	म प्रतापसिंह	१८वीं	१७–२०	
१४५	४३०६(४)	,,	,	१६वीं	६–८	
१४६	७४४१(१३)	,,	,,	१६१४	६३–६६	
१४७	५३४७(२)	प्रेमरत्नाकर	देवीदास	१८३७	३०–४०	र का स० १७४२, म कु रतनपाल, करौली प्रशस्ति परक
१४८	४७६४	पचाध्यायी	नन्ददास	१८वीं	१७	
१४६	५२०२(६)	पचाध्यायी (भाषानुवाद)	वशीअली	१८८५	११४–१२३	
१५०	४२६५(१)	पचाध्यायी	नन्ददास	१८४३	१०–२६	
१५१	७७५६(१)	पञ्चेन्द्रियोपदेश	सुन्दरदास	१६वीं	३१	प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
१५२	४२६२	पदमुक्तावली	श्रीनागरीदासजी	,,	६२	त्रुटित
१५३	५३७८	पदसग्रह	किशोरीअली गोस्वामी	,,	२१२	जलविहार भ्रमर गीत, साझी आदि से सम्बन्धित पद
१५४	५४४०	,,		,,	६६	निम्बार्क सप्रदाय सम्बन्धी पद हैं
१५५	६८४२	,,		,,	११०	जैन धर्म सम्बन्धी पद
१५६	७८१५	,,		१८८६	१२८	वल्लभ सप्रदाय के पद
१५७	७८३६	,,	रसनायक	१६वीं	५६	३०८ पद
१५८	५१७७	,,	नन्ददास आदि	१८वीं	५५	
१५६	७७३८	पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिका	स्वरूपदास	१६२३	१३६	लि क पठान उमेदखा, बदनोर राज्ये
१६०	७७४२	,,	,,	१६१४	११२	लि.क वैष्णव हरिदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६१	७७३९	पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिका	स्वरूपदास	१९४१	३६६	लि क. वैष्णव सीतारामदास
१६२	६३३१	पातसाहनामापरि रमल		१९१२	३	
१६३	६१७७	पार्श्वनाथपुराण भाषा	भूधर	१८०१	९५	र का स० १७८९, आगरा में रचित
१६४	६९२१	,,		१९वीं	९४	पत्र स० ४०, १५ अप्राप्त
१६५	७१०८	,,	भूधर बुध	१७२५	८६	र का स० १७८२
१६६	५६९६	पारासोमल की क्रिया		१९वीं	९	रजत आदि धातुओ की निर्माण-विधि
१६७	६३४३(३)	पिंगलसार	मोहन	१८८९	२७–३८	
१६८	५२०५(१८)	पूजाविधि	श्रीवल्लभाचार्य	१८वीं	८८–९१	
१६९	७७४४(१०)	पूरणमासी कथा		१७५८	७२–११५	
१७०	४३०९(१३)	फागरंग ग्रन्थ	म प्रतापसिंह	१८९९	२८–३१	
१७१	७४४१(४)	फाग रग	,,	१९१४	३५–४०	
१७२	५११२३(६)	फालनाम फारसी		१८वीं	२८–२९	
१७३	४२६४	फुटकर कवित्तसग्रह	अनेक कवि	,,	११८	४२५ कवित्त हैं
१७४	४३०९(१५)	व्रजसिंगार	म. प्रतापसिंह	१९वीं	४५–५०	
१७५	४२६३(१०)	व्रजश्रृ गार	,,	१८वां	१–९	
१७६	७४९०	व्रह्मविलास	भगवतीदास	१८४९	१२४	र का. स० १७५५, कर्ता आगरा-निवासी लालजी कटारिया का पुत्र
१७७	५३७१(१)	व्रह्मसूत्र भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१८वीं	१–२७	लि.क महात्मा श्योजी (शिवजी)

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	४७८५	बनारसीविलास	बनारसी गर्ग, अग्रवाल	१८वीं	११५	र का स० १७७१, पत्र ८६ से ६६ अप्राप्त
१७६	७४४२(२)	बनारसीविलास भाषा	,,	१७६४	१–११६	
१८०	५४२८	बल्लभाख्यान	गोपालदास	२०वीं	५३	
१८१	५३८७	बहत्तरी	मोहनदास	१७६७	८	लि.क नरसिंह अग्रवाल
१८२	५२०२(५)	बारहखडी	दत्तलाल	१८८५	१०६–११४	भाषा पर पजाबी प्रभाव है
१८३	५४२०(४)	,,	,,	१६वीं	६७–१०३	
१८४	५४२६(१)	,,	विष्णुदास ठण्डीराम शिष्य	,,	१–१२	
१८५	५४२६(३)	,,	दत्तलाल	,,	२६–३५	
१८६	५४२६(६)	,,	भवानी	,,	४६–५३	
१८७	५४२६(११)	,,		,,	१–५	
१८८	५४२६(४)	,, प्रह्लादजी की		,,	३५–३८	
१८६	५४२६(५)	,, परमेश्वरजी की	कुशला	,,	३८–४२	
१६०	५४२०(६)	,, रामायण की	रामरत्न	,,	१०३–१०७	
१६१	५४२०(५)	,, विरह की (ब्रह्मस्नेह बारहखडी)		,,	१०३	
१६२	५४०३	बारहखडी सूरत की	सूरत, देवधरशिष्य	,,	८	
१६३	५४२६(६)	बारहमासी	मुरलीदास	,,	४२–४७	
१६४	५४२६(७)	,,	भवानी (अवधपुर वासी)	,,	४७–४६	
१६५	५४२६(८)	,,	सूरदास	,,	४६ वां	
१६६	४७६०	बावनी सवैया	जसराज	,,	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९७	४३०७(१)	विहारीसतसई	बिहारी	१७८७	६६	लि क यति कुसला मालपुरामध्ये
१९८	४४१२	,,	,,	१८१२	५०–६१	लि क. प्रीतसौभाग्य गणि, खारिया ग्रामे
१९९	४९०७(३)	,	,,	१८३७	३५–१३५	अंत में होराचक्र और स्फुट कवित्त हैं
२००	६३४२(४)	,,	,,	१९वीं		
२०१	४१४४	विहारीसतसई सटीक	टी. कृष्ण कवि	१८०२	१३२	
२०२	४२१६(२)	विहारीसतसई टीका		१८५९	७२–१६०	
२०३	६३१५	,,		१९वीं	५६	अपूर्ण
२०४	४४१२	विहारीसतसया	विहारी	१७६६	१५	लि क मुनि मनोहर
२०५	४२६१	वुद्धिसागर	कवि जान	१८६८	२००	लि क झूंझणू वासी बिरामण रामधन
२०६	५४२६(२)	भ्रमरगीत टीका, प्रेमरसपुञ्जनी	मुकुन्ददास		१२–२६	
२०७	६७२६	भँवरगीत		१९वीं	१७	प्रथम पत्र खण्डित
२०८	७७४९(५)	भँवरगीत	नन्ददास	२०वीं	१–९	
२०९	७७४४(६)	,,	रसिकराय	१७५८	५१–५७	
२१०	५४००	भक्तमाल टीका	मू नाभादास, टी प्रियादास	१९वीं	१६५	
२११	५४७६	भक्तमाल टीका रसवोधिनी	,,	१९००	३०६	र.का. स० १७६५, वून्दी में लिखित
२१२	५४०९	भक्तमाल टीका	,,	१७६९	१४१	लिखायित माजी जोधपुरीजी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१३	६७५५	भक्तमाल टीका	लालदास	१८६३	१०४	लि क हेमदास, कबीरशाह को साधक
२१४	६६३६	,,	लालदास	१८७०	१६८	लि.क. गोपालदास अवन्तीमध्ये शेषशायीमन्दिरे
२१५	६५७१	,,	प्रियादास नारायणदासशिष्य	१८६४	११६	र का स० १७६६ लि क रामकृष्ण महाजन
२१६	६०५४	भक्तमाल टीका रसबोधिनी		१८वीं	२०५	
२१७	६४४८	भक्तमाल सटीक		,,	२७६	
२१८	७७३२	,,	प्रियादास	१६२५	१६५	र का १७६६ लि स्या० वदनौर
२१६	७८३१	,,	लालदास	१८५६	१३२	लि क शिवरामदास, गङ्गापोल, जयपुर
२२०	६५७६	भक्तमालमाहात्म्य	कृष्णदास	१६वीं	४	
२२१	५४२४	भक्तितरङ्गिणी	चरणदास	१६४१	४०	लि क इन्द्र मिश्र, स्थान नगर
२२२	६८२६(१)	भक्तिपदार्थ		१६०२	१–१४४	अन्त में भजन हैं
२२३	५४१३	भगवद्गीता भाषा पद्य		१६००	८६	लि क हरिदास ब्राह्मण, वैराठ
२२४	७५०८	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद		१७७४	८८	लि क डालचद ब्राह्मण, शाहगज दिल्ली
२२५	६१४८	भद्रबाहुचरित्र चौपाई	किशनसिंह मागानेर के	१८२७	४७	र का स० १७७०, कई स्थानो पर प्राचीन पत्रो के स्थान पर नये पत्र लिखे हुए हैं
२२६	६१५१	,,	किशनसिंह सिंघवी	१६०६	३६	
२२७	६१५६	भद्रबाहु चरित्र भाषा	किशनसिंह	१६०६	४०	लिखित अलवरसहरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२८	५४२०(३)	भर्तृहरिशतकत्रय भाषा पद्यानुवाद	म. प्रतापसिंह	१९वीं	६५–९७	
२२९	४३०८(४)	भरथचरित्र	जनगोपाल (?)	१८वीं	४५६–४६७	१०५ छन्द हैं
२३०	६०१०	भविष्यदत्त चौपाई	ब्रह्म रायमल	१९वीं	४७	
२३१	६९३७(५)	भागवत, एकादशस्कन्धानुवाद	चत्रदास	१८११	२१०–२९३	लि क. रामदास, निराणा ग्राम
२३२	४२५६	भागवतचरित्र नारायण लीला	माधवदास	१८वीं	३९	लि.क. जती जीवणसागर
२३३	७१७०	भागवत दशमस्कन्ध की भाषा	हरिवल्लभ	१९८०	९१	गुटकाकार
२३४	६८३०	भागवत भाषा	कविराय मोतीराम आणंदसुत	१९वीं	१०३	जीर्ण प्रति
२३५	६०९८	,	हरिवल्लभ	१७८९	६५	लिखित रूपावास मध्ये, ब्राह्मण केशवरायजी
२३६	६०९०	भागवतभावानुवाद (द्वितीय स्कन्ध)	नागरीदास	१९वीं	३३	पत्र स० ५, ६, १७ अप्राप्त
२३७	४२६५(२)	भावपञ्चाशिका	वृन्द कवि	१७९३	४–१४	लि क डालूराम
२३८	४८१३	,,	,,	१८३९	६	लि. स्था०–लींबड़ी
२३९	४९०६	,,	,,	१७९८	१३	र का स० १७४३ लि क केवलसौभाग्य
२४०	५४३२	भाषाभरण	सरस्वती (वैरीसाल)	१९वीं	२५	
२४१	५०४८	भाषाभूषण	म. जसवन्तसिंह	,	२९	लि.क गोपाल ब्राह्मण
२४२	६९७६(१)	भाषाभूषण टीका	नन्ददास	१८६०	१–७३	
२४३	४२६३(६)	भाषासरोदय	रसराशि	१८८२	२५–२९	
२४४	५३०९	भास्करवंशप्रदीपिका	तेजसिंह	१८वीं	५३	
२४५	४०८२	भीषमबावनी	भीषम	,,	१०	
२४६	४१७६	भोगलपुराण		१९वीं	२०	
२४७	५४१८(५)	मङ्गल गीत	रूपचद	,,	९१–९६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४८	४७२२	मतिचन्द्रिका		१९वीं	४	मोहर्रम और वारों का विचार
२४९	४३०९(१)	मनीरामपचीसी	मनीराम	१९०२	५१	
२५०	६८३५(७)	महावीरस्तवन		१९९९	१	
२५१	६८३५(११)	,,		,,	२	
२५२	७१५६	माखन लीला	नन्ददास	१९१४	४३	
२५३	५३७१(४)	माण्डूक्योपनिषद् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१९वीं	१–२०	
२५४	७६४८	मातृकाक्षरबावनी कवित्त-सग्रह	सार कवि	१८वी	८	अन्तिम पत्र त्रुटित
२५५	४२१६(९)	मानमञ्जरी नाममाला	नन्दराम	१८५९	३६०–३७०	
२५६	४९१५(१)	,,	,,	१८८७	२–१९	प्रथम पत्र अप्राप्त
२५७	४२६३(२)	मानमञ्जरी नौका	रसराशि	१८८२	२	
२५८	४२६३(५)	मालिकमुकाम	,,	,,	२०–२४	
२५९	७७२०(११)	मिथ्यात्ववानी		१८वीं	४६–४७	
२६०	४३०९(५)	मुरलीविहार	म प्रतापसिंहजी	१८९९	८–९	
२६१	७४४१(१०)	,,	,,	१९१४	५७–५८	
२६२	४४५२(१५)	मुहूर्तचक्र		१८वीं	१८वां	लि.क प्रीतसौभाग्य
२६३	५४१९	यदुराज विलास	रघुनाथ द्विज	२०वीं	२२५	र का स० १९३३
२६४	७५९४	याज्ञवल्क्यस्मृति भाषा	गुरुप्रसाद	,,	२१	लि क. गोपीनाथ शर्मा
२६५	४३७१	योगवाशिष्ठसार भाषा पद्य	कवीन्द्राचार्य सरस्वती	१८वीं	२०	
२६६	४३०९(१६)	रग चौपाई	म. प्रतापसिंहजी	१९वीं	५०–५६	
२६७	७४४१(१४)	,,	,,	१९१४	६६–६८	
२६८	६७७९	रत्नपरीक्षा	रत्नसागर	१९वीं	२१	र का. सं० १७५५

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६९	४३०९(८)	रसकझमक बत्तीसी	म प्रतापसिंहजी	१९वीं	१५–१६	
२७०	७४४१(६)	,,	,,	१९१४	४२–४३	
२७१	४६६६	रमलज्ञानशकुनावली		१९वीं	४	
२७२	५४३४	रसकवित्तसग्रह	शेख आलम	२०वीं	१५४	
२७३	५४२२	रसपीयूषनिधि	सोमनाथ आचार्य	१८५५	१३३	र का स १७९४
२७४	४९२३(२)	रसमजरी	नन्ददास	१७२८	१८–२४	
२७५	६३३७	रसरतन काव्य	प्रधान पुहकर	१८५०	२३२	आद्य पत्र अप्राप्त, स० १७२३ में रचित
२७६	४२१६(६)	रसराज	मतिराम	१८५९	२९४–३१८	
२७७	६३४२(२)	रसराशिपच्चीसी	रसराशि	१९वीं	१०–१६	
२७८	७०६२	रससमुद्र	चैनराम, (भोलानाथपौत्र)	१८९१	१३६	र का स १८९१, मूल प्रति
२७९	४४५२(२)	रसिकप्रिया	केशवदास	१९वीं	३–५	द्वितीय प्रभाव तक, अपूर्ण
२८०	४०१४	रसिकप्रिया	,,	१७९९	९८	र.का स १६४८
२८१	५३८०(२)	रसिकप्रिया	,,	१८४६	१–६९	
२८२	७७२०(३)	रसिकप्रिया	,,	१७५९	१–४०	लि क लखमीचद, गढ हर्णोरमध्ये
२८३	४९२५(१)	रसिकप्रिया, राजस्थानी भाषा मे अर्थ सहित	,,	१८२६	१–१७५	
२८४	७०६३	रसिकप्रिया टीका जोरावरप्रकाश	जोरावरसिंह	१९२१	१५४	लि क कवि मन्नालाल
२८५	४२१६(५)	रसिकप्रिया टीका	,,	१८५९	१९२–२९४	
२८६	४२१७(१)	रसिकप्रिया	केशवदास	१८वीं	११२	पृ. ७६ से ८४ तक अप्राप्त
२८७	४२६३(१)	रसिकपच्चीसी	रसराशि	१८८२	१–६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८८	५०६५	रागमाला	कल्याण मिश्र	१७६६	२	लि.क उदयचन्द्र
२८९	६९४१	रागरत्नाकर	राधाकृष्ण	१८९९	९	र का स १८५३, उणियारा रावराजा भीमसिंहजी की आज्ञा से रचित
२९०	४२७२	रागरत्नाकर (अपूर्ण)	,,	१८७१	२४	आदि के ४ पत्र अप्राप्त
२९१	४२६३(९)	रागावली	मुरलीधर भट्ट	१८वीं	२३–३१	
२९२	४२१६(७)	राजनीतिकवित्त	देवीदास	१८५९	३२०–३३२	
२९३	६७७४	राजाहरिश्चन्द्र कथा		१८४०	२३	
२९४	६४४६(८)	राधामाधवविलास (सचित्र)		१९वीं	१–८२	चित्र स ७१, पत्र संख्या २ से १०,१२ से १४,४१ से ४७,५५ से ६०,६२ से ६५,६८ और ७१ अप्राप्त
२९५	५४२०(१)	राधिकाप्रतीतिपरीक्षा (अपूर्ण)	वालकृष्ण	,,	४१–४८	
२९६	७६२६	रामचन्द्र वारहमासा	यशोवानदन गुसाई	१८३५	७	
२९७	५३३३	रामचन्द्र वारहमासो	भवानी	१९२४	२	
२९८	५३८६	रामचन्द्रोदय (वालकाड)	श्रीकृष्ण कवि	१८०२	१२५	लि क लालचन्द्र पांडे, केर ग्रामे
२९९	५५०७	रामचरितमानस	तुलसीदास	१८४४–४५	६६७	
३००	६९६९	रामचरितमानस	,,	१८६७(?)	३४१	लि क तुलसी गोसाई (?)
३०१	७४९७	रामचरितमानस	,,	१७६२	२८	
३०२	६२१३	रामचरितमानस (वालकाड)	,,	१९वीं	१६४	
३०३	४१८७	,, ,,	,,	१८३०	९७	लि क उदयराम, शिवपुरी जयपुरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०४	४२२२	रामचरितमानस (बालकाड)	तुलसीदास	१८४०	१२५	लि क वैष्णव भगवानदास
३०५	६६२२	,, ,,	,,	१८०३	११३	लि क काशीराम, जयपुरमध्ये
३०६	७७९९	,, ,,	,,	१९वीं	१३१	
३०७	६२१४	,, (द्वितीय सोपान)	,,	१८९५	१३५	लि क ब्राह्मण तुलसीराम, वरीमध्ये
३०८	४२२३	,, (अयोध्याकाड)	,,	१८२८	१७८	लि क नरेन्द्र सौभाग्य
३०९	५१८८	,, ,,	,,	१८३८	९५	वृन्दावन में लिखित
३१०	६६२१	,, ,,	,	१८०३	१०३	लि क. काशीराम, जयपुरमध्ये
३११	७८००	,, ,,	,,	१८४४	८१	लि क मिश्र मोहनलाल
३१२	६२१५	,, (तृतीय सोपान)	,,	१८९५	३६	
३१३	६२३४	,, ,,	,,	१९वीं	२७	
३१४	६२६७	,, ,,	,,	१८४६	३३	लि क सहजराम मिश्र, कुम्हेरमध्ये
३१५	५४६४(१)	,, (अ.का से सु का)	,,	१८७०	६३	लि क.महात्मा बकसीराम,जयपुर
३१६	६२१६	,, (सु का)	,,	१८९५	२८	
३१७	६६२३	,, (अ का और सु.कां)	,,	१८०३	४७	लि क काशीराम, जयपुर
३१८	४२२४	, (अ का)	,,	१८११	३८	
३१९	५१८९	,, ,,	,,	१८३८	२७	
३२०	४१५६	,, ,,	,,	१८८१	२८	प्रथम पत्र त्रुटित
३२१	५२८०	,, ,,	,,	१८००	५०	लि क गोविन्ददास, भरतपुर का विरक्त अखाडा
३२२	७८०१	,, ,	,,	१८४४	२५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२३	४१२७	रामचरितमानस (कि का)	तुलसीदास	१८६६	४६	लि क. परमानन्द कायस्थ
३२४	५१६०	,, ,,	,,	१८३८	१८	
३२५	४२२५	,, (सु का)	,,	१८३२	२४	लि.क नरेन्द्र सौभाग्य
३२६	६२००	,, ,,	,,	१९१०	१७	
३२७	६७३१	,, ,,	,,	१९वीं	४३	लि क हरदयाल
३२८	७८०२	,, ,,	,,	१८५५	२४	मिश्र मोहनलाल
३२९	६०७२	, (ल का)	,	१९वीं	६२	दो प्रकार की लिखावट है
३३०	६३२१	,, ,,	,,	१७८०	९८	लि क सरदारसिंह विद्यार्थी
३३१	६६२४	,, ,,	,,	१८०३	३९	लि क काशीराम व्यास, भीखा की पोथी सू
३३२	७८०३	,, ,,	,	१८४४	७२	लि.क. मिश्र मोहनलाल
३३३	६२१७	,, (यु का.)	,	१८९५	६३	
३३४	४२२६	,, ,,	,,	१८२१	७८	लि क कृपाराम पुरोहित जयनगरे
	)	,, (रु का)	,,			
३३५	६२१८	,, ,,	,,	१८९५	६८	
३३६	६२४५	, ,,	,,	१९११	४८	
३३७	४२२७	,, (उ का) चातकसोलसी	,,	१८२७	७६	लि.क. वैष्णव भगवानदास
३३८	४२२८	,, (उ का)	,,	१९वीं	६५	
३३९	६६२५	,, ,	,,	१८०३	३८	लि क. काशीराम प्रतिमपत्रत्रुटित
३४०	६९९६	,, ,,	,,	१८८३	६९	लि.क. वलदेव
३४१	७६२३	,, ,,	,,	१८७९	१२५	

ग्रन्थसंख्या ७७९८

रामचरितमानस (उत्तरकाण्ड)
(संवत् १७३७ में लिखित)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४२	७८०४	रामचरितमानस (उ का)	तुलसीदास	१८४८	४०	लि.क मिश्र मोहनलाल, यह प्रति ग्रन्थाङ्क ७७९८ की, बलभद्र उपाध्याय द्वारा लिखित, स० १७३७ की प्रतिलिपि है
३४३	७७९८	,, ,,	,,	१७३७	३७	# लि क ब लभद्र उपाध्याय
३४४	७५७१	,, वैराग्यसदापन नाम द्वितीयसर्ग	,,	१८८६	५	लि.क मिश्र आनन्दनारायण
३४५	४२५७	राम चरित्र	सुन्दरवास	१८वीं	८	
३४६	४२३५	रामनखशिखवर्णन	माधोदास	,,	३	
३४७	६०७१	रामनोरत्नसार सग्रह	रामचरण	१९वीं	३१	सम्बन्धित ग्रन्थो से सग्रहीत
३४८	४८४५	रामविनोद	रामचद्र मुनि	१७६३	७८	र का. स १७५०, आद्य पत्र ११ खण्डित
३४९	६१३६	रामविनोद वैद्यक		१८३२	८६	
३५०	४२७१	रामविलास काव्य	कालिदास	१९व	१०	कृति के अत मे 'हनुमान छद"है
३५१	५४११	रामस्तवराज भा.टी	रामप्रसाद सीतापतिशरण	२०	९९	र.का. स १९०१
३५२	४२४३	रामस्तुति गीत	तुलसीदास गोस्वामी	१८वीं	४	
३५३	४२४२	रामस्तुति पद	,,	,,	२	
३५४	५३६२	रामायण (यु का)	मनोहर, कविकलानिधि	१८२०	२९३	लि क. युगलकर्ण मिश्र
३५५	५३८९	रामायण (यु का)	,,	१८३७	३४१	# प्रतापसिहाज्ञया निर्मित लि क रामसेवक, पत्र १–७९, २१०–२३१ अप्राप्त
३५६	७११३	रामायण (यु का.)सीताराम रामायण	कश्चित्, शर्मसिह निर्देशित	१९वीं	१३८	५० पत्र रिपुपुरदाह और ८८ पत्र युद्धकाड सम्बन्धी हैं

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५७	६३७३	रामाज्ञा	तुलसीदास	१८वीं	३९	
३५८	७७४९(७)	"	"	२०वीं	१–२१	
३५९	६८२८(२)	राव हमीरकी वारता		१९वीं	७	
३६०	४२६३(१७)	रासको रेखता	म प्रतापसिंहजी	१८वीं	४०–४२	
३६१	४३०९(९)	,	"	१८९९	१७–१८	
३६२	७४४१(१२)	"	"	१९१४	६१–६३	
३६३	५२०२(६)	रासपञ्चाध्यायी	वशीअली	१८८५	११४–१२३	
३६४	५३९९	"	नन्ददास	१९४३	१२	
३६५	४९२३(१)	रूपमञ्जरी	"	१७२८	१–१८	✿ लि क मुरलीधर मिश्र ३०० पद्य हैं
३६६	५२०२(४)	रेखता		१८८५	१०८–१०९	भाषा पञ्जावी प्रभावित है
३६७	५४२६(१०)	रेखता लैलामजनूका			५३–५९	
३६८	६८३५(२)	लघुचाणक्य		१८६९	२	
३६९	७७२८	लीलाललितविनोद	डेडराज (जनराज)	१९०४	२७७	लि क ऊकारनाथ व्यास, रामद्वारा उदेपुरमध्ये
३७०	५८६६(२)	लैलाभजनुका किस्सा	कवि खेतसी	१९वीं	१–११	✿
३७१	७७४४(९)	व्रजनागरी		१७५८	६६–७२	
३७२	६९७८	व्रजविलास (सचित्र)	व्रजवासीदास		१६३	चित्र स १७
३७३	७४४१(१५)	व्रजशृङ्गार	म. प्रतापसिंहजी	१९१४	६८–७५	
३७४	६०१६	व्रतकथाकोश भाषा	श्रुतसागर	१९२३	९२	✿ भाषाकार सुन्दर के पुत्र खुशालचद्र, लक्ष्मीदासका शिष्य है
३७५	४१४३	वृन्दमतसइया	वृन्द	१८८१	४६	लि क. मनसुख कवोई, वीकानेर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७६	४२१६(४)	वृन्दसतसई	वृन्द	१८५६	१६७–१६१	
३७७	४६१६	वनपर्वकी कथा		१८६६	१३	
३७८	६२३२	वरागनृपतिचरित्र भाषा	नथमल, शोभाचद का पुत्र	१८२७	७४	
३७९	५२०५(१)	वल्लभाचार्य विज्ञप्ति और स्तोत्र नामावली		१८वीं	२–३२	
३८०	६०७८	विक्रमविलास	गगेश मिश्र	१८६६	१०२	# र का स १७३९
३८१	५४१५	विक्रमादित्यचरित्र (पचदडकथा)	वैद्यनाथ, कवि सोमनाथका वशज	२०वीं	५–३३	र का स १८८४ आद्य ४ पत्र अप्राप्त
३८२	६६५२	विचारमाला		१८६३	५	र.का. स. १७२६
३८३	६१५७	विजयमुक्तावली (महाभारतअनुवाद)	छत्रसिंह श्रीवास्तव	१८६५	२३१	अटेरपुर (भदावर) के राजा कल्याणसिंह के राजमे स १७५७ में रचित
३८४	५३७५	विजयसुधानिधि	कविवर रामलाल	१९०३	१४१	कर्णपर्व से आगे पद्यानुवाद है व्रजेन्द्र बलवन्तसिंह के लिए रचित
३८५	६३४१	विदुरप्रजागर	कृष्ण कवि	१८६५	६४	स १७९८ मे राजा आयामल्ल की आज्ञा से रचित, म भा. उद्योग पर्व का अनुवाद
३८६	७७४०(१)	विदुरप्रजागर भाषा	गणपति मिश्र	१९३७	१–४६	
३८७	७५९२	विनयपत्रिका	गो तुलसीदास	१९१४	८२	लि क हरिदास कबीरपन्थी, वदनोरमध्ये
३८८	६०८९	"	"	१९वीं	८१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८९	६२१९	विनयपत्रिका	गो तुलसीदास	१८९०	५८	
३९०	६२३३	,,	,,	१८९४	१०६	लि क वैष्णव गोविन्ददास लस्करी, स्थान विरक्त अखाडा, भरतपुर
३९१	५२०३	विरहगुलजार इश्क अम्नवर कथा अपूर्ण		१९वीं	४२	
३९२	७४४१(१७)	विरहपवकी टीका	म. प्रतापसिंहजी	१९१४	८०–९६	
३९३	४२६३	विरहसलिता	,,	१८वीं	३६–९३	
३९४	४३०९(११)	,,	,,	१९वीं	२१, २२	
३९५	६९७३	विविधसग्रह		,,	८८	रामचरित चौपाई, गुरुमहिमा, सुदामावारहखडी, नारद गीता आदि
३९६	४२८७(८)	विवेकचितावनी	सुन्दरदास	१७२८	३३–३८	लि क आनन्दराम
३९७	४९२५(२)	वृन्दविनोद (वृ·दसतसई)	वृन्द (वरवराज)	१८२६	१७५–२०७	६९४ दोहे हैं
३९८	७४४१(१८)	वृन्दसतसई	,,	१९१४	९७–१३४	
३९९	४२८८(१)	वृन्दावनशत		१८८९	१७	
४००	५२०२(३)	,,	माधो (भगवन्त हरिदासशिष्य)	१८८५	९१–१०८	र का स १७०७
४०१	५२०९	वैद्यकसार		१८वीं	९१–१५१	
४०२	५४२३	वैद्यमनोत्सव	नयनसुख, केशव मिश्रसुत	१९वीं	६८	
४०३	६६३७	,,	,,	,	४०	
४०४	६०२२	वैद्यरत्न	जनार्दन गोस्वामी	१८८४	३६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४०५	४३६६	वैद्यविनोद, (शार्ङ्गधर भाषा)	रामचन्द्र	१८११	६६	र.का स १७३६ र. स्था०—मरोटकोट
४०६	७७२०(१३)	वेदनिर्णयपञ्चाशिका	बनारसीदास	१८वीं	४८–५०	
४०७	६६४३	वेदान्तपरिभाषा	मनोहरदास निरञ्जनी	,,	२०	र का स १७१७
४०८	६७७०	वेदान्तमहावाक्य भाषा	,,	१८५२	२०	र.का स १७१७
४०९	४५५७(३)	वैराग्यमञ्जरी	म प्रतापसिंहजी	१९वीं	२४–३८	
४१०	७४४१(३)	,,	,,	१९१४	२२–३५	
४११	७७४९(३)	,,	,,	२०वीं	१३	
४१२	९१०७	वैराग्यशतक भाषानुवाद	हरदयाल	१९५४	६०	लि क प्रोहित दीनानाथ
४१३	६७२५	शतकत्रयभाषानुवाद	म प्रतापसिंहजी	१८९५	१२०	लि क. मङ्गाविष्णु
४१४	७८३८	शतकत्रयमञ्जरी (सचित्र)	,,	१९वीं	६५	चित्र सं १
४१५	६७६८	शतप्रश्नोत्तरी भाषा	मनोहरदास निरञ्जनी (?)	१८५२	२४	
४१६	४१६४(२)	शनिकथा	मुता रामदान	१९२९	१०–१३	पद्यबद्ध कथा है
४१७	५४२५	शब्दावली (अपूर्ण)		१८७१	६–४५	सन्त शब्द-वाणियो का सग्रह
४१८	५३६९	शिखनखवर्णन	रसानद	१८९३	२४	* र का स. १८९३, स्वय कवि के हस्ताक्षरो मे लिखित
४१९	४५४७(२)	शृङ्गारमञ्जरी	म प्रतापसिंहजी	१९वीं	१३–२४	
४२०	७४४१(२)	,,	,,	१९१४	१२–२२	
४२१	७७४९(२)	,,	,,	१९वीं	१३–२४	
४२२	६४९१	षट्प्रश्ननिर्णय	मनोहरदास निरञ्जनी	१८२६	३३	लि क. सेसराम, कुम्हेरमध्ये
४२३	६७६९	,,	,,	१८५२	७५	लि क. महात्मा जयदेव जोबनेर-वासी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२४	५४३९	सिखनखवर्णन	बलभद्र	२०वीं	२४	
४२५	५४२१(१)	सिद्धान्तके पद	वृन्दावनदास	१९वीं	१–२५	
४२६	७४४१(७)	स्नेहबहार	म प्रतापसिंहजी	१९१४	४३–४६	
४२७	४४५२(३१)	स्नेहलीला	,,	१८वीं	३३,३४	
४२८	५२३४(१)	,,	कवि गिरिधरराय	१९११	१–१०	* लि क बद्रीनाथ व्यास
४ ९	५४३८(३)	,,	विष्णुदास	१८९०	४०–५६	
४३०	६७४९(३)	,,	,,	१९वीं	६२–१०५	
४३१	७४४१(९)	स्नेहसग्राम	म प्रतापसिंहजी	१९१४	५२–५७	
४३२	४९२३(३)	स्फुट कवित्त आदि			१–१४	
४३३	४२२९	स्फुट कवित्त, रेखता आदि		१९वीं	३३	
४३४	६३४२(१)	स्फुट कवित्त		,,	१०	
४३५	६३४३(१)	स्फुटोक्ति		१८८९	१२	
४३६	६९९२	स्फुट पदसग्रह	सूर आदि	१७४२–१७४४	६८	
४३७	६८३३(६)	स्फुट राग पद		१८५२	३५–३७	
४३८	७७५३(६)	स्फुट सवैया		१८३७	३८–३९	
४३९	४२६३(१३)	स्नेहसग्राम	म प्रतापसिंहजी	१८वीं	२७–३०	
४४०	४३०९(२)	,,	,,	१९वीं	१–३	
४४१	४२६३(१४)	स्नेहबहार	,,	१८वीं	३१–३३	
४४२	४३०९(३)	,,	,,	१९वीं	४,५	
४४३	६३२८	स्मरणदर्पण	रामचन्द्रवाग	,,	८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४४	७१३३	स्वरोदय	गोरक्षोक्त	१९४६	११	लि क प्रभु पुरोहित नागोर का
४४५	५७१७	स्वरोदय भाषा		१८वीं	१४	
४४६	५९५७	स्वरोदय टीका	लालचंद्र	१९वीं	६	
४४७	५७८५	सग्रामदर्पण	सोमनाथ, नीलकण्ठात्मज	१९१५	३४	र का सं १७८६, ग्रन्थान्त में कविकुल-वर्णन है
४४८	७७३६	सग्रामसार, द्रोणपर्वका अनुवाद	कुलपति मिश्र	१९५७	१९५	म रामसिंह की आज्ञा से निर्मित लि.व.. कृष्णचद्र, बूदी
४४९	७७३७	,, ,,	,,	१९वीं	१५२	
४५०	७८१९	सगीतदर्पण भाषा	हरिवल्लभ	१८३१	३–७९	आद्य २ पत्र अप्राप्त
४५१	४००५	सयोगद्वात्रिंशिका	मानकवि	१८४८	४	
४५२	६४१७	सयोगवत्तीसी	,,	१९वीं	२	
४५३	७७२१(४)	,,	,,	१८२५	१११–११८	
४५४	५३४९	सत्यनारायणव्रत कथा	हरिदास	१८२५	२४	र का स० १९२२, लि क प्रताप मिश्र,
४५५	५२४२	सत्यनारायणकथाका अर्थ		१९वीं	१४	
४५६	७८१६(२)	सर्पमन्त्रादि		१८३१	९	
४५७	६९८६	सदाशिव भट्ट प्रशस्तिपरक पद्य		१८४१ से पूर्व	७	फतहचद्र, गणपति, भोलानाथ आदि द्वारा रचित पद्य
४५८	५३८४(२)	सनेहलीला	मनोहरदास	१९०४	७०–८२	
४५९	७६०७	सनकादिवीजमत्र		१९वीं	१	लि क केशवदास
४६०	४९०८	सभासार आदि	रघुराम कवि	१८५२	११४	लि.क मगनीराम ब्राह्मण, माडळगढ़मध्ये
४६१	४००३	सभासार नाटक	रघुराम कवि	१८४५	२०	रा का.स १७५७ स्था सारगपुर, अहमदाबाद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६२	४०२८	सभासार नाटक	रघुराम कवि	१८४२	१६	* लि क ऋषि किशोर, सोभत प्रथम पत्र अप्राप्त
४६३	५४२१(२)	समयप्रबन्ध	वृन्दावनदास	१९वीं	१–३११	
४६४	४४५२	समयसार नाटक	बनारसीदास	१८१२	६२–८४	लि क प्रीत सौभाग्य
४६५	४७६१	,,	बनारसीदास	१८वीं	६९	र.का स १६९३
४६६	४८१६	,,	बनारसीदास	१८०२	१३६	
४६७	४८१२	,,	,,	१८६०	१२५	
४६८	६४४२	,,	,,	१८२४	६०	लि क. मोहन, रचना स्था० आगरा।
४६९	७७२०(२)	,,	बनारसीदास, आगरानिवासी	१७२५	१–५४	लि क मतिवर्द्धन, हमीरगढमध्ये दोस श्री थावा पठनार्थम्
४७०	६३५३	समयसार नाटक भाषा	,,	१९	८६	
४७१	६८४४	समयसार भाषा नाटक	बनारसीदास	१७५३	११७	र का. स० १६९३
४७२	५३७३(२)	समयसार नाटक, सिद्धान्त भाषा			४–७३	
४७३	५३७६(१२)	,, ,,			११२–१९७	
४७४	७४४२(३)	समयसार भाषा	बनारसीदास	१७६४	१–७१	
४७५	७४४३	समयसार नाटक भाषा	,,	१९१३	१३२	लि क ववे अमरचद
४७६	५३८०(२)	समरविजय		१८४६	१९	प्रल्हाददास वैष्णव पठनार्थं
४७७	६७६६	सरसरस	राय शिवदास	१९वीं	१५	
४७८	६८३५(३)	सवा सौ सील		८६९	४	
४७९	४४५२(२३)	सवैया	बालपुरी	१८वीं	२३ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८०	४४५२(३३)	सवैया	चद कवि आदि	१९वीं	४० वां	
४८१	४४५२(६३)	,,		,,	११८ वां	लि क. प्रीत सौभाग्य
४८२	६२२७	सियरघुवीरविवाह	तुलसीदास	,,	६	
४८३	५०३५	सिंहासनवत्तीसी (अपूर्ण)		१८९९	६३	लि क. काशीराम पचोली
४८४	५८६५	,,	कृष्णदास	१९वीं	१०२	*
४८५	६०११	सीताचरित्र चौपाई	चन्द कवि	१७४७	१२३	जीर्ण प्रति
४८६	६१४६	सीताचरित्र चौपाई	कवि बालक (चन्द ?)	१८९८	१००	र.का स १७१३
४८७	७७५९(१)	सीताराम ध्यानमञ्जरी	अग्रदास	१८६४	१–२३	
४८८	६९३१	सीताराम रामायण (अयो काड, वनवास काड)		१९वीं	१५६	गोगावत कुलावतस, शर्भूसहाज्ञया प्रणीत
४८९	६९३२	सीताराम रामायण (आर. काड, सीतापहरण काड)		,,	५९	
४९०	६९३३	सीताराम रामायण (कि का कपिमित्र का)		,,	५९	
४९१	६९३४	सीताराम रामायण (सु का. रिपुपुरदाह का)		,,	६२	
४९२	७१५५	सुखदेव लीला	मुरलीदास	,,	४७	प्रथम पत्र अप्राप्त
४९३	६४४६(६)	सुदामाकी बारहखडी		,,	१२–१४	
४९४	५४१२(१)	सुदामाचरित्र	नरोत्तमदास	१८९३	१–१३	
४९५	८८७	सुदामाचरित्र (कक्का प्रणाली)	खुशाल शाडिल्य विप्र	१८वीं	१२	
४९६	६९८६	सुन्दरदासकी साखी	सुन्दरदास	१८८९	५६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४९७	६९४७	सुन्दरदासजीके शब्द	सुन्दरदास	१८८९	४५	लि स्था फतेहपुर
४९८	४३१३(२)	सुन्दर भक्तिविलास	लाला सुन्दरलाल	१८९७	९–७१	लि स्था. जयपुर
४९९	४२१६(८)	सुन्दरशृंगार	सुन्दरदास	१८५९	३३३–३५९	
५००	४३०७(२)	,,	,,	१८३७	८७	लि क वेणीराम
५०१	४८१४	,,	सुन्दरदास	१८१३	२३	लि क श्रीकमजीशिष्य डाह्याजी
५०२	४८३५	,,	,,	१७८९	२१	लि क मुनीलाल सूरत बन्दरे
५०३	४०२९	,, व द्वादशमास वर्णन	,,	१७४२	२२	र का स १६८८
५०४	६३१७	,,	सुन्दर कवि	१९वीं	४०	र का स १६८०
५०५	६९४४	सुन्दरसवैयासग्रह	सुन्दरदास	१८८२	७६	लि स्था फतेहपुर
५०६	६९४५	,,	,,	१८०४	४४	लि क प्रेमदासशिष्य भिखारीदास
५०७	७७२०(१९)	सुमतिकुमतिसवाद (कहरामामाकी चाली)		१८वीं	५०वां	
५०८	४३०९(७)	सुहागरैन	म प्रतापसिंहजी	१९वीं	१४,१५	
५०९	७४४१(५)	,,	,,	१९१४	४०–४२	
५१०	५४३५	सूरजपुराण		१८९२	२२	पद्मपुराणोक्त लि क मनसाराम कायस्थ
५११	६३४२(३)	सूरसागर पद	सूरदास	१९वीं	१६–२४	
५१२	७७२२(१)	सूरसारङ्ग (अपूर्ण)	,,	१८वीं	१–३६	१७२ पद हैं
५१३	५८६६(१)	सौदागर बच्चेका किस्सा		१९वीं	१–१०	
५१४	६२०२	हनुमानबाहुक	तुलसीदास	१९१७	१४	
५१५	७७३१	हयगुणप्रकाश प्रश्नोत्तर	लक्ष्मणदान बारैठ	२०वीं	५२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१६	७८११(५)	हरबोलचितावणी	सुन्दरदास	१८वीं	१८–१९	
५१७	४२६३(७)	हरिकीर्तनमाला	रसराशि	१८८२	३०–४४	
५१८	४४६५	हरिनाममाला		१९वीं	१	
५१९	४२८७(६)	हरिबोलचितावनी	सुन्दरदास	१७२८	२३–२५	लि क आनदराम
५२०	६३४०	हरिवश भाषा		१९वीं		आदि के १५३ पद्य त्रुटित
५२१	५३६०	हरिवशपुराण भाषा	लालचद	१७१६	१५४	लि स्था अबावती, पत्र १ से ७ अप्राप्त
५२२	६१५८	,,	सालवाहण	१७८४	५८	पत्र ४ से ६,७,१६,१७,३०,३४ ४२ से ४९ नहीं हैं
५२३	६१७५	,,	खुशालचन्द	१८४२	१६७	
५२४	७१३४	हितहरिवश जन्मोत्सव	व्यास हरिलाल	१८३७	७	लि क स्वय रचयिता, वृन्दावन मध्ये
५२५	५३७९	हितामृतलतिका	राम कवि	१९वीं	१३३	व्रजेन्द्र बलवन्त सिंहाज्ञया रचित
५२६	४२१६(१)	हितोपदेश टीका	विष्णु शर्मा	१८५९	३७०	
५२७	४०१५	हितोपदेश पचाख्यान	,,	१८५९	७२	लि क ऋषि टेकचद्र
५२८	४३१६(१)	हितोपदेश भाषानुवाद	,,	१८६४	१५८	
५२९	४६१५(९)	हितोपदेश भाषा		१८८७	२००–३४७	लि क मुशी पन्नालाल, जोधपुर
५३०	५०८२	हितोपदेश (सचित्र)		१८वीं	१७६	* चित्र सख्या ४७, कोटा कलम
५३१	६३४४	हितोपदेश (पद्यानुवाद)	कोविद मिश्र	१८८८	७८	बुन्देलखड के महाराजा पृथ्वी-सिंह की आज्ञा से रचित
५३२	४०६५(३)	हितोपदेश (चतुर्थ तत्र तक)	विष्णु शर्मा	१८०१	१५–१६७	लि.क. डालूराम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५३३	७७४०(२)	हितोपदेश भाषा पद्यानुवाद		१९३७	४६–१२५	लि स्था लोचनपुर (बूंदी)
५३४	६२५६	हिम्मतिप्रकाश	श्रीपति भट्ट	१९०८	४५	र.का स १७३०, प्रथम पत्र अप्राप्त
५३५	४३०९(१९)	होरीबहार पद टीका	सवाई प्रतापसिंह	१९वीं	३२–४४	
५३६	६३४५	हृदयाभरण कवित्त	व्रजजीवन	१८६१–६२	१८२	
५३७	६९५१(२)	ज्ञानचरणवाचिका		१८९१	२०	
५३८	६२०६	ज्ञानप्रकाश	कृष्णदास	१८८०	४	गोपालदासजी पठनार्थम्
५३९	४९१४(७)	ज्ञानपचीसी	बनारसीदास	१८७१	१६७–१६८	
५४०	७७२०(४)	,,	,,	१८वीं	४१–४२	
५४१	६९५१(१)	ज्ञानमञ्जरी	मनोहरदास निरञ्जनी	१८९१	२०	लि क दूल्हेराम मिश्र, हस्तेडा मध्ये
५४२	६७६७	ज्ञानमञ्जरी भाषा	,,	१९वीं	२६	र का स १७१६
५४३	४०६५	ज्ञानवचनचूर्णिका	,,	१८५५	१८	लि क सहजराम दादूपंथी
५४४	६७७१	,,	,,	१८५२	२२	
५४५	४०५७	ज्ञानशृङ्गार	सुमति रंग	१८५०	२२	र का स १७२२ मुलताणमध्ये
५४६	६९०८	ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	१९०७	३१	लि क बलदेव ब्राह्मण
५४७	४३०८(२)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१८वीं	४१०–४४६	६०० छन्द हैं
५४८	६८३७	,,	,,	,,	६१	र का.स १७१०

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४६०६	अतरिक्षपार्श्वना छन्द	भाव विजय	१८४५	३	लि क हर्षविजय
२	५०७०	,,	,,	१८११	२	
३	४१४६	,, स्तव	,,	१९वीं	७	
४	४३४६	अजितशातिस्तव सबालावबोध		१७वीं	४	
५	४६१४(३६)	आराधना	सकलकीर्ति	१८७७	२६२-२६४	
६	५६६०	,, चौपई		१५६२	१८	
७	७७५३(६)	इलापुत्रस्तवन	लब्धिविजय	१८३७	४४-४५	
८	४३६२	एकादशगणधर स्तवन		१७वीं	५	
६	४४५२(६८)	ऋषभजिनस्तवन	भावकवि	१८वीं	१२० वां	
१०	४६१४(२३)	ऋषभनाथजीनो छन्द		१८७१	२३०से२३१	
११	४६१४(६०)	,,	मूला मयारामसुत	१८७७	३१७से३२०	
१२	७३७२	ऋषभदेवजीरो छन्द	धर्मसी	१९वीं	१	
१३	४६१४(१७)	ऋषिमडलस्तोत्र		१८७१	२१०से२१२	
१४	७५५०	कल्याणमन्दिरस्तोत्र (राजस्थानीटवार्थसहित)		१७५७	१२	लि क. धनजी
१५	५३७३(१)	,, मूल		१८वीं	१-३	
१६	५६८२	,, (सटीक, त्रिपाठ)	कुमुदचद्र	१७वीं	१२	प्रथम पत्र अप्राप्त
१७	६२५६	,,	हर्षकीर्ति	१८४८	२५	लि क हेतराम यती असीचद की पोथी सू राजराजा रणजीतस्यघजी ने लिखी
१८	७३६८	,, (राजस्थानीभाषार्थसहित)		१८वीं	८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	६९१४	कल्याण मदिर स्तोत्र राजस्थानी भाषार्थ सह		१७८२	१८	
२०	४०३०	कायस्थिति स्तोत्र (सबालावबोध)	साधुकीर्तिगणि	१७वीं	३	लि क समयकीर्तिमुनि
२१	५०६९(७)	गौडीयपार्श्वस्तुति		१९०६	१३ वां	
२२	५०६९(१)	गौडीयपार्श्वनाथ चौढालियु	लावण्यविजय	१९०६	१९३	
२३	५०६९(४)	„ छन्द	कुशललाभ	१९०६	१० से १२	
२४	५०७७(१)	गौडीपार्श्व स्तवन	कीर्तिविलास	१८०२	१ला	पत्र का कोण कटा हुआ है
२५	४३६३	गौतमदीपाली का स्तवन	सकलचद्रसूरि	१६८५	६	
२६	४३६६	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसक्षेपवृत्ति	सोमप्रभाचार्य	१५२४	५	लि क धीरमूर्ति गणि शिष्य लि स्था श्री भगपुर महानगर
२७	६३२९	„ स्तुति		१७८२	६	लि स्था. मसूदा
२८	७२७५	„ (सावचूरि, पचपाठ)	वप्पभट्टिसूरि	१६वीं	४	
२९	४२८७(५)	चतुर्विंशतिस्वयभूस्तोत्र		१७२६	१९–२२	
३०	४९१४(३२)	चैत्यवदन चौपाई	वीरचद्रमुनि	१८७७	२४९से२५१	
३१	४९२४(४)	„	लावण्यसमयमुनि	१७८७	१	
३२	५४३६(१)	„		१८५३	१ से ३	लि क दौलतराम मुनि लि स्था मारोट
३३	५४४१	चैत्यवदनादि जिनस्तवनसग्रह		२०वीं	२४२	
३४	७४४८	„		१९१५	१२६	लि क अमरचद ? स्तवविषयक ३१ कृतियो का सग्रह
३५	५०७२	चौवीस जिनस्तवन	गुणविजय	१८वीं	५	
३६	७५९९	„ भाषा	महानन्द मुनि	१९वीं	९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७	७४४४(१)	चौबीसी	आनन्दघन	१८८५	१–५३	इस गुटके मे १९ कृतियो का सग्रह है
३८	४९१४(३८)	चौगसी लाख जीवयोनिवीनती	ज्ञानभूषण	१८७७	२५९से२६२	
३९	४९१४(५९)	,,	हर्षकीर्ति	१८७७	३१५से३१७	
४०	७३६६	जयतिहुयण (सावचूरि)	अभयदेव	१८८२	५	लि. स्था जैसलमेर
४१	७४०९	,, (सवालावबोध)	,,	१६९५	६	लि क भुवनसुन्दर
४२	५४३६(१८)	जिणकुशलसूरिवृद्धिस्तवन		१९वीं	३	दो स्तवन हैं
४३	५४३६(१९)	जिणकुशलसूरिलघुस्तवन		,,	१	
४४	६३८५	जिननमस्कार	जिनकीर्तिसूरि	१८वीं	४	
४५	४२८७(११)	जिनाष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	,,	७८से९२	
४६	४९१४(४०)	जीवदया छन्द	भूधर	१८७७	२६५–२६६	
४७	६१८०	जैनचैत्यस्तव (सरस्वतीस्तोत्र)		१९वीं	५	
४८	५३७३(४)	जैनशतक	भूधरदास	१८वीं	९७से१०९	रचना स० १७८१
४९	५४१८(८)	तिरेपन क्रिया	ब्रह्मगुलाल	१९वीं	१०१से१०५	
५०	५४१८(१४)	,,		,,	११६से११९	
५१	४९१४(५६)	तिरेपन क्रिया वीनती	प्रभाचद्र	१८७७	३११–३१२	
५२	५४३६(६)	तीर्थावलीस्तवन		१९वीं	३६–३८	
५३	७०८४	दण्डकविचारषट्त्रिंशिकासूत्र सटिप्पण	गजसारसाधु धवलचद्र महोपाध्यायशिष्य, टि क. यश सोम	१८वीं	१०	
५४	५४३६(१७)	दादेजीरा स्तवन		१९वीं	११	
५५	५४३६(८)	नवकारमत्रमहिमालघुस्तवन			४०–४३	
५६	७२९०	नवकारमहामत्रस्तवन	जयवल्लभसूरि	१७वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७	५४३६(१४)	नवकारमहिमास्तवन			३	
५८	५४२७(१)	नवस्मरणस्तवन		१९वीं	१–३१	
५९	४९१४(२१)	नीगोदनी वीनती		१८७१	२२९–२३०	
६०	४८३७	नेमनाथसिलोको	उदयरतन	१८७१	४	लि क फतेचद्र लाघडामध्ये
६१	४९१४(१२)	प्रभाती	सकलकीर्ति	१८७१	२०८ वां	
६२	७२५७	प्राचीनकर्मस्तवटीका	गोविंदगणि	१७वीं	१७	
६३	५४३६(१३)	पचकल्याणस्तवन			२	
६४	४९१४(१)	पचकल्याणीक	रूपचद	१८७१	१–७	
६५	४२९८	पचपरमेष्ठिनमस्कारार्थ	समयराज मुनि	१६३५	४	श्रीपार्श्वनाथसमसस्कृतस्तव भी साथ में है, लि क नयनकमलगणि
६६	६२९९	पचमगलस्तवन	रूपचद	२०वीं	८	
६७	४९१४(१५)	पचमेरु अष्टक	सुदर्शनविजय	१८७१	२०८–२०९	
६८	५४३६(१५)	पचसवरस्तव			२	
६९	५०६९(५)	पद्मावतीछन्द	हर्षसागर	१९०६	१२–१३	
७०	४९१४(४६)	पद्मावतीवीनती (१)	पुजराज	१८७७	२७५ वां	
७१	४९१४(४७)	,, (२)	,,	,,	२७५–२७६	
७२	४९१४(४८)	पद्मावतीस्तोत्र (अष्टक)	जिनसागर देवेंद्रकीर्तिशिष्य	,,	२७६–२७७	
७३	५१३१	पद्मावतीस्तोत्र		१९वीं	२	
७४	७४४४(१७)	पनरे तिथिरी थुई		१८८५	२९४–३०२	लि क नेमविजय मानविजयशिष्य गोघूंदा नगर में लिखित
७५	७४४४(९)	पांच तिथिरी थुई		,,	१९०–१९४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	७२६४	पार्श्व जिन यमकमयस्तुति		१७वीं	१	
७७	५४३६(१०)	पार्श्वनाथजिनलघुस्तवन			४४–४६	
७८	४९१४(५२)	पार्श्वनाथजीनो छन्द	भुवनकीर्ति	१८७७	२८३से२८८	
७९	४४५२(६६)	पार्श्वनाथजी पाढगत छन्द	अभयसोम	१८०५	११९ वां	लि.क प्रीतिसौभाग्य, लि स्था. नींबेडा
८०	७४०४	पार्श्वनाथ तथा साधारण जिनस्तवन	प्रेमविमल	१९वीं	१	र का. वि० १५३५
८१	६९८४	पार्श्वनाथस्तवन		१८वीं	७	
८२	७७५३(५)	पार्श्वनाथस्तवन	कीर्तिप्रभ	१८३७	३७–३८	
८३	७५६५	पुद्गलपरावर्त्त स्तवन सबालावबोध		१७वीं	१	
८४	५४३६(१६)	वीसवहिर्मानस्तवन		१९वीं	१	
८५	७१३८	वीससस्थानकस्तुति		२०वीं	१८	
८६	५२९८	भक्तामर बालबोध टीका	हरिदास	१८वीं	१८	कमलमपुरमध्ये रचित
८७	५४१८(२)	भक्तामर भाषा	मानतुग (हेमराज)		८	४९ पद्य
८८	७१०९	भक्तामर भाषा कालभैरवाष्टकादि		१८वीं	८८	इस गुटके मे आवूस्तवन, स्थूलभद्र सज्झाय, साधुवन्दना मगलाष्टक चतुर्विशतितीर्थंकर स्तव सरस्वती अष्टक आदि विविध रचनाओ का सग्रह है
८९	६३४७	भक्तामर महाचरित्र भाषा	विनोदीलाल	१८२८	२९३	र का स० १७४७
९०	५४२७(२)	भक्तामरस्तोत्र		१९वीं	३१से४५	
९१	४०२५	,, प्राकृत वार्तिक सहित	मानतुग सूरि	१६८९	२२	प्रथम पत्र अप्राप्त । लि क शिवदास वसताणी, स्था देशलहरान, श्रीफतेपुरमध्ये
९२	४३६०	,, सबालावबोध	,,	१७वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
९३	७२७१	भक्तामरस्तोत्र	मानतुग सूरि, बाला. मेरुसुदर	१७००	१४	
९४	७४०८	,,	मू. मानतुग	१८२६	१९	लि.क रूपचद
९५	५९०५	भक्तामर टीका	गुणाकर	१६वी	३२	
९६	४२८७(२)	भक्तामरस्तोत्र	मानतुग	१७२६	५–११	लि क रामचद्र
९७	६०००	भक्तामरस्तोत्र पचपाठ	अमरप्रभ सूरि	१७वीं	७	लिपि सुन्दर है
९८	६०३९	,, सार्थ	भा विनयसुन्दर	१८वीं	१६	
९९	६२७१	,, भाषा टीका	मू. मानतुग, भा. अखैराज श्रीमाल	१७८४	२४	लि स्था तूगा
१००	६२७७	,, भाषा	हेमराज	१९४१	१६	लि. स्था. अमदा नगर
१०१	७४५०	भक्तामर भाषा आदि विविध कृतियां		२०वीं	२३२	* कृतियों के नाम परिशिष्ट मे देखिये
१०२	६२८९	भक्तामरस्तोत्र सटीक	मानतुगाचार्य	१८वीं	६	
१०३	६३६१	भक्तामर सटीक त्रिपाठ	टी कनकफुशल	१९२८	२४	लि स्था विराट नगर
१०४	७१८४	,, (सुखबोधिका)	टी अमरप्रभ	१७वीं	५	
१०५	७३८१	,, वृत्ति (सुबोधिका)	वृ का समयसुन्दर	१८२१	७०	रत्तनाकाल–सप्तवसु शृगावसति १३८७ (?) पत्तने नगरे
१०६	७७६४	भवारिवारणस्तोत्र सटीक पचपाठ	जिनवल्लभ सूरि	१७वीं	५	
१०७	४९१४(११)	मदिरस्वामीनी वीनती	सकलकीर्ति	१८७१	२०७–२०८	
१०८	५४३६(२०)	मरोटकोटमडण, दादेजी श्रीजिन–कुशल सूरिजीरी नीशाणी		१८५३	८	
१०९	५०७१	राणपुर मडन वीरजिनस्तवन		१८वीं	२	लि क दौलतराम मुनि
११०	७८२७	लघुशातिस्तव सटीक	मानदेव आचार्य	,,	१६	र का १६११

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१११	७४३७	ललितविस्तरा पञ्जिका (चैत्यवन्दना वृत्ति)	मुनिचन्द्रसूरि	१५वीं	४०	
११२	७३५५	वर्धमानस्तुति	कनककुशलगणि विजयसेन सूरिशिष्य	१६५७	१	लि क. साह हरष (ख), ग्राम–हालीवाडा
११३	५०७६	वासुपूज्यस्तवन	प्रेमविजय	१९वीं	७	
११४	४३४४	वीतरागस्तोत्र	हेमचन्द्रसूरि	१७वीं	८	
११५	५९३५	वीतरागस्तोत्र सावचूरि पचपाठ	हेमचद्र सूरि	१६वीं	६	सहजातिशयनामक द्वितीयस्तव
११६	५९३६	,,	,,	,,	१०	श्राशीस्तवे विंशतिप्रकाश
११७	५४१८(११)	वीरजिणन्द		१९वीं	११२–११३	
११८	५०७४	वीरस्तवन सस्तवक	वीरविजय शुभविजयशिष्य	१८५८	१०	
११९	६४४६(२)	वीरस्तुति			४०–४१	
१२०	७३७६	वीस विहरमान गीत, पुरोहितपुत्र स्वाध्याय	जिनसागर सहजसागर	१८वीं	६	लि.क. खेमधर्म, लि. स्था. पीपाड़नगरे
१२१	५०६६(३)	वद्धचैत्यवन्दन	मूला वाचक	१९०६	८–१०	
१२२	४३४५	श्रीऋषिमडलस्तवन	धर्मघोष सूरि	१७वीं	११	
१२३	४१५९	श्रीदेवीछद शनैश्चरस्तुति		१९वीं	३	
१२४	५०७५	शखेश्वरपार्श्वछद	हर्षरुचि	,,	३	
१२५	७७५३(४)	शातिनाथस्तवन	गुणसार	१८३७	३४–३६	
१२६	७७२०(१५)	शातिनाथ त्रिभङ्गी छन्द	वनारसीदास	१८वीं	५०–५१	
१२७	५३८५(७)	शीतलनाथस्तोत्र	सिंहनन्दि	१६वीं	१८९वां	
१२८	४५११	शोभनस्तुति		१७वीं	६	
१२९	७४७२	,, पचपाठ	धनपाल पडितवान्धव	१६३४	१०	लि क पूरणमल माथुर कायस्थ लि स्था गढ रणथम्भोर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३०	७२७८	शोभनस्तुति सटीक	शोभन	१६वीं	११	
१३१	४८४०	स्तभनपार्श्वनाथस्तवन	कुशललाभ कवियण हरिविजय-शिष्य	१८२८	३	
१३२	६८३६	जम्बूकुमार स्वाध्याय स्तभन पार्श्वनाथस्तुति आदि		१६वीं	७२	* लि स्था सागानेर, इस गुटके की अन्य कृतियों का विवरण परिशिष्ट में देखें
१३३	४६१४(१३)	स्तवन (मुजरा)	सकलकीर्ति	१८७१	२०८ वां	
१३४	६१६०	स्तवन (स्वयभूस्तोत्र)	समतभद्र स्वामी	१८वीं	१६	इस प्रति मे २४ स्तोत्र हैं
१३५	७५६८	स्तवन (शातिजिन)		,,	३	
१३६	७४४७	स्तवनसज्झाय पवसग्रह		१९१६	१७०	लि क अमरचद्र, सेठ गभीरमल-पठनार्थम्
१३७	७४४६	,, आदि		१९११	२००	*
१३८	७४४४(१०)	स्तुतिस्तवन		१८८५	१६४–२०५	इसमें पजूसणरी थुई, सेत्रुजाजीरी थुई, पाचमरो तवन, आठमरो तवन, इग्यारसरो तवन हैं
१३९	६८२५	स्तोत्रसग्रह		१६वीं	४	* इसमें ५ स्तोत्र हैं, नाम परिशिष्ट में देखिये
१४०	७४४४(६)	सप्तस्मरण		१८८५	१४४–१६८	
१४१	५४२७(३)	,,	नानू ऋषि		४५–४६	
१४२	४६१४(३६)	सात वसणनी वीनती	ब्रह्महस	१८८७	२५७–२५८	
१४३	७३६४	साधारणजिनस्तोत्र (सावचूरि)	जयानन्द, अव. वानर ऋषि	१७५८	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४४	५०७७(३)	साधारण स्तवन	मोहनविजय रूपविजयशिष्य	१८०२	१ला	
१४५	५४१८(२१)	साधुवन्दना	बनारसीदास	१९वीं	१४५-१४७	
१४६	५११४	सीमंधरवीनती		१८वीं	२१	
१४७	४९१४(२२)	सीमधरस्तवन		१८७१	२३० वां	
१४८	७७५३(३)	,,	भक्तिलाभ	१८३७	३२-३४	
१४९	६८४०	,, आदि (विंशतिविहार स्तवनादि)		१९वीं	२२६	फुटकर ढाल, भक्तामर, तथा घटाकर्ण स्तुति आदि कृतियां हैं

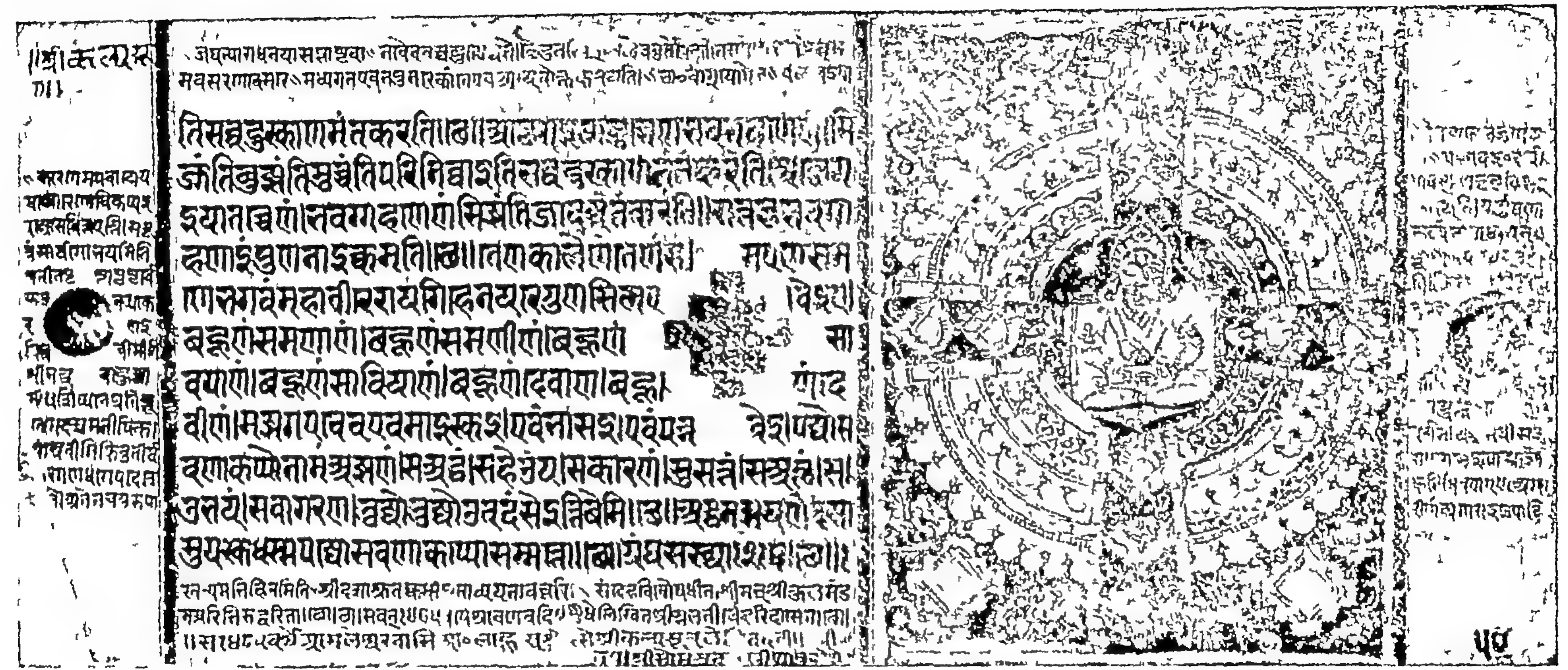
क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७२५८	अन्तकृद्दशाविवरण तथा अनुत्तरोपपातिकविवरण		१७वीं	११	सस्कृत-प्राकृत
२	७६४०	अन्तकृद्दशाङ्गसूत्र		,,	१२	प्राकृत
३	७५३४	अन्तकृद्दशाङ्गसूत्र (प्रा० राजस्थानीभाषार्थसहित)		१७९९	६२	प्रा. रा लि.क ऋषि त्रीकम, राणपुरे
४	७२५४	अन्तगडदशा (राजस्थानीभाषार्थसहित		१९३९	३८	अ प्रा., लि कर्त्री-जिया अमराजीशिष्या
५	७४६४	अनुत्तरोपपातिकसूत्र		१८वीं	१०	प्राकृत., लि क ऋषि हरजी
६	७६३८	अनुत्तरोपपातिकसूत्र (राजस्थानीभाषार्थसहित		१७७३	१६	प्रा. रा., लि क ऋषि धनजी
७	७२१२	अनुत्तरोववाइसूत्र		१६वीं	४	प्रा अ
८	७२०२	अनुयोगद्वारवृत्ति	श्रीहेमचन्द्रसूरि मलधारी	१६६६	१०४	सस्कृत, लि क गुणनन्दन मुनि विशालकीर्ति, लि स्था. पुष्करिणीनगरी (पोहकरण)
९	७४११	आचाराङ्ग (प्रथमश्रुतस्कन्ध, राजस्थानीभाषार्थसहित)		१७वीं	१०१	प्रा रा
१०	७४१५	,, ,,		१९वीं	९९	,,
११	७५५१	,, ,,		१७२७	५६	,, लि.क मुनि मनोहर लि स्था. वीरमग्राम
१२	५९३२	आचाराङ्ग (प्रथमश्रुतस्कन्ध बालावबोध)	वा. पासचन्द साधुरत्नशिष्य	१५८९	१४२	पा रा, लि.क रतनभट्ट गुजरगौड लि स्था सोमलपुर, आद्य पत्र अप्राप्त
१३	५९३१	आचाराङ्ग (द्वितीयश्रुतस्कन्ध बालावबोध)	,,	१७६६	८१	प्रा

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४	७३५८	आचाराङ्ग (द्वितीयश्रुतस्कन्ध राजस्थानीभाषार्थसहित)		१६२३	६५	प्रा. रा , लि क गोडा अमरदत्त
१५	७५४०	आचाराङ्गनिर्युक्ति		१७वीं	१४	प्राकृत
१६	७२४०	आचाराङ्गप्रदीपिका	श्रीजिनहससूरि	१६६५	२१६	स प्रा.
१७	७२२२	आचाराङ्गवृत्ति	शीलाङ्क	१६वीं	२८१	,,
१८	७२७४	आचाराङ्गसूत्र		१७वी	११५	प्राकृत
१९	७४२६	आवश्यकनिर्युक्ति		१६वीं	६१	,, प्रथम पत्र अप्राप्त
२०	७४३६	,, ,,		,,	४७	प्राकृत
२१	७४४०	,, ,,		१६२२	८१	,, लि क ऋषि बाथा
२२	७७६६	,, ,,		१६वीं	११६	प्राकृत
२३	५६४६	आवश्यकनिर्युक्तिसूत्रम्		१५४६	१२७	,, लि स्था अणहिल्लपुरपत्तन
२४	७२०४	आवश्यकबृहद्वृत्ति	श्रीहरिभद्रसूरि (?)	१६३१	४०५	सस्कृत, लि क लक्ष्मणमुनि लि. स्था जैसलमेर
२५	७४००	,, ,,		१७वीं	५४६	सस्कृत, प्रति में ५४७, ४८, ४६वें पत्र खण्डित हैं
२६	७३३४	आवश्यकसूत्र (सटीक, बृहद्वृत्ति)	हरिभद्रसरि	,,	२०१	सस्कृत
२७	४३५८	आवश्यकसूत्र (सबालावबोध)		,,	१६	* प्रा रा
२८	७५५४	आवश्यकसूत्र		,,	४	प्राकृत, लि क प० धर्मकीर्तिमुनि
२९	७१८८	आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति (सचित्र)		१५०१	६८	प्रा , चित्र सख्या २, लि क जिनदास, लि स्था माण्डली नगर
३०	७२१६	उत्तराध्ययनसूत्र		१५४८	३५	प्राकृत, अद्येह श्रीघोघावेलाकूले माणिक्येन लिखितम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	७३१४	उत्तराध्ययनसूत्र		१६४७	६५	प्राकृत, लि.क प उदयतिलक
३२	७३६१	,, ,,		१९वीं	१७६	प्राकृत
३३	७४८७	,, ,,		१७वीं	१३९	,,
३४	७७६५	,, ,,		,,	७५	सस्कृत
३५	७२८०	उत्तराध्ययनसूत्र (राजस्थानी-भाषार्थ सहित)		१८१८	१९८	प्रा.रा., लि क लोकवल्लभ वाचक,उदरामसर(बीकानेर)मध्ये
३६	७३१३	,, ,,		१८३२	१६१	प्रा रा , लि क हस्तिसागर एवं विमलसागर, प्रति का अर्द्ध-भाग सवत् १८३२ से भी प्राचीन है
३७	७३४१	,, ,,		१८३५	२३१	प्रा रा , लि क दौलतसौभाग्य, श्रीबीलाडा नगरे
३८	७३९२	,, ,,		१८५२	२९०	प्रा रा , लि.क कुसबगतसागर, तातोटी नगरे, ठाकुर गुलाब-सिहजी कँवर सवाईसिहराज्ये
३९	७४२८	,, ,		१७२७	१६२	प्रा रा
४०	७५७०	,, ,,		१८वीं	११९	प्रा रा
४१	७६५५	,, ,,		१९वीं	१५७	प्रा रा , अपूर्ण
४२	४४१८	उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध)		१६३७	३८३	* प्रा रा स , १९५, १९८, १९९ तथा २१७ वें पत्र अप्राप्त
४३	६९१६	उत्तराध्ययनसूत्र (सस्तवक)		१७वीं	२२८	प्रा रा , प्रति जीर्ण-शीर्ण तथा त्रुटित है

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	७७६२	उत्तराध्ययनसूत्र (सस्तवक)		१७६२	२४३	प्रा.रा , प्रति के आद्यन्त पत्र शोभन हैं, लि क धनजी, राज्ञपुरग्रामे
४५	७३१२	उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध, पञ्चपाठ)		१७वीं	३१७	प्राकृत-अपभ्रंश
४६	५६०६	उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध, त्रिपाठ)		१६वीं	१४६	प्रा सं , प्रति अति सुन्दर लिखित है, इसके स्वामी का नाम ऋषि तेजपाल, गोवर्धन, आशकरण है
४७	७२८२	उत्तराध्ययनसूत्र (सटीक)	टी कमलसयम, जिनभद्रसूरिशिष्य	१६५६	३०२	प्रा स., लि.क पं. तेजपाल, देवराजपुर
४८	६८४६	उत्तराध्ययनसूत्र-परीसहाध्ययन-कथा		१८वीं	५६	प्राचीन राजस्थानी, आद्य तीन पत्र चिपके हुए हैं तथा प्रति जीर्ण-शीर्ण है
४९	७३४०	उत्तराध्ययनसूत्रसुबोधावृत्ति		१६६७से पूर्व	२६३	प्रा सस्कृत
५०	४३५७	उत्तराध्ययनावचूरि		१४९७	४७	* संस्कृत, लि स्था. चित्रकूट
५१	७३९३	,, ,,		१६१२	६४	सस्कृत-प्राकृत, र.का. १४८५ (रत्नगजमदमितेऽब्दे) लि.क. गोपी, आचार्यवेणसुत, सारङ्गपुर-मध्ये
५२	७४३४	उपासकदशाङ्ग (सटीक)		१७वीं	४१	प्रा. स.
५३	७४३८	,,		१६१२	३०	प्राकृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४	७२८६	उपासकदशाङ्गविवरण		१६४७	२०	सस्कृत, लि.क मुनि लषमन, जिनचन्द्रसूरिविजयराज्ये
५५	५२२६	उपासकदशाङ्गसग्रह	शिवचन्द (कल्याणसूरिशिष्य)	१७१३	४७	रा प्रा , लि क. छीतर (शिवचन्दशिष्य वैराठदुर्गे, आसन्वी ग्रामे, पाचवां पत्र अप्राप्त
५६	७३१८	उपासकदशाङ्गसूत्र (राजस्थानी-भाषार्थ सहित)		१७५२	५३	प्रा रा , लि.क लालसागर
५७	७६३४	,, ,,		१६८०	६६	प्रा रा.
५८	७२२८	उववाइसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ-सहित)		१८६६	८६	प्रा.रा , लि क ऋषि हुकमचद, राणावासनयरमध्ये
५९	७४१६	उवाइसूत्र		१६८४	६५	प्राकृत, प्रथम पत्र अप्राप्त
६०	७४८५	ओघनिर्युक्ति		१६वीं	२३	प्राकृत
६१	७५५३	औपपातिकोपाङ्गसूत्र (सस्तवक)	स्त पार्श्वचन्द्र (सीधुरत्नशिष्य)	१७वीं	११५	प्रा रा.
६२	६८५२	कल्पवार्ता		१६वीं	१५२	रा , अपूर्ण, पत्र १०, ३८, ३६ तथा ११४ से ११८ तक अप्राप्त
६३	४३१८	कल्पसूत्र (सचित्र)			१३१	प्राकृत, चित्र स ३४
६४	५३५६	,, ,,		१६वीं	८५	स प्रा., राजस्थानी कलम के चित्र६
६५	५३५७	,, ,,		१५वीं	७२	प्रा , चित्र स. १६
६६	५३५८	,, ,,		,,	५३	प्रा., चि स. १४
६७	५३५६	,, ,,		१५०२	६१	प्रा , चि. स. ४०
६८	७८४१	,, ,,		१४वीं	१३३	प्रा , चि स ३६



ग्रन्थसख्या ७८४९

कल्पसूत्र

(सुप्रसिद्ध तपोगच्छाचार्य श्रीसोमसुन्दरसूरिके उपदेशसे स० १४८५ में सुलेखित सचित्र प्रति)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६९	७८४२	कल्पसूत्र (सचित्र)		१४वीं	१०३	प्रा., चि. स. ८
७०	७८४६	,, ,,		१५५० से पूर्व	५०	प्रा, चि. स २८
७१	७८४७	,, ,,		१५३१	१०	प्रा., स्फुट पत्र, चित्र स १०
७२	७८४९	,, ,,		१४८५	९	प्रा., त्रुटित, चि स. ३, सुप्रसिद्ध तपोगच्छाचार्य सोमसुन्दरसूरिके आदेश से आलेखित
७३	७८५०	,, ,,		१४६०–१४९० के मध्यवर्ती	३६	प्रा., त्रुटित, चि सं ७
७४	७८५१	,, ,,		१५५० के लगभग	४	प्रा, प्रति में पत्र ८, १७, २३ व ८२वें ही प्राप्त हैं
७५	७३८९	कल्पसूत्र		१८९५	५४	प्रा, लि क सन्तोषचन्द्र मुनि, नागोरमध्ये
७६	७३९०	कल्पसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१८३३	१७२	प्रा.रा. १ से १० पत्र अप्राप्त, लि क ऋषभविजय, बृहत्सप्तच्छदी (बडी सादडी, मेदपाटदेशे ?) नगरे
७७	७४१३	,, ,,	भा. गुणविजय	१८वीं	१३१	प्रा रा, प्रति के अन्त मे जिनधर्मप्रवर्त्तक विद्वानो की जन्मतिथि, विभिन्नगच्छो की स्थापना, नामकरण का समय एव विविध आचार्यों की कृतियो का परिचय लिखित है, अन्तिम पत्र अप्राप्त
७८	७४२६	,, ,,		१८४५	१७५	प्रा रा, प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	गन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७९	७३६१	कल्पसूत्र (राजस्थानीभाषार्थसहित)		१८३९	१३६	प्रा रा , लि स्था फलोधी
८०	७५५५	,, ,,		१७२९	८८	प्रा रा , लि क मुनि मनोहर, बलूदा ग्रामे
८१	४४१३	कल्पसूत्र (सस्तवक)	स्त सोमविमल	१६७२	१०९	* प्रा रा.
८२	७५२६	,, ,,		१७२६	६१	प्रा रा , लि क मनोहरऋषि, ग्रहमदपुरमध्ये
८३	७०७५	,, (सटिप्पण)		१८वीं	९९	प्रा ग्र , ग्रपूर्ण प्रति किन्तु प्रदर्शनीय
८४	५३५४	,, (सावचूरि, सचित्र)		१५६३	१३६	प्रा स , चि स. ३६, भिन्नमाल में लिखित
८५	७८४०	,, ,, ,,		१५२३से पूर्व	१०५	प्रा., चि स २४, धनेश्वरसूरि द्वारा लिखापित, इस प्रति को स. १५२३ मे ग्राचार्य को भेंट करने का उल्लेख है
८६	७४८९	,, (सावचूरि)		१४१६	१११	प्राकृत-सस्कृत
८७	७८४४	,, ,,		१६२१	६५	,, ,,
८८	५३५५	,, (सटीक, सचित्र)	टी सुमतिहससूरि	१७३४	११५	प्रा.स , चि स ८६, सोजत में लिखित
८९	७२४१	कल्पसूत्रकिरणावलीटीका	टी धर्मसागरगणी	१६७६	३२२	स प्रा , प्रथम पत्र ग्रप्राप्त लि क कमलसी, महतवसीसुत, ईवलपुरा (ग्रहमदावाद) स्थाने
९०	७२२६	कल्पसूत्रटीका		१९वीं	११८	सस्कृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
९१	७५५६	कल्पसूत्रटीका	लक्ष्मीवल्लभ (लक्ष्मीनिधि)	१९वीं	१११	स. प्रा. रा.
९२	६०३२	कल्पसूत्रबालावबोध	शिवनिधान	१७९४	१२८	राजस्थानी, लि क प हरराज, श्रीशोमनगरे
९३	७५५८	,, ,, (सप्तमवाचना)		१७१२	२२	प्रा रा., लि क मानविजय, मालपुरामध्ये
९४	६९१७	कल्पसूत्रभाषा		१९३३	१२७	राजस्थानी, लि क. ऋषि केशरीचन्द्र, विक्रमपुरमध्ये
९५	६८४८	कल्पसूत्रसिद्धान्तवाचना		१९५७	१९९	राजस्थानी, १–२ पत्र कीट–विद्ध, लि क ऋषि लक्ष्मीचन्द सरूपचन्द, रेवासी (पालणपुर, गुजरात) मध्ये
९६	७३१०	कल्पान्तर्वाच्य		१६९२	५४	प्रा स , लि.क सौभाग्यविमल, श्रीसिरोहीनगरे, रचनाकाल १५७० (?)
९७	७२६०	कल्पान्तरवाच्यटीका		१७वीं	५०	प्रा स
९८	७४६६	चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र		,,	३९	प्राकृत
९९	४३०४	चित्तसभूति (ऋषीश्वराध्ययनानन्तरम्)		१५वीं (?)	७	प्रा रा
१००	७२०१	जीवाभिगमवृत्ति	वृ श्रीमलयगिरि	१६वीं	२६२	प्रा सं
१०१	७२१४	ठाणाङ्गसूत्र		,,	७७	प्राकृत
१०२	७२२९	ठाणाङ्ग (स्थानाङ्ग) सूत्रवृत्ति		१९०८	१८२	प्रा रा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	७२३२	दशवैकालिकसूत्र		१७वीं	२७	प्राकृत
१०४	७४२४	,,		१८७८	२०	,, लि क अखु
१०५	७४८८	,,		१६६६	२६	,, लि क. हरजी (ललित प्रभशिष्य)
१०६	७६३६	,,		१७७७	२५	प्राकृत, लि क. ऋषि धनजी, कालावडनगरे
१०७	७३१७	दशवैकालिकसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१७वीं	५८	प्रा.रा
१०८	७५५२	दशवैकालिकसूत्र (सावचूरि)		१६२३	३७	प्रा स
१०९	४४५६	,, (सटबार्थ)		१८वीं	५४	प्रा रा., ३९वां पत्र अप्राप्त
११०	७३२३	दशवैकालिकसूत्रटीका	टी सुमतिसूरि (बोधकशिष्य)	१७वीं	५४	सस्कृत, टीकाकार ने अपनी पुष्पिका में हरिभद्राचार्य की एक टीका का भी उल्लेख किया है
१११	७४७४	दशवैकालिकसूत्रटीका (शिष्य बोधिनीनाम्नी)	हरिभद्रसूरि	१६१७	१२४	सस्कृत, लि क जिनचन्द्रसूरि मुनिराज, अणहिलपुरपत्तने
११२	७२८७	दशवैकालिकसूत्रावचूरि		१५वीं	१६	सस्कृत
११३	७६५४	दशाश्रुतस्कन्ध		१६७०	२६	प्रा , लि क मुनि महावजी, खीरपुरनगरे
११४	७४८४	नन्दीसूत्र		१७वीं	१६	प्राकृत
११५	७२५६	निरयावलिका (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१८६७	६२	प्रा रा , लि.क मूल० सुमतिहस, भाषा उमदहस, कोसाणामध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११६	७३०७	निरयावलिकासूत्र		१६६५	२६	प्रा , लि क वच्छा
११७	७३९५	निशीयसूत्र (लघु) (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१८३२	७७	प्रा.रा , लि क. कपूरविजय, हरचन्द, पीपाडनगरे
११८	७४८१	निशीयसूत्र		१७वीं	१६	प्राकृत
११९	७५४१	,,		,,	२३	,, प्रथम पत्र अप्राप्त
१२०	७०८५	प्रतिक्रमणसूत्र		१९वीं	२३	प्रा , अपूर्ण, १६वां पत्र अप्राप्त
१२१	७४४४(७)	,,		१८८५	१६८–१८०	प्राकृत
१२२	७४४५	,, आदि		१८८७	४६१	* विविध भाषा, जरी के कपडे के जिल्दबन्ध गुटके में आठ कृतियो का सग्रह है
१२३	७४४६	,, ,,		१९२२	९६	* वि भा , सुन्दर जिल्दबन्ध गुटके में १० कृतियोका सग्रह है
१२४	५९७३	प्रतिक्रमणसूत्रवालावबोध	सहजकीर्ति	१८८९	९१	प्राचीन राजस्थानी
१२५	६८५६	प्रश्नव्याकरण		१५९८	४३	प्रा., द्वितीय पत्र अप्राप्त
१२६	७२५६	,,		१७वीं	२६	प्राकृत
१२७	७२११	प्रश्नव्याकरणाङ्गटीका	अभयदेवसूरि	१६०२	८३	सस्कृत
१२८	७३४५	,, ,,	,,	१५वीं	४८	* सस्कृत
१२९	७५४७	प्रश्नव्याकरणाङ्गसूत्र (सवालावबोध)		१७वीं	९५	प्रा रा
१३०	७३१५	प्रश्नव्याकरणोपाङ्गसूत्र (सवालावबोध, पचपाठ)		१६५४	११२	प्रा अपभ्रश
१३१	७३४९	प्रश्नव्याकरणोपाङ्गसूत्र (प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित)		१७५९	७३	प्रा रा , लि क ललितहस तत्व-हस शिष्य, सप्तसदी नगर मध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	७१८१	प्रज्ञापनासूत्र		१७वीं	३२०	प्राकृत
१३३	७५४५	,,		१६५६	२२७	,, १–२ पत्र अप्राप्त
१३४	७१९७	प्रज्ञापनोपाङ्ग (सटीक, पञ्चपाठ)	मू श्रीश्यामाचार्य ? टी श्रीमलयगिरि	१७वीं	४२९	प्रा सस्कृत
१३५	७२८३	प्रज्ञापनोपागसूत्र		,,	१७१	प्राकृत, १–२ पत्र अप्राप्त
१३६	७६६८	पाक्षिकसूत्र		१९वीं	१४	प्राकृत
१३७	७४८३	पिण्डनिर्युक्ति		१७वीं	३२	,,
१३८	७२३३	भगवतीसूत्र		१६२५	४५७	प्राकृत, सवत् १६ आषाडादि २५ वर्षे फाल्गुन वदि द्वादशाया-तिथौ भगवतीसूत्र लिखितम्
१३९	७२८९	भगवतीसूत्र		१६०२	३०४	प्राकृत, लि स्था अणहलपुर
१४०	७२०३	,, टीका	अभयदेवसूरि	१७३०	३४२	सस्कृत, लि स्था जैसलमेर राउल श्रीअमरसिंहजीराज्ये
१४१	७२२०	,, वृत्ति	,,	१६वीं	४१०	सस्कृत लि क ब्राह्मण जीवा
१४२	७५६६	राजप्रश्नीयसूत्र		१६७०	८३	प्राकृत, लि क मोढज्ञातीय जोशी कुलसी
१४३	७६३५	,, (राजस्थानीभावार्थसहित)	भा० मेघराजवाचक	१७वीं	२०९	प्रा रा
१४४	७३००	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (सटीक, पञ्चपाठ)		१४१५	८१	प्रा स, प्रदर्शनीय प्रति
१४५	७२८४	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (सवालाव-बोध, पञ्चपाठ)		१७०२	७७	पा. रा , लि. क मुनि मानसिंह
१४६	७५२९	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (राजस्थानी-भावार्थसहित)		१७वीं	१३९	प्रा रा.

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४७	७६३१	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (राजस्थानी भाषार्थसहित)		१७५६	६२	लि क मुनि मनोहर, बोटाद-ग्रामे
१४८	७२२५	,,	भा० मेघराज वाचक	१९१२	११८	प्रा रा , ऋषि रूपचन्द पोहीमध्ये
१४९	७३१६	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्रवृत्ति	वृ मलयगिरि	१७वीं	७७	सस्कृत
१५०	७१८५	व्यवहारसूत्र		१७वीं	१९	प्राकृत
१५१	७४६९	,, ,,		१७वीं	१४	,,
१५२	७१८७	विपाकसूत्र (सटिप्पण)		१५१३	२४	,, लि क. वाछाक
१५३	७७६३	विपाकाङ्गसूत्रटीका	टी अभयदेवाचाय	१५६१	१६	प्रा. स
१५४	७३८४	श्रमणसूत्र (सवालाववोध)		१८वीं	८	प्रा अ , लि क. मुनि मिरकू झाझणजीशिष्य
१५५	७२३८	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति	श्रीरत्नशेखरगणि	१६५५	१८५	प्रा स , सशोधनकर्त्ता श्रीलक्ष्मीभद्र
१५६	६१३५	षडावश्यकबालावबोध	बा हेमहस	१८वीं	१२१	अ स
१५७	७४२३	षडावश्यकसूत्र		१६८८	१३	प्राकृत
१५८	७२९६	स्थानाङ्गसूत्र		१६७२	७७	,, लि स्था शुजाउलपुर
१५९	५९७८	स्थानाङ्गसूत्र (सवालाववोध, त्रिपाठ)		१७८७	२०९	प्रा रा लि स्था बीकानेर
१६०	७२२३	समवायाङ्गवृत्ति	अभयदेवसूरि	१६१८	८४	* स. प्रा., रचनाकाल ११२० वि·
१६१	७१८३	समवायाङ्गसूत्र		१६५८	५०	प्रा पातशाहअकबरराज्ये लिपीकृतम
१६२	७२१५	,, ,,		१६६७	३३	प्राकृत
१६३	७४६५	,, ,,		१६वीं	५०	,

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६४	७४६७	समवायाङ्गसूत्र		१६६२	६८	प्राकृत
१६५	७५६१	,, ,,		१८१४	१६५	प्रा. रा , लि क हीराचन्द भावचारी, लींबडीमध्ये
१६६	६४४५	सूत्रकृताङ्ग (सटीक)		१८वीं	७३	प्रा स , अपूर्ण
१६७	७१७८	सूत्रकृताङ्गसूत्र		१६वीं	५७	प्रा , लि क माणिक्यचन्द्र, नागेन्द्रगच्छे
१६८	७२०७	,, ,, (द्वितीय स्कन्ध, सस्तबक, पञ्चपाठ)	स्त. पाशचन्द्र (श्रीसाधुरत्नशिष्य)	१६५०	४८	प्रा. रा , लि क लूणिया-पोमसी पुत्रेसासूरताण, जैसलमेर-मध्ये
१६९	७२०९	सूत्रकृदङ्गटीका	शीलाचार्य (वाहरिगणसहायेन)	१६वीं	२४५	प्रा स
१७०	७४३९	सूत्रकृवङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध		१७वीं	३५	प्राकृत
१७१	५९९९	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध (सबालावबोध)		१६०१(?)	५१	प्रा. रा
१७२	७४३३	,, ,, (पञ्चपाठ)		१७वीं	३४	,, ,,
१७३	७५३१	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध (राजस्थानी भाषार्थसहित		१६५३-१६६७	७३	,, ,, मू १६५३, भाषा-१६६७, लि क ऋषिभाण
१७४	७५३२	,, ,,		१६६८	८४	प्रा. रा.
१७५	७३०१	ज्ञाताधर्मकथाङ्ग		१६७५	१८९	प्रा लि क ऋषिवणायग पुजा, केसीयामध्ये
१७६	७३५९	,, ,, (राजस्थानीभाषार्थ-सहित)	भा प्रेमजीगणि	१८४८	२२७	प्रा रा , लि क जीवनराम, नागोरमध्ये
१७७	७३९८	,, ,,		१८९९	२९८	प्रा रा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	७४३५	ज्ञाताधर्मकथाङ्गवृत्ति	वृ. अभयदेवसूरि	१६३८	७०	प्रा स, प्रथमपत्र अप्राप्त
१७९	७१९२	ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र		१६वीं	१३६	प्राकृत
१८०	७२३४	,, ,,		१७वीं	१५०	,,
१८१	७४७८	,, ,,		१४८३	९४	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६१२५	अङ्गचूलिया		१८वीं	२१	अपभ्रंश
२	७५९१	अन्तसमाधि		१९०९	७	राजस्थानी
३	७२९७	अष्टप्रकारप्रकारपूजाकथा (स्नात्र-पचाशिकावृत्ति)	माणिक्यसुन्दरसूरि	१६४८	४०	सस्कृत, रचनाकाल १४८४, लि स्था अणहल्लपुरपत्तन
४	७५२५	अष्टान्हिकव्याख्यान (पर्यूषणादि)		१८८८	१०	सस्कृत
५	७५३७	आगमवाणी आदि	आगमसारोद्धारगत	१८वीं	१४	राजस्थानी
६	६१६२	आगमसार	देवचन्द्र (खरतरगच्छीय)	१९वीं	५९	हिन्दी-रा, र का १७८३ लि क मुनि दुर्गदास, जालोरमध्ये, पत्र ५६–७९ तक भिन्नलिपि है
७	७०१६	आगमसारोद्धारभाषा	देवचन्द्र	१८९०	७९	* हि रा र का १७७६ लि क मथेन जसकरण, कृष्णगढनगरमध्ये
८	७३३१	आगमसारोद्धाररास	,, मुनि	१८३२	२८	हि रा, लि स्था पुष्पावतीनगरे
९	७२७३(३)	आदिनाथदेशनोद्धार		१७वीं	१२–१६	प्राकृत
१०	४७६६	आदिपुराण	सकलकीर्तिभट्टारक	१८वीं	२०४	सस्कृत, अन्तिम पत्र अप्राप्त
११	७११०	आराधनासूत्र (सार्थ)		१७३९	९	प्रा रा, प्रथम पत्र अप्राप्त, अन्त्य पत्र शोभन
१२	५९३४	उपदेशवालावबोध	सोमसुन्दर	१७वीं	७९	स प्रा
१३	७३०८	उपदेशमाला (सावचूर्णि)	श्रीरत्नशेखर	,,	२३	प्राकृत-सस्कृत
१४	४०१८	उपदेशमालाप्रकरणकथा (सवा-लावबोध)	धर्मदासगणि (वृद्धिविजय ?)	१८५९	२१८	प्रा स रा, लि क विजयचन्द्र स्थविर, पाल्लीदुर्गे
१५	५९९०	उपदेशमालासूत्र (सटिप्पण)		१६९३	३६	प्राकृत, लि क मुनि कल्याण-सुन्दर, लिपि सुन्दर व प्रदर्शनीय

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	४३०२	ऋषभपचाशिका		१७वीं	७	* प्राकृत
१७	७४६३	ऋषिमण्डलप्रकरण		,,	१२	प्राकृत
१८	७२६८	,, ,, (सावचूर्णि पञ्चपाठ)		,,	१६	प्रा. स.
१९	७२४२	ऋषिमण्डलवृत्ति	शुभवर्द्धनगणी, (श्रीसाधुविजयगणिशिष्य)	१८वीं	३५३	,, लि स्था रामगढ़
२०	७३०६	कर्मग्रन्थपञ्चकावचूरि		१६वीं	४३	स प्रा
२१	७२८८	कर्मग्रन्थषट्क (स्वोपज्ञटीकोपेत)	देवेन्द्रसूरि (?), मलयगिरि	१७वीं	२९२	,, १ से ५ तक स्वोपज्ञटीका तथा छठे की मलयगिरिकृत टीका है
२२	७२३९	कर्मग्रन्थषट्कसूत्रवृत्ति (स्वोपज्ञ, सटीक, त्रिपाठ)	देवेन्द्रसूरि, मलयगिरि	१६४९	२२५	,, ,,
२३	७२६७	कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्र सैद्धान्तिक	१६०२	१२	प्रा, लि.क लक्ष्मीरत्न
२४	५४१८(१०)	कर्मपचीसी		१९वीं	१०९–११२	हिन्दी
२५	५०९०	कर्मविपाक (सटिप्पण, सप्ततिका पर्यन्त)		१८वीं	४७	अपभ्रंश
२६	६८८०	कर्मविपाकग्रन्थव्याख्या	मतिचन्द्र (गुणचन्द्रशिष्य)	१९वीं	५६	स प्रा रा
२७	७८५५	कालकसूरिकहाणय (सचित्र)		१६वी	९	प्राकृत, चि स. ६
२८	५३६१	कालकाचार्यकथा (सचित्र)		१५वीं	१२	,, ,, ५
२९	७८४८	,, ,, ,,		१५३१	६	,, ,, ३, त्रुटित, अपूर्ण
३०	५३६०	कालकाचार्यकथानक (सचित्र)		१५वीं	२५	,, ,, १२, पत्र ७९–१०३ तक

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४४२२	कालिकाचार्यकथा		१७वीं	१६	प्रा रा
३२	७२५१	गुणस्थानकवृत्ति	रत्नशेखरसूरि	१६८८	१४	सस्कृत
३३	७३६४	गुणस्थानविचार	,,	१६वीं	३	,,
३४	५४२७(६)	गुणसख्या (१०८ गुणोकी सख्या)		१६वीं	१४८–१४६	प्राकृत
३५	६०२८	गुर्वावली	क्षमाकल्याणमुनि	१८७२	२८	सस्कृत, रचनाकाल १८३०
३६	६३३८	गुरुचारगूढाषट्पचाशिका आदि		१८वीं	६२	हिन्दी, गुटका
३७	७७४१(४)	गौतमपृच्छा		१७वीं	३८–४१	प्राकृत
३८	७२४६	गौतमपृच्छावृत्ति	मतिवर्द्धन	१७५७	३१	प्रा. सस्कृत, र का. सिद्धौरामे मुनौचन्द्रे (१७३८) लि क ऋषि रत्ना
३९	७५२७	,, ,,	,, (पाठक)	१८वीं	४३	प्रा. स
४०	७३०४	चउसरण (सबालावबोध)		१७वीं	१०	प्रा. अ
४१	७३८५	चउसरणप्रकीर्णक		,,	६	प्रा, मोढजातीय जोशी माहव (माधव) लिखितम्
४२	७१२६	चतुर्दशस्थानकविचार		१७७५	१६	अ, लि क निहालचन्द्र, पाडलीपुरे, पत्र १५–१८ तक अप्राप्त
४३	५०९२	चतुर्विंशतिदण्डकसूत्रम् (सबालावबोधम्)	गजसागरगणी (धवलचन्द्रशिष्य)	१६९८	५	प्रा अ., लि क सौभाग्यगणि शिष्य, भट्टनेरकोटमध्ये
४४	७५९०	चातुर्मासिकव्याख्यानपद्धति		१९०४	७	सं प्रा, लि क हमीरविजय, कृष्णगढ़मध्ये
४५	७४६८	ज्योतिष्करण्डकसूत्र		१७वीं	११	प्राकृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६	६१०४	जम्बूअध्ययन (जम्बूचरित्र)		१६८७	१६	अपभ्रंश, प्रथम पत्र अप्राप्त
४७	५३२७	जिनदर्शन (जिनरक्षितजिनपालको चौढालियो)		१६३६	२	सस्कृत
४८	५१३६	जिनप्रतिमापूजापद्धति		१७वीं	२६	स प्रा , अपूर्ण
४६	७१८६	जीतकल्पवृत्ति	तिलकाचार्य	१६वीं	४०	सस्कृत
५०	७१८६	जीवविचार (सस्तवक)		१७५८	१०	प्रा अ , लि क मोहनविमल
५१	७२३०	जीवविचार (सटीक)		१५८१	२	प्रा स , लि स्था शमीग्राम, सौभाग्यनन्दिसूरिविजयराज्ये
५२	६८४३	जैनपूजाविधि, स्तुति आदि		१६वीं	२३७	विविध भाषाके इस गुटकेमें तीर्थङ्करोकी पूजाविधि, आरती, स्तुति, क्षेत्रपालपूजादि सगृहीत हैं
५३	५३३४	तत्त्वार्थाधिगमसूत्र		१६०१	२५	स , लि क देवचन्द्र
५४	६३०२	,, ,, (सटिप्पण)	उमास्वामि	१८वीं	७	,, ,, विमलदास
५५	४६१४(६)	,, ,, (सार्थ)		१८७१	२०१–२०७	सं रा
५६	७७६१	तत्त्वार्थाधिगमसूत्रटीका	सिद्धसेन	१६३१(?)	४४४	सस्कृत
५७	७७६०	तत्वार्थाधिगमसूत्रभाष्य	उमास्वाति (मि)	१६३१	६६	,, लि क प नाइया, श्री अचलगच्छेश्वर श्रीधर्ममूर्त्ति सूरीश्वर विशदोपदेशात
५८	६२६६	तत्वार्थाधिगमसूत्रभाषाटीका		१८वीं	१०४	स रा , ऊपरके पत्रा पर सुत्राजोकी टीका' लिखा है
५६	६०३५	द्रव्यसङ्ग्रहवृत्ति	मू नेमिचन्द्र, वृ ब्रह्मदेव	१६३१	६१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०	६२७६	दीपमालिकाकल्प	जिनप्रभसूरि	१८२३	२२	स, प्रतिका शोधनकर्त्ता ऋषि सुखदेव है
६१	७६३२	दीपमालिकाकल्प, दीपमालिकाकल्प बालावबोध		१८११	२०	स रा, र का 'शरयुग शिखि-शशिवर्षे (१६४५)' लि क कृष्णाजी श्राड्‌धडामध्ये
६२	७३६२	दीपालीकल्प (दीपमालिकाकल्प)	जिनसुन्दरसूरि (सोमसुन्दरसूरि-शिष्य)	१८वीं	१५	स, लि क हेमविजय 'सवत्सरेऽग्निद्विपविश्वसमिते'
६३	६०३६	दीपोत्सवकल्प		,,	६	अपभ्रंश
६४	५४२७(४)	देवमहिमादि		१९वीं	४९–६४	स रा अ, प्रतिमापूजन एव स्तवन भी लिखित है
६५	५९४९	धर्म्मप्रश्नोत्तरमहाग्रन्थ	सकलकीतिभट्टारक	१६१३	७४	स इसमें १११६ प्रश्न हैं तथा ७२वें पत्र की लिपि नूतन है।
६६	४५६२	धर्म्मोपदेशश्लोक (सार्थ)	महावीरभगवदुक्त अ भीमविजय	१८४९	८०	प्रा र, पादलिप्तनगरे शत्रुञ्जय-तीर्थेलिपीकृतम्
६७	४५६९	धर्म्मोपदेशश्लोका'	जैनपुराणोक्त	१९वीं	६	* संस्कृत
६८	५३७६(१९)	न्हवणकथा (स्नपनकथा)		१७६१	२१८–२२६	सस्कृत
६९	४०१६	नवकारबालावबोध		१८२१	४	प्रा रा, लि स्था जैसलमेर
७०	६३२०	नवकारमन्त्र आदि		१९वीं	६१	हि, इस गुटके मे जिनदर्शन, श्रीपालदर्शन, पार्श्वनाथस्तोत्र, बारहभावना जैनशतक' भक्तामरबालावबोध (हेमराजकृत) भी लिखित है।
७१	७४४४(४)	नवतत्त्व (सटबार्थ)		१८८५	१२९–१३६	प्रा रा, लि क नेमविजय

क्रमाङ्क	ग्रन्याङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२	४०१६	नवतत्त्व (सवालाववोध)	पद्मचन्द्रशिष्यःकश्चित् (खरतर-गच्छीय)	१८०३	५२	स प्रा.रा, र का १७६६, लि.क ऋषिदेवचन्द्रादि, लि स्था आगरा
७३	४०६१	,, ,,	मेरुतुङ्गसूरि (श्रीगच्छेश)-शिष्यः कश्चित्	१६५२	७१	प्रा रा, लि.क केशराज, श्रीरामपुर
७४	४४६२	,, ,,		१७वीं	१०	प्रा रा, लि क. हसविजयगणि
७५	७६५६	,, ,,	वा पार्श्वचन्द्र	,,	८	प्रा रा
७६	७५२१	नवतत्त्वटीका		१८७७	६	स प्रा, लि क नेमचन्द्र, फलौधीग्राममध्ये
७७	७५३६	नवतत्त्वप्रकरण (सवालाववोध)		१८०७	१३	प्रा स, लि क विजयगणि रामसेणनगरे
७८	४४२३	नवतत्त्वविचार (सवालाववोध)		१६वीं	६	प्रा रा
७९	६२३०	नेमिपुराण		१८८६	२१२	स, लि क हेतराम
८०	७४७९	प्रत्याख्यानभाष्यत्रयावचूरि	सोमसुन्दरसूरि	१६वीं	२३	प्रा.स
८१	७४७६	प्रत्याख्यानसूत्रभाष्यत्रय (सावचूरि, त्रिपाठ)	मू देवेन्द्रसूरि, अ सोमसुन्दरसूरि	१६५७	१९	प्रा स
८२	७५४४	प्रत्येकवुद्धचरित्र		१७वीं	१०	,, लि क धर्मकीर्ति
८३	७८२४	प्रतिष्ठाकल्प		१८वीं	१५	स.प्रा
८४	७२००	प्रवोधचिन्तामणि	जयशेखरसूरि	१५३३	७२	*सस्कृत, र का.–१४६२
८५	७३२१	प्रवचनसारोद्धार		१७वीं	४४	प्राकृत
८६	७३४७	,, ,, (सटीक)	सिद्धसेन	१६५०	३७९	*प्रा स
८७	७२७६	पञ्चनिर्ग्रन्थिप्रकरण (सावचूरि, पञ्चपाठ)		१७वीं	५	,,
८८	७३०९	पञ्चनिर्ग्रन्थिसूत्र (सावचूरि)	मू अभयदेवसूरि	१७८०	७	,, लि क प कल्याणचन्द्र

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८९	७१६३	पञ्चपरमेष्टिपूजनप्रकार		१९वीं	३६	सस्कृत, अपूर्ण
९०	६२८७	पञ्चेन्द्रिय चौपाई		१८५३	९	हि र का. १७९१
९१	५१३०	पद्मावतीकल्प		१७वीं	२	सस्कृत, त्रुटित एवं आद्य पत्र अप्राप्त
९२	६४०१	पर्य्यन्ताराधनासूत्र	सोमसूरि	१७४०	७	प्रा स , लि क ऋषि छीतर, विराटनगरे, पातसाहिश्रीरग-विजयराज्ये
९३	७७४१ (३)	परमात्मप्रकाश		१७वीं	१२–३८	प्राकृत
९४	७१५९	पार्श्वनाथपूजाद्यभिषेकान्त आदि		१९वीं	१२१	स हि रा , अभिषेकनामक कृति अभयनन्दि द्वारा रचित, र का १५९७, इस गुटकेमें तत्वार्था-धिगमसूत्र, भक्तामरस्तोत्रादि अनेक कृतिया भी लिखित हैं।
९५	७१८२	पिण्डविशुद्धि (सावचूरि, पञ्चपाठ)	मू. जिनवल्लभ, वृ श्रीचद्रसूरि	१७वीं	१२	प्रा स.
९६	७२०६	पिण्डविशुद्धि		१६वीं	४	प्रा प्रति के कोण भग्न हैं।
९७	६९०९	पूजाविधि (जैनतीर्यङ्करपूजाविधि)		१९वीं	११३	विविधभाषा के इस गुटकेमें चौवीस एव बीस तीर्थङ्करोकी पूजाविधि तथा दशवैकालिक, तत्वार्थाधिगमसूत्र एव विविध स्तोत्रादि सगृहीत हैं।
९८	७४१८	पोषधाविविधि		१८७५	९	प्राकृत, लि क कवीन्द्रसागर
९९	७५२२	वृहच्छान्तिटीका आदि		१९०१	२७	सस्कृत, इसमें लघुशान्तिटीका, दण्डकवृत्ति, नवग्रहस्तोत्रवृत्ति एव विद्याविलासकथा लिखित हैं।
१००	४३०१	वृहदाराधना		१५९०	१३	प्रा रा , लि स्था श्रीनारदपुरी, लि क गुणलाभगणि

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०१	५२८७	भक्तामरपूजापद्धति		१९वीं	१८	सस्कृत
१०२	७३३९	भगवत्यङ्गबीजक		१७वीं	९	प्राकृत
१०३	६०५०	भद्रबाहुसहिता		१९वीं	९९	सस्कृत
१०४	७१९६	भवभावना (मूल)		१५९८	१८	प्राकृत
१०५	७१९९	”	श्रीहेमचद्रसूरि	१७वीं	२६	”
१०६	७२८५	भवभावना (मूल)	हेमचन्द्रसूरि मलधारी	”	९	प्राकृत
१०७	७३२०	भवभावनामूलप्रकरण	”	१८६७	२५	,, अन्तिम पत्र अपेक्षाकृत नवीन है, उसी पर उक्त सवत् लिखा है, किन्तु मूल प्रति इससे पूर्वकी प्रतीत होती है
१०८	७२५२	भवभावनासूत्रप्रकरण		१७वीं	३७	प्राकृत
१०९	७२७३(२)	भववैराग्यशतक		”	६–१२	”
११०	५४१८(६)	भवसिन्धुचतुर्दशी	रूपचन्द्र	१९वीं	९६–९७	हिन्दी
१११	४०८५	मङ्गलकलशचोपाई	लक्ष्मीहर्ष	१८१९	२७	* अ. प्रा , लि स्था खींवसर-ग्राम, रचनाकाल १७१९, स्था.–काकदीनगर
११२	५१२०	मङ्गलफलश तथा द्वितीयवाचना	मं कनकसोम	१७वां	१०	प्रा द्वितीयवाचना पत्र १-५ तक में लिखित है, मङ्गलकलशका र.का १६४९ है, उक्त दोनो ही प्रतिया अपूर्ण हैं
११३	५३०१	महापुराणसग्रह	गुणभद्राचार्य	१९वीं	१३८–१८१, १८४–२५८	सस्कृत, अपूर्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
११४	७१०५	मौनएकादशी		१८वीं	३	स प्रा
११५	७२९३	मौनएकादशीकथा		१७वीं	२	सस्कृत, लि.क पं० सोमनन्दन
११६	५०८७	लोकनालाख्यबालावबोध	नयविलास (जिनचद्रसूरिशिष्य)	१८वीं	५	,,
११७	७२९४	वन्दारुवृत्ति		१५५९	७८	,, अन्तिम पत्र के अक्षर उड गये हैं
११८	७३४३	वनस्पतिसित्तरीअवचूरि	प्रज्ञापनोपाङ्गसूत्रगत	१६वीं	३६	प्राकृत
११९	६०३४	वर्द्धमानदेशना (गद्यबन्ध)	कीर्तिगणि	१८९०	१०९	सस्कृत
१२०	६२२०	वर्द्धमानपुराण	सकलकीर्ति	१७९८	१४६	,, लि क गुणविजय
१२१	४२९९	विंशतिस्थानकविचारामृतसग्रह	जिनहर्षगणि (श्रीजयचन्द्रसूरि-शिष्य)	१७वीं	६६	* प्रा स, प्रथम पत्र अप्राप्त, र स्था. वीरग्राम, र का १५०२
१२२	७४७७	विचारामृतसग्रह	कुलमण्डनसूरि	१५वीं	३१	* स प्रा, र का १४४३
१२३	७१७९	विवेकविलास	जिनदत्तसूरि	,,	२१	सस्कृत
१२४	७०७९	विशेषणवती	जिनभद्राचार्यगणि क्षमाश्रमण	१८वीं	९	प्राकृत
१२५	६१८३	श्रावकातिचार		१५५८	१०	अपभ्रंश
१२६	५९७०	शतकर्म्मग्रन्थबालावबोध	देवेन्द्रसूरि	१८वीं	१८	,, लि क. ऋषि विश्राम परगरायपुरे
१२७	४०२६	शीलोपदेशमालाबालावबोध	मू जयकीर्त्ति, बा मेरुसुन्दर	,,	१५०	* प्रा रा, लि क गुणपति-सागर
१२८	४०३३	,, ,,	,, ,, ,,	१६११	१६५	प्राकृत
१२९	७३३०	षडशीतिकशतककर्म्मग्रन्थ (स्वोपज्ञ-टीकोपेत)	देवेन्द्रसूरि	१६५४	११०	सस्कृत
१३०	७४१६	षष्ठिशतक		१६वीं	४	प्राकृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३१	५९८८	षष्टिशतकबालावबोध		१८वीं	१६	प्राकृत
१३२	७३५३	स्थविरावली		१९वीं	४१	प्रा. स
१३३	६३२७	स्वर्णाचलमाहात्म्य	देवदत्त दीक्षित (हर्षसागरात्मज)	१८४७	६७	स , लि स्था भरथपुर
१३४	७२२१	सङ्ग्रहण्यवचूरि	देवभद्रसूरि	१४९९	२०	संस्कृत
१३५	७३२५	,,	श्रीचन्द्रमुनि (हर्षपुरीय)	१६वीं	२३	,,
१३६	६१३३	सङ्ग्रहणी		१६२४	१७	प्रा , लि स्था अलवर, प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
१३७	७४०५	,, (मूल)		१८६६	४०	प्राकृत, लि.क. ऋषि वृद्धिचन्द्र, चूरूनगरमध्ये
१३८	७५४९	,,		१७२२	८	प्रा., इसमें दण्डक भी लिखित हैं। लि क यशःसागरमुनि, सावडीमध्ये
१३९	७४७५	,, (सटीक, त्रिपाठ)	श्रीचन्द्रसूरि, श्रीदेवचन्द्रसूरि	१६६०	५१	प्रा.स , लि क नयनगणि जीवकलशगणिशिष्य
१४०	७५६२	सङ्ग्रहणीप्रकरण (सस्तवक)	स्त. वच्छराज	१७१०	३१	प्रा रा
१४१	७६३३	सङ्ग्रहणीप्रकरण	उत्तमऋषि	१८वीं	३५	,, रचनाकाल अष्टचतुरशीतिके आगराख्ये महानगरे
१४२	४३५६	सङ्ग्रहणीबालावबोध	शिवनिधानगणि	१८३७	८५	प्रा रा., लि क ऋषि आनन्दचन्द्र, श्री बेनातटपुर
१४३	५९७२	,, ,,	,,	१८३९	६२	प्रा. रा., लि.क शिवराज, श्रीवलभा (भी) पुर
१४४	७३२६	सङ्ग्रहणीवृत्ति	देवभद्रसूरि (श्रीचन्द्रसूरिशिष्य)	१८७७	१०१	संस्कृत, ३४ वा पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४५	४००४	सङ्ग्रहणीसूत्र (सघेणनो रासछन्द)	मतिसार	१८४५	२५	* राजस्थानी, प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क प्रमोदतिलक, राजनगरे
१४६	४०३१	सङ्ग्रहणीसूत्र (सस्तबक)	लेख(श)सूरि	१६६२	२७	* प्रा अ, लि कर्त्री-आर्याश्री ५ सज्जनजीरी शिष्यना आर्यसू-वट, बीलाडाग्राम
१४७	५३५३	,, (सचित्र)		१८वीं	६७	प्रा रा., चि स. ३२
१४८	६१४१	,, ,,		१८३०	४७	हि रा अ, लि स्था डीडवाना
१४९	७१७५	,, ,,		१८२१	६४	प्रा अ, चि स ३५
१५०	७८४३	,, ,,		१६७५	२४	प्रा, चि स ५
१५१	७२७७	सङ्ग्रहणीसूत्र		१७वीं	२०	प्राकृत
१५२	७३२४	,,		१८६०	२२	,, लि क सुन्दरहम, राणा-वासमध्ये
१५३	७३२७	,, (सबालावबोध, पञ्च-पाठ)	देवभद्रसूरि	१६७८	३१	प्रा. अ
१५४	७४४४(२)	,, (सटबार्थ)		१८८५	५४–१२०	,, लि क नेमविजय, गोघु-न्दाग्राममें लिखित, टिप्पणीका नाम रूपाली है
१५५	४१४३	सप्ततिशास्त्रबालावबोधविवृति	मतिचन्द्रमुनि	१७वीं	९२–१८३	स ,अ रा, प्रति सुन्दर किन्तु अपूर्ण है
१५६	६२०७	सप्तव्यसनकथासमुच्चय	भारामलसघी (परसरामसुत)	१८७८	६२	हिन्दी, लिखित महाचन्द्र श्रीमालवासी पापडदाका पटवारी
१५७	७५४३	सप्तस्मरणसूत्र (राजस्थानीभाषार्थ-सहित)		१८४३	३६	प्रा. रा., लि क रूपसोम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५८	७०१५	सप्तमव्याख्यान		१८वीं	१७	स अ , इसमे ऋषभदेव, आदिनाथ आदिके चरित्रका व्याख्यान है, प्रतिके पत्ने चिपके हुए हैं
१५९	७६६६	सम्बोधसत्तरीप्रकरण		१९वीं	७	प्राकृत
१६०	६२०३	सम्मेवशिखरमाहात्म्य	देवदत्त दीक्षित	,,	८१	* सस्कृत
१६१	७११८	समवस्तुतिपूजा		,	४०	,, अपूर्ण
१६२	७२१७	समाधिशतकटीका	प्रभाचन्द्र	१६६५	२५	* ,, लि क -प केशव
१६३	७१९३	साधुसमाचारी		१८वीं	६	प्रा अ , लि क कमलविजय साध्वी श्रीसौभाग्यश्रीपठनकृते, प्रति सुन्दर व चित्रित है
१६४	७२१८	सार्द्धशतकवृत्ति	धनेश्वरसूरि	१६वीं	७०	स अ , आद्य ४ पत्र अप्राप्त, प्रतिके कोरा खण्डित
१६५	५१३४	सारोद्धार (पचखाणा, सटिप्पण)		१७वीं	४०	प्रा. अ
१६६	७३८२	सिद्धान्तसार		१७६३	६५	प्रा स.रा , लि क लालसागरगणि
१६७	६१४७	सिद्धान्तसारप्रदीपक	सकलकीर्ति	१८११	१२६	स., लि क. पं मयारुचि, जयसिहपुरामध्ये (माधवसिहराज्ये)
१६८	७२६९	सिद्धिवण्डिका		१६वीं	४	प्रा.
१६९	७५३९	सूर्यप्रज्ञप्ति		१७वीं	९२	,,
१७०	६१०९	सस्तारकप्रकरण (सवालावबोध, पञ्चपाठ)		,,	१०	अपभ्रश
१७१	५९११	हरिवशपुराण	जिनसेनसूरि	१६वीं	२९९	* सस्कृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७४१(१)	अपभ्रंशस्फुटपद्य		१७वीं	१०–१२	
२	७७४१(५)	,,		,,	४२–४३	
३	६०२५	इग्यारसितपसुव्रतकथा		१८वीं	४	अपभ्रंशमें
४	५२०७	औदुम्बरवंशपरिचय		१९०८	१	यह एक प्रकारका पञ्चनामा है जिसमें जयपुरके महापण्डितों एव राजगुरुओंकी मूल सम्मतियां अंकित है।
५	६८२७	औषधसंग्रह आदि		१९वीं	१९३	इस गुटकेमें औषधिके नुस्खे, यंत्रमंत्र, शकुन आदिका संग्रह है
६	७७२२(९)	,,		१८वीं	१०६	इसमें अदृष्टव्रणकी औषधि द्रष्टव्य है
७	५१२३(१)	गंगास्तोत्र		,,	१	प्राचीनसंस्कृतमिश्रित हिन्दी
८	४४५२(४२)	चण्डिकादेवीचित्र		,,	४९ वां	
९	४४५२(४३)	,,		,,	५० वां	
१०	४४५४	चन्द्रायणा, कवित्त		,,	१	२३ दोहे, २ कवित्त राजस्थानी एव व्रजभाषा
११	७१७७	जन्मपत्र (सचित्र गोलक)				नवग्रहोंके सुन्दर चित्र अंकित हैं
१२	६९९०	जयपुरराज्य एवं सदाशिवभट्टसे सम्बद्ध टिप्पणियां आदि			प्रकीर्ण पत्र	कामदारी लिपिमें इतिहास
१३	७०६०	ढाईद्वीपका पटचित्र				
१४	७०५९	,,				

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	७८०६	तात्रिकयन्त्र (भूगोलपटचित्र)		१९वीं	१	
१६	४८१०	तारतम्य (गद्य)		,,	६	श्रीकृष्ण विषयक व्रजभाषागद्यमें
१७	१५०६	द्वात्रिंशदपराधा, दशमहापराधा, माघमासोत्सवादि		,,	४	संस्कृत, राजस्थानी इसमें वसन्त पञ्चमी के दिन भगवत्प्रतिमा के शृङ्गार की विधिद्रष्टव्य है
१८	५३७६ (५)	दशलाक्षणिककथा	शुद्धकीर्ति	१८वीं	८७–९०	प्राकृत
१९	७७४१ (७)	प्रकीर्णपद्यानि		१७वीं	८०	संस्कृत अपभ्रंश
१०	७०००	प्राकृतगाथाकोशटीका	मू. शालिवाहन टी. गङ्गाधरभट्ट	१९वीं	१६	प्राकृत संस्कृत अपूर्ण
२१	७३३८	पुष्पमालाप्रकरण	सोमतिलकसूरि	१५वीं	१४	प्राकृत
२२	४४८१	वृहत्क्षेत्रसमास		१७८५	१९	विषय ज्योतिष, लि क. दौलत-सागरगणि
२३	६३९८	वलिदानपद्धति.		१९	६	तन्त्रोक्त
२४	६८५५	भागवत (मराठी अनुवाद)		१९वीं		प्रकीर्ण पत्र एकादशस्कध पर्यन्त
२५	४०८३	मजलस		१८५२	३	प्राचीन हिन्दीगद्य, जिनसुखसूरि प्रशस्ति, लि क प गोडिदत्त स्थान पालीग्राम
२६	१४५४८ (१)	मोक्षखेडा	वनारसीदास	१९वीं	१–३	पजावी में
२७	५४८४	रामविजयमहाकाव्य	श्रीधर	१८५२	५६४	र.का. शक स. १७१७, मराठी भाषा में, लि क वालाजी भीखाजी, रेवातटे राजराजेश्वर सन्निधौ
२८	५५५०	,,	,,	१८वीं	९८	आरभसे लेकर दशम अध्याय तक

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२९	७११६	,,		१८६१	३६७	र.का १६२५ शाके(१७६० वि.) अध्याय ११ से ४० तक स. ५५५० और ७११६ की प्रतियोंको मिलाकर ग्रथ पूर्ण हो जाता है
३०	५३७६(११)	रोसहकीजयमाला		१७६२	१११–११२	लि क डालचन्द नथमलसुत लि स्था दरियावाव
३१	६०६२	विष्णुमहोत्सवमाला	केसरीकवि वालकृष्णभट्टसुत	१८६५	२४	
३१	५२३७	वैराग्यशतक		१७४५	१५	प्रा रा पु, लि क मनोहर इन्द्रजीत शिष्य
३३	६६७७	पट्चक्रनिरूपणखरडा		१९००	१	
३४	५२३६	त्रैलोक्यसाधना		१६७९	१२	लि क धर्मकीर्ति उपाध्याय मागलोर मध्ये
३५	७१७६	ज्ञानवाजीकापटचित्र		१९वीं	१	

परिशिष्ट १

[कतिपय ग्रन्थों का विशेष परिचय]

१–स्तुतिस्तोत्रादि

८. ४२३४[1] अहल्यास्तोत्र

आदि– ॐ ततो दृष्ट्वा रघुश्रेष्ठ पीतकौशेयवाससम्,
वनुर्बाणधर राम लक्ष्मणेन समन्वितम् ।
अन्त – ब्रह्मघ्नो गुरुतल्पगोऽपि पुरुष स्तेयी सुरापोऽपि च
भ्राता रा [म्रा] मविहिंसकोऽपि सतत भोगैकवीधा (वद्धा) तुर
नित्य स्तोत्रमिद जपन् द्युपतित भक्त्या हृदिस्थ स्मरन्,
ध्यायेन्मुक्तिमुपैति किं पुनरसौ स्वाचारयुक्तो नर ॥ २८

इति श्रीअध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसवादे वालकाण्डे अहल्यास्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

९ ४२५४ अज्ञानविमोचनस्तोत्र

आदि– ॐकारे आदिरूपे सुकृतवहुविधे श्वेतपीते च कृष्णे
नीले रक्ते कपोते तदुपरि रहिते सर्ववर्णे विवर्णे।
प्राणापाने समाने विपरितकरणे व्यान उद्यानपीठे
एको व्यापी शिवोऽय इति वदति हरिर्नास्ति देवो द्वितीय ।
अन्त– ध्याना ध्याने विज्ञाने जयविजयकरे भावभावे विभावे
रामारामेति रामे अमृतविषमये लुब्धचन्द्रे अलुब्धे
स्वर्गे नर्के अनर्के अखिलखिलमये चेतिचेते अचेते
एको व्यापी शिवोऽय इति वदति हरिर्नास्ति देवो द्वितीय ॥१०

इति श्रीनन्दीपुराणे नारायणकृत अज्ञानविमोचनस्तोत्र सपूर्ण ।

४८ ७१४८ गुरुस्मरणाष्टक (स्तोत्रसग्रह)

पत्र– १, १४, १६, १८, १९ वा अप्राप्त

(१) प्रीतस्तव (२) गोपालमत्रध्यान (३) राधिकाशतनाम (४) कृष्णशरणागति-स्तोत्र (५) दशश्लोकी (६) राधाष्टक (७) चतुश्लोकी (८) आदित्यस्तोत्र (९) निवे-दनाष्टक (१०) नारदशरणचतुष्क (११) निम्बार्कशरणागतिचतुष्क (१२) आचार्य पचकस्तोत्र (१३) पचश्लोकी (१४) राधास्तव (१५) आदित्यप्रस्तव (१६) निवादित्य-लघुस्तव (१७) युग्मषोडशनामस्तव (१८) यमुनाष्टक (१९) गोपालस्तवराज (२०) हरिव्यासाचार्याष्टक (२१) गुरुस्मरणाष्टक (हिन्दी) ।

---

१ प्रथम सख्या क्रमाङ्क और द्वितीय सख्या ग्रन्थाङ्क - सूचक है ।

१३६   ६७०१   यमुनाष्टकादिस्तोत्र, ४८ कृतियां।

श्री वल्लभाचार्य रचित—१ यमुनाष्टक २ बालबोध ३ सिद्धांतमुक्तावली ४ सिद्धान्तरहस्य ५ नवरत्नस्तोत्र ६ अन्तःकरणप्रबोध ७ विवेकधैर्याश्रय ८ कृष्णाश्रय ९ चतुःश्लोकी. १० पुष्टिप्रवाहमर्यादा ११ भक्तिवर्द्धिनी १२ जलभेद १३ स्वतन्त्रपद्यानि. १४ सन्यासनिर्णय १५ निरोधलक्षण. १६ सेवाफल १७ पञ्चश्लोकी। (विट्ठलेशरचित). १८ यमुनाष्टपदी १९ गोपीजनवल्लभाष्टक २० गोकुलाष्टक २१ मधुराष्टक (वल्लभाचार्य) २२. भागवतसारसमुच्चयेनामसहस्रम् २३ नामावलीत्रिविधनीला २४ सेवाफलविचार २५ पूतनामोक्ष २६ गोपालाष्टक २७ नवनीतप्रियाष्टक २८ शरणाष्टक २९ दैन्याष्टक ३० यमुनादेवाष्टक ३१ गिरिधार्यष्टक ३२ गोकुलेशाष्टक ३३ जन्मरहस्यनिरूपणाष्टक ३४ वल्लभभावाष्टक ३५ स्वामियुगलाष्टक ३६ पञ्चाक्षरगर्भितस्तोत्र ३७ वल्लभशरणाष्टक ३८ सप्तश्लोकी भागवत ३९ स्वामिन्यष्टक ४० स्वस्वामिनीस्तोत्र ४१ आर्या (वल्लभ) ४२ आर्या (विट्ठलेश) ४३. आर्या (रघुनाथ) ४४ शिक्षाश्लोकी ४५ दैन्याष्टक ४६ भुजगप्रयाताष्टक ४७ अष्टाक्षरमन्त्रार्थ ४८ स्फुट पद्य।

३—कर्मकाण्ड

२६   ५७३९   कुण्डकल्पद्रुम

आदि— ॐ मित्यक्षरमद्वितीयमनघं तत्सद्गृहदन्तःस्थितं,
नत्वा सौति बिभर्ति विश्वमखिलं यस्मिन् पुनर्लीयते।
शास्त्रं वीक्ष्य समुद्धराम्यथ गता श्रीमाधवोऽहं गुरोनिर्मथ्याङ्कसमुद्रमिष्टफलदं श्रीकुण्डकल्पद्रुमम्॥ १

अन्त — आसीत् काश्यपवंशजः क्षितितले श्रीमानुदीच्याग्रणीर्गोविन्दः श्रुतिवित्तदात्मज इहाभूत ··· नागयण।
तत्सूनुर्निगमक्रियासु निपुणः कृष्णाभिधस्तत्सुतः
शुक्लो माधवसञ्ज्ञको रचितवान् श्रीकुण्डकल्पद्रुमम्॥
भ्रान्ता भद्रा ये गणिताटवीषु फलागयादौ विकलाश्च तेषाम्।
कृते सुखेनेष्टफल. शिवाग्रे 'नापीपुरे'ऽरोपि सुकल्पवृक्षः॥
संवर्द्धितो यः कृपया शिवेन फलप्रदोऽस्त्वाविति बालकानाम्।
शिवः प्रसन्नो भवतीह येषां तेषां फलाप्तिर्नहि संशयोऽत्र॥
पद्य सबाधं यदि मत्कृतौ चेद् ग्राह्यं च तत् साधुजनैर्विशोध्य।
स्वर्वाहिनीसङ्गमतः कुवीथ्या कुनिम्नगायाश्च यथैव तोयम्॥
रविघनमितवर्षे विक्रमार्के प्रयाते (१७१२)
नगनगतिथितुल्ये (१५७७) शाककाले प्रवृत्ते।
शरदि मनुजमाने मन्मथे चैपशुक्ले॥
परिणितिथियुतचन्द्रे कुण्डकल्पद्रुमोऽभूत्।

२७. ४६६० कुण्डतत्त्वप्रदीप

आदि– नत्वाऽच्युतब्रह्ममहेशमूर्तीरिष्टेषु पूर्तेषु यदङ्गमाद्यम् ।
साग सम कुण्डमनेकभेद ब्रूतेऽखिल तद्बलभद्रसूरि ॥ १

अन्त– कल्पे श्वेतवराहनाम्नि विदिते वैवस्वते सप्तमे
सन्मन्वन्तरकेऽष्टविशतितमे प्राप्ते कलौ सम्प्रति ।
अन्हि स्वे प्रथमेऽखिलक्षितिपतिश्रीविक्रमार्कप्रभो-
र्वर्षाशीतिसहैव षोडशशतातीते च काले त्विह ॥
श्रीमदभूपतिशालिवाहनशकात् पञ्चाब्धितिथ्यन्विते
श्रीसूर्ये गतसौम्यदिग्यथ वसन्तर्तौ च चैत्रे शुभे ।
शुक्ले (गच्छति) पूर्णमासि हिमगौ सावित्र्यधिष्ण्ये धृनौ
कन्यास्थे हिमगावथावनियुते मेषे बुधे मीनगे ॥
सिंहे देवगुरौ सिते मकरगे कर्के शनौ सस्थिते
कन्याया तमसि प्रकेतुषु भप सस्थे च पुण्येऽहनि ।
सुव्यष्ट्या करणे च सन्मिथुनके लग्नेऽभिजित्के मुहू-
र्तेसत्कुण्डविचारणार्थमुदितो दीप प्रकाश प्रयात् ॥
श्रीमत्स्तम्भसुपत्तने (स्थित) महेन्द्राम्भोधियोगे वसन् ।
नानाशास्त्रविचारणे पटुमति श्रीगौडरत्नाकरात् ॥
जातो वत्सकुलाब्धिशीतकिरण सत्कुण्डतत्व स्फुट
शुक्लस्थावरसूनुरत्नबलभद्राख्य प्रवक्ति स्वयम् ॥
य पूर्व सुहिरण्यगर्भमतुल रूप दधन् वाग्विदाम्
मध्ये भट्टसमाख्ययाऽभवदसौ वेदान्वितत्त्व स्वराट् ।
भूय श्रीजयदेवदीक्षितमणि सम्राट् सुविस्तारितु
साङ्ग कर्मपथ चरन् विजयते श्रीमन्नृसिंहात्मभू ॥
येन श्रीभगवान् मखैर्बहुविधै सन्तर्पित शाश्वतो
येन द्वादशसौत्यकाग्निचयनै सद्वाजपेयादिभि ।
इष्ट तेन सुशास्त्रवेदविदुषा तत्वोपदेशाय चा–
ज्ञप्तेनायमगाधसागरजलात् पूर्णेन्दुवत्काशित ॥

२८ ४६७८ कुण्डप्रकरण (श्लोकप्रकाशिका)

रचना– 'रसगगनतिथिप्रमाणवर्षे गतवति विक्रमभूमिका [पा] लात्'

लि क सदाशकर, अम्बिकेश्वरसुत महाशकरपौत्र, जागेश्वरपठनार्थम् ।
टोडा निवासी ।

३३ ४१२८ कुण्डार्क (मरीचिमालाटीकोपेत)

आदि– कृष्णात्रिगोत्रोद्भवबूवसिन्धो समुद्गत विट्ठलपूर्णचन्द्र ।
तस्यात्मज श्रीरघुवीरविज्ञ करोति कुण्डार्कमरीचिमालाम् ॥ १

अन्ते– गाथा सप्तभिरावेष्टय वेदीं पचभिरेव च ।
कलश तु त्रिरावेष्टय स्थापयेद्देवताक्रमात् ॥ इति श्री०

४१. ४१८५ ग्रहशान्तिपद्धति

अन्त– त्रिशरगजकुमग्ये (१८५३) विक्रमातीतकाले
रवितिथिबुधवारे माघवे कृष्णपक्षे ।
रचितमिदमनूप सेटशान्तिप्रकार
सुमतिभिरवलोक्य योद्धराजाह्वयेन ॥ १ ॥

इति श्रीग्रहशान्तिप्रकार समाप्तिमगात् ।

लिपिकर्ता—प० नाथूरामपुरी वचूणी[1]मध्ये ।

१०० ४६४६ मूर्तिप्रतिष्ठाविधि

अन्त– व्योमाचलाश्वमुनिशाकरनाम्नि' वर्षे
पक्षे सिते तपसि रमाधवाह्निवारे ।
विधौ जयपुरे च गुरोर्निदेशात्
प्रालेखि पुस्तकमिद गिरधारिशर्मा ॥ १ ॥

११३ ४६६४ रुद्रपद्धति (रुद्रार्चनमञ्जरी)

अन्त– सवद्विक्रमभूपस्य तर्कचन्द्रशते गते । (१६५७)
पञ्चरागोत्तरे वर्षे कार्तिक्या च प्रकाशके ॥
औदीच्यज्ञातिविप्रेण श्रीत्र्यम्बकात्मसूनुना ।
मालजिना कृता चेय महारुद्रस्य पद्धति ॥



४–तन्त्रमन्त्रादि

१७ ४३२६ कृष्णचरित

आदि—देव्युवाच—भगवन् सर्व भूतेश सर्वात्मन् सर्वसभव ।
देवदेव महादेव सर्वज्ञ करुणाकर ॥१॥
त्वयानुकम्पितेवाह भूयोप्यद्यानुकपय ।
त्रैलोक्यमोहनोमन्त्रस्त्वया मे कथित प्रभो ॥ २ ॥

---

१ यह ग्राम विचूण ज्ञात होता है जो जयपुर से पश्चिम उत्तरमे १६ कोस पर है ।

अन्त— अथ वक्ष्यामि भर्गाख्य मुनेश्वरि तमद्भुतम् ।
भुज्य नाम्नो मुने सोऽभूत् पुत्र कनकसप्रभ ॥
तस्यास्यादचला भक्तिर्हरी गोपालरूपिणि ॥२५२॥

इति समोहि (ह) नी (न) तत्रे श्रीकृष्णचरित समाप्त ।

२४ ६२४७ **गंधोत्तमानिर्णय**

अन्त— सन्दिग्धसन्देहविनाशमुद्गर चक्रे स ग्रथ गुरुसेवको मुदे ।
एन सुधीश्रीगुरुजकुलधरे नाकश्वर कौलवता प्रपद्य ङि ॥ १ ॥

सिंहस्थे द्युमणौ गुरौ घटगते मासे नभस्याभिधे ।
मदे ब्रह्मतिथौ विधौ तिमिगते पक्षे शुभे मेचके ॥
शाके विक्रमभूपते परिमिते द्व्याभ्राद्रिजैवातृकै-
(१७०२) विप्रप्रार्थनयामसाप्तिमगमद् गन्धोत्तमानिर्णय ॥
इति श्री कालेत्युपनामकगुरुसेवक कृत गधोत्तमा निर्णय ।
गुर्जरचुन्नीलालेन कु भावत्या लिपीकृतम् ॥
वहुशास्त्रान्वितो ग्रथो कौलग्रन्थविनिर्णयम् ।

३२. ४८९७ **नत्रलीलावती**

आदि— कुजे मञ्जुलमजरीपुलकिते भृ गागनासगते ।
माद्यत्कोकिलकाकलीविलपिते मन्दान (नि) लान्दोलिते ॥
सानन्दव्र [व्र] जसुन्दरीभिरभितो नि शेषमालिंगिते ।
वन्दे सान्द्रपयोदसुन्दररुचिं शृगारिण माधवम् ॥१॥
·· · श्रीमत्सूरतनूद्भवो गुणनिधि सत्कीर्तिचन्द्राकर
ख्यातो विक्रमकेसरी जगति यो दारिद्र्यनागातक ।
नानाशास्त्रविचारकेलिचतुरश्रीकर्णभूमि-
पतिर्द्धीर सतनुते मितेन वचसा श्रीतत्रलीलावली ॥६॥
आलोक्य तत्राणि विचार्य सार निष्कृष्य यत्नादिह साधकानाम्
विनोदहेतोर्गुरुवक्त्रगम्य सिद्धेर्निदान प्रकटीकरोति ॥७॥

अन्त— होमादावप्यशक्तश्चेद्द्विगुण जपमाचरेत् ॥
इद तु पञ्चाङ्गपुरश्चरणविषयम् ।
अन्यत्र होमादीनामनुक्तत्वात् ।

इति श्रीतत्रलीलावत्या तृतीय पटल ममाप्त ।

३३. ७७११ **तन्त्रस्थहृदय**

आदि— श्रुतीना तत्राणा वहुलकथनात्पन्नगपुरे
समायाते मोहे द्विजवरगणाना च विदुषाम् ।
अतस्तै सम्पृष्टे हरिहरविरिञ्च्यादि चरणे
स्तुवन् काशीनाथो रचयति हि तत्रस्थहृदयम् ॥ ४ ॥

अन्त – सुखजनक माधूना बालमुकुन्ददीक्षित स्यार्थम् ।
व्यलिखन् परार्थमेतत् हृदय यत् सर्वनराणाम् ॥ १
शिष्यकल्पतरुकल्पितकल्प वेदबोधितविधिप्रभुमल्पम् ।
शुद्धमार्गपरम व्यलिखित् श्रीकृष्णादीक्षितगुरुस्यपरार्थम् ॥ २

४४   ७७०८   परशुरामकल्पसूत्र

अन्त– इति श्रीदुष्टक्षत्रियकुलकालान्तकरेणुकागर्भसम्भूतमहादेवप्रधानशिष्यश्रीमन्नारायणावतारमहामहोपाध्यायश्रीपरशुरामविरचित कल्पसूत्र समाप्तम् ।

७३   ४२६६   महाविद्यादशश्लोकीविवरण

आदि– अपक्षसाध्यवद्वृत्ति विपक्षान्वयि यत्र तु ॥
साध्यवद्वृत्तितायुक्त माद्धर्मे माद्धर्मवर्जिते ॥१॥

अन्त– तदर्थमाकाशान्येति । तथापि द्रव्यत्वेन व्याघातस्तदन्यस्य एव तदर्थमनित्यनित्यावृत्तीति तथापि न विवक्षितसिद्धिरिति ।

७६   ४११८   रामपद्धति

आदि– श्रीगणेशाय नम । ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वर ।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नम ॥ १ ॥
अन्त– सर्पं दृष्ट्वा यथा लोके दुर्दुरा भयकपिता ।
ऊर्ध्वपुण्ड्र कृत तद्वत्कम्पन्ते यमकिंकरा ॥ ५६ ॥

इति श्रीरामानुजकृता श्रीरामपद्धतिर्वेदोक्ता सम्पूर्णा ।

लिपिकर्ता—विप्रजयराम ।

८३   ६७४२   रामपूजापद्धति

रचना काल—'इन्दुबाणरसोर्वीभिर्वत्सरे याति वैक्रमे ॥ (१६५१)
कार्तिकमासिशुक्लाया द्वादश्या भौमवासरे ।
काश्या कृताऽनवद्येय रामोपाध्यायसूरिणा ॥
राम एवार्पिता रामपूजापद्धतिरीदृशी ॥ १ ॥

६३   ५२३६   वसुधारा

आदि– ससारद्वयदैन्यस्य प्रतिहन्त्रिदिवावहे ।
वसुधारे सुधाधारे नमस्तुभ्य कृपामए [यि] ॥

६४   ५२२५   वसुधारानाम धारणीकल्प

आदि– ससारद्वयदैन [न्य] स्य प्रतिहन्त्रिदिनवहे ।
वसुधारे सुधाधारे नम तुभ्या कृपामए (यि) ॥१॥

अन्त– वसुधारा नामधारणी कल्पमित्यपि धारय इदमेवोचद्भगवानात्तमना आयुष्मान् नन्दस्ते उभिक्षवस्ते च बोधिसत्त्वा मालसवति परिषत् सदेवमानुषासुरगधर्वाश्च लोको भगवतोभाषितमस्यनदन्निति ॥   इति श्रीवसुधारानामधारणीसमाप्ता ।

११३. ४४६९ शिवपचाक्षरी न्यासविधि

आदि– ऋषय ऊचु –कथ पचाक्षरी विद्या प्रभावो वा कथ वद ।
कथ क्रमो महाभाग श्रोतु कौतूहल हि त (न) ॥
सूत०॥ पुरा देवेन रुद्रेण शिवेन परमेष्ठिना ।
पार्वत्या कथित पूर्व प्रवदामि समासत ॥

अन्त– गृहे जप सम विद्याद् गोष्ठे शतगुण भवेत् ।
नद्या सहस्रगुणित अनन्त शिवसन्निधौ ॥
इति शिवपचाक्षरन्यासविधि समाप्त ।

११९. ४२०५ सिंहसिद्धान्तसिंधु

आदि– यस्याघ्रिद्वयपूजनेन निखिलाः सिद्धीर्लभन्ते नरा
वृद्धी प्राप्य वसति वेश्मसु परास्तेषा समा सपद ॥
भक्तस्वान्तनितातमोहदलने दक्ष विपक्ष वर
विघ्नाना प्रणमाम्यनारतमह त श्रीगणाधीश्वरम् ॥ १

इति गोस्वामिश्रीजगन्निवासात्मजगोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट-
विरचिते सिंहसिद्धान्तसिंधौ द्विनवतितमस्तरङ्ग ।

अन्त– चद्रवह्नितुरगैकसमिते वत्सरे सहसि शुक्लपक्षतौ ॥
शीतरश्मिसितवासरे शुभे ग्रथ एप परिपूर्णतामगात् ॥ २

सवत् १८२५ वर्षे राजाधिराजश्रीमज्जयसिंहतनूजश्रीमन्माधवसिंहोपण्हरेण स्वात्मावलोकनार्थं लिखापित पुस्तकमिद श्रीमज्जयसिंहनिर्मिते जयनगराख्ये शुभपत्तने लेखोय लेखकत्रयाणाम् श्री श्री ॥

५–धर्मशास्त्र

१५ ४११३ आशौचदशक सभाष्य

आदि– मातुर्गर्भविपत्त्वद्य त्रिदिवस मासत्रयेतो यथा
मासात् त्रिप् सूतिकावधिरत स्नान पितु सर्वदा ।
ज्ञातीना पतनादिजातमरणे पित्रोर्दशाह् सदा
नाम्न प्राक् तदपैति मूतकवशाद्भ्रातुर्दशाह् परम् ॥ १
भाष्यादौ– विज्ञानेश्वरविरचितमुनिजनवाक्यैर्मिताक्षरामध्यात् ।
आशौचदशकवृत्ति वदति हरिर्हरिहरौ नत्वा ॥ २

अन्त– "शद्रो धन्य कलिर्धन्य इति व्यासवाक्यात् । शूद्रधर्मसस्काराणामादृत । धन्य शब्दो मगलवाचक इति । इत्याशौचदशकभाष्य हरिहरविरचित सम्पूर्णम् ।"

२४　४३५१　　कालनिर्णयसिद्धांत सटीक

आदि– प्रणम्यैकरद देवं, शारदा गुरुमेव च ।
कालनिर्णयसिद्धान्त व्याकुर्वे विशदाक्तिन ॥ १

अन्त– एतादृशे समये भुजनगरे द्विवेदिअग्निहोत्रिश्रीजयरामजेन रघुरामेण ग्रन्थस्येय व्याख्या बुद्ध्या मनीषया कृतेति ।

इति द्विवेद्यग्निहोत्रिश्रीजयरामसुतरघुरामविरचितो निर्णयसिद्धांत सटीक. समाप्तिमगमत् ।

२५　६२४६　　कृत्यरत्नावलि

रचनाकाल– भूतशून्य ऋषिचन्द्र मिते (१७०५ वि०) माघकृष्ण षष्ठी रविवारे ।
ग्रन्थपूर्तिमकरोत् किल राम श्रीरमापतिसमर्पणबुद्ध्या ॥

प्रति पर पुस्तकके स्वामीका पश्चाल्लेख इस प्रकार है—

"श्रीवीसलनगरवास्तव्यनागरज्ञातीयत्रिपाठीकालात्मजग्रहलालनृनुहरनाथतदात्मज भा श्रा तत्सूनुत्रि० त्रिविक्रम तदात्मज त्रि० मोहनसूनु त्रि० प्राणनाथात्मजबालकृष्णस्येद पुस्तकम् । श्रावण शुक्लैकादश्याम् गुरौ सवत् १७५६ ।"

३२.　४१२६　　तिथिनिर्णय

आदि– सा द्विविधा शुक्ला कृष्णा च । तत्र एकंककलावृद्धयवच्छिन्न काल शुक्लतिथि तत्क्षयावच्छिन्न काल कृष्णतिथि ।

अन्त– योऽनन्तदेवकृतमथनमन्निबन्ध–
क्षीराब्धिजोय कमलापतिना धृतो य ॥
नित्यं निजे हृदि सता प्रमुदे तु तस्य
तिथ्याख्यदीधितिरिय स्मृतिकौस्तुभस्य ॥

इति तिथिनिर्णय समाप्त ।

४०　४६८४　　दानवाक्यसमुच्चय

आदि– पुराणश्रुतिवाक्यानि परामृश्य बुधै सह ।
पुरुषोत्तमेन क्रियते दानवाक्यसमुच्चय ॥

४३　४६०५　　धानतपद्धति

आदि– धानत इति भविष्योक्ते । जात कसत्र(व)धार्थायेत्यस्य परभागोऽत्र न सगृहीत ।
अन्त– ऋक्षादिभिर्भाव्यमिति तच्चेणादिकमनुकर्तव्यमित्यर्थ ॥ ४३ ॥ इति समाप्तम ।

४६　४१८४　　प्रायश्चित्तमयूख

आदि– नमामि भास्वत्पदपकजतच्छ्रीनीलकठोऽहमथ प्रकुर्वे ।
स्मृत्वोपदेशान् गुरुशकरस्य विनिर्णय पापविशुद्धिहेतुम् ॥ १

अन्त– निशाया वा दिवा वापि यदज्ञानकृत भवेत् ।
त्रिकालसव्याकरणात्तत्सर्वं प्रविणश्यति ॥

५४ ४४४६ मदनपारिजात

आदि– प्रवालादिप्रस्थद्युतिनिचयपर्य्यायवपुषे
नमो विघ्नश्रेणीविघटनवरिष्ठाय महसे ।
जगत्प्रादुर्भावस्थितिलयनिरायासरचना–
विनोदासक्ताय प्रणतिफलसिद्धिप्रतिभुवे ॥ १
सोऽय कौशिकवशभूपणमणिश्रीभट्टविश्वेश्वरो ।
वेदस्मार्तमते नयेच सय(प)दे वाक्ये कृती वर्द्धते ॥ २

अन्त– "मतिर्येषा शास्त्रे प्रकृतिरमणीया व्यवहृतिः
परा शील श्लाघ्य जगति ऋजवस्ते कतिपये ।
चिर चित्ते तेषा मुकुरतलभूते स्थितिमिया–
दिय व्यासारण्यप्रवरमुनिशिष्यस्य भक्ति रिति ॥"

इति पण्डितपारिजातकहरिमल्लेत्यादिविरुदराजीविराजमानस्य श्रीमदनपालस्य निवन्धे मदनपारिजताभिधाने नवम स्तवक समाप्त ।

५६ ४४४४ महाव्रतभाष्य

आदि– मधुसूदन गुरु वन्दे देवमात त्रयीविदम् ।
कृष्ण विनायक राम हरिराम हलायुधम् ॥ १
सप्त चैतान्गुरून्नत्वा तेषा वै पादपासव ।
भाष्य महाव्रतस्याह कुर्वे गोविदसज्ञक ॥ २

अन्त– चातुर्विशकान् पुच्छानीत्पुच्छसस्ये चातुर्विशकानीत्यादिद्विरभ्यास्नेध्यायपरिसमाप्त्यर्थं ॥ इति शाखायनसूत्रभाष्येऽष्टादशोऽध्याय ॥

६२ ४५१६ मानवधर्मशास्त्रसहिता

आदि– स्वयम्भुवे नमस्कृत्य ब्रह्मणेऽमिततेजसे ।
मनुप्रणीतान् विविधान् धर्मान् वक्ष्यामि शाश्वतान् ॥ १

अन्त– इत्येतन्मानव शास्त्र भृगुप्रोक्त पठन् द्विज ।
भवत्याचारवान्नित्य यथेष्टा प्राप्नुयाद्गतिम् ॥ १२६

इति श्रीमानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्ताया सहिताया द्वादशोऽध्याय ।

७६ ४३५० रत्नसग्रह

आदि– नत्वा राम घनश्याम शारदा च महेश्वरम् ।
वालवोधाय गोविंद कुरुते रत्नसग्रहम् ॥ १

अन्त– धर्माधिकारिरामस्य निर्ममे तनूज कर्ता ।
निबधान् वीक्ष्य निर्ब[रत्न]त्नाद् गोविंदा रत्नसंग्रहम् ॥

इति श्रीधर्माधिकारिपण्डितरामगुप्तश्रीमद्गोविंदपण्डितकृतो ज्योतिषरत्नसंग्रह समाप्त. ।

८८   ४५३३   शांखशास्त्र

आदि– स्वयम्भुवे नमस्कृत्य सृष्टिमहाराकारिणे ।
चातुर्वर्ण्यहितार्थाय शंख शास्त्रमकल्पयत् ॥ १

अन्त– शंखप्रोक्तमिद शास्त्र योऽधीते द्विजपुङ्गव ।
सर्वपापविनिर्मुक्त स्वर्गलोके महीयते ॥

इति शांखे धर्मशास्त्रेऽष्टादशोऽध्याय ।

८९   ४४४७   शांखायनसूत्र भाष्य

आदि– ॐ श्रीऋग्वेदमूर्तये नम । ओम् । पुरुषस्य बुद्धिपूर्वकारिणोऽभ्युदयनि श्रेयस-मुपादित्सित तच्च विशिष्टक्रियासाध्य, सा च वैदिकी क्रिया नान्या, या कान्चिन् कृत एतत् इत्यादि ।

अन्त– शांखायनकसूत्रस्य सम शिष्यहितेच्छया ।
वरदत्तसुतो भाष्यमानर्त्तीयोऽकरोन्नवम् ॥

इति शांखायनसूत्रभाष्येऽष्टमोध्याय समाप्त ।



६–पुराणकथामाहात्म्यादि

७७   ४२३०   भागवत

१ भागवत द्वादशस्कन्ध के १२वें व १३वें अध्याय पृ० १ से ३८ तक ।
२ नारायणकवच पृ० ३९ से ५६ तक
३ सप्तश्लोकी गीता पृ० ५७ से ६० तक
४ चतुश्श्लोकी गीता पृ० ६१ से ६३ ,,
५ एकश्लोकीरामायण पृ० ६४ से ६५ ,,
६ भारतसावित्री पृ० ६५ से ६७ ,,
७ रामरक्षाकवच पृ० ६८ से ८१ ,,
८. रामाष्टोत्तरनामस्तोत्र (पद्मपुराणान्तर्गत) पृ० ८२ से ९९ ,,
९ नारदगीता पृ० १०० से १०१ तक, और
१० इन्द्राक्षीस्तोत्र पृ० १०२ से ११३ तक हैं ।

९७ ६४८५ भागवतक्रमसन्दर्भटीका

अन्त– इति कलियुगपावनस्वभजनविभजनप्रयोजनावतारश्रीश्रीभगवच्चैतन्यदेवचरणानुचरणाचार-विश्ववैष्णवराजसभाजनभजनरूपसनातनानुशासनभारतीगर्भे श्रीभागवतनदर्भे क्रमसदर्भो नाम सप्तम सन्दर्भ, समाप्तश्चाय भागवतसन्दर्भ ।

१३३ ६४८८ भागवतसन्दर्भे तत्त्वसन्दर्भ प्रथम

आदि– जयता मथुराभूमौ श्रीलरूपसनातनौ ।
यौ विलेखयतस्तत्व ज्ञापिकौ पुस्तकामिमाम् ।। ३
कोऽपि तद्वान्धवो भट्टो दक्षिणद्विजवशज ।
विविच्याऽव्यलिखद्ग्रन्थ लिखिताद्वृद्धवैष्णवै ।। ४
तस्याद्य ग्रन्थमालेख्य क्रान्तव्युत्क्रान्तखण्डितम् ।
पर्य्यालोच्याथपर्य्याय कृत्वा लिखति जीवक ।। ५



७–वेदान्त

२ ४५६४ अन्त करणवोध सविवृतिक

अन्त– पितृपादाब्जपरागधनिना मया श्रीवल्लभेन रचिता व्रि(वि)वृति पूर्णतामगात् ।

३ ४२४४ अनुस्मृति

आदि– शतानीक उवाच–
ॐ महातेजो महाप्राज्ञ सर्वशास्त्रविशारद ।
अक्षीणकर्मवधस्तु पुरुषो द्विजसत्तम ।। १

अन्त– ननु व्यायति या देही कथयामि च तत्सुखम् ।
सर्ववन्धविनिर्मुक्त परपदमवाप्नुयात् ।। ७३
इति श्रीमहाभारते विष्णुधर्मोत्तरे अनुस्मृति सम्पूर्णा ।

२३ ४१४१ आत्मवोध सटीक

आदि– टीका– शतमखपूजितपाद शतपथमनसाप्यगोचराकारम् ।
विकसज्जलरुहनेत्र(त्र)उमाद्यायाङ्कमाश्रय शम्भुम् ।। १

मूल– तपोभि[ ]क्षीण[य]माना[णा]ना शान्ताना वीतरागिणाम् ।
मुमुक्षूणामपेक्षोयमात्मवोधो विधीयते ।। १

अन्त– दिग्देशकालाद्यनपेक्षसर्वग शीतादिहृन्नित्यसुख निरञ्जनम् ।।
य स्वात्मतीर्थं भजते विनि क्रिय य सर्ववित् सर्वगतोऽमृतो भवेत् ।। ६७

टीका– शीतादिद्वन्द्वदुःखानि हरतीति शीतादिहृत् नित्यसुख मोक्षानन्दप्रापकत्वात् । इतरतीर्थेसु तद्विपरीत द्(द्व)न्द्वम् तस्मादात्मतीर्थे स्नानस्य न किंचिदवशिष्यत इति भाव ।

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यगोविन्दभगवत्पूज्यपादश्रीमच्छंकराचार्य-
विरचितात्मबोधप्रकरण समाप्तम् ।

५८ ६०६१ नाटकद्वीपाख्याव्याख्या

श्रीगणेशाय नम ॥

नत्वा श्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यमुनीश्वरौ ।
अर्थो नाटकद्वीपस्य मया संक्षिप्य वक्ष्यते ॥ १

चिकीर्षितस्य ग्रन्थस्य निःप्रत्यूहपरिपूर्णायाभिमतदेवतातत्त्वानुस्मरणलक्षण मङ्गलमाचरन् मन्दाधिकारिणामनायासेन निःप्रपञ्चब्रह्मात्मतत्त्वप्रतिपत्तयेऽध्यारोपापवादाभ्यां निःप्रपञ्च प्रपञ्च्यते शिष्याणां बोधसिद्ध्यर्थं तत्त्वज्ञैःकल्पित क्रम इति न्यायमनुसृत्यात्मन्यध्यारोप ताव-दाह परमात्मेति—

परमात्माद्वयानन्दपूर्ण पूर्वं स्वमायया ।
स्वयमेव जगद्भूत्वा प्राविशज्जीवरूपत ॥ १
देवाद्युत्तमदेहेषु प्रविष्टो देवताऽभवत् ।
मर्त्याद्यधमदेहेषु स्थितो भजति देवताम् ॥ २

अन्त– न तत्र मानापेक्षास्ति स्वप्रकाशस्वरूपत ।
तादृग्व्युत्पत्त्यपेक्षाचेच्छ्रुतिं पठ गुरोर्मुखात् ॥ २५
यदि सर्वग्रहत्यागो शक्यस्तर्हि धियं व्रज ।
शरणं तदधीनोऽन्तर्बहिर्वैषोऽनुभूयताम् ॥ २६
इति श्रीनाटकद्वीपाख्या नाम दशम ॥ १०

यद्यप्युक्तन्यायेन स्वात्मा परिशिष्यते तथापि तदापरोक्ष्या (य) यत्किञ्चित् प्रमाणम-पेक्षितमित्यत आह न तत्रेति तत्र हेतुमाह स्वप्रकाशेति नन्वात्मा प्रकाशतया स्वस्फूर्तौ मान नापेक्ष्यत इति व्युत्पत्तिसिद्धये मानमपेक्षितमित्याशङ्क्य श्रुतिरेवात्र प्रमाणमित्याह तादृ-गिति ॥२५॥ एवमुत्तमाधिकारिण आत्मानुभवोपायमभिधाय मन्दाधिकारिणस्त दर्शयति यदि सर्वेति बुद्धिशरणत्वे किं फलमित्यत आह तदधीन इति बुद्ध्या यद्यत्परिकल्पयते बाह्यम-भ्यन्तर वा तस्य तस्य साक्षित्वेन तदाधीनपरमात्मा तथैवानुभूयतामित्यर्थ ॥२६॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यमुनिवर्य्यकिङ्करेण श्रीराम-कृष्णाख्यविदुषा विरचिता नाटकद्वीपाख्या नाम दशम ॥१०॥

०

११–ज्यौतिष

५ ४४४२ अद्भुतसागर

इति श्रीपाकसमयाद्भुतावर्त ॥ इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शकशंकरश्रीमद्वल्लालसेनदेवविरचित अद्भुतसागर समाप्त ।

पुस्तकके अन्तमे इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न मानसिंहादि राजाओका वंशवर्णन है ।

लिपिकर्ता—पुरोहित सदाराम, ठाकुर भैरू सिंघजीपठनार्थम् ।

लिपिस्थान—शिवपुरी ग्राम । संवत् १७८७ माघ शुक्ला १ बुधवार ।

६. ४६३० अद्भुतसागरी प्रथम खण्ड

पूर्ण ग्रंथकी पत्र संख्या ऊपर ३६० लिखी है किन्तु यह प्रति अपूर्ण है । प्रतिमे ऊपर "पुस्तकमिद शुक्लसदासुखजीकस्य" ऐसा लेख है ।

७. ४३१४ (अयनाशादिकरणविधि)

इस गुटके मे उपर्य्युक्त ग्रन्थके अतिरिक्त शीघ्रबोध करणकुतूहल, शनिचारफल, वध्याभेद, सन्तानार्थ औषधविधिके दोहे व यन्त्र बीच बीचमे दिये हुए हैं । दोहे उपयोगी हैं । २४ पृष्ठ तक अयनाशादिकरणविधि है । फिर १ पृष्ठ से ७५ पृष्ठ तक शीघ्रबोध है । इसके बाद प्रकीर्ण है ।

१४ ७०६१ आकाशपुरुषचित्र

यह सुषुम्णारचक्र है, जिसमे पुरुषाकारमे सुषुम्णा नाडीमे नक्षत्रमालाकी स्थापना करके बताया गया है । चित्र अध्येतव्य है ।

५० ४१०४ ग्रहणपद्धति

आदि– श्रीमग्दोवर्द्धनधर नत्वा मौरमतानुगाम् ।
स्वल्पानल्पार्थयुता कुर्वे ग्रहणपद्धतिम् ॥ १

अन्त– नखधृतिविक्रमवर्षे काम्यकवनवासिनन्दरामेण ।
रचितोपरागपद्धतिरियमतिहृद्या गहज्ञानाम् ॥ २४

इति श्रीमिश्रनन्दरामविरचिता ग्रहणपद्धति समाप्ता ।

रचनाकाल—१८२० संवत् । स्थान—काम्यकवन ।

६१ ४३६२ गणितनाममाला

आदि– गणितस्य नाममालाया वक्ष्ये गुरुप्रसादत ।
बालाना सुखबोधाय हरिदत्तो द्विजाग्रणी ॥ १

अन्त– कुण्डलज्ञानविप्रेण हरिदत्तेन धीमता ।
नाममाला कृता श्रेष्ठा देवगुर्वो प्रसादत ॥ ३०

श्रीश्रीपतिसुतेनैषा बालाना वृद्धिवृद्धये ।
गणितस्य नाममाला या रचिता शास्त्रमग्रहे ॥ ३१

इति श्रीज्योतिषनाममालेय सपूर्णा ।

९३ ४७७१ (१) गणितलीलावती आदि

लिपिस्थान—१६७० शाके विभवनामवत्सरे वसन्ततौं वैशाखमासे शुक्लपक्षे नवम्या-मिन्दुवासरे सप्तर्षिक्षेत्रमध्ये लिखितम् ।

ग्रथके प्रारम्भमे मराठी भाषामे गजेन्द्रमोक्ष आदि स्तोत्र हैं ।

७८. ४६७२ चमत्कारचिन्तामणि

अन्त– दधीचे पुरे लाटहासे पुराणा गणाच्छ्रीहरे स्थापित स्थानपाल द्विजोऽश्रीकारात्मुन्द-राल द्विजन्मा नृपाणामपि नाम चिन्तामणीय ।

लिखित देराश्री लीलाधर पुरुषोतमसुत ककनपुरमध्ये ।

९६ ४२८६ ज्योतिषरत्नमाला

आदि– प्रभवविरतिमव्यक्तानवन्धा नितान्त
विदितपरमतत्वा यत्र ते योगिनोऽपि ।
तमहमिहनिमित्त विश्वजन्मात्ययाना–
मनुमितमभिवन्दे भग्रहै कालमीशम् ॥ १
विलोक्यगर्गादिमुनिप्रणीत
वराहलल्लादिप्रपचशास्त्रम् ।
दैवज्ञकण्ठाभरणार्थमेषा–
विरच्यते ज्योतिषरत्नमाला ॥ २

अन्त– सुवृत्तया श्रीपतिदृब्धयानया
कठस्थितज्योतिषरत्नमालया ।
अलक्षणोप्यर्थपरिच्युतोप्यल
सभासु भूम्ना गणको विराजते ॥ १३

इति श्रीश्रीपतिविरचितायां ज्योतिषरत्नमालाया प्रतिष्ठाप्रकरण विंशतितमम् ।

९७ ४४०५ ज्योतिषरत्नमाला

अन्त– श्रामदपडे चन्द्रा उत्तरस श्रीदुर्गाजीराज्ये रामपुरानगरे श्रीकाशद्रावालगच्छे भट्टारक श्रीगोडदपत्पट्टे आचार्य श्रीकान्हाउपाध्यायशिवदासलिखित स्वशिष्यपरपरावाचनार्थ तथा स्वकार्यार्थं तथा च परोपकारार्थं उन्छकेन लिखिता ।

१०८. ४४०७ ज्योतिषसार सग्रह

आदि– लग्न लग्नपतिर्बलान्वितवपु केन्द्रत्रिकोणे शिवे
पृच्छाजन्मविवाहयानतिलके कुर्यान्नृपति ध्रुवम् ।

सच्छील विभवान्वित गतरुज मुक्तातपयान्वितम्
जातो निम्नकुले विभूतिपुरुष शसन्ति गर्गादय ।।

अन्त– सत्वेन जायते सिद्धि रजसिद्धिगुण फलम् ।
तामसे फलता नास्ति शिवस्य वन्दन तथा ।।

१०६. ४४१० ज्योतिषसारसग्रह

आदि– यदा मेषे गुरुरुदय करोति तदा दुर्भिक्षमनावृष्टि ।

अन्त– देशा मार्गे पुरे ग्रामे मत्र औषध देवता ।
स्वामिनो भूमिकार्येषु नवस्थाने निरीक्षयेत् ।।

११८. ६३६६ जन्मपत्रीप्रकार

यह ग्रथ मारवाडमे रचित है क्योकि चरखडे जोधपुर, जालोर, सोजत आदि स्थानो के दिये गये है ।

१२० ५२१५ जन्मपत्रीपद्धति

यह प्रति राजस्थानमे ही लिखी गई है । कारण यह है कि राजस्थानके प्राय सभी नगरोके अक्षाश इनमे विद्यमान है ।

१७४ ६४२० ताजिकसारवृत्ति

वर्षे शैलहयाङ्कभूपरिमिते मासे तथा फाल्गुने
पक्षे शुभ्रतरे तिथौ दशमिते श्रीखेरवातत्पुरे
श्रीमति विष्णुदामनृपतौ वैरीभवृन्दे हरौ
वृत्ति [त्ति] श्रीगुरुहर्षरत्नकृपया मामन्तनामाऽकरोत् ।

१६१. ५८३० नरपतिजयचर्या

पूर्णामित्रर्क्षभौमे दिनपतिवृषभे माधवे शुक्लपक्षे
नन्दानन्दाष्टचन्द्रे गमयति तदा सोमवशावतम. ।
देशेऽलर्काक्षमध्ये विदितखरपुटीरामपिश्रो लिलेख
पाठार्थ पाठयोग्य कलयति तदा श्रीजयपालसिह ।

१६६. ४८५१ नवरोजप्रकाश

आदि– हैय्यतजीजमिजस्तिरोमकयवनादिगदितशास्त्राणाम् ।
मतमवलोक्याशेष वक्ष्ये किंचित्फल रम्यम् ।।

अन्त– श्रीगौरोपतिनगरे यवनेशोत्साहमानद सुफलम ।
शिवलालपाठकेन प्रकाशित शिष्यजनतुष्ट्यै ।।
ग्र्द्धोदयेब्दे भूताया माघशुक्लेनिवासरे ।
सम्पत्तिरामतोपाय मर्णाराम समालिखत् ।।

२०१. ७०८८ नष्टोद्दिष्टविधि

अन्त– विसमजसकिरणधवलिय महियल सुरनिवहममिपय
पयजुअलम तिहुअणसिरिवर कुलहर मणहर गुणनिलय जिणजयहि ।

२०६   ७०१०   नारचन्द्र (द्वितीयप्रकरण)

लिपिस्थान—मारमामध्ये महोपाध्यायगुणसुन्दरशिष्यकर्मचन्द्रशिष्य चिर० दीना-पठनहेतवे ।

२०७.   ४३५२   नारचन्द्रयन्त्रकोद्धार सटिप्पण

आदि– अर्हंत जिन श्रीन नत्वा नारचन्द्रेण धीमता ।
मारमुद्ध्रियते किंचित् ज्योतिषशास्त्रनीरधे ॥ १

अन्त– इति नारचन्द्रटिप्पनके श्रीसागरचन्द्रसूरिकृते द्वितीय प्रकीर्णक समाप्तम् ।

इति श्रीनारचन्द्रस्योभयप्रकीर्णके शतकसार्द्धेन १५० यन्त्रकाणि समाप्तानि ।

२२८   ४१८३   प्रश्नमार्ग

आदि– श्री गुरुभ्यो नम । मव्याटव्यचिप दुःखसिन्धुकन्याधव श्रिया ।
ध्यायामि साव्यह वुद्धे शुद्धर्षं वृद्धर्शं च सिद्धये ॥ १

अन्त– कुम्भपूर्तिनिथिमानुचन्द्रसौवृद्धिरिष्फरिपुचन्द्रमदक् ।
धान्यवृद्धिगुणदस्रवृत्तिका शस्त्रनक्षत्रगिकायराशय ॥ ३६
विदुमल्लिपिविमर्शवीचिकाभ्र गवद्विपदहीनदूषण ।
हस्तवेगजमवुद्धिपूर्वक क्षन्तुमर्हति समीक्ष्य सज्जन ॥

श्रीमाधवशिवार्पणमस्तु । इति प्रश्नमार्गस्समाप्तिमगमत् ।

२५५   ४४५२   पञ्चपक्षी प्रश्न

आदि– अभिवद्य महादेव सर्वशास्त्रविशारदम् ।
भविष्यदर्थबोधाय पप्रच्छुर्मुनयो मुदा ॥ १

अन्त– भोज्ये च मासे गमने च पक्षे राज्ये दिनानित्ययनच स्वप्ने ।
मृत्येषु वर्षं सुगता विचार्यां कालप्रमाणे मुनयो वदन्ति ॥

ग्रन्थाङ्क ५५५६ 'पञ्चपक्षी' मे यह श्लोक निम्नप्रकार है—

भुक्ते तु मास गमने तु पक्ष राज्ये क्षणानीत्ययनच स्वप्ने ।
मृतेषु वर्षं शकुनाख्यया च कालप्रमाण मुनयो वदन्ति ॥

२६८   ४८६३   पद्धतिप्रकाश

आदि– नन्देन्दुवर्षेण मया कृतोऽय ग्रन्थो रवे पादयुगप्रभावात् ।
शाके नगाम्भोधिशरेन्दु (१५४७) तुल्ये प्राचा प्रवधान्यभिभाष्य सम्यक् ॥१०४

२८२.   ४६७८   पैतामही सारिणी

अन्त– आसीत्पार्थपुरे वरे द्विजन(व)र श्रीगोपिराजाभिध ।
सिद्धान्ताभिनबोद्यमैककुशलो दैवज्ञचूडामणि ॥
तज्ज श्रीपतिरग्रणी कृतिविशे सिद्धान्तपारगम ।
तत्सूनुर्मधुसूदनाख्यगणक पैतामही निर्ममे ॥

२८६. ४२७७ बालावबोध

अन्त– अर्द्ध प्रहरक त्याज्य चतुर्थ सप्तमस्तथा
द्वितीय पचमो घष्ट षष्ठो रविपूर्वक ॥

आदि– उदयाचलपर्यन्तामस्ताचलमहीमिमा ।
विख्यातो बालबोधोऽय मुञ्जादित्यो ॥
पूर्वसागरपर्यन्ता पश्चिमोदधिसयुता
बालमाक्रमते नित्य समा तु दिनेश्वर ॥

इति श्री मुजादित्यविरचित ज्योतिश्शास्त्रे बालावबोधाख्यम् ।

२६४ ७११२ बालबोध

अन्त–इति श्रीगोविन्दपदारविन्दमकरन्दवेदाङ्गपाठदक्षिणहिसारनगराधिवासश्रीसुन्दर-शर्महृदयानन्द–श्रीहरिकर्णकृते बालबोधमकरन्दपद्धतिमणौ ग्रहाणामुदयाधिकार पचम ।

२६६ ६२१२ बीजवासनाभाष्य

अन्त– इति श्रीमन्मार्तण्डात्मजप्रकटस्थगोकुलग्रामनिवासी श्रीमत्प्रचण्डपाण्डित्य-मण्डितोद्दण्डपण्डितमण्डलीमण्डनबलभद्र भट्टात्मजमाधवभट्टसुतव्रजनाथभट्टसूनुना गणकमण्डली-मण्डनेन ज्योतिर्विन्नितातततोषहेतवे विरचित बीजवासनाभाष्य सफ(क)लमन्देहापनोदनक्षम श्रीमत्प्रचण्डप्रतापसार्वभौमरामसिंहराज्येऽम्बावत्या अम्बिकेश्वरपुर्यामकाभ्रनृप १६०६ मिते शके चैत्रशुक्लपक्षे गुरौ सप्तम्या समाप्तिमगमत् । सवत् १७७६ शाके १६४१ प्रथम आश्विनकृष्णा १२ सोमे लि० इन्द्रमणिना ।

२६८ ४१८६ बृहज्जातक

आदि– मूर्तित्वे परिकल्पित शशभृतो वर्त्मा पुनर्जन्मना–
मात्मेत्यात्मविदा क्रतुश्च यजना(ता)भर्त्ता मह ज्योतिषाम् ।
लोकाना प्रलयोद्भवस्थितिविभुश्चानेकधा य श्रुतौ ।
वाच न त्वनेककिरणास्त्रैलोक्यदीपो रवि ॥ १

अन्त– दिनकरमुनिगुरुचरणप्रणिपातकृतप्रसादमतिनेद ।
शास्त्रमुपसग्रहा नमोऽस्तु पूर्वप्रणेतृभ्य ॥ १०

इति वराहमिहिरकृतौ बृहज्जातके उपसहाराख्य षड्विंशोध्याय ।

३३६ ४२८४ मयूरचित्र

आदि– अथ मयूरचित्र लिख्यते ।
यस्योदयास्तसमये सुरमुकुटनिघृष्टचरणकमलोपि ।
कुरुतेऽञ्जलिं त्रिनेत्र स जयति धाम्ना निधि सूर्य ॥

३४६ ४२८३ माससारिणी

आदि– सूर्ये स्पष्टअवधि ५२ ।

　　　　　　　　　४ ८ ८ १
अन्त- वेदाष्टगजभूराज्याद्गता विक्रमवत्सरा ।

शालिवाहन
　　　　मार्गशीर्षे सिते पक्षे नष्टेन्दुचन्द्रवासरे ।
　　　　मासाना सारिणीश्रेष्ठ बालाना शीघ्रवृद्धिदम् ॥ २

४२२　५१६५　　　　　　　　**रमलनवरत्न**

नगरसवसुचन्द्रे (१८६७) वत्सरे विक्रमार्के ।
शिववाटिकायां अवन्त्यां सीतारामपुत्रेण अनूपदेव्या सुतेन परमसुखसनाढ्येन रचितमिदम् ।

३३२　४७६६　　　　　　　　**रमलसार**

(लक्ष्मीनृसिंहभट्टसुनगोकुलवास्तव्यश्रीपतिविरचित ।)

आदि- य सिद्धनदपुर्यां स मे हरेत्युपनामक
　　　गुलावरायो धर्मात्मा यशस्वी तत्तनूद्भव ॥ ३
　　　गुरोर्गोविन्दरायस्य क्षात्रवशशिरोमणे
　　　प्रसादात् कुरुते रम्लसार श्रीपतिना मया ॥ ४

४७०　४३५५　　　　　　　　**वसन्तराजशाकुन**

आदि- विरचिनारायणशकरेभ्य शचीपतिस्कन्दविनायकेभ्य ।
　　　लक्ष्मीभवानीपतिदेवताभ्य सदा नवभ्योऽपि नमो ग्रहेभ्य ॥ १

अन्त- इति श्रीवसन्तराजशाकुने सदागमार्थशोभने ।
　　　समस्तसत्यकौतुके कृत प्रभावकोर्तनम् ॥ विंशतितमो नय ॥ २०

इति भट्टवसन्तराजविरचित दारिद्र्यविद्रावण नाम सर्वशाकुन समाप्तम् ।

६२३　४४२७　　　　　　　　**क्षेत्रसमासावचूरि**

आदि- श्रीवीरजिनेन्द्र सर्वैकाततमोरविम् ।
　　　नत्वा नव्यो लघुक्षेत्रसमासोह्यवचूर्ण्यते ॥
　　　ऐद युगीनान् सक्षिप्तरुचीनपेक्ष्य भगवद्भि
　　　श्रीसोमतिलकसूरीश्वरैर्विदधेयमति महार्थं ॥ २

अन्त- एव सर्वद्वीपसमुद्रादिसख्या आनेया तथात्र मनुष्यक्षेत्रे सर्वाग्रे सर्वेऽपि शशिनो-रवयश्च पृथक् प्रत्येक द्वात्रिंशच्छत तथा वहिर्मनुष्यक्षेत्रात् शशिनोरवयश्च स्थिरा अर्द्ध-प्रमाणाश्च ज्ञेया ॥ ८७ ॥८८॥ इति नरक्षेत्रविचार इति श्रीसोमतिलकसूरिविरचिताया नव्यक्षेत्रसमासस्यावचूर्णि श्रीगुणरत्नसूरिविरचिता ।

१२–छन्दः शास्त्र

४ ४४३२ वृत्तमुक्तावली

आदि– सकललघुमपूर्वं तत्कृतीना कवीना-
म्प्रभवति सुखहेतु. सश्रितायेन ।
··· शुभगणाद्या व्याललोकावसान-
ङ्कलयति भवतीय छन्दसा मालिनीव ॥ १

अन्त– अतो मेरोरर्घाल्लगविषयणीजातिषुलादिकासुक्रमा-
देकद्व्यादिप्रमितिरचिराद्वाप्ति र को युत स्यात् ।
तदङ्कं स्यात्सख्या भवति यदि वा मिश्रितं रेकयुक्तं
समुद्दिष्टाङ्कं स्याद्द्विगुणवपुषा मस्ययैकोनयाव्वा ॥

इति श्रीमत्कविधुरन्धरमल्लारिविरचितायां वृत्तमुक्तावली (ल्या) प्रस्तरादिनिरूण नामाष्टमो गुच्छ ॥

लिपिकर्त्ता—वराहग्रामस्थ वम्मणभट्टात्मज कालिङ्ग ।

१५ ७५१३ वृत्तरत्नाकरवृत्ति

अन्त– शरवाणपर्व्वतैकेन्दे चैत्रके विशदे बुधे ।
एकादश्या तिथौ रात्रौ व्यलेखि विक्रमे पुरे ॥ १
भूतनाथप्रसादेन शर्मेशेन लिपीकृतम् ।
कल्याणमस्तु श्रेयोऽस्तु विजयोऽस्तु शमस्तु च ॥ २
पुस्तिकेय वदत्येवाविघ्नमस्तु प्रजासु च ॥

१३–सगीत

१. ६७४१ अनूप सगीतरत्नाकर

आदि– श्रीगुरुगणाधिपवटुकशारदाभ्यो नम ।
श्रीमज्जनार्दनन्त्वा सगीतार्थफलप्रद ।
तन्यते भावभट्टेन रागालापनमजरी ॥ १
त्रिशत्तुग्रामरागास्यु नवोपरागका स्मृन' ।
रागाणा विशति प्रोक्ता भाषा षण्णवति' स्मृता ॥ २

अन्त– इति श्रीमद्राठोडकुलदिनकरमाहाराजाधिराजश्री' ·· ह्रात्मजजयश्रीविराजमानचतु समुद्रमुद्रावच्छिन्नमेदिनीप्रतिपालनचतुरवदान्यताग्रेश (सर) निर्जितचितामणिरवि

प्रतापतापितारिवर्गवर्मावतारश्री ५ माहाराजाधिराजश्रीमदनूपसिंहप्रमोदितश्रीमहीमहेंद्रमौलि-मुकुटरत्नकिरणनीराजितचरणकमलश्रीसाहिजहां सभामण्डणसंगीतराजजनार्दनभट्टागजानुष्टुप-चक्रवर्तिसंगीतराजभावभट्टविरचिते श्रीअनूपसंगीतरत्नाकरे रागाध्यायो द्वितीय समाप्त ॥ १ छ॥ छ॥ ॥ छ॥ छ॥

२ ४१६६ रागमाला

आदि– नत्वा शम्भुपदाम्बुज तदनु च श्रीशैलकन्यापद-
द्वन्द्व विघ्ननिवारकं च सतत त वारणास्य स्मरन् ।
रागाणा किलभैरवादिसुमनोमोदप्रदानां ब्रुवे
षण्णा लक्षणरूपगानसमयान् संगीतवित्तुष्टये ॥ १

अन्त– रागाणा भैरवादीना षण्णा रूपनिरूपणम् ।
हरिदत्तबुधप्रीत्यै ब्रजनाथेन सूचितम् ॥ २

श्री पञ्चनदान्वयसम्भूतगोकुलस्यब्रजनाथदीक्षितविरचिता हरिदत्तभट्टप्रीत्यै रागमाला समाप्ता । लिपिकर्ता—पुरुषोत्तम आचार्य ।

१४—कामशास्त्र

३ ४४२६ रतिरहस्य

आदि– येनाकारिप्रसभमचिरादर्द्धनारीश्वरत्व
दग्धेनापि त्रिपुरजयिनो ज्योतिषा चाक्षुषेण ॥
इन्दोर्मित्र सजयति मुदा धाम वामप्रचारो
देव' श्रीमान् भवरसभुजा दैवत चित्तजन्मा ॥ १

अन्त– सुरतरुतगरवचागरुमृगमदमलयजगन्धरसधूप ॥
वेश्मनि विहितस्तेषा परस्पर प्रीतिमातनुते ॥७१॥

इति सिद्धपटीय पण्डितश्रीकोककृतौ रतिरहस्ये योगाधिकारो दशम परिच्छेद ॥

४ ४७७५ रतिरहस्य

अन्त– शाके वेदनगेषुचन्द्रमितिगे संवत्सरे नन्दने
माघे मास्यथ धर्मदैवततिथौ सौम्यवारे पुनः ॥
तापीतीरनिवसिना द्विजवरेणालेखि वै पुस्तक ।
शिष्याणा पठनाय वामलधिया सौख्याय शैवेन यत् ॥

१५—काव्य नाटक चम्पू (१)

२ ४३७९ अध्यात्मरामायण सुन्दरकाण्ड सटीक

आदि— श्रीमहादेव उवाच— शतयोजनविस्तीर्णं समुद्र मकरालयम् ।
लिलघयिषुरानन्दसन्दोहो मारुतात्मज ॥ १

अन्त— यत्पादपद्मयुगल तुलसीदलाद्यैः-
स्सपूज्य विष्णुपदवीमतुला प्रयान्ति ॥
तेनैव किं पुनरसौ परिरब्धमूर्तो-
रामेण वायुतनय कृतपुण्यपुञ्ज ॥ ६४

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसवादे सुन्दरकाण्डे पचम सर्ग ॥

३. ४५२० अध्यात्मरामायणसेतु

अन्त— इति श्रीमत्सकलराजविपदुद्धारणसमर्थेत्यादिविरुदावलीविराजमानम्य हिम्मतिवर्मण पुत्रस्य श्रीरामवर्मण कृतावध्यात्मरामायणसेतावुत्तरकाण्डे नवम सर्ग ॥समाप्त॥

१० ४३३१ अनर्घराघव

आदि— ह्रीं पचपरमेष्ठिभ्यो नम ॥
निष्प्रत्यूहमुपास्महे भगवत कौमोदकीलक्ष्मण ।
कोकप्रीतिचकोरपारणपटुज्योतिष्मती लोचने ॥
याभ्यामर्धविवोधमुग्धमधुरश्रीरर्घनिद्रायतो ।
नाभीपल्लवपुण्डरीकमुकुल कन्वा सपत्नीकृत ॥१

अन्त— दृष्ट्वा तुष्यत्पुलस्त्यो जगति विजयते जानकीजानिरेक ।

इति निष्क्राता सर्वे । इति दशग्रीवनिग्रहो नाम पष्ठाङ्क समाप्त ।

१२ ६४०२ अन्यापदेश शतक

लिपिकर्ता—अभयराम दादूपथी नागपुर—

लेभेऽय शुभदा तपोभिरमलै श्रीपद्मनाभात्सुत ।
यद्दंशो मिथिलाखिलावनितलालकारचूडामणि ॥
तेनेद मधुसूदनेन कविना विद्यावता निर्मित,
श्लोकाना शतक मुदे मुकृतिनामन्यापदेशाह्वयम् ॥ १५

१४ ४३२५ अमरुशतक सटिप्पण

अन्त— प्रासादे सा दिशिदिशि न सा पृष्ठत सा पुर सा ।
पर्यंके सा पथि पथि च मा तद्वियोगातुरस्य ॥

दृष्टा येन प्रकृतिरपरा नास्ति मे [illegible] मा मा ।
मा मा मा मा जगति [illegible] ॥ १०२

इति श्रीमद्भगवत्प्रणीत[illegible] समाप्तिमगमत् ।

१८ ४३३० ऋतुसंहार

आदि– प्रचण्डसूर्यं स्पृहणीयचन्द्रमा ।
सदावगाहक्षतवारिसंचय ॥
दिनांतरम्योऽभ्युपशांतमन्मथो ।
निदाघकाल समुपागत प्रिये ॥ १

अन्त– [illegible]चन्दनरसा स्तनगतहारा ।
[illegible] ॥
[illegible] मधुर[illegible]-
[illegible] ॥ २८

इति श्रीविक्रमादित्ये श्रीकालिदासकृतौ ऋतुसंहारे [illegible] नाम [illegible] सर्गः [illegible]
तत्समाप्तो समाप्तोऽयं ग्रन्थ ॥

३० ४३६४ कुमारविहारशतक

आदि– तेज पुष्णातु पार्श्वो [illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ १
अन्त– आस्तां तावन्मनुष्य प्रकृतिमलिनधी [illegible]-
वक्तुं [illegible] ।
स्त्रीणां [illegible]-
[illegible] श्रीपार्श्वनाथस्त्रिभुवन[illegible] ॥ ११६
इति विहारशतकं समाप्तम् ॥छ॥छ॥

४१ ७७९४ कृष्णगणोद्देशदीपिका

अन्त– शाके दशदशशके नभसि नभोमणिदिने षष्ठ्याम् ॥
व्रजपतिसद्मनि राधाकृष्णगणोद्देशदीपिकाऽदीपि ॥

६५ ५९०२ धर्म्मशर्म्माभ्युदयम्

आदि– श्रीनाभिसूनोश्चिरमङ्घ्रियुग्म-
नखेन्दवः कौमुदमेधयन्तु ॥
यत्रानमन्नाकिनरेन्द्रचक्र-
चूडाश्मगर्भप्रतिबिम्बमेण ॥ १

अन्त– अभजदथ विचित्रैर्वाक्यसूनोपचारै
प्रभुरिहहरिचन्द्राराधितो मोक्षलक्ष्मीम् ॥
तदनु तदनुयायी प्राप पर्यन्तपूजो-
ऽपचितसुकृतराशि स्वपद नाकिलोक ॥ १८५

इति महाकविश्रीहरिश्चद्रविरचिते श्रीधर्म्मशर्म्माभ्युदये महाकाव्ये श्रीधर्मनाथनिर्वाणगमनो नाम एकविंशतितम सर्ग पूर्ण । कविवशवर्णन तत्रैव–

मुक्ताफलस्थितिरलकृतिषुप्रसिद्ध-
स्तत्रार्द्रदेव इति निर्मलमूर्तिरासीत् ॥
कायस्थ एव निरवद्यगुणग्रहस्स-
न्नैकोऽपिय कुलमशेषमल चकार ॥ २
लावण्याम्बुनिधि कलाकुलगृह सौभाग्यसद्भाग्ययो ।
क्रीडावेश्मविलासवासवलभीभूषास्पद सम्पदाम् ॥
शौचाचारविवेकविस्मयमहीप्राणप्रिया शूलिन.—
शर्वाणीव पतिव्रता प्रणयिनी रथ्येति तस्याभवत् ॥ ३
अर्हत्पदाम्भोरुहचचरीक-
स्तयो सुत श्रीहरिचद्र आसीत् ॥
गुरुप्रसादादमला वभूवु॰
सारस्वते स्रोतसि यस्य वाच ॥ ४
स कर्णपीयूपरसप्रवाह
रसध्वनैरध्वनि मार्थवाह ॥
श्रीधर्मशर्माभ्युदयाभिधान
महाकवि काव्यमिद व्यधत्त ॥ ७

६६ ४०९२ नलोदय टीका

आदि– नत्वा हरिकमलशखगदामिपाणि ।
लक्ष्मीनखाकविलसद्हृदय दयाब्धिम् ॥
वागीश्वरीमथ गुरूंश्च परापरेपा ।
टीका मनोरथकवि स्वधिया विधत्ते ॥ १
नलोदयपदावोधाद्वुधा खेद विमुञ्चत ।
मनोरथकृता टीका शुद्धा सम्प्रति पश्यत ॥ २

अन्त– नलोदयमहाकाव्यटीका विवुधचंद्रिका ।
आचन्द्रतारक यावद्भूयादानन्दवर्द्धिनी ॥ ३
एकेन यमकालापो निस्तरीतु सुदुशक ।
तस्मात्सन्तो दयावन्त स्निह्यन्तु मयि निर्भरा ॥ ३

इति श्रीमन्मनोरथविरचिताया विवुधचन्द्रिकाया नलोदयमहाकाव्यटीकायां चतुर्थ आश्वास. ॥ ४ ॥ समाप्त ॥

७४　४३८८　　　　नृसिंहचम्पू

आदि– कनकरुचिदुकूल कुण्डलोल्लासिगल्ल
शमितभुवनभार कोऽपि लीलावतार ॥
त्रिभुवनसुखकारी शेषधारी नृसिंह
परिकलितरमागो मगल नस्तनोतु ॥ १

अन्त– इति श्रीमन्महाराजधिराजस्पृहणीयशौर्योदार्याद्यनेकानवद्यपद्यगुणगणविराजमान-श्रीमदुमापतिराज्योद्योतितभट्टकेशवविरचिते नृसिंहचम्पूकाव्ये पञ्चम स्तवक ॥ ५ ॥

८९　६२४४　　　　महाभारत सभापर्व

लिपिकर्तुर्गोवर्धनस्य ग्रन्थान्ते वशवर्णन यथा–

गोविन्दात्मजजीवनाथनिपुण शास्त्रप्रवाहागमे ।
तेषामात्मजरुद्रभक्तिनिपुण स्यातो हि शैवागमे ॥
सोऽय लेखितग्रन्थमेव सुधियो गोवर्धनख्यातिवान् ।
पाठे चात्मपरार्थमेव सकल तस्माच्छिवप्रीतये ॥ २
अस्मत्पितामातुलपुण्यमूर्ते-
विख्यातनाम्ना हरजीति सज्ञे ॥
गोवर्धनोऽह इदमाललेख
प्रसाद तेषा गुरुमातुलस्य ॥ ३
वर्षातीते वेदगोभूपचेति ।
मासेऽपाढे पूर्णिमाभूमिजेति ॥
ग्रन्थेऽलेखी विप्रगोवर्धनेति ।
तीर्थेपुण्ये क्षेत्र भूतेश्वरेति ॥ ४

स० १६९४ वर्षे आषाढमासे शुक्लपक्षे पौर्णमास्या भौमवासरे च ठाकुरगोविंदसुतठाकुर-जीवनाथात्मजगोवर्धनेन लिखित इद पुस्तक मथुरामध्ये श्रीमहान्हरजीपितामातुलप्रसादेन ।

१०८.　६४७१　　　　महाभारत कर्णपर्व

अन्त– हुताशनागाद्रिकुभिर्मिते शके ।
श्रीविक्रमार्कस्य च कार्तिके सिते ॥
त्रयोदशी भौमदिने समाप्त-
मिद तु शास्त्र हरिलालमिश्रात् ॥
लिखनत इति शेष । दांता मध्ये ।

११८　६१९६　　　　महाभारत मोक्षपर्व

अन्त– मनरामेणालेखि नभोत्यगरारे घृत्यव्दशके भारत्यां सेष जगति शमस्तु ।

१२५　४३९१　　　　मुद्राराक्षस सटीक

आदि– सिंदूरारुणगण्डमण्डलमदामोदभ्रमद्भृ गिका ।
झकारेण कलेन कर्णमुरजध्वानेन मद्रेण च ॥

तत्तौर्यत्रिकरीतिमेति शिरसश्शश्वन्मदान्दोलन ।
यस्य श्रीगणनायक स दिशतु श्रेयांसि भूयासि व ॥ १

अन्त– बाणाग्न्यर्तुमहीसख्यामितेब्दे जयनामके ।
ढुंढिना व्याकृत जीयान्मुद्राराक्षसनाटकम् ॥

रचनाकाल—शाके १६३५ फाल्गुने । रूपजित्तनयहरदत्तस्येद पुस्तकम् ।

१३५ ४३९० मेघदूत सटीक

अन्त– आसीन्निर्मलवश्यतरणिस्वाचारचिंतामणि -
सद्विद्यासरणिर्भवाब्धितरणि श्रीसोमनाथो द्विज ॥
सूनुस्तस्य धनेश्वरो व्यरचयट्टीका शिशूद्बोधिनी ।
काव्येऽस्मिन् सरसप्रबधविपमे श्रीमेघदूताभिधे ॥ १

१३६ ५१५६ मेघदूत सटीक

अन्त– श्रीवैकुण्ठाभिधगुरुवचोलब्धतत्त्वाववोधो ।
वाराणस्या विवुधनिकरालकृताया यतीन्द्र ॥
पूर्णानन्दश्चतुररचना मेघदूतस्य टीका ।
काव्यच्छन्दोनिगमनिपुणो वालवुद्ध्यै व्यतानीत् ॥ १

१५९. ७३०२ रघुवशटीका

अन्त– चन्द्रवसुसम्वतसमै वन्हिवाण परमानिये ।
आसोज सुदि एकादशी भृगुवार इह जानिये ॥

लि क खुशालसागरगणि मेदपाटदेशे वैराटमडले सग्रामगढनगरे तथा टुकरवाडग्रामे ।

१६३. ७०८३ राधाकृष्णप्रेमसम्पुटकाव्य

अन्त– षट्शून्यर्त्ववनिभिर्गुणिते तपस्ये ।
श्रीरूपवाड्मधुरिमामृतपानपुष्ट ॥
राधागिरीन्द्रधरयो सरसोस्तटान्ते ।
तत्प्रेमसम्पुटमविन्दत कोऽपि काव्यम् ॥

१७१ ४४०० रामहनुमन्नाटक

आदि– श्रीरामे दशरथेन कैकेयी वाक्पाशा वन प्रति प्रेष्यमाणे लक्ष्मणस्य भाव ।
निर्यातिमाकर्ण्य वनाय राम ।
सौमित्रिरुत्तभितकोपकम्प ॥
विश्रान्तदृष्टि किल चापयष्टौ ।
दध्यौ स वै लक्ष्यमिद हृदन्त ॥ १

अन्त– रकारादीनि नामानि शृण्वतो मम पार्वति ।
मन प्रसन्नतामेति रामनामाभिशकया ॥

इति रामहनूमत नाटकम् ।

२०२ ६०२० रामायण उत्तरकाण्ड

अन्त- वाल्मीकिना विरचित श्रीरामायणपुस्तकम् ।
लिखित लक्ष्मणाख्येन समाप्त भक्ततुष्टिदम् ॥

२१६. ७०८७ शिशुपाल व(ब)ध

अन्त- इति श्रीमाघवरिण्ग्विरचिते महाकाव्ये श्रध के शिशुपालवधो नार्मविशति(त) म सर्ग ॥ सम्पूर्ण माघकाव्यम् ॥ स० १५५२ वर्षे चैत्रसुदिद्वादशीदिने सोमवासरे ब्रह्मश्री(षि)रतन पठनार्थे श्री माघकाव्ये लिखित ज्योतिरणमल शुभ भवतु ।

२२१. ६१७६ शृङ्गारमाला

अन्त- श्री गुरुदेव ।
ससारसर्पमुखमर्दनताद्यरूपा
विज्ञानभापटलपाटितमोहकूपा ॥
येपा कटाक्षकलिता फलिता लसन्ति
गङ्गेशमिश्रगुरव सतत जयन्ति ॥ १

कविवशवर्णनम् ।
पानीयप्रस्थात् परतस्तु मार्गो
पट्क्रोशमध्ये हि घटोत्कचस्य ॥
ग्रामो 'घरोडे'ति प्रसिद्धनामा
पूर्वेस्थितास्तत्र पुरा मदीया ॥ १०
श्रीविष्णुदत्तस्स्वकुलाब्जभानु-
र्नारायणस्तत्तनुजो बभूव ॥
कौशल्यगोत्रो यजुपामधीता
माध्यन्दिनीयो द्विजगौडजोसी ॥ ११
तस्यात्मजो स्यादगमत्तु काश्या ।
पड्दर्शिनीवैरमपुत्रमत्री ॥
दामोदरो वैद्यकग्रथकर्ता
श्रीरामकृष्णस्तदपत्यमासीत् ॥ १२
तुलसीमाधवगगारामाख्यास्तत्तनूद्भवाश्चासन् ।
माधवरामसुपुत्रो हृदयराम इति सुगीयते मनुजै ॥ १३
साहित्ये रसग्रथकृद्बुधवरस्तस्याङ्गजात कवि-
र्बाबूराय इति प्रसिद्धिमगमद्वासीपुरे चार्गले ॥
तत्पुत्रेण कृता मया रसमयी माला रसोपासकाऽऽ-
ज(ज्ञ)प्ता प्रापयितु गुणैरपि युता कल्पारसब्रह्मणि ॥ १४
सुखलालेन सुकविना रचिता शृ गारमणिमयीमाला ।
सा रसिकाना सगुणमुवर्णा विलासमातनुताम् ॥ १५
सुधाशुव्योमवस्विन्दौ वर्षे ज्येष्ठसिते रसे ।
शुभा शृ गारमालेय रविपुष्ये सुगुम्फिता ॥ १६

इति श्रीमत्साहित्यशास्त्रानुभावरसिकगौडविप्रवरवावूरायमिश्रसूनुसुखलालमिश्रेण विरचिताया शृगारमालाया सकीर्णवर्णन नाम तृतीय विरचनम् ॥ श्रीरस्तु ॥

प्रथम विरचनम्—नायिकाभेदविवरणम् ।

द्वितीय ,, —शिखनखवर्णनम् ।

तृतीय ,, —षड्ऋतुवर्णनम् (सकीर्ण-विरचनम्) ।

२२३. ५३०३ सवित्प्रकाश

अन्त– श्रीगोविन्दकवीशमीशभजनप्राप्त कवीशाग्रणी ।
श्रीमत्कान्हकवि' सुतं प्रसुषुवे श्रीकर्मदेवी च य ॥
वेदान्ताम्वुजभास्वतार्थवहुलं सवित्प्रकाशाभिध ।
काव्य तेन कृत समाप्तिमगमद्विद्वज्जनानन्दनम् ॥

२२४. ४१२६ सप्तशती आर्यावृत्तवद्धा

आदि– पाणिग्रहे पुलकित वपुरैश भूतिभूपित जयति ।
अकुरित इव मनोभूर्यद्भस्मावशेषेऽपि ॥ १

अन्त– हरिचरणलीलाकविवरवचनवामनशीला वामन इव कविपद निष्ठ्य ।
अकृताचार्य सप्तशतीमेका गोवर्धनाचार्य ॥ ७५०
इति गोवर्द्धनाचार्यकृता सप्तशतीय समाप्तम् ।

सवत् १८०७ मिती माघ शुक्ल २ गुरुवासरे सम्पूर्णम् । लीखतं जोसी परसरामेण । पर्व्वणीकरोपनामरघुनाथस्येदम् पुस्तकम् । लेखकपाठकयो शुभमस्तु ॥

॥ शुभ भवतु कल्याणम् भव ॥

२२५ ६०६३ सुन्दरमणिसन्दर्भ

अन्त– मधुराचार्यनाम्नैष गालवाश्रमवासिना ।
सुन्दराभिधसन्दर्भो भावशोधाय निर्मित. ॥



१६–रसालङ्कार

२. ४३९९ अलंकारचन्द्रिका (कुवलयानन्दटीका)

आदि– अनुचिंत्य महालक्ष्मी हरिलोचनचन्द्रिकाम् ।
कुर्वे कुवलयानन्दसदलङ्कारचन्द्रिकाम् ॥

अन्त– असौ कुवलयानन्दश्चन्द्रालोकोत्थितोऽपि सन् ।
प्रतिष्ठा लभते नैव विनाऽलङ्कारचन्द्रिकाम् ॥

इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणज्ञतत्सद्रामभट्टात्मजवैद्यनाथकृतालङ्कारचन्द्रिकाख्या कुवलया-नन्दटीका ।

४ ५९८३ काव्यकल्पलतावृत्ति (कविशिक्षा)

आदि– विमृश्य वाङ्मय ज्योतिरमरेण यतीन्दुना ।
काव्यकल्पलताख्येय कविशिक्षा प्रतन्यते ॥

अन्त– इति श्रीजिनदत्तसूरिशिष्यमहाकविचक्रचूडामणिश्रीमदमरसिंहविरचितायां काव्यकल्पलताकविशिष्या(क्षा)वृत्तौ अर्थसिद्धिप्रताने तुर्ये(तुरीये) समस्यास्तवक सप्तम समाप्त ।

१३. ६०७३ चन्द्रालोक सटीक त्रिपाठ (चन्द्रालोकप्रकाश)

अन्त– इति श्रीरामचन्द्रदेवात्मजयुवराजश्रीवीरभद्रदेवादिष्टमिश्रवलभद्रात्मजसकलशास्त्रारविन्दप्रद्योत्तमभट्टाचार्यविरचिते चन्द्रालोकप्रकाशे शरदागमे दशमो मयूख समाप्त ।

२४. ६४६८ रसमञ्जरीटीका व्यङ्ग्यार्थकौमुदी

वर्षाश्वाक्रसुधांशुभिश्च मिलिते सवत्सरे भाद्रके ।
पक्षे मेचकसज्ञके कुजदिने व्यङ्ग्यार्थविद्योतिकाम् ॥
व्यालेखीद्रसमञ्जरीतिलकिका गोविन्दशर्मा द्विजो ।
राज्ये भारतपत्तने च वलवर्ल्सिहस्यपुण्यात्मन ॥

प्रति के आदि २½ पत्रो मे काशिराज श्रीचद्रभानु के वश का विस्तार से वर्णन है । (म०)

३४. ४३०६ वाग्भटालकारवृत्ति

आदि– श्रिय दिशतु वो देव श्रीनाभेयजिन सदा ।
मोक्षमार्गं सदा ब्रूते यदागमपदावली ॥ १

व्याख्या–श्रीनाभेयजिनो वो युष्मभ्य श्रिय दिशतु ददातु किंविशिष्ट श्रीनाभेयजिन देव दीव्यति क्रीडते परमानन्दपदे इति देव यस्य भगवत आगमपदावली सिद्धान्तपदपरम्परा सता सत्पुरुषाणा मोक्षमार्गं ब्रूते सिद्धे पथान वदति । अन्यापि पदावली मार्ग ब्रूते ॥ १

अन्त– अनुमानमाह–
प्रत्यक्षाल्लिगतो यत्र कालत्रितयवर्तिन ।
लिंगिनो भवति ज्ञानमनुमान तदुच्यते ॥ ३८

व्याख्या–लिंगतोहेतोरतीतानागतवर्तमानकालत्रितयवर्तिन सलक्षणस्य लिंगिनो ज्ञान भवति तदनुमानम् ॥ ३८ ॥ इत्यादि ।

४२ ५९०३ श्रवणभूषण (विदग्धमुखमण्डनटीका)

आदि– अर्हं ॥ ॐ ॥ नमो वीतराग ।
हेरम्ब क्व किमम्ब किं त(व)करे तातस्य चान्द्रीकला
कृत्य किं शरजन्मनोक्तमनया दन्तान्तर स्यादिति ।
तात कुप्यति गृह्यतामिति विहायाहर्तुमन्या कला-
माकाश जयति प्रसारितकरस्स्तम्बेरमग्रामणी ॥
य साहित्यसुधेन्दुर्नरहरिरल्लालनन्दन ।
कुरुते स श्रवणभूषणाख्या विदग्धमुखमण्डनव्याख्याम् ॥

अन्त- इति श्रीनरहरिभट्टविरचिताया श्रवणभूषणे चतुर्थ परिच्छेद । मगल जैन्यधर्मो उदेवसवेगमगल । मगल गच्छसघेन लेखके मगल भव ।। श्रीश्रमणसघाय ।। श्रीविदग्धमुखमण्डनवृत्ति ।।

१७—सुभाषितादि

२. ७२७२ एकषष्टियुतप्रश्नशत

अन्त- अचलावेदवार्द्धीन्दुवत्सरे श्रीरिणीपुरे ।
विद्याविलासगणिना लेखीद कृति हार्दकृत् ।।

३ ४३४७ कर्पूरप्रकर सावचूरि

आदि- कर्पूरप्रकर शमामृतरसे ववत्रेंदुचद्रातप
शुक्लध्यानतरुप्रसूननिचय पुण्याब्धिफेनोदय ।
मुक्तिश्रीकरपीडनेच्छसि च यो वाक्कामधेनो. पयो
व्याख्या लक्ष्यजिनेशपेशलरदज्योतिश्चय पातु वः ।। १

अन्त- श्रीवज्रसेनस्य गुरोस्त्रिषष्टि-
सारप्रवधस्फुटसद्गुणस्य ।
शिष्येण चक्रे हरिणेयमिष्टा-
सूक्तावली नेमिचरित्रकर्त्रा ।। ७८

इति श्रीजिनवर्धनसूरिपट्टे श्रीजिनचद्रसूरिपट्टालकारभाग्यसौभाग्यसारश्रीजिनसागरसूरिवरेणकर्पूरप्रकराभिधसुभाषितकोशस्यावचूर्णि समासत कृता ।। १४००

१०. ४४५२ (३४) नीतिशतक

आदि- या चितयामि० इति ।। १

अन्त- भर्तृहरिभूपतिना रचितमिद नीतिरीतिविज्ञेन ।
ज्ञाते यत्र न मुह्यति धीरोऽधीर प्रमाण स्यात् ।।
इति श्रीभर्तृहरिकृत नीतिशतक सम्पूर्णम् ।।

१४. ४४१५ प्रश्नोत्तरषष्टिशतक

आदि- द्विरसि यस्य चकासति दीपिका
इव फणामणिसप्तकदीप्तय ।।
निखिलभीतितम शमनाय किं
सपदि पार्श्वजिन विनवीमितम् ।। १

अन्त- किमपि यदिहाश्लिष्ट क्लिष्ट तथा चिरमत्कवि-
प्रकटितपथानिष्ट शिष्ट मया मतिदोषत ।।

रिणीपुर को तारानगर कहते हैं जो कि बीकानेर डिवीजन के चूरू जिले (राजस्थान) मे है। (स०)

तदमलधिया वोध्यं शोध्य मुवुद्धिवनैर्मन-
प्रणयविशद कृत्वा धृत्वा प्रसादलव मयि ॥ ६१

इति अलङ्कारविदग्धप्रश्नोत्तरपष्टिशतककाव्य ममाप्तम् ।

१७ ४४८२ रत्नकोश

आदि- वैशपायन उवाच-

रत्नकोश प्रवक्ष्यामि लोकाना हितकाम्यया ।
पृथिव्या यानि रत्नानि तेपामुद्धरण प्रभो ॥ १
कथयिष्ये महाराज शृणु त्व पाडुनन्दन ।
सर्वशास्त्रमय दिव्य सर्वज्ञानप्रकाशकम् ॥ २
अल्पग्रथं मुवोधार्थं रत्कोश सम्म्यगेत् ॥ ३

अन्त- पचविधा गति. नरकगति । तिर्यक् । मनुप्य । देव । मोक्षगति ।

इति श्रीरत्नकोशरत्नाकर सम्पूर्णम् ।

लिपिकर्ता—कान्हीराम ।

२५. ६१२७ शतकत्रय

अन्त- पुष्पिका- इति श्रीवोधमते गोतमरिपीशिष्यअमरसिंहतच्छिष्यरूपचदविरचिते मानुष्यवोधे त्यत्रवोधमतमम्पूर्णं । समत १४३४ वर्पे आपाढशुक्ल १५ काशीनगरमध्ये लिपत श्रीवाडीगुजरातीवशे हरीशर्माभट्टतत्पुत्रविष्णुभट्टशर्मा लिपीचक्रे लिपायत महाराप्ट्रभट-रामकिसनजीवाचनार्थं सर्वसमुच्चयटीका सूत्रग्रथ ५१७५ सर्व ।

४१. ४४५६ सिदूरप्रकरसटीक

आदि- श्रीमत्पार्श्वजिन नत्वा स्वोवशीयमकारकम् ।
सद्य सस्मृतिमात्रेण प्रत्यूहव्यूहकारकम् ॥ १
श्रीचद्रकीर्तिसूरीणा सद्गुरूणा प्रसादत ।
सिदूरप्रकरव्याख्या क्रियते हर्पकीर्तिना ॥ २

अन्त-सिदूरप्रकरस्यव्याख्याया हर्पकीर्तिभि सूरिभि विहितायातु सामान्यप्रक्रमोऽजनि ॥ १ तपागणे नागपुरीयपूर्वे । श्रीचद्रकीर्त्याह्वयसरिराजा । तेपा विनयहर्पकीर्तिसूरिश्वरो वृत्तिमिमामकार्पीत् ॥ इति श्रीसिदूरप्रकरस्यटीका ममाप्ता ।

५७ ४३४८ सुभापितसूक्तावली

आदि- दान सुपात्रे विशुद्ध च शील ।
तपो विचित्र शुभभावना च ॥
भवार्णवो त्यर्णवयानयात्रा ।
धर्मं चतुर्धा मुनयो वदन्ति ॥

५८. ५६८४ सुभापितार्णव

आदि- चद्रनाथ जिन नत्वा जिनयातिचतुष्टयम् ।
सुभापितार्णव वक्ष्ये ज्ञानविज्ञानकारणम् ॥ १

६१. ४४१४ सूक्ताली

आदि- वीर विश्वगुरुं नत्वा कृत्वा यत्नेन सग्रहम् ।
सदोपकारसूक्ताली स्वान्यपाठाय लिख्यते ॥ १

अन्त- आराधयेद्धर्ममनन्यकर्मा प्राय. प्रसादावधिरेव सर्वं ।
आराद्धुमेन तत्कृतप्रसाद कस्यापि विस्फूर्ति निर्यत्ति चेतः । १८३४

लि क शुभसुन्दरगणि । लिपिस्थान—वृद्धग्राम ।

५५. ४३४६ सुभाषितसग्रह

पत्र २३वें मे पुष्पिका इस प्रकार दी हुई है—

इति श्रीमदाचार्यजी श्री ६ केशवजीकृतानि काव्यानि समाप्तानि । लिपिकृत पूज्यऋषि-श्री ५ सामजी तच्छिष्य पू०ऋषि श्री ५ महिराजी तत्शिष्य पू० ऋषिश्री ५ टोडरजी-तत्शिष्य पू०पवित्रात्माश्री ५ भीमजी तच्छिष्येण मुनीदामाख्येणालेखि शुभ श्रेय. सवद्वमुगगन-समुद्रचद्रवर्षे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे त्रयोदशीगुरुवासरे राणपुरे लिपिकृता प्रतिरिय शुभ श्रेय ।



१८—कथा-चरित्र-आख्यानादि

१ ४३३२ अबडचरित्र

आदि- ॐ नम सिद्धेभ्य ।
धर्मात्सम्पद्यते लक्ष्मीर्धर्माद्रूपमनिन्दितम् ।
धर्मात्सौभाग्यदीर्घायू धर्मात्सर्वसमीहितम् ॥ १

अन्त- इत्थ गोरखयोगिनो वचनत सिद्धोम्बड क्षत्रिय
सप्तादेशवरा सकौतुकभरा भूता न चाभाविन ।
द्वात्रिंशन्मितपुत्रिकादिचरित यद्गद्यपद्येन त-
— च्चक्रे श्रीमुनिरत्नसूरिविजयी तद्वाच्यमान बुधै ॥

इति श्रीमुनिरत्नसूरिविरचिते गोरखयोगिना दत्तसप्तादेशकरअवडकथानक सम्पूर्णमित् ।
लिपिकर्ता—ज्ञानसुन्दर । स्थान—मवाला ।

७ ४३३५ उत्तराध्ययनकथा

आदि- प्रणम्य श्रीमहावीर नम्राखण्डलमण्डलम् ।
आरभ्यते कथा- कर्त्तुमुत्तराध्ययनस्थिता ॥

अन्त- गङ्गामुत्तीर्य साधुसमीपे प्रव्रजित अग्रग सम्बन्ध सूत्र एव प्रोक्ता । इति पचविंशा-ध्ययनकथा समाप्ता ।

कथा कृता पण्डितपद्मनागरैं
स्वशिष्यवाक्यप्रणयेन सस्कृता ॥
पिपाडिपुर्यां जिनपार्श्वनायक-
प्रसादत सत्कुशलाय सन्त्विमा ॥
रचनाकाल—१६५७ । पीपाडग्राम ।

१६　४३८७　चित्रसेनपद्मावतीकथा

आदि— कल्याणकमलागेह नि सन्देह सहोदयम् ।
कल्याणविलसद्देह वदेऽह वृषभप्रभुम् ॥
अन्त— नभरसरसचद्राब्दे श्रावणसितपचमीतिथौ सोमे ।
श्रीचित्रसेनपद्मावतीकथा जयतु वृद्धिविजयकृता ॥ ५६४
श्रीचित्रसेनपद्मावतीकथा सम्पूर्णा ।

१६　४३६८　चित्रसेनपद्मावतीचरित्र

आदि— नत्वा जिन प्रतीमाद्य पुण्डरीक गणाधिपम् ।
शीलालकारसयुक्ता साश्चर्या तत्कथा ब्रुवे ॥ १
अन्त— शिष्यस्तदीयो महिमानिधान
चरित्रपात्रै. स्वगुणै प्रधानम् ॥
पद्मावतीशीलगुणस्य कीर्तने
कथाऽकरोत् पाठकराजवल्लभ ॥ १२१४
श्रीनयोविजयशिष्यै भक्तिनास्ति वृकार्यं ए ।
चरित्र चित्रसेनस्य पुण्यार्थे चाह निर्मितम् ॥ १२१५
इति श्रीशीलविषये चित्रसेनपद्मावतीमहासतीचरित्र सम्पूर्णम् ।
लिपिकर्ता—रामविजयगणि ।　　लिपिस्थान—राधनपुरनगर

२२　४४३५　देवकुमारकथा

आदि— ॐ नम सिद्धम् ।
पुरा अभूत्कुसुमपुरे सूरनामा नरेश्वर. ।
विरोधिध्वसकरप्रसरसुन्दर ॥ १
अन्त— चिरमत्रिपद भुक्त्वा प्राप्यान्ते व्रतमुत्तमम् ।
प्रपाल्य स्वर्ययौ मोक्ष गन्ता च कतिभिर्भवैः ॥ ३६२
पुत्रात्सुख न भवति जनस्य जनकस्य च ।
रत्नाश्चर्यमयी चौर्यव्रतपोपकरीकथा ॥ ३६३
इति श्रीदेवकुमारकथातृतीयव्रतमाहात्म्यम् ।
लिपिकर्ता—श्रीजिनसुन्दरसुगुरोश्शिष्याणुविजयसुन्दरो विनयी ।
देवकुमारकथानकमलिखच्च परोपकाराय ॥ १

२५. ४४३४ धर्मवुद्धिमन्त्रिकथा

आदि– उद्वाहे प्रथमो वर किल कलाश(शि)ल्पादिके यो गुरु-
भूपश्च प्रथमो यति प्रथमकस्तीर्थेश्वरश्चादिमः ।
दाताद्य व्रतपात्रमाद्यमपर. सिद्धो पद वादिम
सच्चक्री प्रथमश्च यस्य तनय· सोऽस्त्वादिनाथ श्रिये ।। १
धर्मत सकल मगलावली धर्मत सकलसौख्यसम्पद ।।
धर्मत स्फुरति निर्मल यशो धर्म एव तदहो विधीयताम् ।। २

अन्त– आरोग्य सौभाग्य धनाढचता नायकत्वमानन्द ।।
कृतपुण्यस्य स्यादिह सदा जयो वाछितावाप्ति ।। १
धनदो धनमिच्छूना कामद काममिच्छुनाम् ।
धर्म एवापवर्गस्य पारपर्येण साधक ।। २
इति पापवुद्धिनृपधर्मवुद्धिमन्त्रिकथानक सम्पूर्णम् ।

३७. ४३३३ युवराजऋषि-चरित

आदि– विशालास्तिपुरीजैनप्रासादैरतिसुन्दरा ।
जयन्ति(न्ती)स्व पुरीमात्मधनधान्यसमृद्धिभिः ।। १

अन्त– एव निशम्य युवराजऋषेश्चरित्र ।
कर्पूरदीप्तिभिरचौरगुणै पवित्रम् ।।
ससारवारिधितरीतुलिते प्रयत्न ।
स्वाध्यायकर्मणि गुणिन् कुरु नि स्वपन्नम् ।। १३
इति श्रीजुवराजकथासमाप्तमिति । लि. स्था. —हर्षपुर ।

३९. ४४०२ रूपसेनकथा

आदि– देवा स्युर्वशगा नवापि निधयश्चाष्टौ महासिद्धय
गेहस्था· सुरधेनुशाखिमणयो यस्य प्रभावान्नृणाम् ।
शष्टाभीष्टफलप्रदाननिपुण श्रीवीतरागादितो
लोभव्याभवपारदप्रतिदिन धर्म. समाराध्यताम् ।।

अन्त– यशो धर्मो गुणा सौख्यं लक्ष्मीरायु सुमगलम् ।
सफलान्येतानि दत्ते च धर्मकल्पद्रुमोह्ययम् ।। १०१४

श्रीवीरदेशनाया धर्मकल्पद्रुमे शिखरोपमरूपसेननृपाख्यानवर्णनोनाम नवम. पल्ल. समाप्तः ।। इति श्रीरूपसेनकथा सम्पूर्णा ।

४२. ४४५८ वरदत्तगुणमंजरीकथा

आदि– श्रीमत्पार्श्वजिनाधीश फलवर्द्धिपुरस्थितम् ।
प्रणम्य परया भक्त्या सर्वाभीष्टार्थसाधकम् ।। १

अन्त– श्रीमत्तपगणगगनागणदिनमणिविजयसेनसूरीणाम् ।
शिष्याणुना कथेय विनिर्म्मिता कनककुशलेन ॥ ५०
बुधपद्मविजयगणिभि प्रवरै र्भीमादिविजयगणिभिश्च
सशोधिता कथेय भूतेपुरसेंदुमिते वर्षे ॥ ५१
गणिविजयसुन्दराणामभ्यर्थनया कृता कथा मयका ।
प्रथमादर्शे लिखिता तैरेव च मेडतानगरे ॥ ५३

इति कार्तिके सौभाग्यपचमीमाहात्म्यविषये वरदत्तगुणमजरीकथानक सम्पूर्णम् ।

४५. ४३३४ शातिनाथचरित्र

आदि– श्रेयो रत्नाकरोद्भूतामर्हल्लक्ष्मीमुपास्महे ।
स्पृहयति न के यास्ये शेप श्रीविरताशया ॥ १

अन्त– यस्योपसर्गा स्मरणे प्रयाति
विश्वे यदीयाश्च गुणा न माति ॥
यस्यागलक्ष्मी कनकस्य काति
सघस्य शाति स करोतु शाति । ६२६

इत्याचार्यश्रीअजितप्रभसूरिविरचिते श्रीशातिनाथचरिते द्वादशभाववर्णनो नाम षष्ठ प्रस्ताव । इति श्रीशातिनाथचरित्र सम्पूर्णम् । श्रीजीवविजयगणिनी परत ।

५१ ४३३६ शालिभद्रचरित्र

आदि– श्रीदानधर्मकल्पद्रुर्जीयात्सौभाग्यभाग्यभू ।
पूर्वापश्चिमतीर्थेशलक्ष्मीभोगमहाफल ॥ १

अन्त– श्रीशालिचरिते धर्मकुमारसुधिया कृते ।
श्रीप्रद्युम्नधिया शुद्धे सप्तम प्रक्रमोऽभवत् ॥ ५६

श्रीशालिभद्रचरिते सर्वार्थसिद्धिप्राप्तिवर्णनो नाम सप्तम प्रस्ताव समाप्त ।
जिनातिशयपक्षाख्यवत्सरे विहिता कथा । ग्रन्थेन द्वादशशती चतुर्विशतिसयुता ॥



२०–राजस्थानी

१. ७७५३ (१-१७) अकपाटी आदि गुटका

आरभिक दो पत्रोमे लघु चाणक्यनीतिके दूसरे अध्यायका अतिम श्लोक तथा तृतीय अध्याय लिखित हैं। आगे १७ पत्रोमे अकपाटीका लेखन हुआ है, पत्रमे ऊपर अक-सख्या और नीचे सुभाषित (नीतिपरक) दोहे, श्लोक आदि हैं। उदाहरणार्थ—

'दान दया दमोद्रिण दर्शन देवपूजित ।
दकारा पचवर्तते दूर्गत नैव गच्छति ॥ १ (पत्र १)

दूहा ॥ सरतर अक्षर सीप पीव, जो रपै अप्याण ।
सर वैरीतर सायरा, अक्षर राज दुवाण ॥ १ (पत्र २)

अन्तके १६-१७वें पत्रमे---

दूहा ॥ काली तू कोयल भली, जस मनषरो विवेक ।
अव विहूणी अवरसु', बोल न बोलै एक ॥ १ (पत्र १६वां)
गाम गोरमे होत है, जोय दूर मत जाय ।
वनी वणाइ पारसी, अरथ कह्यो इण माय ॥ १ (पत्र १७वां)

॥ लीषतं । पीडत श्री ५ श्रीवालचदजी लीपी छै । स० १८३५ मीगसर सुद ५ वार मगलवार अषसुरं जं सरूप गोठीरा छै ।

६ ६५२५ अजनाचोपाई

आदि- ॥र्द०॥ श्रीगणेशायनम ॥

दूहा ॥ श्रीगणधर गौतम प्रमुप, एकादम अभिराम ।
मन वछित सुष मपजै, नित समरता नाम ॥ १
प्रथम उद्यम मे माडियो, मति दीसै अति मद ।
तिण कारण पहिला नमु, श्रीगणधर सुपकद ॥ २
सेवकने सानिध करै, देड्यो अविरल वाणि ।
जिम वेगो सिद्धै चढै, काइम रापिस काणि ॥ ४

अन्त- तिणि गच्छ पीपल थापीयो, आठ सापा विस्तार ।
सवत रुद्रवावीसमै, वीसमै हूई सुषकार ॥ १२
ते गच्छ दीसै दीपतो, साचौर नगर मझारि ।
वीर जिणेसर दीपतो, जिहा तीरथ प्रगट उदार ॥ १३
तास पाटै अनुक्रमै हूवा, श्रीलीषमीसागरसूरि ।
विनय करी कर्मसागर, वाचक देय सनूर ॥ १४
तास सीस पुण्यमागर, वाचक पभणै एम ।
अजनासुदरी चौपई, पूरण कीधी ते प्रेम ॥ १५
सवत सोलसत्यासीइ श्रावण मास रसाल ।
सुदि तिथि पचमी निरमल, रिद्धि वृद्धि मंगल माल ॥ १६

सर्व गाथा ॥ इति श्रीअजनासुदरीचौपई सपूर्ण । सवत १८६८ मीगसर कृष्ण पक्षे तिथि १ भौमवासरे द्वीतीय प्रहरे लिपत ऋषी नोलचद पीहो ग्रामे उदावत राज्ये वाचनार्थ षीर नद्यः श्रीरस्तुः ॥ श्री. ॥

३० ७७४३ अध्यात्मरामायण भाषा

आदि– श्री गुणेसाये नीम ॥ सुरसती नीमो ॥ श्री गीतारामजी सत छै जी ॥ श्री रामाये नमा ॥ कथ्ते अधातम रामायने भाषा लीपत रामहृदय ॥ राज श्रीराजैसधजी सभापीत ।

चौपई– जबै भुव भार भयो दुष्टनतै । तब ही देव गये जाचन प्रभुपै ॥
चिदानद मुनी अदस वानी । परजापते असतुते ही ठानी ॥ २
तीन सुप्त मन भेग्रे भगवाना । चीदानद यनकी सब जाना ॥
मेघ गिरा वानी जु वुचारी । मुनीक अमा सते वीचारी ॥ २

अन्त– दुहा ॥ राम हीरदैको राजैदानीते प्रीते करतै वुचारै ।
सीय्याराम हीरदै बसैय्या समे नाहे बीचारै ॥ ६५
राम हीरद भाषा अरथै कीनो मते वुनमानै ।
सुनी कह रीजै न धारी है करीयै मते अपमानै ॥ ६६

ईती श्री अधात्म रामाणै रामै हीरदये भाषा अरथ सपुरन ॥ कथेते म्हाराजे श्रीराजसीघजी ॥ सुभ समुरथै ।

८५ ५२११ कछवाहोंकी वशावली

आदि– ॥ श्री गणेशाय नम ॥ अथ कुछावाकी वशावली लिप्यते ॥

श्रीआदिनारायणतै कवलमै ब्रह्माजी ॥१॥ मारीच ॥२॥ कस्यप ॥३॥ सूर्य ॥४॥ ववस्वान ॥५॥ मनु ॥६॥ इप्वाक ॥७॥ विकुपि ॥८॥ पुरजय ॥९॥

अन्त– महाराजाधिराज जन्म नाव मोहोनसिंघ नरवलका राजाको वेटो सो राज पायो । जदि मानसिंघजी नाव पड्यो । मीती पोस वदि ९ स० १८७५ का । राज कीयो महीना ४ दिन ६॥ माहाराजाधिराज श्रीसवाई जयसिंघजी सवत १८७० कै साल श्रीजमनायजी पधारया जाति देवा । सब माज्या साथ पधारी मीती असाढ सुदि ८ सवत १८८४ कै साल ।

८७ ७७२० (२२) कपडकुतूहल

आद्य अश खण्डित है । उपलब्ध रचनाका प्रारभ इस प्रकार है—
" ढि पिलग पर सु दर ढोलियै वाय ॥ १३
मसी जर सु मो मन भयो, प्रीउ ढोलिए वोलाय ।
माल मुँहगीघे लीजिये, मो माहरइ आवी दाय ॥ १४
तन सपुकी साडी चणी, कचु वण्यो सुचग ।
रतन जडीत नीरपी, सोनी सु दर अग ॥ १५

अन्त– कचीयो पेम पछेवडो, कीधो सेज तीआर ।
तिण वेला मदिर गई, प्रीउ माणइ तिणि वार ॥ ३१
प्रीआग गगदास सूत, नगर उदैपुर वास ।
कपडकुतूहल कीधा, वणी देंहि दुवास ॥ ३२
इति कपडकतुहल सपूर्ण ॥

९६ ४०२० कविकल्पलता

आदि- ॥ दं० ॥ अथ श्रीसारकृत बावन्नी लिष्यतें ।
ॐकार अपार पार तसू कोइ न लब्भैं ।
सबर कर सिरताज मत्र धुरि कवियणभ्यैं ॥
अरधचद आकार उवरे मीडो जसु सोहै ।
जैं ध्यावैं चित लाय तिकैं तिहुयण मन मोहै ॥
साधक सिध जोगी जती जासु ध्यान अहनिस करैं ।
कवि सार कहै ॐकार जप काइ सैंण भुलो फिरैं ॥ १

अन्त- क्षिते मडल क्षिति तिलक सहर पाली पुर सोहै ।
गढ मरु मदिर महिल वाग वाडी सनमोहै ॥
राज करैं जगनाथ सुर सामत र सवायो ।
सोनगरे सुसमथ सुजस वसुधा वर तायो ॥
समत सोलैनिव्यासियैं आसु सुदी दसमी दिनैं ।
श्रीसार कवित बावन कह्या साभलिज्यो साचैं मनैं ॥ ५५

इति श्रीकविकल्पलता श्रीसारकृते मपुर्ण । सुभ भूयात् ॥ श्री सवत १८७८ रा मती फागुण सुदी १० स श्री श्रीगुराजी श्रीवेनरामजी । लीपता कु इन्द्रभाण वाचनारथम् अणदपुरमध्ये ।

१०५ ४४१५ (१६) कागदरी नकल

इस गुटकेमे पत्र स० ३९८से पत्र स० ४०६ तक चार कागजो प्रेम(पत्रों)की नकले दी हुई है, जो इस प्रकार है—

पहली नकल । आदि- कागदरी नकल ।

छद नराच- मते हत साभर नगर सुघर । प्यारी निज हाथ दियो पतर ।
सूभ वान कथानक मुदरिय । छिव गात अनंत चित हरिय ॥ १
सलिता सर निसर नीर वहै । नलनि सूभ वास धरैं र लहै ।
वहु वास निवास न कुप वनैं । वनिता गनि तीर सूनीर थनैं ॥ २

अन्त- दिन जात वृथा तुम सग विना । कवहु मुप होत न आप विना ।
कहता ज रजो समचार सवैं । सु मिथ्या तन मानहु भांम कवैं ॥ १७
न लिषे तुम पत्र सनेह घनो । पय जावनकी तुम रीत गनो ।
जुग राम वसु ससि सवत य । सुभ मास तथी सरस चरय ॥ १८ इति ॥

दूसरी नकल- [संवत् १८३४]

आदि- कागदरी नकल लीपते । स्वस्त श्रीअमुकानगर सुयाने सुकल सुभ ओपमा केलास वयारी, प्रेमरसप्यारी, चदवदनी, मृगलोचनी, लगनरी लडी, जीवरी जडी, हीयारी हार, सेजरी सिणगार, प्रीतमरी पीनार, चितरी ऊदार, हनतमुपी, नदा सुषी ·· ।

अन्त– सब सरषी नारी नही, सब सरषी नही वाण ।
सब गुण एकणमे नही, दापु चतुर सुजाण ।। ६२
इती ओपमा लिषणारी, जथाजोग मत जाण ।
कहत दुर्लभमल चुप सु, रुप चुप परवाण ।। ६३ ।। सपुर्णं ।

तीसरी नकल–

आदि– सिध श्री प्यारी दिसे, जैपुर नगर जठेह ।
प्रीतम लिषत वणायकै, नित २ नवलै नेह ।। १
चदवदनि मृगलोचनी, चिता नक सुचग ।
गजगमणि रस जोग है, अतहि जाण सुचग ।। २

अन्त– वाहू उतर देजो सदा, कागद अधिक उजास ।
हित कर लिपजो हेतसु, दमकत अपणा पास ।। ७० सपुरण ।।

चौथी नकल–

आदि– सिध श्री सरवओपमा विराजमान अनेक ओपमालायक गुणनिधान बहोतर कलासुजाण, चवदै विध्यानिधान, सूरज जेहा तेज, चकवा चकवि जिहा हेज, चद्रमा जेहा सितल, रुपा जेहा ऊजला । ।

अन्त– मत किणहिसु लागजो, नैणाहदो नेह ।
थुकै न थुवो नीसरै, जलै सुरगी देह ।। १८
सजन फलजो फूलजो, वड जु विसतरजो ।
नालेरा जु लूबजो, आवा जु फलजो ।। १९

इति श्रीपत्री सपुर्ण ।

२५७   ४९१४ (५४)   जोगी रास

आदि– अथ जोगी रास लीपीते ।। ॐ नम सीध्येभयो नम ।।
आदिपुरिष जो आदिजगोत्तमु, आदिनाथो ।
आदिजुगोत्तमो जोग पयसो, जय जय जय जगनाथो ।। १
तास परपर मुनिवर हुआ, दीगावर महिनाणी ।
कुदकुदाचरज[1] गुरु मेरै, पाहुजी कहिय कहाणी ।।

अन्त– जोगीह रासो सीपहु श्रावक, दुष न कबहु लहिसो ।
जो जिणदासह त्रिविधि हि, सिधहु समरण कीजहू ।। ४२

ईती जोगीरासो सपुरणमस्तु ।

२६१   ५४१८ (५४)   टडाणा गीत

आदि– टडाणा टडाणा वे, जियडे टडाणा टडाणा ।।
इत ससारै दुष भडारै, क्या गुण देषि लुभाणा छे ।।
जिन ठग ठगिया नादइ कालै, फिर तस जोग पत्याणा छे ।।

---

१ कुन्दकुन्दाचार्य ।

अन्त– करि उदिम आपन बल मडी, भोगी अमर विमाणा छे ।
समिकि तपोहण दस विधि पूरा, निरमल वरम कराणा छे ॥
सुध सरीरु सहज लव लावहु, भावहु अतर भा(णा) छे ।
जपै वूचा तम सुष पावहु वछै पद निरवाणा छे ॥

इति टडाणा समाप्तम् ।

३३९. ४९२४ (३) नागदमण कथा (अपूर्ण)

आदि– ॥र्द०॥ श्रीसारदाय नम ॥ अथ नागदमणि लिष्यते ॥

दूहा ॥ वलतो सारद विनवुं, गुणपति करो पसाऊ ।
पवाडा पनगा सरस, जदुपति कीघो जाऊ ॥ १
प्रभू अनेके पाडीया, देत वडाचा दन ।
के पालणै पोढीया, के पय पान करन ॥ २
कोइ न दीधो कानवा, सुण्यो न लीला वध ।
आप वधावण उपला, वीजा छोडण वध ॥ ३

अन्त– कलश ॥ सुणे गुणें सम वास, नंदनदन अहिनारी ।
समुद्र पार ससार, दोई गोपद अणहारी ॥
अनतर आणद सवे वपताप सुणावै ।
भगति मुगति भडार, क्रशन मुगताह करावै ॥
रमीयो चरित रावारमणि ॥

५३८ ४९०६ (२) राजसभारजन

आदि– ॥र्द०॥ अथ राजसभारजन लिष्यते ॥

गगाधर सेवहु सदा, गाहक रसिक प्रवीन ।
राजसभारजन कहो, मन हुलास रस लीन ॥ १
दपतिरति नीरोग तन, विद्या सुधन मुगेह ।
जो दिन जाय आनदमै, जीतवको फल एह ॥ २

वीचसे कुछ उदाहरण—

साथ सहेट चल्यो चहै, मुग्धा तिय पिय छैल ।
पीसेमे कोडी न्ही, चले वागकी सैल ॥ ६७
सहज रीति कुल तजि लगै, काम कलाकै साज ।
वाप न मारी मीडकी, वेटा तीरंदाज ॥ ७०

अन्त– छंद तीनमै माठ सव, व्यवहारै सुष देत ।
राज-सभा-रंजन सरस, कियो रसिकजन हेत ॥ ९७
अंक वान मुनि ससि (१७५९) समा, विक्रम सक नभ माग ।
उजल नवमी भृगु दिवस, पूरन रस-प्रकाम ॥ ९८

सुपद भूमि सग्रामपुर, श्रीनृपवर जयगाहि ।
तहि कवि मन सुप्रमग्न अति, मति रतिसो अवगाह ॥ ६९
जब लो नृप सज्जन कला, मेरु धराधर धाम ।
तब लो चिर जीवहु रसिक, पढत गुणत गुन नाम ॥ ७०
इति श्रीराजसभा-रजन दोहा समाप्त ।
सवत् १७९८ वर्षे मिति पोस वदि १४ शुक्रे लिपिकृत श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।

५५०　४८३४　राठोड नाहरखानरो छद

आदि– छद राठोड नाहरखानरो गाडण माधोदासरो कह्यौ ॥
आरज्या ॥ उप्पन्ना पुरसाणी उडा । पाणी पद्धा पापर होटा ।
ऐराकीश्रा रछ्छीस जोडा । नाहरखान समर्प्पे घोटा ॥ १
भाडजी केवी मुगलाणी । पासा पेंग जिके पुरसाणी ।
वड पाता सुण अवरल वाणी । रेवत रीझ दीये राजाणी ॥ २
अन्त– कलस ॥ वहम तेज वहु सफल वहुत मोला वहु भोयण ।
वीरज तेज अनत लोय दीप ववहलोयण ॥
धड विसाल पं करह गात उतगह मैगल ।
पवग वेग विसराल वाजि वीया वेगागल ॥
वरहास वडा वड कवीयणा त्यागी द्यण हरतं रवं ।
समपीया पान राजानकं कुंप करग्रह अभिनवं ॥
इति नाहरखान घोडारा दातारगे छद सपूरण ॥

६४१४　विक्रमचरित्र (हेमाणन्द रचित)

आदि– ॥र्द०॥ श्रीसरस्वत्यै नम ॥ प्रणम्य देवदेव च वीतरागमुर्ग्चिन ॥
लोकाना हि विनोदाय करिष्येह कथामिमा ॥ १
नत्वा सरस्वती देवी स्वेताभरणभूपिता ।
पद्मपत्रविसालाक्षी नित्य पद्मासने स्थिता ॥ २
अन्त– श्री विक्रमनें वेताल कथा कही चउवीस उदार ।
सोल छियालै भाद्रव मास । हेमाणद कहै उल्हास ॥ ३९
इति श्रीवेतालपचीसी २४ कथा ।
दोहा– वलि विक्रम सीसम गयो, पाछो तिण ही डाल ।
मडग्रघी काघइ कीयो, तव वोलै भूपाल ॥ १
विशेष– आगेका अग अपूर्ण है ।

६०३　६१११　विद्याविलास चोपाई

आदि– ॥र्द०॥ श्री सरस्वत्यै नम ॥
दूहा– सरसति नित आपो सुमति, चित हित धरि प्रणमेवि ।
जित तित थित थानक अचल, सोभित दह दिसि देवि ॥ १

कवियण नरसा निधि करण, दूर हरण अग्न्यान ।
चरण सरण उपम धरण, उपावण गुण ग्यान ॥ २

अन्त– वाचक गुणवर्धन सुषदाया, श्रीसोमगणि सुपसाया जी ।
इम जिनहरष पुण्य गुण गाया, तीस ढाल सुप पाया जी ॥ १४
हिव राजानि सुणे गुरुवाणी ॥

इति श्रीपुण्यविषये विद्याविलासचोपई सपूर्णं ॥ स० १८२९ वर्षे मिति आसाढ सुदि ७ दिने ।

६११ ७७२२ (१४) वीरमदे ईडरिया आदिके कवित्त

आदि– ॥ श्रीगणेशाय न(म) ॥
कवित्त– गढत लक दईवत सक झकत अहिराइण ।
धनत धीन अहि वेलत पान पेषत पत्राइण ॥
अमग्त आस माया तपास रम होइ महा जल ।
परमा वात सोवन धात चितत वेगागल ॥
अणराइ चाइ एकाणवै सालिहातर दिठो सवे ।
त्रिहु राइ तिलक नारियेण तना दाता तो वीरमदे ॥

अन्त– कर परि जिण गिरवर धरयौ, मथुरा मारयौ कम ।
रेषा रापस निरदले, जयकारी जदुवस ॥ १०
श्रीठाकुरारी माषी छै ।। लिपत मिश्र आनदराम ॥ शुभमस्तु ॥

६१५ ७७४३ (४) वेदस्तुति भाषा

आदि– ॥श्रीरामजी॥ अथ वेदस्तुता भाषा लीप्यते ॥ राजश्री राजैसीघजी सभापत ॥
छद– श्री भागौत दसम सकध, वेद सतुत्म भाषा वध ॥
अती आनद भव वध छेद, आवागमन मिटै भ्रम पेद ॥
चोपई– श्रीसुपदेव ब्रह्म ततुवज्ञाता । वेदव्यासके पुत्र विप्याता ॥
तीनके पदवदन मै करु । तीनको ध्यान हीरदैमै धरु ॥

अन्त– नीतीप्रती पाठ जु जे करै, वुपजै ब्रम ज्ञान ।
तत पद नीहचै पाय है, राजै प्रम वीज्ञान ॥ ६०

ईति श्रीवेदसतुती भाषा ग्ररथ सपुरण ॥ कथीत म्हाराज श्रीराजैसीघजी ॥

६७५ ४०१० शुकवहोतरी

आदि– ॥र्द०॥ श्रीगणेशाय नम ॥ अथ वात सूवावहुत्तरी लिष्यते ।
दूहा– करि प्रणाम श्री सारदा, अपनी बुध परमान ॥
सुक शप्त वार्ता उ करी, न्यायते देवी दान ॥ १
विक्रम नगर सुहामणो, सुप सपतकी ठोर ।
हिंदू थान उन हिंदू धरम, असो सहर न और ॥ २

अन्त– हरदत्त सेठ होम करायो तिहा मासिका पिण आई । उपरन्तु दिव्यमाला पडो । उणरे दर्शन सेती सराप छूट शुकशारिका गधर्व होय आपणे लोक गया ।

इति श्री वहुत्तर वार्त्ता सुध मूवावहुत्तरी मपूर्णम् ॥ ७२ मवत् १८६६रा मिर्ती श्रावण सुदी १ दिने लिपत प० विजैसमुद्रेण श्रीजैसलमेर दुर्गे चतुर्मास्या म्थिता ।

६७६　४४१६　　　शुकवहोतरी । प्रथम पत्र अप्राप्त

आदि–　दी कह्यो । पृथ्वीकै विषै वहुतरी कथा मनुष्य भापा करि प्रभावती आगें कहसी । सील रपावसी । तदि गधमाद परवतकै विषै आविनै शुक मरीर छोडिकै मूलगो शरीर पामी पाचमै मोहर ब्राहमणनै दान देई । निपाप थाइम ।

अन्त–　कवि देवदत कहे । शुकका वचन भेला करिकै आपकी वुद्धिकै अनुसारै वाधी छई ।

इति श्रीशुकवहोतरी कथा समाप्ता ॥ सवत् १७६० वर्षे आसोज वदि ६ पप्टौ भोम वासरे प० वनीतविजय लिपि चक्रे ॥ शुभभवतु ॥ श्रीममाप्ता ॥

७२४.　४२८७ (१६)　सवाई जैसिहजीकी जोधपुर चढाईका वर्णन

आदि– "सवत १७६७ का मीती सावण वदी ८ ने श्रीमाहराजा मवाइ जैमघर्जा जोवपुर वुपर चढा । राजा अभैसघरी हुकम पांतसाह महमुदसाह का[सा]थे चढा । मो रोज पदरामै १५ जोधपुर जाइ लागा । अरफ मडोवरकी डेरा जाइ कीया । मुकाम १ ...

विशेष– आगे युद्धके ख्वर्चे और जोवपुरकी तरफमे लिये गये उपहार आदिका वर्णन है जो अपूर्ण है ।

७७५　४६०३　　　हमीर्रासो (हमीरायन)

आदि– श्री गर्नेमाय नम । हमीराईन लीपतै ॥

कवीत– गवरीनद आनद चद लीलाट वीराजैत ।
　　च्यार भुज कर फरम सरस भुपन अग राजत ॥
　　कर कमडल जयमाल लाल वसत्र वोह मुहावै ।
　　मधुर स्वगव स्वणमय रची ओर उदभाहन कीन ।
　　हो हय प्रसन सुवी वुधी धनी जो कथ कवीत प्रमा माण ॥ १

अन्त–कवीत ॥ असी करीउ काहु करै नही, कोउ सो करी राजवी चक्र तल ।
　　वाईस वीक्रम राण वुयवीन पाईवयाभा अजहु मध्यकी रोड रोनें ।
　　दर्शीन भडारा मदगल कहु हमेल करी ।
　　कदल रनथभ गढ असी करै न कोई ॥

ईती श्रीहमरायन साको श्रीगार सपुरन समापती ।

छद जाजाको ॥ कुडलीयो माई मोहदे असीस काई जीवो वरस सो । याई मोह दे असीस छीत्री ई तोर जीवो । वारा ऊपर वीस भनैजा जन त्रीरम केह ।

लीपत पाडे नाथुराम व्राह्मन गोड मी आसावी श्रम धर्ममुर्त्त गउ व्राह्मनका रक्षपाल राजा श्रीमलजीकू नाथुराम व्राह्मन गोड सदारामको भतीजो टोडै रहै है पकीजोको अप भीछुकको असीन वचजोजी मीती पोस वदी ६ मगलवार सवत् १७८७ जो पुस्तग वाचै जीकु राम राम वचजोजी । जाद्रप्ट दस्वा ताद्रस लीपते मा । जदी सुद्ध वीसुद्ध वा मम दोपे न दीयते ॥ शु० ॥

२१–हिन्दी

१२. ५३६८ अध्यात्मरामायण

आदि– ॥ श्रीरामाय नम ॥

दोहा– जुधकाड पूरन भयौ, ब्रह्मज्ञानके भाइ।
उतरकाड कहत हौं, बिधिसौ सबै बनाय॥ १

चौपई– जयति जयति रघुकुल उजिआरे। जयति राम कौसल्या प्यारे॥
रावन दस सिर मारयौ येन। राम कमल दल निरमल नैन॥ २

अन्त– सवत सत्रहसै इकताला। तीज जेठकी चद उजाला॥
पूरन भयौ मउ मैंदान। यहई जानौं थान मुकाम॥ ११०
ग्रथ होत भए बिघन सु भारे। हनुमान गनपवि सब टारे॥
भगवान ग्रथ यह पूरन गायौ। गुरकी कृपा सबै वनि आयौ॥ १११

छंद– भग अक्षिर कटित, अर्थ बिपरजै होइ।
दुषनतै भूषन करै, कोविद कहिए सोई॥ ११२

इति श्रीब्रह्माड पुराणे उतरषडे अध्यातम रामायने उमा महेस्वर सवादे उतरकाडे नवमौ अध्याय॥ ६॥ मूल ४४६३॥ भाषा ५२६६॥ इति श्री रामचरित्र भगवानदास निरजनी कथिते सपूरण। सुभ मगल। सुभ भवत। व्रषे जेठ मासे वदि दसै रिवि वासुरे॥ सवत १७८३॥ जले रक्षत पेले रक्षित पेले रक्षे रक्षे सथ लाभ तवधानान मूरष हस्त न दातव्य। रावे वधनात पुस्तक॥ १॥ मगल लिषकाना पाठकानाव मगल मगल सर्व देवाना भूमी भूपति मगल॥ १॥ मति निरजन तुम सरना मत्र सति राम॥ राम राम॥

४०. ५३८२ कवित्त सग्रह

आदि– ॥ श्री महागणपतये नम॥

कवित्त– मील भरी सोहैं, आन पतिकौं न जोहे,
कुल कानि अरसोहें तन जोति सरसाती हे।
उदैनाए भोहे कर तीन तीरछोहे
रति भोन लो चलो द्वार लो ना चलि जाती है॥
वेन कहिवेको पति मोनहीमे राषे प्रान,
ऐसी कुलवधू काहू कामो वतराती हे।
रिस रचें मनमे ती मनहीमे मेटे,
जैसे जलकी लहरि जल माझ ही बिलाती हे॥ १

अन्त–

दोहा– सावन सुदिकी तीजको, करी पचीसी सार।
सवत अठारह सनहि त्रेपन थिर सनिवार॥ १०७८

इति छक पच्चीसी सपूर्ण॥ सवत १८६३ शाके १७२७ मिति फाल्गुण वुदि १२ गु–

वार। इद पुस्तक समाप्त। दसकत भट्ट ग्राममुदरका। रणजीत तत्पुत बलदेव पठनार्थ ॥ यादृश पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिखित मया। यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥राम॥

३५५   ५३८६   रामायण, युद्धकाड

आदि– (प्रारंभिक पत्र अप्राप्त)
मनोहर कवि कलानिधि रच्यो।
तहा जुद्धकाडहि नारदागम सर्ग बत्तीसों रच्यो॥ ३२

अन्त– व्रज चक्रवर्ति कुमार गुनगन गहिर सागर राजई।
श्री रामचरन सरोज अलि परतापसिंघ बिराजई॥
तिहि हेत रामायन मनोहर कवि कलानिधिनें रच्यो।
तह जुद्धकाडहि सतरु चौंतीस ग्रथ फल बरनन रच्यो॥ १३४

लिख्यते लेपक रामसेवग लिखायत ठाकुरजी श्रीसिरदारसिहजी तस्य पुत्र पृथ्वीसिह ग्रात्म-पठनार्थ सवत १८३७ शाके १७०२ प्रवतमाने मासोतम मासे उत्तम मासे अस्वन …।

३६५.   ४६२३ (१)   रूपमजरी

आदि– श्रीगणेशाय नम। अथ रूपमजरी नद कृत लिख्यते।
दोहा– प्रथम हि प्रणऊ प्रेममय, परम जोति जो आहि।
रूप उपावन रूपनिधि, नित्य कहत कवि जाहि॥ १

अन्त–
दोहा– जदपि अगमते अगम अति, निगम कहति है जाहि।
तदपि रगीले पेमते, निपट निकट प्रभु आहि॥ ११७

इति श्री नददास कृत रसमजरी ग्रथ सपूर्ण समाप्त॥ श्रीरस्तु॥ शुभमस्तु। सम्वत् १७२६ चैत्र वदि तृतीया बुधवारे मोकाम रगामाटी सबलसिघ कुवरस्य पठनार्थ रसमजरी ग्रथ मुरलीधर मिश्रेणमलेखि॥

३७४.   ६०१६   व्रतकथाकोश

आदि– ॥ ६० ॐ नम ॥ अथ श्री व्रतकथा कोश भाखा लिख्यते।
चौपई– आदिनाथ वदू जिनरा[य]। कर्म कलक रहित सुपदाय।
धनुप पच से जाको काय। वृषभ लछन सोभै अधिकाय॥ १

अन्त–
छप्पै– श्री जिनद गुण धाम जाम वच सुणि चित धरिये।
श्रावकको आचार पालि कर्मनिसों लरिये॥
दान सील तप भाव च्यारि वृष मुल विचारो।
और सकल परिहारि चहू उत्तम उरि धारो
सुरगादि थान दाइक महा क्रमते सिवपदको कराहि।
ताते पुन्याल अनिको अबै इनि विधि मनमे किम धरहि॥ २१

इति श्रीसूरिश्रुतसागर कृत व्रतकथकोशके अनुसारि भाषा श्रीपरय विधानकी

समापिता ।। मिती माघसिर सुदि १३ पचम्या तिथौ वार वृहस्पति वासरे सवत १६२३ का। श्री ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।।

४६२   ४०२८   सभासार नाटक

आदि– प्रथम पत्र अप्राप्त
सैं पथरन भीजैं पानी कब लौं विचारीयैं ।।
जिहा बकवाद तिहा अत न सवाद कछु,
आपैं जो न सुधरैं तो कौनकौं सुधारिये ।
जोपैं अति जोर तो वताउ एक ठोर तोहि,
जानीये जगत जोपैं एक मन हारीये ।। २६

दोहरा– सव लछन पहिलैं सुनौ पुण्य सुसगत पाय ।
मन चचलतासू वसैं, नीच सग न सुहाय ।। २७

अन्त– सतगुरु सोही जो बतावैं साचे मारगकु,
साथी सतसग जामैं चलत ने हान है ।
कहत अरूप कोउ कोट काम केसैं तेज–
पुज धाम जाहि जैसी ही पहिचान है ।
ताहिमैं मगन देहको विसर जान,
वेदको विचार यहै जान है सुजान है ।।
यहै पेम लछिना अनन्य भक्ति मुक्ति यह,
यत्र पदप्राप्ति विग्यान निरवान है ।। २७

दोहा– सव विध सव रस सोहियत, कहत यहै रघुराम ।
यह नाटिक सम सदा, भूपन भेद सुनाम ।। २८

छप्पैं– यह नाटिक जो सुनैं, ताहि हिय फाटिक पुलैं ।
यह नाटिक जो सुनैं, वुधवल कमल प्रफुलैं ।।
यह नाटिक जो सुनैं, ग्यान पूरन मन आवैं ।
नाटिक सुनैं सुजान, मरम मनुजको पावैं ।।
विग्यान जान निरवानकैं, जोग ध्यान घर धन लहै ।
पावत परमपुरुष गत, मति प्रमान कवि रघु कहै ।। ३२६

इति श्री कवि रघुराम विरचित सभासार नाटिक सपूर्णम् ।

सवत् गुणकृत वसु शशी, तपस्यपक्ष शिति जान ।
पक्षति छाया सुत दिवस, ग्रथ चढ्यो परमान ।। १
ऋषि किसोर सोभत हुते, रत्नचद्रके मित्त ।
सभासारनाटिक लिख्यो, सकल रिझावन चित्त ।। २
निगम दिवमकी सस्थमैं, सत्वरतं गपिरत्न ।
लिख्यो ग्रथ वाचत सुनत, करीयो इनको यत्न ।। ३
।। श्रीरम्तु ।। सवनग ।। भद्र भूयादिति ।। श्री ।।

४८४   ५८६५   **सिंहासन वत्तीसी**

आदि– ।। श्री गणेशाय नम ।। अथ स्यघासन वतीसी भोज प्रवध हितौ उंपदेम कवि क्रस्नदाश क्रति लिपते ।

छैंपा– प्रथम सुमरि गण इसन गणनायक ।
विघ्नहरन मति राय काज सिधिकरण सहायक ।।
येक दत मय मन अत नहि पाव पाव सुमति गति ।
फरस हथ समरथ देव परतछ अमित गति ।।
कवि क्रस्नदास वदत चरन, और सुमति दुस्तर तरन ।
रस सिंघु मौढ विक्रम चरित सु, करित दुरित दुर्गम हरन ।। १

अन्त– दीनो वरु विक्रमको सोय, सारिवाहन तन दाहन होय ।
तो लगि सो नृप आयो तहा, विक्रम वीर अवि जहा ।। ४०
चडी वाच तेरे हेत दह्यो तन आय

विशेप– इसके पश्चात् पत्र रिक्त है ।



२२–जैनस्तोत्र

३.   ४१४६   **अन्तरिक्ष पार्श्वस्तव**

आदि– श्री अन्तरीक पार्श्वनाथ छन्द लिप्यते ।

दूहा– सारदपाय प्रणमा करी, आपो अविरल वाणि ।
पुरसादाणी पास जिण, गास्यु गुण-मणि-पाणि ।। १
अद्‌भुत कौतुक कलियुगै दीसै एह अदभ ।
धरतीथी अधर रहै, सदा अतरीक थिर थभ ।। २

अन्त– कीयो छद आनद वृ द मनमाहि आणी ।
साभलता सुपकद चद जिम सीतल वाणी ।।
श्रीविजयदेव गुरुराज आज तस गणधर राजै ।
श्रीविजयप्रभ सूरि नाम काम सम रूप विराजै ।।
गणधर दोय प्रणमी करि थुणियो पास असरण-सरण ।
भावविजय वाचक भणै जयो देव जय जय करण ।। ४६
इति श्री अतरीक पार्श्वनाथ छद सपूरण ।

४   ४३४६   **अजित शातिस्तव (सवालाववोध) त्रिपाठ**

आदि– अजि अजि असघ भय सति च सत सव गय पाव ।
जय गुरु सति गुणं करे दोवि जिणवरे पणिवयामि ।। १

अन्त– जइ इच्छह परम पय अहवा कित्तिसवित्थड भुवरो ।
ता तेलक्कुद्धरणे जिणवयणे फु आयर कुणह ॥ ४०
इति श्रीअजितशातिस्तव ।

८. ४३६२ एकादश गणधर स्तवन

आदि– गोयम गणहर पढम सघयण ।
तित्थकर वीर जिण पढमसीम मोक्रन समाणउ ॥ इत्यादि ॥ १

अन्त– इय समयज्जत्ति सव्यसत्ति चित्त भत्ति वन्निया ।
वैशाख सुदि इग्यारिसि दिनि वीर नाहइ थापिया ॥
ए सयलगणहर ए इग्यारसि जे आगहइ भाविया ।
एतवन भणसि भावँ मुणमि ते लहइ मुख मपया ॥ ५
श्रीप्रभासगणधरस्तव ।

इति श्री एकादशिदिनसम्वन्धि श्री एकादशगणधर स्तवन सम्पूर्ण ॥

२०. ४०३० कायस्थिति स्तोत्र

आदि– श्री पन्नवणा भगवती माहि थकी उदार करी गीतार्थ पूर्वाचार्य कायस्थिति नउ स्तवन करइ छइ ।

आदि गाथा—जहतु हदसण रहिउ कायठिई भीसणे भवारन्ने ।
भमिउ भवभय भजणा जिणिदत्तह विन्न विस्सामि ॥ १
जह कहता जिम हे जिनेश्वर तुह दसण रहिउ, ताहरइ" आदि ।

अन्त– वहू मो अनन्ती वार हिव घणइ पुण्य तणइ
उदय साप्रत तुझ कुमइ दीव उछइ ।
ता तस्मात्तिणि कारणि अकाय नही काया जिहा एहवा जे मिद्ध तेह तउ पद मुक्तिपद तेहती सपदा हे तीर्थकर द मुनइ ॥ २४
इति श्रीकायस्थितिस्तवनवालावबोध समाप्त ।

२५ ४३६३ गौतम दीपाली का स्तवन

आदि– इन्द्र भूती गउतम भणइ तिसला कुखि निधान ।
ज्ञात पूतनू पामीउ दइ मुभ मुगतिनो दान ॥ १
अन्त– देव गुरु भगत्यिमी सुगती वर अगुसरो ।
सकल कहि हीर गुरु गुण विचारो ॥ ७५
जिन वचन दीप दीपालिका राजती ।
इति श्री गउतम दिपालिकालि स्तवनम् ॥

२६ ४५६६ चतुर्विशति जिनस्तोत्र

आदि– जाडयध्वमकृते नत्वा नाभेयप्रमुखान् जिनान ।
आत्मन स्मृतये वक्ष्ये यमकस्तुतिवृत्तिकाम् ॥ १

अन्त– स्निग्धा अविरला चासौ विभा दीप्तिश्च अनच्छविभा अलकाना केशाना अन्ता यस्या सा अनच्छविभालकाता ॥

इति श्रीचतुर्विंशतिजिनसक्षेपतो वृत्ति समाप्ता ।

३७ ७४४४ (१) **चौवीसी**

इस गुटकेमे निम्न कृतियां है—१ आनदघन चौवीसी २ सग्रहणी सूत्र ३ जीव-विचार प्रकरण ४ नवतत्त्व. ५ दण्डक प्रकरण ६ सप्तस्मरण ७ प्रतिक्रमणसूत्र ८ पाच तिथिरी थुई १० स्तुतिस्तवन ११ गोतम रासो १२ स्नात्रपूजादि १३ चोढा-लिया १४ थूलभद्र नवरसो १५ वार भावना १६ आनदघन वहोतरी १७ पनरै तिथिरी थुई. १८ पचसधि (सारस्वत प्रक्रिया) १९ सिंदूरप्रकर आदि स्तोत्रस्तवन ।

६५ ४२९८ **पच-परमेष्ठि-नमस्कारार्थ**

आदि– श्री जिनाय नम । नमो अरिहताण ।

माहरउ नमस्कार श्री अरिहत भगवत नइ हुउ । किसा छइ ते अरिहत जीय अरिहते राग द्वेष रूपिया अइरि वइरी जीता अनइ अठारे दोषे रहित । इत्यादि ।

अन्त– माहरउ नमस्कार पचाग प्रणाम त्रिकाल वदणा सदा हुइ ।

इति श्री पचपरमेष्ठिनमस्कारार्थ सम्पूर्ण ॥

९१ ४०२५ **भक्तामर-स्तोत्र**

आदि– इनही पछइ आपणे घरे पाछा आवी राजानी सेवा करिवा लागा पूर्विली रीतइ आदि ।

अन्त– अन इन्वत्तिकरी मानतुग सूरि इ रची, मई इम ताहरा स्तोत्र रूपिणी पुष्प-माला जे कठ कदलि धरइ तेह नइ लक्ष्मी स्वयवर वरइ ॥ ४४

इति भक्तामरस्तोत्र-प्राकृतवार्तिकवृत्ति समाप्तम् ॥

१०० ६२७७ **भक्तामर भाषा**

भाषा भक्तामर कियो, हेमराज हित हेत ।
जे नर पढे सुभाव सो, ते पावे सिव खेत ॥

इति श्री भक्तामर भाषा सपूर्ण ।

१०१ ७४५० **भक्तामर भाषा आदि १८ कृतियाँ**

इस गुटकेमे निम्न कृतियाँ हैं—१ भक्तामर भाषा हेमराज कृत १–१६ २ चौसठ योगिनी नाम तथा घटाकर्ण १७–२१ ३ कल्याणमदिर भाषा २२–३२ ४ चैत्यवदन २–४ ५ भक्तामर स्तोत्र ५–१७. ६ कल्याणमदिर स्तोत्र सिद्धसेन कृत १७–२९. ७ लघु शाति २९–३३ ८ अजित शाति ३३–३६ ९ स्तोत्र सग्रह आदि १३ कृतियाँ ३६–८१ १० शक्ति मत्र ८३–८४ ११ पदस्तवन ८४–८९ १२ वसुधारा ९०–११५. १३ सोलह पद ११५–१३० १४ स्नात्र अष्ट प्रकारी नवपद पूजा १३१–१९५ १५ वीस

विहरमान गीत १६६ वाँ। १६ अतीत अनागत वर्तमान चौवीसी १६७–२००। १७ बावन वीर नाम २००–२०२ १८ पदस्तवन (१२ कृतियाँ) २०२–२३२।

११४ ४३४४ वीतराग स्तोत्र

आदि– य परात्मा पर ज्योति परम परमेष्ठिनाम्।
आदित्यवर्णं तमम परस्तादमनन्ति यम्॥ १

अन्त– तव प्रेष्योऽस्मि दासोस्मि सेवकोऽप्यस्मि विंकर।
उमिति प्रतिपद्यस्व नाथ नाथ पर ब्रवं॥ ८
श्रीहेमचद्रप्रभावाद्वीतरागस्तवादित।
कुमारपालभूपाल प्राप्नोतु फलमीप्सितम्॥ ९
इति वी० स्तोत्रे आशीस्तवो विंश प्रकाश॥ २०

१२३ ४१५६ श्रीदेवीछन्द, शनैश्चर स्तुति

आदि– सकल-सिद्धि-दातार पार्श्वं नत्वा स्तविमह्।
वरदा सारदा देवी जगदानददायिनी॥ १

अन्त– इच्छ बहु भक्ति भर अडल छदन सवु।
या देवी भगवई तु म पमोइ होऊ सया सग कल्याण॥ ४५
इति श्री देवीछद सपूरण।

शनि स्तुति—आनदन जग जयो रविसूत साभलवान।
कोड कवित करी तुझ स्तव तुज गुण को हवे मान॥ १

अन्त– ए मत्र धरी ऊकार उक्षर सारह। ए मत्र जपीय नर धारह॥
एणे मत्रें उलट धरी विनतडी चीत आणिये॥
रिध वृध सहजें सदा, वली वली एम मनीमर दपाणीये॥ १६
इति शनीसर स्तुति॥ लिपिकर्ता—सुबुद्धिविजय गणी।

१२८ ४५११ शोभन-स्तुति

आदि– भव्याभोजविवोधनैकतरणे विस्तारि कर्म्मावली
रभा सामजनाभिनन्दनमहा नष्टा पदा भासुरै।
भक्त्या वन्दितपादपद्मविदुपा सपादय प्रोज्झिता(त्यिना)
रभा सामजनाभिनदन महा नष्टापदा भासुरै॥ १

अन्त– सरभसनातनाकिनागीजनोरोजपीठीलुठत्तारहारस्फुरद्रश्मिसारक्रमाभोरुहे।
परमवसुतरागजारोवसन्नाशितारातिभाराजिते भासिनी हारतारावलक्षा मदा।
क्षणरुचिरुचिरोरुचत्सटासकटोत्क्रष्टकठोद्धटे सस्थिते।
सकटा भव्यलोक त्वमवाविके परमव सुतरा गजारोवसन्नासितारातिभा
राजिते भासिनी हार तारावलक्षा मदा॥ ९६॥ २४॥ श्री शुभ भवतु॥

१३० ७२७८ शोभन स्तुति

आदि– आसी[द्]द्विजन्माखिलमध्यदेशप्रकाशमाकाश्यनिवेशजन्मा ।
अलब्धदेवर्षिरिति प्रसिद्धि यो दानवर्षित्वविभूषितोपि ॥ १
शास्त्रेष्वधीतो कुशल कलासु वन्धे च बोधे च गिरा प्रकृष्ट ।
तस्यात्मजन्मा समभून्महात्मा देव स्वयभूरिव(वा) सुदेव ॥ २
अज्जायतास्यश्लाघ्यस्तनूजो गुणालब्धपूज ।
य शोभनत्वशुभवर्णभाजा ननाम नाम्ना वपुषाप्यधत्त ॥ ३
कातन्त्रचद्रोदिततन्त्रवेदी यो बुद्धबौद्धार्हततर्कतत्त्व ।
साहित्यविद्यार्णवपारदर्शी निदर्शन काव्यकृता बभूव ॥ ४
कौमार एव क्षतमारवीर्यश्चेष्टा चिकीर्षन्निव रिष्टनेमे ।
य सर्वसावद्यनिवृत्तिगुर्वी सत्यप्रतिज्ञो विदधे प्रतिज्ञाम् ॥ ५
एता यथामति विमृश्य निजाम्बु (नु) जस्य
तस्योज्वला कृतिमलकृतवान् स्ववृत्या ।
अभ्यर्थितो विदधता त्रिदिवप्रयाणा
तेनैव साप्रत कविर्धनपाल नामा ॥ ६

अन्त– इति श्रीशोभनदेवाचार्यकृतचतुर्विंशतितीर्थकरस्तुतिवृत्ति , कृतिरिय तस्यैव ।

१३२ ६८३९ स्तम्भ पार्श्वस्तुति आदि

इस गुटकेमे निम्न ५ कृतियाँ हैं—१ स्तभ पार्श्वस्तुति, २ आत्मोपरि सज्झाय, ३ शातिजिनस्तवन, दानशीलादि चोढालियो, ५ जम्बूकुमार सज्झाय ।

१३४ ६१६० स्तवनम्

पुष्पिका के अन्तिम २ श्लोक
पूर्वं पाटलिपुत्रमध्यनगरे भेरी मया ताडिता
पश्चान्मालवसिंधुटक्कविषये काचीपुरे वैदुषे ॥
प्राप्तोह कलहाटक बहुभटैर्विद्योत्कटै सकट
वादार्थी विचराम्यह नरपते सा(शा)र्दूलवत्क्रीडितम (क्रीडितुम्) ॥ १
काञ्च्य नग्नाटकोऽह मलमलिनतनुर्लाम्बुसे पाण्डुपिडु ।
पुड्रोड्रे शाकभक्षी दशपुरनगरे मिष्टभोजी परिव्राट् ॥
वाराणस्यामभूवं शशिकरधवल पाडुरांगस्तपस्वी ।
राजन् यस्यास्ति शक्ति स वदतु पुरतो जैननिग्रथवादी ॥ २
इति समतभद्रस्वामिविरचित स्तुवन ॥छ॥

१३६ ६८२५ स्तोत्रसग्रह

इस गुटकेमे निम्न ५ स्तोत्र है—१ नवकार रो स्तवन, २ श्री महावीरजी रो स्तोत्र, ३ श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र, ४ श्रीशातिनाथ स्तोत्र, ५ सगीत बध नमस्कार, ये पाच स्तोत्र हैं ।

२३—जैनागम

२७ ४३५८ **आवश्यकसूत्र सबालावबोध**

आदि— नमो अरिहन्ताण नमो सिद्धाण नमो आयरियाण ।
नमो उवज्झायाण नमो लोय सव्वसाहूणम् ॥ १

अन्त— समाईय पोसह, सठियस्स जीवस्स जाइजो कालो ।
सो सफलो बोधवो सेसो ससार फल हेउ ॥ १

इति श्री आउशक सपूर्णम्

४२ ४४१८ **उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध)**

आदि— सजोगाविप्पमुक्कस्स अणगारस्य भिक्षुणो ।
विणय पउ करिस्सामि आणुपुव्व सुणोहमे ॥ १

अन्त— श्रीवर्द्धमानस्वामी परिनिवृत निर्वाण प्राप्त किं० ।
उत्तराध्ययनभवसिद्धिका भव्यजीवा तेषा समन्तात् ॥८२ छ॥
इति षट्त्रिशत् श्रीउत्तराध्ययनबालावबोध समाप्त ॥

५० ४३५७ **उत्तराध्ययनावचूरि**

आदि— श्रीवर्द्धमानमानम्य वृहद्वृत्यनुसारत ।
श्रीउत्तराध्यायननामवचूरिं लिखाम्यहम् ॥ १

अन्त— योग उपधानादिरुचितव्यापारस्तदानतिक्रमेण यथायोग गुरु० तच्चित्तप्रसन्नता
स्याद्धेतोरधीयेत न तु प्रमाद कुर्यादिति भाव ।

इति श्रीउत्तराध्ययनावचूरि ॥

८१ १०६ **कल्पसूत्र (सस्तवक)**

आदि— ॐ नमो अरिहन्ताण नमो सिद्धाणमित्यादि ।

अन्त— श्रीमत्तपागणाधीशश्रीदेवविमलप्रभो ।
श्रीसोमविमलाह्वेन टवार्थो लिखित स्फुट ॥
टवार्थं कल्पसूत्रस्य मूर्खशिष्यस्य हेतवे ।
वृहद्वृत्यनुसारेण सशोध्य सर्वधीधनै ॥

१२१ ७४४५ **प्रतिक्रमणसूत्र आदि**

१ प्रतिक्रमणसूत्र । २ जयतिहूयणस्तोत्र । ३ श्रावककरणीस्वाध्याय-जिनहर्षकृत । ४. शत्रुञ्जयरास-समयसुन्दरकृत । ५. गोतमरास । ६. मुनिमालिका-वादिर्सिहकृत । ७. गोतमस्वामिस्तवनादि । ८ कालज्ञानभाषाचोपई—लक्ष्मीवल्लभगणिकृत ।

१२२ ७४४६ **प्रतिक्रमणसूत्र आदि**

१ प्रतिक्रमणसूत्राणि । २ स्तुति-स्तवन । ३. शत्रुञ्जयरास । ४ गोतमरासो ।

५ स्तवनादि ८ । ६ जीवविचार, प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित । ७ नवतत्वप्रकरण ।
८ विचारषट्त्रिंशिका । ९ बावीस परिसह छंद । १० बारहभावनास्वाध्याय ।

१२७   ७३४५   प्रश्नव्याकरणाङ्गटीका

अन्त– निर्वृत्तिककुलनभस्थलचन्द्रद्रोणाख्यसूरमुख्येन ।
पण्डितगणेन गुणवत्प्रियेण संशोधिता चेयम् ।

१५९   ७२२३   समवायाङ्गवृत्ति

वृत्तिरचनाकाल – एकादशशतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसमानाम् ।
अणहिलपाटकनगरे(रे) रचिता समवायटीकेयम् ॥



२४–जैनप्रकरण

७   ७०१६   आगमसारोद्धार भाषा

यह और संख्या ७३३१ वाली प्रति मिलती है, किन्तु इसमें निम्न दोहा अन्तमें विशेष है—

करयौ इहा सहाय अति, दुर्गदास शुभ चित्त ।
समभावन निज मित्त कौ, कीनो ग्रन्थ पवित्र ॥ १२

१६   ४३०२   ऋषभपचाशिका

आदि– ॐ नमो वीतरागाय नमः ॥
भत्तिभरनमिरसुरवरातिरीड मणियति कतिकयमोहो ।
उसभाइ जिणवरिंदाण पायपंकेरुहे नमिमो ॥ १
निज्जिय परीसहचमु सभयुव सग्गवग्गरिउपसरम् ।
सपत्तकेवलिसिरिं सिरिवीरजिणेसर वंदे ॥ २

अन्त– इयभाणग्गपलीवियकम्मिंधण बालवुद्धिणा विमय ।
भत्ती इपू उभयभयसमुद्दवो हिच्छवो हि फलम् ॥ ५०
इति ऋषभपचाशिका समाप्ता ॥

१७.   ४५६९   धर्म्मोपदेशश्लोका

आदि– दृष्ट्वा शत्रुञ्जय तीर्थं नत्वा रैवतकाचलम् ।
स्नात्वा गजपदे कुण्डे पुनर्जन्म न विद्यते ॥ १

अन्त– इति श्रीपुराणे कथिता श्लोका ।

८४   ७२००   प्रबोधचिन्तामणि

अन्त– यमरसभुवनमिताब्दे स्तम्भनकाधीशभूषिते नगरे ।
श्रीजयशेखरसूरि प्रबोधचिन्तामणिमकार्षीत् ॥

८६   ७३४७   प्रवचनसारोद्धार सटीक

ग्रन्थान्ते– श्रीमानर्बुदपर्वतप्रभुरभूत् भूमान् सुरत्राणभू,
सत्याव्हो भुवि राजसिंह इति यो रामावतार पर ।
श्रीमानक्षयराजराजतिलक प्रोद्यत्प्रतापानल-
स्तत्पुत्रोद्भूतभाग्यभूमिरधुना बालोऽपि पाति क्षितिम् ।
तस्य श्री   सत्पुत्रद्वयीसयुतो,
राज्यस्तम्भनिभ समस्तभुवनप्रख्यातकीर्तिव्रज ॥ २
यात्रा श्रीविमलाचलस्य महता सघेन माडम्बरं,
द्वेधाभूततपागणस्य सुचिरादद्रेरिवाश्चर्यकृत् ।
सन्धान च मिथो विधाय भृतवान् यो बोधिलक्ष्म्याञ्जिन,
स्वात्मान सुकृत श्रिया च यशसा द्यावापृथिव्यन्तरम् ॥ ३
तेन श्रीतपगच्छनायकगुरुश्रीहीरसूरीशितु,
सघे श्रीमदुपासकेन नगरे श्रीरोहिणीनामनि ।
वर्षे विक्रमतो रसावसुरसक्ष्मासम्मिते वत्सरे (१६८१)
चित्कोशे स्वकृते चिर विजयतामेषा गृहीता प्रति ॥ ४

१११   ४०८५   मङ्गलकलशचोपाई

आदि– श्रीगुरुभ्यो नम ।
दुहा– प्रह उठी नीत प्रणमीयइ, श्रीरिसहेसरदेव ।
नाम थकी नवनिध मीलइ, सिवपद आपइ सेव ॥ १
मगलकलसइ दानसु, पामि परघल रिद्ध ।
राजलीला सुख भोगवी, देव तणी गति लीध ॥ ७
अन्त– तस सेवक नित्य हर्षगणि रे, सदा मन आणद ।
तत शिष्य लक्ष्मीहर्ष कहै रे, सवे नरनावृंद ॥ ५ ॥ दा०
सहैर काकदीनयर भली रे, रह्या तिहा चोमास ।
श्रावक सदा सुखिया वसै रे, पुन्यै करी जस वास ॥ ६ ॥ दा०
माभलवो करवो भावसू रे मनमे आणी विनोद ।
वरम करै ते सुख लहै रे, उछै एह प्रमोद ॥ ९ ॥ दा०
इति श्रीमगलकलशचउपी सपूर्ण ॥

१२१   ४२९९   विंशतिस्थानकविचारामृतसग्रह

ग्रन्थान्ते– विंशतिस्थानकाचारविचारामृतसागर ।
गच्छेशश्रीजयचन्द्रसूरिशिष्येण निर्मित ॥ २२

वीरग्रामास्यपुरे युग्मव्योमेन्दुपञ्चभि ।
प्रमिते वत्सरे हर्षेज्जिनहर्षेण साधुना ॥ २३
ग्रन्थस्यास्य पवित्रस्य वाचनश्रवणादिभि ।
लभन्ते प्राणिन प्रौढा श्रीजिनेश्वरसम्पदम् ॥ २४
ग्रन्थोऽष्टाविंशनिशतानुमित सर्वसख्यया ।
जीवेदय वुधश्रेणिवाच्यमानो निरन्तरम् ॥ २५
इति श्रीविंशतिस्थानकविचारामृत सग्रह सम्पूर्ण ॥

१२२ ७४७७ विचारामृतसग्रह

अन्त- सूरि श्रीकुलमण्डनोऽमृतमिव श्रीआगमाम्भोनिधि
श्चक्रे चारुविचारसङ्ग्रहमिम रामाब्धिशक्राव्दके (१४४३) ॥

१२७ ४०२६ शीलोपदेशमालावालावबोध

अन्त- इनि श्रीशीलोपदेशमालावालावबोध श्रीखरतरगच्छमेरुसुन्दरोपाध्यायविर-
चित धनश्रीकथा समाप्ता । हिव ग्रथकार ग्रन्थनी समाप्ती भणी आपणउ
नामगर्भित मगलगाथा कहइ
ईय जईसिंहमुणीसरविनेयजयकित्तिणा कय
एय सीलोवएसमाल आराहिय लहइ वाहि सुहा ॥ ११५

व्याख्या—इणइ पूर्वोक्त प्रकारि करी जयसिंह सूरि तेहनउ विनीत शिष्य
शिष्य जयकीर्तिमुनि तीणइ ए शीलोपदेशमाला प्रकरणरूप मूलसूत्र
कीधऊ । इति श्रीशीलोपदेशवालावबोध प्रकरण समाप्तम् ॥ ग्रन्था-
ग्रन्थ ६२५० ॥ सैलानागाब्धिचन्द्रो, वृद्धमास त्रयोदशी । कृष्णपक्षे रविपुत्रो
अरुणोदयजिनपूजनम् ॥ १

१४२ ४३५६ सग्रहणीवालावबोध

आदि- श्रीपार्श्वनाथ फलवर्द्धिकाख्य गुरूश्च श्रीमज्जिनदत्तसूरीन् ।
गीर्देवता भाप्यसुधासमुद्र क्षमाश्रय श्रीजिनभद्रनाम्ना ॥ १

अन्त- इति श्रीवाचनाचार्यश्री श्रीश्रीशिवनिधानगणिविरचिते सग्रहणीवालावबोधे
सामान्याधिकार समाप्त । इति श्रीलघुसग्रहणी वालावबोध समाप्त ॥

१४५ ४००४ सग्रहणीसूत्र (संघेणनो रासछद)

आदि- दशमइ ग्रह सातमीइ चौदश तर आटमइ । अधिके एकेक तिहा थी
तिमइ । २३॥

अन्त- (ढाल एह) अर्थ- निरुपम अमृत उपम सुण्यो श्रवणे सुख करी,
विचार करता चित्त धरता कर्मकोडिना दु ख हरे ।
ता रहु रास प्रकास उत्तम मेरु हू शशि दिणयरू,
शासना देवी पसाउलि श्रीसघ चतुर्विध जय करू ॥ ५५०
इति श्रीसग्रहणीसूत्रे परिपर्णता नाम सप्तमोल्लास ॥ श्लोक सख्या ग्रन्थाग ॥ ६४१

१४६ ४०३१ **सग्रहणीसूत्र सस्तबक**

अन्त– मलिहारि हेमसूरीण सीस लेसेण सूरिणा रइय ।
सघयणिरयणमेय नदउ वीरजिणतिच्छ ।। ३०

इति श्री सग्रहणीसूत्र सपूर्णमिति ।

१६० ६२०३ **सम्मेदशिखरमाहात्म्य**

ग्रन्थान्ते पुष्पिका– इति श्रीभगवँल्लोहाचार्यानुक्रमेण श्रीभट्टारकजिनेन्द्रभूपणोपदेशाच्छ्रीमद्दीछितदेवदत्तक्र(कृ)ते श्रीसमेदसिखरिमाहात्म्ये समाप्तिसूचको नाम एकविंसतिमोऽध्याय ।। २१

१६२ ७२१७ **समाधिशतकटीका**

अन्त– तुरङ्गदृष्टितत्त्वभूमिसयुते (१७२७) सुवत्सरे,
तपस्यशुक्लपञ्चमीदिने च तक्षके पुरे ।
समुद्धृत सुपुस्तक समाधिसाधिताशयम्,
सुवादिराजधीधनेन धारित स्वधीगृहे ।।

१७१. ५६११ **हरिवशपुराण**

अन्त– इत्यरिष्टनेमिपुराणसग्रहे हरिवशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ गुरुपादकमलवर्णनो नाम षट्षष्टितम सर्ग ।

विशेष– श्रीवर्द्धमानपुरे श्रीपार्श्वालय नन्नराजवसतौ निर्मितम् ।



* श्री *

परिशिष्ट २

ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका

य

र

श

++++++++++

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २

परिशिष्ट ३



इन्द्रगढ़ पोथीखाना

ग्रन्थ सूची



१९६० ई०

इन्द्रगढ़ का हस्तलिखित ग्रन्थ-सग्रह

राजस्थान सरकार के आदेश स० २६१, दिनाक ४-८-५६ ई० के अनुसार इस विभाग की ओर से इन्द्रगढस्थित पोथीखाने का निरीक्षण किया गया। ग्रन्थो की अस्तव्यस्त स्थिति की जानकारी प्राप्त होने पर राज्य सरकार से उक्त सग्रह को इस सस्थान के सरक्षण मे प्राप्त कराने का प्रस्ताव किया गया। तदनन्तर राज्य के पत्र स० एफ ६ (६२) एज्यू बी ५६, दिनांक २४-१०-५६ ई० के अनुसार अनुमति प्राप्त होने पर इन्द्रगढ से इस सग्रह को इस विभाग मे प्राप्त कर लिया गया।

ठिकाना इन्द्रगढ (कोटा) का पोथीखाना विद्याप्रेमी महाराजा श्री शिवसिंहजी के समय मे 'सरस्वती भडार' के नाम से स्थापित किया गया था। महाराजा शिवसिंह स्वय अच्छे विद्वान्, सुकवि एव विद्याप्रेमी थे। उनके द्वारा निर्मित कितने ही ग्रथ उपलब्ध होते है जिनमे से कुछ इस सग्रह मे भी प्राप्त हुए है। शिवसिंहजी के सुपुत्र महाराजा हाडा सग्रामसिंह अपने समय के एक आदर्श साहित्यकार नरेश हुये हैं। ये वडे ही विद्यारसिक एव सुकवि थे। अच्छे-अच्छे पडितो को पुरस्कृत करना एव ग्रन्थरचना करते-कराते रहना इनका व्यसन था। उनके द्वारा निर्मित सौ से भी अधिक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं जिनमे से भी अधिकाश इन्होने अपने ठिकाने मे शिला-मुद्रणालय की व्यवस्था कर मुद्रित करा लिये थे, जो अब प्राय अप्राप्त हैं। उक्त हाडा सग्रामसिंहजी के समय मे इस सग्रह की दशा अवश्य अच्छी रही होगी, यह स्वत अनुमेय है। इनके उत्तराधिकारी महाराजा सुमेरसिंहजी के नि सतान अवस्था मे अकाल ही काल-कवलित हो जाने पर इस सग्रह की दुर्दशा होने लगी और ग्रन्थ भी इतस्तत नष्टभ्रष्ट एव जीर्ण-शीर्ण होने लगे। जिस समय इस सग्रह को देखा गया उस समय यह ठिकाने की सम्पत्ति के रूप मे रखा हुआ था। वहुत से ग्रन्थ गढ मे धूल मे दवे हुये जीर्ण-शीर्ण, कीट-विद्ध, दीमक-वर्षादि से क्षतिग्रस्त अवस्था मे पडे थे जिन्हे प्राप्त करके इस विभाग के सग्रहालय मे व्यवस्थित-रूप मे सशोधको के उपयोगार्थ रखा गया है। सप्रति इस सग्रह मे २०६ हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त हैं। इनमे वहुत से ग्रन्थ हाडा सग्रामसिंह एव उनके पिता महाराजा शिवसिंहजी के रचे हुये हैं। इनके अतिरिक्त कुछ छपे हुए उर्दू ग्रन्थ भी प्राप्त हुये हैं।

राजवशीय साहित्यकार हाडा सग्रामसिंह की ओर, जितना चाहिये उतना, अभी विद्वानो का ध्यान नही गया है। उक्त सग्रह की पुस्तको की प्रस्तुत सूची विद्वानो एव सर्वसाधारण की जानकारी और उपयोग के लिये प्रकाशित कराई जा रही है।

—मुनि जिनविजय

परिशिष्ट ३

इन्द्रगढ पोथीखाने से प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसख्या	लिपिकाल	विशेष
१	अलकारमञ्जरी	सग्रामसिह	हिन्दी	रसालकार	३२	१६११	त्रिमल्लभट्टकृत अलकार-मञ्जरी का भावानुवाद
२	शालिहोत्र		राजस्थानी	आयुर्वेद	१३२	१८६५	लि. क गुमानीसाह लि. स्था इन्द्रगढ
३	हनुमन्नाटक, सटीक (रत्नमञ्जूषा टीका)	मू. हनुमत्कवि, टी. मोहन-दास माथुर चतुर्वेद	संस्कृत	काव्य	१३०	१८वीं श	
४	मधुमालती चौपई	चतुर्भुजदास	हिन्दी	,,	२२२	१६वीं श.	कामदारी लिपि, प्रारम्भ में 'स्वप्नावलि के ५ पत्र हैं। पद्य सख्या १४५४
५	छन्द'कौस्तुभ	संग्रामसिह	,,	छन्द'शास्त्र	४३	१६३४	लि क वशीधर गुजराती
६	सभाप्रकाश	हरिचरणदास	,,	रसालकार	७६	१६२३	
७	पृथ्वीराजरासो (पद्मावती समय)	चन्दवरदायी	,,	काव्य	७४	१८२६	लि क. चैनराम ब्राह्मण लि स्था. किला रण-स्तम्भधर
८	हिकमतग्रन्थ		फारसी, हिन्दी	आयुर्वेद	६४	२०वीं श	हिकमत के फारसी भाषा के नुस्खे नागरी लिपि मे लिखे हैं

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
९	रूपकप्रभाकर	सग्रामसिंह	राजस्थानी	काव्य	२८	१९वीं श	
१०	वृन्दसतसई	वृन्दकवि	हिन्दी	,,	८५	१९२(?)	
११	पुरुषपरीक्षा	विद्यापति	संस्कृत	कथा	८७	१९१२	शिवसिंहनृपतिकारिता
१२	नाममञ्जरी	नन्ददास	हिन्दी	कोष	५८	१९१४	आदि मे कुछ स्फुट कवित्त लिखे हैं।
१३	(क) हरिरस	ईसरदास	राजस्थानी	काव्य			चारों कृतियो के कुल ५८ पत्र हैं।
	(ख) नीसाणी विवेकवार्ता		,,	,,			
	(ग) नीसाणी ईसरदास		,,	,,			
	(घ) सूरदासके पद		हिन्दी	,,			
१४	सिखनख शृंगार सटिप्पण	बलभद्र	,,	,,	१५	१९२३	
१५	रसतरंगिणी	शम्भुनाथ मिश्र	,,	रसालंकार	४१	१९२४	अन्तिम प्रशस्ति में गुलाब कवि (अलवरवासी) ने स्वयन् को ग्रन्थकर्त्ता बताया है।
१६	रूप(क)रत्नावलि	सग्रामसिंह	राजस्थानी	काव्य	१२	२०वीं श	
१७	रसार्णव	सुखदेव (?)	हिन्दी	[illegible]गार	५७	,,	अपूर्ण, लि क. धाभाई लक्ष्मण, शिवसिंहराज्ये
१८	केसोदासकी वाणी	केसोदास	राजस्थानी	सन्तसाहित्य	३–२५४	१८८८	लि क भवानीराम शिवसिंहराज्ये
१९	काव्यरसायन	देवदत्त कवि	हिन्दी	रसालंकार	७८	१९३१	लि क रामवल्लभ गुजराती
२०	(क) जनकजुहार		राजस्थानी	काव्य	१–४	१९२९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्र सख्या	लिपि काल	विशेष
	(ख) सुखमलरासो		राजस्थानी	काव्य	४–७	१९२९	
	(ग) कृष्णबालचरित्र		,,	,,	८–११	,,	
	(घ) तारातम्बोलको विस्तार		,,	इतिहास	१२वाँ	,,	
	(च) कोटाके महाराजाओ की सूची		,,	,,	१३वाँ	,,	
२१	पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिकासटीक (रसाल-बोधिनी)	मू स्वरूपदास, टी रसाल	हिन्दी	काव्य	१४२	१९१७	लि क बगसीराम
२२	(क) विज्ञानसागर		राजस्थानी	वेदान्त	१–११	१९११	
	(ख) गङ्गास्तुति		,,	स्तोत्र	११–१३	,,	
	(ग) आश्चर्यनिधान		,,	वेदान्त	१–९	,,	
	(घ) भगतिचिन्तामणि		,,	,,	९–३२	,,	
	(च) चौदहरतन खेल		,,	,,	३२–५०	,,	
२३	पृथ्वीराजरासो	चन्दवरदायी	हिन्दी	काव्य	३१६	१९वीं श	सुलिखित प्रति
२४	(क) कबीर की साखी		राजस्थानी	सन्तसाहित्य	१–४	१८३९	लि क. खुशालपाण्डे
	(ख) हरिवशपुराणभाषा		,,	काव्य	१–५७	,,	
२५	(क) रामचरित	तुलछीदासदादूपन्थी	,,	,,	१–१५४	१९वीं श	
	(ख) सुदामाजी की बारहखडी		,,	,,	१५४–१६२	,,	
२६	(क) कविकुलकल्पतरु	चिन्तामणि	हिन्दी	रसालकार	१२–१८	२०वीं श	आद्य ११ पत्र अप्राप्त, अपूर्ण
	(ख) सूरजमलप(पिं)गल	सूरजमल(?)	,,	छद शास्त्र	१८–२२	,,	अपूर्ण
	(ग) सभाप्रकाश (वशमोल्लासान्त)	हरिचरणदास	,,	रसालकार	१–२४	१९२९	लि क दीक्षित वृद्धिचन्द लि स्या इन्द्रगढ, अपूर्ण
	(घ) रघुनाथरूपक मरुधरदेशभाषा	कविमछ	राजस्थानी	काव्य	१–५	२०वीं श	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिसमय	विशेष
	(च) पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिका तृतीय-मयूखान्त		हिन्दी	रसालंकार	१–१२	२०वीं श	
	(छ) कविप्रिया	केशवदास	,,	,,	१२–३६	,,	अपूर्ण
	(ज) साहित्यानन्द, षोडशस्कन्धान्त	ग्वालकवि	,,	,,	३७–२५३	,,	
२७	(क) इश्कचमन		,,	काव्य	१–१४	,,	अपूर्ण
	(ख) राजनीति कवित्त	देवीदास	,,	नीति	१–३५	,,	
	(ग) स्फुटकवित्तसंग्रह		,,	काव्य	१–७	,,	
२८	रामचरितमानस अयोध्याकाण्ड	गो. तुलसीदास	,,	,,	१३३	१८६८	लि. क लाला खुमानसिंह
२९	(क) गुरुपरिचय		,,	सन्तसाहित्य	१–७५	२०वीं श	'श्रीगुरु बलदेवजी शिक्षा' व 'श्रीदुर्जनगुरु शिक्षा' आदि विभिन्न भाग हैं।
	(ख) ग्रन्थपरिचयअष्टांग		,,	,,	१–६६	,,	
३०	फुटकर गजल		,,	काव्य	८	,,	
३१	(क) धनञ्जयकोष (नाममाला) द्वितीय परिच्छेदान्त	धनञ्जय	संस्कृत	कोष	४–१५	१७५१	लि क. प दयाराम, गुटके के आदि व अन्तमें स्फुट कवित्तादि हैं तथा दोनों कृतियों के मध्य छप्पय कवित्त आदि हैं।
	(ख) पृथ्वीराजरासो (नाहरराय समय	चन्दवरदायी	हिन्दी	काव्य	१–१३	१७६०	लि क चारण विहारीदास
३२	विहारीसतसई लालचन्द्रिका टीका	कवि लाल	,,	,,	५४	१९वीं श	अन्तमें नृपस्तुति आदि हैं।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसख्या	लिपिसमय	विशेष
३३	गीतावली (कवितावली)	मोहनराय	हिन्दी	काव्य	३०९	१८८०	शिवसिहजी द्वारा लिखाये गये गीत, लि क गुजराती 'माघाता' लि स्था इन्द्रगढ
३४	रसमहार्णव	सग्रामसिह	,,	रसालकार	१०६	१९२६	लि. क गुजराती वशीधर
३५	चन्द्रालोकटीका (रसमयूख)		राजस्थानी	,,	३८	१९वीं श	अपूर्ण
३६	भक्तिभूषण	सग्रामसिह	,,	योग(भक्ति)	४०	१९२७	लि क. गुजराती वशीधर
३७	(क) रागचमनचौतीस्यो	,,	राजस्थानी	काव्य	१–१२	२०वीं श	
	(ख) शृगारतिलक	,,	हिन्दी	रसालकार	१–५	,,	
	(ग) हठप्रदीपिका	,,	,,	काव्य	१–६	,,	
	(घ) स्फुट कवित्त	ग्वालकवि	,,	,,	१–७	,,	
	(च) राधाष्टक	,,	,,	,,	८–११	,,	
	(छ) सितारसिद्धान्त	सग्रामसिह	,,	सगीत	१२–८१	,,	
३८	रामचन्द्रिका	केशवदास	,,	काव्य	१५५	,,	अपूर्ण
३९	(क) चेतनसिद्धान्त		,,	सन्तसाहित्य	२	,,	,,
	(ख) कविप्रिया (चित्रालकारप्रकरण)	,,	,,	रसालंकार	१–१२	१९०६	
	(ग) वृत्तरत्नाकर(द्वितियाध्यायान्त)	केदारभट्ट	सस्कृत	छन्द शास्त्र	१३–२५	२०वीं श.	
	(घ) सत्यनामप्रकाश	कबीरदास	हिन्दी	सन्तसाहित्य	८८	,,	
४०	वृन्दावनमाधवकथा (चारों मिलन)		,,	कथा	१–२४	१८११	लि क लाला छेदीराम
४१	स्वरोदय सटीक		सस्कृत,हिन्दी	ज्योतिष	१–१८	२०वीं श	अपूर्ण
४२	(क) निशानी (विवेकविचार)	केशवदास गाडण	हिन्दी	काव्य	१–२०	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि समय	विशेष
	(ख) स्फुट साखियां (कवित्त आदि)		हिन्दी	काव्य	२०–२५	२०वीं श	
	(ग) गुणनन्द्यास्तुति	ईश्वरदास	राजस्थानी	सन्तसाहित्य	२५–४८	,,	अन्त में गीत व भौंरगीता हैं
	(घ) ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	हिन्दी	,,	४१–८१	,,	
	(च) गजल, कवित्त, गीत आदि का संग्रह		,,	काव्य	८१–९४	,,	
	(छ) गुरुस्तुति, गोरखगणेशज्ञानगोष्ठी ग्रन्थ	गोरखनाथ	,,	सन्तसाहित्य	९४–९६	,,	अन्त के २२ पत्रोमें कबीर, नामदेव, मीरां, सूर आदि की साखियां व दोहे हैं
	(ज) निसानी, केशवदास गाडण चारण की		राजस्थानी	काव्य	११८–११९		
	(झ) प्राणशांकली		,,	,,	१२०–१२१		
	(ट) शकावलि		,,	,,	१२१–१२२	,,	
	(ठ) डूगरसी वागडी को गीत		,,	,,	१२३–१२४	,,	
	(ड) वज्रशूच्युपनिषद्	शंकराचार्य	संस्कृत	वेदान्त	१२५–१३०	१८८२	आगे पत्र १५४ तक विभिन्न पद आदि हैं तथा कुछ औषधियों के योग हैं, लि. क. 'निहाल'
४३	विहारीसतसई टीकात्रय					१९२४	
	(क) कृष्णचन्द्रिका	कृष्णकवि	हिन्दी	काव्य	१२३–२७६	,,	र. का १७८२
	(ख) हरिप्रकाश	हरिकवि	,,	,,	,,	,,	र का. १८३४

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ग) अमरचन्द्रिका	वलदेव	हिन्दी	काव्य	१२३—२७६	१९२४	र का. १८७३
४४	(क) सर्दवत्ससावलिगरी वात		राजस्थानी	वार्ता	१—७२	२०वीं श.	
	(ख) पन्ना वीरमदेकी वात		,,	,,	१—६२	१९१४	लि क चि. नूरीलाल
४५	डिंगल ग्रन्थ	सग्रामसिंह	,,	काव्य	२७	१९३०	
४६	कुलप्रकाश (हाड़ावश के खरडे)		,,	इतिहास	९४	२०वीं श	
४७	शृंगारगुडो	सग्रामसिंह	,,	रसालकार	७	१९३३	
४८	(क) भाषाभूषणटीका	मू. जसवन्तसिंह टी हरिचरणदास	हिन्दी	,,	४१	१९३०	लि क वशीधरगुजराती
	(ख) कविप्रियाव्याख्या (कविप्रियाभरण,	मू केशवदास टी हरिचरणदास	,,	,,	२४२	१९२९	,, ,, लि स्था इन्द्रगढ़
	(ग) पिंगलकाव्यविभूषण	वक्शी सुमनेश	,,	छन्द:शास्त्र	१०२	१९१२	
	(घ) ध्रुवाष्टक नीति	विश्वनाथसिंहदेव	,,	काव्य	१०३वां	२०वीं श	
	(च) पद्यामृततरंगिणी	भास्कर अग्निहोत्री	संस्कृत	,,	१—२७	१९३०	लि क वशीधर गुजराती ब्राह्मण, लि स्था ग्राम सुनमानपुरा
	(छ) काव्यरसायन	देवदत्त	हिन्दी	रसालकार	१—४	२०वी श	प्रति कीटविद्ध जीर्णशीर्ण
४९	हरिरस	वारहठ ईसरदास	,,	काव्य	१—१२	,,	
५०	विहारीसतसई	विहारीलाल	,,	,,	६८	१७८९	आगे पत्र ८५वें तक आयुर्वेद सबधी कुछ स्फुट योग हैं। लि स्था इन्द्रगढ

क्रमाङ्क	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
५१	शकुनावली		हिन्दी	ज्योतिष	६	२०वीं श	अन्तमें १८ पत्रोंमें कुछ दोहे हैं
५२	(क) गीतगोविन्द	जयदेव	संस्कृत	काव्य	१–३८	,,	
	(ख) भजन-संग्रह	चन्द्रसखी मीरा आदि	हिन्दी	,	१–५०	,,	
	(ग) फुटकर कवित्त		,,	,	१–३४	,,	
५३	रामचरितमानस (बाल, अयोध्या, लंका व उत्तरकाण्डके स्फुट पत्र)	गो तुलसीदास	,,	,,	१२४	१८८४	अपूर्ण, बा क के केवल २ पत्र (३१वां व ३२वां है) इसी प्रकार अन्य काण्ड भी अपूर्ण हैं। बीच बीचमें पत्र नहीं हैं
५४	पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिकाटीका (बोधिनी)	[illegible]	,,	,,	१६३	१९१७	लि. क. [illegible]
५५	पृथ्वीराजरासो (एकादशसर्गान्त)	चन्दबरदायी	,,	,,	१३०	१८७१	लि क. [illegible]
५६	भाषाभूषण	जसवन्तसिंह	,,	रसालंकार	७२	१९०२	
५७	हितहुलास (४२वां ग्रन्थ)	[illegible]	राजस्थानी	काव्य	१०-	१९२६	लि क. [illegible], कोटा
५८	(क) रसराज सटीक	मू. मतिराम, टी. [illegible]	हिन्दी	रसालंकार	६३	२०वीं श.	
	(ख) शालिहोत्र	[illegible]	,,	आयुर्वेद	३३	,,	
५९	(क) [illegible]		,	[illegible]	१–१०	१८९८	प्रारंभ ८ पत्रोंमें 'नाम महिमा' व 'रामजीकी नाममहिमा' है
	(ख) कबीरजीकी वाणी	कबीर	,,	सन्तसाहित्य	१–१२१	,,	
	(ग) नामदेवजीकी वाणी	नामदेव	,,	,,	१२१–१५७	,,	
	(घ) ध्रुवचरित्र	[illegible]	,,	[illegible]	१५८–१६६	,,	लि. क. [illegible]

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(च) प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	हिन्दी	काव्य	१६६–२१४	१८६८	अन्तमे ८ पत्रोमें नाम महिमा व दासजीकी नाम महिमा है। लि क ब्राह्मण भुवाना।
	(छ) भरतचरित्र	,,	,,	,,	२१४–२२१	,,	,,
	(ज) राजा मोहमदकी कथा		,,	,,	२२१–२२६	,,	,,
	(झ) सुन्दरदासजीके सवैया	सुन्दरदास	,,	,,	२२६–३१७	,,	,,
६०	(क) फुटकर कवित्त		,,	,,	१–३५	२०वीं श.	
	(ख) हाथीके लक्षण		,,	ज्योतिष	३६–४७	,,	
	(ग) रागमाला		,,	संगीत	१–१६	,,	
६१	नखशिखवर्णन व कोकसार	आनन्दकवि	,,	कामशास्त्र	२६	१६०७	लि क रघुनाथसिंह
६२	(क) सुखसवाद		राजस्थानी	सन्तसाहित्य	१–४६	२०वीं श	अन्तमें पत्र सं. ५० तक जनगोपाल आदिके भजन हैं।
	(ख) गणेशगोरखसवाद			,,	१–१६	,,	अपूर्ण
६३	सतसई (डिंगल)	संग्रामसिंह	,,	काव्य	६३	१६३४	कि क रघुनाथसिंह, कीटविद्ध
६४	गीतवही (६८० गीतोका सग्रह)		,,	,,	२२८	२०वीं श.	
६५	भगवद्गीता का अनुवाद		हिन्दी (व्रज)	वेदान्त	१८८	१६००	लि क. ब्राह्मण भुवाना
६६	(क) विवेकविचार	शिवसिंह	हिन्दी	,,	४०	१८६७	लि क राव जुहार 'मताप (महताब) पुत्र,
	(ख) फुटकर रागसग्रह		,,	सगीत	२०	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
६७	विवेकवार्ता	केशवदास गाडण	हिन्दी		२१०		जीर्णशीर्ण, कीटविद्ध, अन्त में १० पत्रों में स्फुट श्लोक, पद्य व राग हैं
६८	रघुनाथरूपक	कवि मनसाराम (कविमछ)	राजस्थानी	काव्य	८८	१९२५	लि क ब्राह्मण रामनाथ
६९	यवनछंद (फारसी छंदों का वर्णन)	संग्रामसिंह	हिन्दी	,,	२८	२०वीं श	'गणपतिचरणसरोजरज, धर हाडा संग्राम । यवन छंद रचना रचत, इन्द्र-दुर्ग निजधाम ।'
७०	संगीतपयोनिधि (७९वां ग्रन्थ)	,,	,,	संगीत	११	१९३३	रामरामग्रहचन्द्रमा, वरश हरियाली रैन । इन्द्रदुर्ग निजधाम मे, ये तो ग्रंथ लखैन । गुनसन्तियोग्रन्थ जो, यह रच्चौ संग्राम, यह सुधार सुध कीजियो, जो सुकवि गुणधाम ।
७१	(क) सुखसवाद		,,	सन्तसाहित्य	२९	१८८४	लि क 'रामरतन', अन्त में ६ पत्रों में नक्षत्र राशि व वायुविचार आदि हैं ।
	(ख) सन्तदासजीकी साखी	सन्तदास	,,	,,	१	,,	लि क. रामरतन
	(ग) प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	,,	,,	२–३२	,,	,,
	(घ) ध्रुवचरित्र	,,	,,	,,	३२–६३	,,	,,
	(च) फुटकर दूहा	अहमद	,,	,,	२	,,	
	(छ) ठीकरनाथजीकी भावना		,,	,,	२	,,	
७२	छन्देन्द्रकल्याणकल्पद्रुम	कल्याणदास भटनागर	,,	छन्द शास्त्र	५५	१९वीं श.	कीटविद्ध, अपूर्ण, जीर्णशीर्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसख्या	लिपिकाल	विशेष
७३	कोदण्डचन्द्रिका	सग्रामसिंह	हिन्दी	प्रकीर्ण	४७	१९वीं श	जीर्ण
७४	बुधसिंहचरित्र	वशभास्करगत	,,	काव्य	१९०	२०वीं श	अपूर्ण
७५	नखशिखवर्णन	रसिकप्रियान्तर्गत (केशवदास)	,,	रसालकार	१०	१८६७	लि. क चि. नन्दराम लि. स्था. 'करवाड'
७६	गुरुपरीक्षा		,,	काव्य	३८	२०वीं श	
७७	ढोलामारूरी वार्ता		राजस्थानी	वार्ता	१३४	,,	अपूर्ण
७८	सवैवत्ससावलिंगारी वात		,,	,,	८६	,,	,,
७९	(क) भक्तिमुक्तिप्रश्नोत्तरी		हिन्दी राजस्थानी	वेदान्त	१–७०	१९११	
	(ख) तत्त्वसारगीता		,,	,,	७०–८७	,,	
	(ग) वर्णप्रभाकर		,,	धर्मशास्त्र	८७–१६०	,,	
	(घ) भक्तिपदार्थ		,,	भक्ति(योग)	१–१३	,,	
	(च) शिरोमणिसार		,,	वेदान्त	१३–२२	,,	लि. क ब्राह्मण चि चम्पालाल
	(छ) सहजानन्दभक्ति		,,	भक्ति(योग)	३२–५५	,,	लि. स्था. सेवागली मध्ये, चर्मण्वतीतटे
८०	कृष्णरुक्मिणीरीवेली सटीक	राठोड पृथ्वीराज	,,	काव्य	८७	१८१९	प्रथम पत्र अप्राप्त
८१	वशभास्कर सटीक		,,	इतिहास	११७	२०वीं श	अपूर्ण
८२	(क) चाणक्यदर्पण	चाणक्य	सस्कृत	नीति	१–२०	१८६४	
	(ख) नीतिशतक	भर्तृहरि	,,	,,	१–१९	,,	
	(ग) वृहज्जातक		,,	ज्योतिष	१–११८	,,	अन्त में तीन पत्रो में नवग्रहदान लिखे हैं

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसख्या	लिपिकाल	विशेष
८३	नरसीजीका माहेरा		राजस्थानी	काव्य	४६	२०वीं श	अपूर्ण
८४	कर्मविपाक		सस्कृत,हिन्दी	कर्मकाण्ड	६	,,	,,
८५	पातशाहीका किस्सा		हिन्दी	कथा	१२२	१६वीं श	,,
८६	हाडोंके प्रशस्तिगीतके स्फुटपत्र		,,	काव्य	६३	२०वीं श	
८७	स्फुटकीर्तनकवित्तसग्रह		,,	,,	५०	,,	
८८	हरिदासजीके पद	हरिदास	,,	सन्तसाहित्य	४३	१८०७	लि क. जोशी जीवराज गुर्जरगौड, पृष्ठ ४१ वें व ४२ वें में देवाचारणके कवित्त लिखे हैं।
८९	गजलचन्द्रिका	सग्रामसिंह	,,	काव्य	४१	१९२८	
९०	अकारादिक्रमसे कवित्तसग्रह		,,	,,	५८	१९वीं श	कवित्त सख्या ११९ से ७७५ तक
९१	रसभक्तिपथ	शिवदत्त	,,	योग(भक्ति)	१२	१९३५	
९२	लीलावतीगणितभाषा		,,	ज्योतिष	१४	१९वीं श	अपूर्ण
९३	ताराविलास सटीक	विद्यानाथ	सस्कृत,हिन्दी	,,	१–९	,,	पृष्ठ स. १० पर नक्षत्र-स्वरूपचक्र एव पत्र ९ तथा १० के पृष्ठोपर दोहा आदि लिखे हैं।
९४	(क) स्वरोदय	चरणदास	हिन्दी	,,	१–१३	,,	
	(ख) नामसार	फतेहसिंह राठौड	,,	काव्य	१४–५४	,,	
९५	(क) स्वरोदय		,,	ज्योतिष	१–१९	,,	
	(ख) तिथिकल्पद्रुम	सग्रामसिंह	,,	,,	१९–२४	,,	
९६	(क) सुमुखीपञ्चाङ्ग	रुद्रयामलगत	सस्कृत	तन्त्र	समग्र १३६	१८२९	लि क आचार्य नगाद-विच्य(?) लि स्या सागोवा

क्रमाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्र सख्या	लिपि काल	विशेष
	(ख) रजःस्वलास्तोत्र		संस्कृत		समग्र १३६	१८२६	
	(ग) शिवमहिम्न स्तोत्रादि	पुष्पदन्ताचार्य	,,	स्तोत्र	,,	,,	उच्छिष्टगणिपति व बटुक भैरवस्तवराज आदि भी हैं। अपूर्ण
९७	रामाज्ञा	गो तुलसीदास	हिन्दी	काव्य	२१	१९१८	लि क चि. रामरतन ब्राह्मण
९८	ज्योतिषग्रन्थ		,,	ज्योतिष	४१	१९०७	
९९	फुटकरवार्ता (ज्योतिष आयुर्वेद केयोग व मोकल विद्या)		,,	प्रकीर्ण	१७	२०वीं श	
१००	स्फुटवार्ता (लौहगुणवर्णन आदि)		,,	,,	१०	,,	प्रतिमे तीन खुले पत्र हैं जिनमें लोह परीक्षा आदि लिखित है।
१०१	रमलोत्कर्ष	चिन्तामणिपडित	संस्कृत	ज्योतिष	२७	१८६८	
१०२	छायापुरुविधि और स्वरोदय (कबीरसाहबको)		राजस्थानी	,,	१४	१९वीं श	
१०३	(क) ज्योतिषसार (लघुजातकानुसार)		,,	,,	१–३१	१९१०	लि. क द्वारका व्यास, आगे पत्र स ३६ तक ज्योतिष एव जैनशास्त्र सम्बन्धी कुछ चक्र हैं।
	(ख) मेघमाला		,,	,,	३६–४०	,,	
	(ग) चमत्कारचिन्तामणि		,,	,,	४०–६१	,,	
१०४	सुभाषितपद्धति	शार्ङ्गधर, दामोदरसूनु	संस्कृत	सुभाषित	२७	२०वीं श	अपूर्ण, हम्मीरभूपतिचौहान राज्यसभासदस्यराघवनाम्न पौत्रः (ग्र क.)

क्रमाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्र सख्या	लिपि काल	विशेष
१०५	जुवदा रमलभाषा, सोदाहरण		राजस्थानी	ज्योतिष		१८७०	लि क ब्राह्मणनानजी, गुर्जरगौड
१०६	व्यग्यपचपचाशिका	सग्रामसिंह	,,	रसालकार	१७	१९३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
१०७	किष्किन्धाकाण्ड छप्पय	प्यारेराम	हिन्दी	काव्य	३१	२०वीं श.	आद्य १० पत्र अप्राप्त
१०८	विक्रमभूपकी कथा		,,	कथा (वार्ता)	२१	१८८३	
१०९	सवत्सरीफल		राजस्थानी	धर्मशास्त्र	८१	१९वीं श	कामदारीलिपि
११०	सुन्दरपदमुक्तावली	सुन्दर	हिन्दी	काव्य	१०८	१९३४	लि. कि ब्रजवल्लभ लि. स्था माधवपुर
१११	सेऊसमनजीकी परची	अनन्तदास	,,	,,	१०	१८८९	लि क भुवाना
११२	राशियोकी किताब		उर्दू	ज्योतिष	१२	२०वीं श	फारसी लिपि
११३	दीवान मोजीज		,,	काव्य	१६८	,,	,,
११४	गुचापरागकी किताब		,,	प्रकीर्ण	५५	,,	मुद्रित
११५	किताब खलायक मुहम्मदरफीउकदीन		,,	,,	१२०	,,	फारसी लिपि
११६	किताब रमल		,,	ज्योतिष	७४	,,	,,
११७	किताब ताजबीबीका रौजा		,,	प्रकीर्ण	१४	,,	इस पुस्तकमे ताजमहल निर्माणका ब्यौरा दिया गया है। फारसी लिपिमें
११८	याफता		,,	,,	१३७	,,	फारसी लिपिमें
११९	वाकेराजपूताना		,,	इतिहास	८८३	,,	,, मुद्रित
१२०	वशभास्कर		हिन्दी	,,	१४९	,,	जीर्णशीर्ण अपूर्ण
१२१	विनयपत्रिका	गो तुलसीदास	,,	काव्य	९	,,	अपूर्ण
१२२	मर्यादापरिपाटीसमाचार		सस्कृत, हिन्दी	धर्मशास्त्र	८९६से१०३२	१९३४	मुद्रित

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसख्या	लिपिकाल	विशेष
१२३	प्रेमरत्नाकर	राजकुमार, भैया रतनपाल	हिन्दी	काव्य	३३	१७४१	लि. क —स्वामी खेमदास आगे १२ पत्रोंमें स्फुट कवित्त आदि हैं।
१२४	कबीरजीकी साखी	कबीर	,,	,,	२०२	२०वीं श	आद्य ५ पत्र अप्राप्त। अपूर्ण
१२५	विरवप्रकाश	उमेदसिंह	,,	,	२७	१९१६	
[illegible]	[illegible]दर्पण, (३६वां ग्रन्थ) (यात्रा-[illegible]वर्णन व स्टेशनोंके नाम)	संग्रामसिंह	,,	प्रकीर्ण	१४	२०वीं श	
[illegible]	[illegible]	नकुल	,,	आयुर्वेद	५८	१८६०	
[illegible]	[illegible]	संग्रामसिंह	,,	काव्य	१९	१९३५	लि क वंशीधर गुजराती-ब्राह्मण
[illegible]	[illegible]		,,	वेदान्त	२७	१९१३	आद्य दो पत्र अप्राप्त
[illegible]	[illegible]		,,	,,	११	,,	अपूर्ण
[illegible]	[illegible]	गुलाबकवि	,,	रसालकार	१४	१९९२	
[illegible]	[illegible]	जगन्नाथकवि	,,	काव्य	१४–१६	,,	
[illegible]	[illegible]	गुलाबकवि	,,	,,	१७–१९	,,	
[illegible]	[illegible]	संग्रामसिंह	,,	रसालकार	३	१९१०	
[illegible]	[illegible]	,,	,,	छन्द.शास्त्र	३	,,	
१४४	[illegible]	,,	,,	रसालकार	५	,,	
१४५	[illegible]	[illegible]	,,	वेदान्त	१–५३	२०वीं श.	छन्द सख्या ५२२
१४६	हरिलीलामृत	,,	,,	,,	१–२५	,,	
१४७	(क) रसशृङ्गार	,,	,,		२५–३२	,,	
	(ख) पावसपञ्चाशिका	,,	,,	भक्ति(योग)	३२–४०	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(च) प्रेमप्रभा	शिवसिंह	हिन्दी	काव्य	४०–४७	२०वीं श	
	(छ) मुक्तिमगल	,,	,	वेदान्त	४७–५५	,,	
	(ज) स्नेहसार	,,	,,	काव्य	५५–५८	,,	
	(झ) पन्थसक्रान्ति	,,	,,	,,	५८–६७	,,	
	(ट) स्फुटकवित्त	,,	,,	,,	६७–७८	,,	
१३३	भर्तृहरिचरित	,	,,	सन्तसाहित्य	४०	,,	
१३४	रामचरित	सेनापति	,,	काव्य	१८	,,	स्फुटकवित्त (प्रारम्भिक ४ पत्रोमें)
१३५	सग्रामसिन्धु ग्रन्थव्याख्या (व्यग्यार्थ-मौक्तिकमाला)	सग्रामसिंह	,,	,,	४७	१६०८	
१३६	रामचरितमानस (बालकाण्ड)	गो तुलसीदास	,,	,,	११७	२०वीं श	अपूर्ण
१३७	पावसषोडशी (५०वां ग्रन्थ)	सग्रामसिंह	,,	,,	१७	१६२६	
१३८	भूगोलप्रश्नोत्तरी (१९वां ग्रन्थ)	,,	,,	,,	१५	१६३१	
१३९	रससिरोमणि	महाराज रामसिंहजी छत्रसिंहजीसुत, नरवर-निवासी	,,	रसालकार	३७	१८३०	लि क–लछमण धाभाई लि स्था.–बडौदा
१४०	विहारीसतसई, सटीक	बिहारीलाल	,,	काव्य	१८४	१८५६	
१४१	महाभारत उद्योगपर्व, ९ अध्याय, पद्यानुवाद	कृष्णकवि	,,	,,	८१	१६२७	र.का १७९२ आद्य तीन-पत्र अप्राप्त
१४२	(क) पूर्णबोधप्रकाश ज्ञानप्रकरण	पूर्णदास (गोवर्धनाश्रम-वासिक्षेमप्रतापशिष्य)	,,	वेदान्त	३१८	१७३१	लि. स्था –बूंदीपतिभाव-सिंह राज्ये
	(ख) ,, भक्तिभक्तसप्रदाय		,,	भक्ति (योग)	३२८	,,	र स्था. ,, ,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१४३	(क) व्रजचरित		हिन्दी	काव्य	१–४	१८२६	र. का –१७८१
	(ख) अमरलोकग्रखण्डधामवर्णन-लीला		,,	,,	४–७	,,	
	(ग) धर्मजहाज		,,	,,	७–१७	,,	
	(घ) गुरुचेलासवाद अष्टागयोग		,,	योग	१७–३७	,,	
	(च) पञ्चोपनिषद, भाषा		,,	वेदान्त	३७–४५	,,	
	(छ) ज्ञानस्वरोदय		,,	,,	४५–५६	,,	
	(ज) ब्रह्मज्ञानसागर		,,	,,	५६–६४	,,	
	(झ) भक्तिपदार्थ		,,	भक्ति योग	६४–७५	,,	
	(ट) चारयुगवर्णन कुण्डलिया		,,	काव्य	७५वाँ	,,	
	(ठ) नायिका अंगवर्णनादि		,,	वेदान्त	७६–१००	,,	
	(ड) चौबीसगुरुपरीक्षा		,,	,,	१००–११५	,,	
	(ढ) मोहछुडावनअगवर्णन		,,	,,	११५–१२४	,,	
	(त) सन्देहसागर		,,	,,	१२४–१२७	,,	
	(थ) शब्दोके मगलाचरणदूहा		,,	काव्य	१२७–१७५	,,	
	(द) स्फुट कवित्त छन्द आदि		,,	,,	१७५–१८१		
१४४	शनैश्चरकथा		,,	कथा	१८	१८१४	
१४५	इन्द्रजाल		,,	ज्योतिष	७	१९वीं श	अपूर्ण
१४६	हरिलीलामृत		संस्कृत	तंत्र	१६	१८८८	लि क –मनीराम
१४७	(क) रसशृङ्गार		हिन्दी	काव्य	३	१९२०	प्रथमपत्र अप्राप्त
	(ख) पावसपञ्चाशिका		,,	,,	१–७	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ग) झमाल (दूसरी) आदि		हिन्दी	काव्य	७–१०	१९२०	
	(घ) शृङ्गाररत्न		,,	,,	१०–१३	,,	
	(च) अलङ्कारमञ्जरी	संग्रामसिंह	,,	रसालंकार	१–११	१९२१	र का–१९११
	(छ) पावसषोडशी	,,	,,	काव्य	१–८	,,	
१४८	साहित्यबोध (काव्यप्रकाशानुवाद)		,,	रसालंकार	११	१९वीं श.	अपूर्ण
१४९	परिभाषाप्रकरण	सिद्धान्त पञ्चानन-भट्टाचार्य	संस्कृत	न्याय दर्शन	७	१७१८	लि क–लक्ष्मण, गंगारामात्मज, लि स्था काशी
१५०	रामस्तवराज	सनत्कुमारसंहितोक्त	,,	स्तोत्र	१२	१८४७	
१५१	शिवशतनामस्तोत्र		,,	,,	३	१९वीं श.	अपूर्ण
१५२	शृङ्गारप्रश्नोत्तरी, भाषा (६८वां ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	हिन्दी	रसालंकार	३१	१९३१	
१५३	अलङ्कारमञ्जरी	त्रिमल्ल, वल्लभभट्टपुत्र	,,	,,	२३	१९वीं श	प्रथम पत्र अप्राप्त
१५४	वाजिचन्द्रिका (६३वां ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	,,	ज्योतिष	२१	१९३१	
१५५	आरामदर्पण (७४वां ग्रन्थ)	,,	राजस्थानी	प्रकीर्ण	१८	१९३८	आद्य दो पत्र अप्राप्त, लि क–रामनाथ
१५६	स्फुट कवित्त	पद्माकरभट्ट	हिन्दी	काव्य	१५	२०वीं श	एक कवित्त बेनीका भी है
१५७	(क) ध्रुवचरित	परमानन्द	,,	,,	१–१२	१७९१	लि क–पातराम
	(ख) मंगलाष्टक	कवि कालिदास	संस्कृत	,,	१२–१७	,,	
	(ग) गणेशजीकी स्तुति		हिन्दी	स्तोत्र	१७–२३	,,	
	(घ) गोरखनाथजीकी स्तुति		,,	,,	२३–३०	,,	
	(च) भोगलपुराण		,,	पुराण(कथा)	३०–४०	,,	
	(छ) रागचिन्तन		,,	संगीत	४०–४८	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ज) छीतमजीकी जकडी	छीतमराम	हिन्दी	काव्य	४१–५१	१७९१	
	(झ) कायस्थद्वादशनाम टीका	,,	,,	कथा (पुराण)	५१–५७	,,	
१५८	रसचन्द्रोदय	संग्रामसिंह	,,	रसालंकार	३५	१९१९	
१५९	रसचन्द्रोदय	,,	,,	,,	२०	१९१०	
१६०	राजयोग भाषा	राजा प्रथ्वीचन्द्र अनन्य	,,	वेदान्त	४	१९२१	लि क –श्रीलाल
१६१	वहुलाष्टमी कथा			कथा	५	२०वीं श.	
१६२	खींवरा वालेसराकी वारता		राजस्थानी	वार्ता(कथा)	१७	१८५४	लि.क –घासीराम ज्योतिषी (डाकोत) लि स्था. गेणोली (बूंदी)
१६३	पद्यकोश राजस्थानीटीकासहित		संस्कृत राजस्थानी	ज्योतिष	११	१९वीं श	प्रथमपत्र अप्राप्त
१६४	(क) मासविचार (ज्येष्ठमाससे)		राजस्थानी	,,	१४–१६	१९०५	कीटविद्ध
	(ख) छायापुरुषविचार		,,	,,	१६–१७	,,	
	(ग) कबीरजीके रेखता		हिन्दी	सन्तसाहित्य	१८–२५	,,	
	(घ) आत्मप्रकाश	धर्मदास	,,	,,	२५–३०	,,	
	(च) वालवोधिनी चौपाई		,,	,,	३८–४६	,,	
	(छ) हरिवोल		,,	,,	४६–४९	,,	
	(ज) शब्द	कवीर	,,	,,	४९–५०	,,	
	(झ) कवीराष्टक		,,	,,	५१–५२	,,	
	(ट) अखण्डपरब्रह्मकी स्तुति	धर्मदास	,,	,,	५२–५३	,,	
	(ठ) आत्मवान आरती		,,	,,	५३वां	,,	
	(ड) सम्वत्सरको फल		,,	ज्योतिष	५४वां	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ठ) गुप्तज्ञानगुदरी	कबीर	हिन्दी	सन्तसाहित्य	५५–५६	१९०५	
	(त) रामरक्षा	रामानन्द	संस्कृत,हिन्दी	,,	५७–५८	,,	
	(थ) मूलपाजीग्रन्थ		हिन्दी	,,	५८–६१	,,	अपूर्ण
१६५	विवेकमार्तण्ड	जालन्धरनाथ	संस्कृत	वेदान्त	७	२०वीं श	,,
१६६	शृङ्गारसिन्धु (नवम कल्लोल)	भगवानदास	हिन्दी	रसालंकार	१४	,,	
१६७	(क) सिद्धान्तबोध	जसवन्तसिंह	,,	वेदान्त	५–३२	१८१०	आद्य ४ पत्र अप्राप्त
	(ख) सिद्धान्तसार	,,	,,	,,	१–२२	,,	
	(ग) गोरक्षशतक		संस्कृत	योग	२३–३०	,,	लि क.–विश्वनाथ
	(घ) चौबीस अवतार		,,	प्रकीर्ण	३१वां	,,	
१६८	चौहाणोंकी वंशावली	गोविन्दराम बउवा, कोटा-निवासीकी पुस्तकसे	हिन्दी	इतिहास	१२	१८८३	
१६९	गीतवही	वेला चारण	,,	काव्य	२५	१९वीं श.	
१७०	गीतमध्याक्षरी	शिवसिंह	,,	,,	१	,,	गुटका
१७१	(क) आदित्यव्रतमाहात्म्य		संस्कृत	पुराण(कथा)	१–७	,,	
	(ख) नक्षत्रफल		,,	ज्योतिष	८–३३	,,	
१७२	मानसदीपिका व्याख्या		हिन्दी	काव्य	५२	,,	
१७३	पञ्चाङ्ग		संस्कृत	ज्योतिष	१३	१९१९	
१७४	सूर्यजीकी कथा (हिन्दी)	पद्मपुराणगत	हिन्दी	कथा (पुराण)	१४	२०वीं श	
१७५	छन्दग्रन्थ		संस्कृत	रसालंकार	१	,,	
१७६	नखमाल	गोरधा आशो	राजस्थानी	काव्य	२१	,,	
१७७	(क) कवित्तशतक	श्रीकृष्णचन्द्र (महाराजाधिराज)	हिन्दी	,,	१–२८	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ख) दोहाशतक	मोहनकवि	हिन्दी	काव्य	१–१४	२०वीं श	
	(ग) स्फुटकवित्त		,,	,,	१–६	,,	
	(घ) विष्णुपद		,,	,,	१–४०	,,	
	(च) मोहननामपचीसी		,,	,,	१–२	,,	
	(छ) दोहासग्रह		,,	,,	१–१२	,,	
१७८	(क) श्रृगारचमन	सग्रामसिंह	,,	,,	१–६	१९३२	लि. क –रामवल्लभ चौबे गुजराती, लि. स्था -इन्द्रगढ़
	(ख) प्रेमचमन	,,	,,	,,	६–११	,,	,,
	(ग) रागसयोग	,,	,,	सगीत	१२–२३	,,	,,
	(घ) वृष्टिकलानिधि (६८वां ग्रथ)	,,	,,	रसालकार	२४–२७	,,	,,
१७९	(क) छन्द'शास्त्र		सस्कृत	छन्द शास्त्र	१–१०	२०वीं श	अपूर्ण
	(ख) वृत्तरत्नाकरटीका	समयसुन्दरगणि	,,	,,	१०–२०	,,	
१८०	गणेशमहिमाकथा		हिन्दी	कथा	५१	१७८५	
१८१	सग्रामसिन्धु	सग्रामसिंह	,,	रसालंकार	१–९	१९०८	
१८२	गीतापरिचयटीका	शिवसिंह (महाराजा)	,,	वेदान्त	८–११६	२०वीं श.	लि क –व्यास कालूराम
१८३	चारणगीतसग्रह—		राजस्थानी	काव्य	३४४	,,	इसमें निम्नलिखित सूची के अनुसार विविध गीतो का सङ्कलन है।
	१ कवित हींगळाजको			कवित्तसख्या१	१		
	२ कवित् चीजाशणिजीको			२	१		
	३ गीत नरसिंगजीका			२५	३		

क्रमाङ्क	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	४ दुहा सीरदुण			१	४		
	५ कबित राढ(ठ)			२६	४		
	६ गीत जाति त्रीबल			३०	४		
	७ कवित यन्त्रतध्वनि			४७	५		
	८ नशाणीमीराछलतन(त)जीको			५४	६		
	९ गीत हामाजीको			१	७		
	१० गीत चतम्रळोळ हनुमत-जीको			५१	८		
	११ गीत गोस डोडो देवजीको			५३	८–९		
	१२ गीतजोगारमा(रम)			५६	९		५६वें गीत का प्रसङ्ग नहीं मिलता है।
	१३ कवित् चवाणकी उतप्ती			५६	१०		
	१४ गीत गोग(गोगा) चहुवाण			५८	१०		
	१५ गीत राव कोलणको			५९	१०		
	१६ गीत हाळुजी को			६३	११		
	१७ गीत रों(गो)पाळजीको			६४	११		
	१८ गीत वंरसाळ			६५	११–१२		
	१९ गीत लाताहाडाको			६६	१२		
	२० गीत भापो पशुफाळको			६७	१२		
	२१ गीत राव श्ररजनजीको			६८	१३		
	२२ कवित राव सुरजनको			६९	१३		
	२३ गीत रावसुरजमलजीको			७१–७६	१३–१६		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२४ नसाणी राव सुरजनकी			८०	१६–१७		
	२५ नीसाणी राव दूदा भोजकी			८१	१७		
	२६ नीसाणी दूदाजीकी			८२–८३	१७		
	२७ गीत दूदाजीको			८३–८७	१८–१९		
	२८ राव भोजको गीत			८८–९८	१९–२३		
	२९ गीत पाडगति			९९–१५८	२३–४०		
	३० राव भावसिंघजीका गीत			१५९–१६७	४०		
	३१ गीत भगोतसिंघजीको			१६८–१७८	४२–४६		
	३२ राव अमेद(उमेद) सींघजीका गीत			१७९–१८३	४६–४९		
	३३ घ(जोध)सिंघजी लार सती होई जीको			१८४–१९१	४९–५३		
	३४ गीत राव छत्रसाळजीको			१९२वा	५३वां		
	३५ गीत म्हांराजा ईंद्रसालजीको			१९३–१९९	५३–५५		
	३६ गीत म्हाराजा सरदारसींघजीको			२००–२११	५५–५८		
	३७ गीत महाराजा मेघसिंघजीको			२१२–२२०	५८–६०		
	३८ गीत म्हाराजा छीत्रसिंघजीका (गीत चोसरो)			२२१–२६८	६०–७५		
	३९ गीत म्हाराजा वेवसींघजीको			२६९वा	७५वा		
	४० गीत येलियो साणोर			२७०	७५–७६		इसमें इन्द्रगढमहाराजाकी प्रशस्ति है
	४१ गीत त्रीकुटबंध			२७१	७६–७७		,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	४२ रूपैंका महाराजाजी भगतरामजी का कवित			२७३–२७६	७७–७९		
	४३ गीत मुक्ताग्रह			२७७–२७८	७९		भगतेशनरेशकी प्रशस्ति है
	४४ गीत चोसरा			२७९	७९–८०		,,
	४५ गीत त्रिकुटबंध			२८०–३०४	८०–९०		
	४६ भाखडी			३०५–३६२	९०–१०४		इसमें स्फुटकवित्त भी हैं।
	४७ साखी म्हाराजा सरदारसिंघजीकी कही			३६३	१०४		
	४८ रूपक कवरजी सुनमानसिंघजी का गीत पंचसर			३६४–३६५	१०४–१०५		
	४९ गीत मुक्ताग्रह			३६६–३६७	१०५–१०६		सुनमानसिंह प्रशस्ति है।
	५० गीत सुपखरो			३६८–३७८	१०६–१११		,,
	५१ गीत त्रीकुटबंध			३७९–३९५	१११–११७		,,
	५२ गीत (कु)वरजी अमानसिंघजीका			३९६–३९८	११७वां		
	५३ गीत म(प्र)तापसिंघजीको			३९९–४०६	११७–१२०		
	५४ गीत राव अजीतसींघको			१	१२०–१२३		पत्रसंख्या मूल पुस्तकमें केवल १ ही दी गई है। पुनः ४०८ से प्रारम्भ है।
	५५ रूपक माहाराजा अमरसींघजीका गीत वेलीयो			४०४–४०८	१२३–१२४		
	५६ गीत माहाराजा फतीरसींघजीको			४०९–४१०	१२४–१२५		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भापा	विषय	पत्रसख्या	लिपिकाल	विशेष
	५७ माहाराजा जोगीरामजीका			४११–४१३	१२५–१२६		
	५८ गीत महाराजा सालमसींघ-जीका			४१४–४१६	१२६–१२७		
	५९ गीत घासीरामजीका			४१७–४१८	१२७		
	६० गीत महाराज प्रतापसिंघजीको			४१९	१२७–१२८		
	६१ गीत दलेलसींघजीको			४२०	१२८		
	६२ गीत महाराजा मरजादसिंघ-जीको			४२१–४२३	१२८–१२९		
	६३ गीत कँवर फतेसींघजी सुजाण-सींघजी ईंद्रसालोतको			४२४–४२५	१२९–१३०		
	६४ गीत बरीसालोवताका			४२६–४३६	१३०–१३४		
	६५ कवित् रूपजी माहासीगीत			४३७	१३४		
	६६ माधोसींघजीको			४३८	१३४		
	६७ गीत मुकुनसिंघजीका सावझडो			४३९–४४६	१३४–१३६		
	६८ श्रीजी कसोरसींघजीका गीत			४४७–४५१	१३६–१३८		
	६९ गीत रामसींघजीका			४५२–४५५	१३८–१३९		
	७० गीत भीव(व) सींघजीका			४५६–४६५	१४०–१४३		
	७१ गीत स्यामसीघजीका			४६६	१४३–१४४		
	७२ गीत दुरजलसाल(दुरजनसाळ) जी का			४६७–४७८	१४४–१४८		
	७३ गीत जैंराम वीयास (व्याम)			४७८–४८०	१४८–१४९		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
७४	गीत मोहोणसिंघजीका			४८१–४८२	१४९		
७५	गीत गोरधनसिंघजीका			४८३–४८४	१४९–१५०		
७६	गीत अजीतसिंघजीका			४८५	१५०		
७७	माहाराव छत्रसाळजी कवित्			४८६–४८९	१५०–१५१		
७८	गीत प्रथीसिंघजीका			४९०	१५१–१५२		
७९	गीत नाहरसिंघजीको			४९१	१५२		
८०	गीत नाथजीको			४९२	१५२–१५३		
८१	गीत हरवंनारायेणको			४९३	१५३		
८२	गीत दोलतसिंघ हरदावतको			४९४	१५३		
८३	गीत भीवसींघ हरंदावतको			४९५	१५३–१५४		
८४	जैतसिंघ हरदावत कवित्			४९६–४९७	१५४		
८५	छीत्रसींघजी मेवाउता गीत			४९८–४९९	१५४–१५५		
८६	फतेसीघ जैतसीघजीको कवित्			५००–५०१	१५५		
८७	फसुवा(फतुवा) वायको गीत			५०२–५०४	१५५–१५६		
८८	गीत हाडा भीवसिंघजीको			५०५–५०६	१५६–१५७		
८९	कवित् राय हमीरको			५०७–५०८	१५७पा		
९०	प्रथीयराजको द्रूपं			५०९–५१२	१५७–१५८		
९१	गीत गोगा डोढो वरड़ीयको राणा भोजराज चहुवाणको			५१३	१५८		
९२	कवित् टोडरमल चहुवान नीमराणाको राजा			५१४	१५८–१५९		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	९३ गीत वेदलाका ठाकुर बखतसीघ चहुवाण को। सुपखरो चोटीबंध			५१५से५१७	१५९–१६०		
	९४ गीत चहुवाणाको			५१८–५१९	१६०–१६१		
	९५ गीत सत्रसाळ देवडाको			५२०	१६१		
	९६ गीत अखसीघ देवडोको			५२१	१६१		
	९७ गीत सुरताण देवडोको			५२२	१६१		
	९८ गीत (वी)रमदे सोनगराको			५२३	१६२		
	९९ गीत राणगदे सोनगराको			५२४	१६२		
	१०० गीत जसो सोनगरको			५२५	१६२–१६३		
	१०१ गीत कुभा(कुंभा) खीचीको			५२६	१६३		
	१०२ गीत धीरतसीघ खीचीको			५२७	१६३–१६४		
	१०३ गीत नगा खीचीको			५२८–५२९	१६४		
	१०४ गीत फतेसींघ खीचीको			५३०	१६४–१६५		
	१०५ गीत अकबर पातस्याको			५३१–५३२	१६५		
	१०६ कवित साहिजादो दानसाहको			५३३	१६५		
	१०७ कवित् खांन खान नवाबको			५३४–५३६	१६५–१६६		
	१०८ कवित् औरजे(व) पातस्याका			५३७	१६६		
	१०९ गीत साहिजादाको			५३८	१६६–१६७		
	११० गीत वलिको			५३९	१६७		
	१११ गीत राणा कुंभाको			५४०–५४३	१६७		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	११२ गीत रायमल राणाको			५४४	१६८		
	११३ गीत राणा परतापसींघको			५४५–५४९	१६९–१६९		
	११४ गीत राणा अमरसींघको			५४९	१६९–१७०		
	११५ गीत राणा जगतसींघजीको			५५०	१७०		
	११६ गीत राणा राजसींघको			५५१–५५५	१७०–१७१		
	११७ गीत राणा परतापसींघजीको			५५६	१७२		
	११८ गीत राणा सगरामसींघजीको			५५७	१७२–१७३		
	११९ गीत राणा सागाको			५५८–५५९	१७३–१७४		
	१२० गीत जमल पताको			५६०–५६१	१७४–१७५		
	१२१ गीत रावळजीका			५६२	१७५		
	१२२ गीत रावळको			५६३	१७५–१७६		
	१२३ गीत अमरसींघ रावळको			५६४	१७६		
	१२४ गीत जैतसी रावलको			५६५	१७६		
	१२५ गीत सालमसींघ देवळको			५६६	१७६–१७७		
	१२६ कवित् सेवो रावताको			५६७	१७७		
	१२७ कवित् कावउथा दोंडोको भारतसींघजीको			५६८	१७७		
	१२८ गीत राणा भीवको			५६९–५७०	१७७–१७८		
	१२९ गीत उउणा प्रथीराजको			५७१–५७२	१७८–१७९		
	१३० गीत सागा मीणाको			५७३	१७९		
	१३१ गीत चोडो लालाको			५७४	१७९		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	१३२ गीत सीही चलो			५७५	१७६–१८०		
	१३३ गीत देवीसींघ बेगुका ठाकुरको			५७६	१८०		
	१३४ गीत दवारिकादास चोडावतको			५७७	१८०		
	१३५ गीत जसोतसींघ चोडावतको मुक्ताग्रह			५७८	१८०–१८१		
	१३६ गीत नरायणदास सगतावतको			५७९	१८१		
	१३७ गीत गजगति नरायणदास सगतावतको			५८०–५८१	१८१–१८२		
	१३८ गीत अठतालो			५८२	१८२		
	१३९ गीत गोकलदास सगतावतको			५८३–५८६	१८२–१८४		
	१४० गीत परतापसींघ सगतावतको			५८७–५९३	१८४–१८५		
	१४१ गीत जगतसींघ सगतावतको			५९४–५९५	१८५–१८६		
	१४२ गीत लालसींघ सगतावतको			५९६	१८६		
	१४३ गीत सगतसींघ सगतावतको त्रीकुटवध			५९७	१८६–१८८		
	१४४ गीत सुरतसींघ सगतावतको			५९८	१८८		
	१४५ गीत सगतावतको			५९९	१८८		
	१४६ गीत राणा सग्रांमसींघजीको			६००	१८८–१८९		
	१४७ रूपक म्होकमसी चत्रावतको			६०१–६०४	१८९–१९०		

क्रमाङ्क	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	१४८ गीत अमरसींघ चंद्रावतको			६०५	१९०–१९१		
	१४९ गीत भारतसींघ साहपुर			६०६–६०७	१९१वां		
	१५० गीत उमेदसींघ साहेपुर			६०८–६१२	१९१–१९४		
	१५१ गीत अवोलसींघको			६१३	१९४		
	१५२ गीत रामानद नागाको			६१४	१९४–१९५		
	१५३ गीत केसरीसींघ नीसोवो			६१५	१९५		
	१५४ गीत सांवलवास डावरको			६१६	१९५–१९६		
	१५५ गीत अचलसींघ राणाउतको			६१७–६१९	१९६–१९७		
	१५६ गीत जगमाल जाजपुरको ठाकुरको गोवंकडो			६२०	१९७		
	१५७ गीत देवलाका ठाकुरको तनर गीत			६२१	१९७–१९८		
	१५८ गीत जगनोडो वेधुका रावत हरीसींघजीको			६२२	१९८		
	१५९ गीत विहारीदास गलोतको			६२३	१९८		
	१६० गीत भ्रानु गलोतको			६२४	१९८–१९९		
	१६१ गीत मुलराज सोलंगीको मुक्तायह			६२५	१९९–२०१		
	१६२ कवित् नाहारसिंघ सोळंगीको			६२६	२०१		
	१६३ दोनु कवित् नाहारगीजीको छै। ऐक कवित नाहारगीजीको ऐक सुरजीको			६२७	२०१		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विपय	पत्रसख्या	लिपिकाल	विशेप
	१६४ कवित हरीजीको			६२८–६२९	२०१–२०२		
	१६५ गीत लालसींघ सोलँ(ल)खीको			६३०–६३१	२०२		
	१६६ गीत कसनसींघजीको			६३२	२०२–२०३		
	१६७ गीत वीरमदे सोलखीको			६३३	२०३		
	१६८ गीत सीधराव जैसगको			६३४	२०३–२०४		
	१६९ गीत मुळराज सोलखीको			६३५	२०४		
	१७० कवित नाथावताको			६३६	२०४		
	१७१ गीत देवीसींघ नाथावतको			६३७	२०४–२०५		
	१७२ कवित् करण नाथावतको			६३८	२०५		
	१७३ गीत गोयदा सखराडाको			६३९–६४२	२०५–२०६		
	१७४ गीत श्रमरसिंघ भाटी जैसळमेरको			६४३	२०६		
	१७५ गीत सवळा भाई			६४४	२०७		
	१७६ गीत जादुको			५४५	२०७		
	१७७ गीत विजासर वैयाको			६४६	२०७–२०८		
	१७८ गीत करण सरवैयाको			६४७	२०८		
	१७९ दुहा जसा सरवैयाका			६४८	२०८–२०९		
	१८० गीत राठोडांका			६४९	२०९–२१०		
	१८१ गीत राजा गजसींघजीको			६५०–६५२	२१०		
	१८२ गीत राजा जसोतसींघजीको			६५३–६५६	२१०–२१२		
	१८३ गीत श्रमरसींघ राठोडको नागोरको राजा			६५७–६५८	२१२		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	१८४ गीत राजा अजीतसींघजीको			६५६–६७२	२१२–२१४		६६७ से ६७० तकके गीत नहीं हैं ।
	१८५ गीत राजा अभ(य)सींघजीको			६७३–६७५	२१४–२१६		
	१८६ गीत वखतसींघको			६७६–६८१	२१६–२१९		
	१८७ गीत जीवा आपा वखणीको			६८२	२१९–२२०		
	१८८ गीत राजा विजेसींघको । सुंपखरो			६८३	२२०–२२१		
	१८९ गीत राजसींघ रूपनगरको राजाको			६८४–६८६	२२१–२२३		
	१९० (गी) ··त कुपा राठोडको			६८७–६९०	२२३–२२५		
	१९१ गीत नीवाको			६९१	२२५		
	१९२ गीत रतनको			६९२	२२५		
	१९३ गीत वलु चांपावतको			६९३–६९५	२२६–२२७		
	१९४ सोनग वलुको वेटो वोहा			१०	२२७		० यह दोहेकी संख्या है।
	१९५ गीत रामसींघ राठोडको			६९६–६९७	२२७–२२८		
	१९६ गीत वोलतसींघ राठोडको			६९८	२२८		
	१९७ गीत अमरसिंघ गरउयाको गीत नागेटो			६९९	२२८–२२९		
	१९८ गीत ईन्द्रसींघ गंरयाका ठाकुरको			७००–७०१	२२९–२३०		
	१९९ गीत गोकलवास राठोडको अमरसींघ नागोरका ठाकुरके आंटे काम आयो			७०२	२३०		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२०० गीत जतसींघ सुमीयाणको ठाकुर राठोडको			७०३	२३०–२३१		
	२०१ गीत केसरीसींघ उदाउतको			७०४	२३१–२३२		
	२०२ गीत उदाउतको			७०५	२३२		
	२०३ गीत मोहोकम राठोडको			७०६	२३२–२३३		
	२०४ गीत खिजा राठोडको			७०७	२३३		
	२०५ गीत हठीसींघ राठोडको			७०८	२३३–२३४		
	२०६ गीत तेजसींघ राठोडको			७०९	२३४		
	२०७ गीत कुसलसींघ चांपावतको			७१०	२३४–२३५		
	२०८ गीत सेरसीघजी कुसलसींघजीको			७११	२३५		
	२०९ गीत कुसलसींघ सेरसींघको			७१२–७१४	२३५–२३९		
	२१० गीत सेरसीघजीको			७१५–७१७	२३९–२४१		
	२११ गीत दुरगादास राठोडको			७१८	२४१		
	२१२ गीत गोपालसींघ मेडत्याको			७१९	२४१–२४२		
	२१३ गीत अरध गीत फसनसींघ राठोडको			७२०	२४२		
	२१४ गीत परसा राठोडको			७२१	२४२–२४३		
	२१५ गीत चतुरा राठोडको			७२२	२४३		
	२१६ गीत फरसा राठोडको			७२३	२४३		
	२१७ गीत साहाबसींघ राठोडको			७२४	२४३–२४४		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
२१८	गीत करण राठोडको			७२५	२४४		
२१९	गीत संसमल राठोडको			७२६–७२९	२४४–२४६		
२२०	गीत माधोसींघ राठोडको			७३०–७३१	२४६–२४७		
२२१	गीत जसोतसींघजीका उमरावाको			७३२	२४७		
२२२	गीत अभैसींघजीका उमरावाको			७३३	२४७–२४८		
२२३	गीत परथीराज राठोडको			७३४	२४८		
२२४	गीत ज(य)सींघ राठोडको			७३५	२४८		
२२५	गीत सेवो बादेलको			७३६	२४९		
२२६	गीत घाणोराको ठाकुर पदमसींघको			७३७	२४९		
२२७	गीत जगतसींघ राठोडको			७३८	२४९–२५०		
२२८	गीत मोकम चापाउतको			७३९	२५०		
२२९	गीत अगैसींघ राठोडको			७४०	२५०–२५१		
२३०	गीत कमो राठोडको			७४१	२५१		
२३१	कवित् राव बीकाको			७४२	२५१		
२३२	गीत कल्याणसींघजीको			७४३	२५१–२५२		
२३३	गीत प्रथीराज राठोडको			७४४–७४५	२५२–२५३		
२३४	गीत रायसींघको			७४६	२५३		
२३५	गीत बीकानेरको मोणसींघका बेटाको			७४७	२५३		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२३६ गीत साणोर थाणवध वेलीयो रामसींघको			७४८	२५३–२५४		
	२३७ गीत रायसींघ बीकानेरको			७४९	२५४		
	२३८ कवित् बीकानेरका राजा अनोपसींघको			७५०	२५४–२५५		
	२३९ गीत बीकानेरको पदमसींघको			७५१–७५४	२५५–२५६		
	२४० गीत केसरीसींघ बीकानेरको			७५५	२५६–२५७		
	२४१ कवित् राजा गजसींघजी बीकानेरको			७५६	२५७		
	२४२ गीत भींव राठोडको			७५७	२५७–२५८		
	२४३ गीत दुदा राठोडको			७५८	२५८		
	२४४ गीत लखधीर थींदा			७५९	२५८–२५९		
	२४५ गीत योक अखरो करण बीकानेरका राजाको			७६०	२५९		
	२४६ गीत आफुको			७६१	२५९–२६०		
	२४७ गीत भ्यागको			७६२	२६०		
	२४८ दुर्ग्गे राव भाराकी जाडोचाकी			७६३	२६०		
	२४९ गीत जाडेजाको नीसर			७६४	२६०–२६१		
	२५० गीत हीरा मागळयाको			७६५	२६१		
	२५१ गीत मोहड जाडेचाको			७६६	२६१–२६२		

क्रमाङ्क	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२५२ गीत राव देसलको			७६७	२६२		
	२५३ दुरजनसाल सोडाको			७६८	२६२		
	२५४ गीत भोज कावाको			७६९	२६२–२६३		
	२५५ गीत घासडी सोडा चवाणको			७७०	२६३		
	२५६ गीत सोडा राठोडाकी चुकको			७७१	२६३–२६४		
	२५७ गीत सोडा भाटीकी चुकको			७७२–७७३	२६४		
	२५८ गीत राजा मानको			७७४–७७५	२६४–२६५		
	२५९ कवित वडो जैसींघको			७७६–७७८	२६५–२६६		
	२६० गीत वडो जैसींघको			७७९	२६६		
	२६१ गीत जगतसींघ आंम[मे]रका राजाको लहचान			७८०	२६६		
	२६२ गीत राजा रामसींघजीको			७८१	२६६–२६७		
	२६३ कवित् राजा वगनसींघको			७८२	२६७		
	२६४ गीत मौहि ओगाण राजा सवाई जैसींघको			७८३–७८८	२६७–२७०		
	२६५ गीत वडा जैसींघजीको			७८९–७९०	२७०–२७१		
	२६६ गीत कुमेठ। मनोहर सा[?]ळो वडा जैसींघको उमरावको			७९१	२७१		
	२६७ गीत तखतसींघ रजाउतको			७९२	२७१		
	२६८ कवित कुशालसींघ नाथा[व]त चोमा[मूं]को ठाकुर			७९३–७९४	२७१–२७२		
	२६९ गीत गजसींघ नाराउतको			७९५–७९६	२७२–२७३		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२७० गीत सोरठो उव(य)सींघ सेखाउतको			७९७	२७३		
	२७१ गीत दीपसिंघजीको			७९८	२७३–२७४		
	२७२ गीत दोलतसींघको			७९९	२७४		
	२७३ गीत सोसींघ सेखाउतको			८००	२७४–२७५		
	२७४ गीत कानसिंघ बलभदोत			८०१	२७५		
	२७५ गीत देवसींघ खगारोतको			८०२	२७५–२७६		
	२७६ गीत अमरसींघ खगारोत			८०३	२७६		
	२७७ गीत गोरधन कल्याणोत			८०४–८०५	२७६		
	२७८ गीत मानसिंघ कल्याणोत			८०६	२७६–२७७		
	२७९ गीत कमा कल्याणोतको			८०७	२७७		
	२८० गीत जैचंद कल्याणोतको			८०८	२७७		
	२८१ गीत फतेसींघ नागाको			५०९	२७७–२७८		
	२८२ गीत जैसींघ नरूको			८१०	२७८		
	२८३ गीत दोनु जैसींघ नरूकाका			८११	२७८		
	२८४ गीत सुजाणसींघ जैग-नाथोतको			८१२	२७८–२७९		
	२८५ गीत साहेबरा भाखरोतको			८१३	२७९		
	२८६ कवित राजसींघ भाखरोतको			८१४–८१५	२७९–२८०		
	२८७ गीत राजसींघ भाखरोतको			८१६	२८०		
	२८८ गीत गुजरीका पेट(बेटा)को नरायणदासजीको बोलतरा बेटो छै जीको गीत छै			८१७	२८०–२८१		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२८९ कवित् जैतसींघ मानसींघउत (बाफाउत)को			८१८	२८१		
	२९० दुहो बाफाउतको			१*	२८१		*यह दोहेकी सख्या है।
	२९१ गीत सपुतको			८१९	२८१–२८२		
	२९२ गीत कपुतको			८२०	२८२–२८३		
	२९३ गीत वेसरै मानसींघोताको			८२१	२८३		
	२९४ दुहा सवाई जैसींघजीको			१०	२८३		*यह दोहेकी सख्या है।
	२९५ गीत खगार कछावाको। खगारो ताको बडो सारा सु			८२२	२८३		
	२९६ कवित नाथाउत कछवावाको			८२३	२८३–२८४		
	२९७ गीत जग गोडो राजा विठलदास गोडको			८२४–८२७	२८४–२८५		
	२९८ गीत राजा अनाव (आनां?)को			८२९	२८५–२८६		गीतग. ८२८ नहीं है।
	२९९ कवित राजा वीठलको डूगरसी वाभडीका कहूपा			८३०–८३२	२८६		
	३०० गीत राजा अनरव गोडको			८३३	२८६–२८७		
	३०१ कवित् सावभडो			८३४–८३५	२८७		
	३०२ गीत राजा नरत(ग)को			८३६–८३९	२८७–२८८		
	३०३ गीत जाति हुसमग			८४०	२८९		
	३०४ गीत अरट गोडको			८४१	२८९		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	३०५ गीत अरजन गोडको			८४२–८६०	२८९–२९६		
	३०६ गीत सुभराम गोडको			८६१–८६४	२९६–२९८		
	३०७ गीत राजा मनोरदासजीको			८६६	२९८–२९९		गीतस ८६५ नहीं है।
	३०८ गीत राजा उतमरामजीको			८६७	२९९		
	३०९ गीत वीरभद्र गोडको			८६८	२९९		
	३१० गीत अरजन वीरभद्रको			८६९	२९९–३००		
	३११ गीत जोरावरसीघजी माहाराजा छीत्रसींघजीका नावजीको			८७०	३००		
	३१२ गीत उद(य)भाण हरभाण गोडको			९७१–९७२	३००–३०१		
	३१३ गीत सगता गोडको			९७३	३०१		
	३१४ दुहो रासा(णा)सागा उतमराव रतनको कह्यो			१*	३०२		*यह दोहेकी संख्या है।
	३१५ गीत थानसींघ सागाउतको			८७४–८७५	३०२–३०३		
	३१६ गीत कसनसींघ गोडको			८७६–८७७	३०३		
	३१७ गीत वलाझालाको			८७८–८७९	३०३–३०४		
	३१८ गीत राज कीरतसींघजी सादडे(डी)का ठाकराको			८८०	३०४		
	३१९ गीत नायजी झालोताणाको ठाकुरको			८८१	३०४–३०५		
	३२० फुटल्या जातेत झालाका			८८२–८८९	३०५–३०६		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसङ्ख्या	लिपिकाल	विशेष
३२१	दूहो माधोसींघ झालाको			*१	३०६		*यह दोहेकी सख्या है।
३२२	दूहो मदनसींघ झालाको			१–८९०	३०६–३०७		८९० कवित् स है।
३२३	कवित हुमतेसिंघ झालो			८९१	३०७		
३२४	मत्र हेमतसींघ झाला उपर			८९२	३०७		
३२५	गीत जालमसींघ झालाको			८९३	३०७–३०८		
३२६	दूहो पुवाराको			*१,८९४	३०८		*१ सख्या दोहेकी है।
३२७	गीत सावुल(सार्वुल) पुवांरको			८९५	३०८		
३२८	गीत रावत मयण उमटको			८९६	३०९		
३२९	गीत परसरांम उमटको			८९७	३०९–३१०		कवित्तसख्या के अतिरिक्त ४ दोहे और हैं।
३३०	दूहो मानधाता पुवार वीजोल्यांका ठाकुरको			*१	३१०		*यह सख्या दोहे की है।
३३१	गीत नगा ग्वातीको			८९८–८९९	३१०–३११		
३३२	गीत नारग वेसतीको			९००	३११		
३३३	गीत रजपुताका गाढको			९०१–९०४	३११–३१३		
३३४	गीत अनोपसींघ कछवायो			९०५	३१३		
३३५	गीत माधोसींघ कछवायो अजयगढ भानगढका ठाकुरको			९०६	३१३–३१४		
३३६	गीत गोवरधन माधाणीको कछवायो			९०७	३१४		
३३७	गीत कमा माधाणी कछवायो			९०८	३१४		
३३८	कवित् मधाई जसींगको			९०९	३१४–३१५		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
३३९	कवित् सताराका राजाका			९१०–९१९	३१५–३१७		
३४०	कवित् हरदसाह बुंदेलाका			९२०–९२१	३१७–३१८		
३४१	कवित् आतमाराम रूघनाथ-सींघ गोड भाखरोत			९२२–९२३	३१८		
३४२	कवित् तरवरसाह भाटको			९२४–९२५	३१८–३१९		
३४३	कवित् घरती चकवहुवाको			९२६–९२७	३१९		
३४४	कवित् रूपगाकी खोडको			९२८	३१९–३२०		
३४५	कवित् प्रसताई देवीदासका कह्या			९२९–९३६	३२०–३२२		
३४६	कवित् कुडळया गिरघरका कह्या			९३७–९६६	३२२–३२९		
				इसके पश्चात् स्फुटपत्र हैं, उन्हीं पर क्रमशः पत्र-संख्या दी हुई है। अतः गीत संख्या क्रमश नहीं है			
३४७	गीत अमरसींघजी खातोली का ठाकुरको			३३०			
३४८	गीत महाराजा भगतरामजी को दूसर। भव्यारीदास वागडीको कह्यो			३३०			
३४९	कवित पटवरसणका भाव-परी छप्पं			३३०			पत्र ३३१ से ३३४ तक स्फुट कवित्त दोहे हैं।
३५०	गीत ठोडो अठताळो सवा-सोको			३३५			

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	३५१ गीत सावभड़ो			३३६			
	३५२ गीत ज त अठतालो			३३८			
	३५३ गीत पदमसींघजी रहणावन को ठाकुरज्याको ठुकराण्या मुयरामें काम श्रायो ज्याको			३४०			
	३५४ गीत देवो वागाको			३४४			
	३५५ नशाणी राव साडाको			३४४			
१८४	उम्मेदचरित्र	वंशभास्करगत	हिन्दी	इतिहास	४–११९	२०वीं श.	अपूर्ण
१८५	गीतासार		"	वेदान्त	१०	"	
१८६	सवनकँवाररी कथा		राजस्थानी	कथा	३०	"	अपूर्ण, कीटविद्ध
१८७	(क) वैराग्यशतक	भर्तृहरि	संस्कृत	काव्य	८–१२	१८००	
	(ख) पोथी साठसम्वत्सररी		हिन्दी	ज्योतिष	१–३३	"	
	(ग) गोकुल नायामल्ल श्रपाडाके युद्ध		"	काव्य	१–६	"	
	(घ) शाहजहांका चारोंशहजादोंकी कथा (पद्यबद्ध)		"	"	१–७	"	
	(च) कुतुवरात		"	"	३६	"	अपूर्ण
१८८	परिचय अष्टाङ्ग		"	योग	३–८०	२०वीं श	कीटविद्ध, अपूर्ण
१८९	भावाविलास		"	छन्द शास्त्र	६	"	अपूर्ण
१९०	(क) कविकुलकण्ठाभरण		"	रसालङ्कार	४१	"	"
	(ग) काव्यकौमुदी	संग्रामसिंह	"	"	१–१३	"	
	(ग) सवग्ररो वमानोर गीत लक्षण		"	छन्द शास्त्र	३	"	"

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसख्या	लिपिकाल	विशेष
	(घ) भाषाभूषण	जसवन्तसिंह	हिन्दी	रसालकार	१०	२०वीं श	अपूर्ण
१९१	परमलोकपत्रिका		,,	वेदान्त	१०	१९०५	
१९२	यश प्रकाश	कविजुहार	,,	काव्य	१२	२०वीं श	
१९३	विदग्धमुखमण्डन (तृतीयपरिच्छेदान्त)	धर्मदास	सस्कृत	रसालकार	१०	,,	
१९४	वीरसप्तशती	सूर्यमल्ल	हिन्दी	काव्य	१९	,,	जीर्णशीर्ण, अपूर्ण
१९५	महाकालभैरवकवच	गन्धर्वतन्त्रोक्त	सस्कृत	तन्त्र	३	,,	
१९६	भैरवकवच (त्रैलोक्यमङ्गलनामक)	रुद्रयामलोक्त	,,	,,	३	,,	
१९७	सुमुखीसहस्रनाम	रुद्रयामलगत	,,	,,	१२	१८९१	
१९८	अर्गलाकीलकस्तोत्र	सप्तशतीगत	,,	,,	४	२०वीं श.	
१९९	सुमुखीपटल (हनूमद्विषयक)	रुद्रयामलगत	,,	,,	१०	१८६०	
२००	गणेशकवच		,,	,,	३	१८६५	
२०१	क्षेत्रपालमन्त्र		,,	मन्त्रशास्त्र	३	१९वीं श	
२०२	अमृतसञ्जीवनीकल्प		,,	तन्त्र	८	,,	
२०३	बालापूजनपद्धति		,,	मन्त्रशास्त्र	१४	,,	अन्तिमपत्र अप्राप्त
२०४	उड्डीशतन्त्र		,,	तन्त्र	८	,,	अपूर्ण
२०५	गर्गसहितागिरिराजखण्डटीका	नाथूराम गुजराती	हिन्दी	पुराण	३३	२०वीं श	
२०६	इन्द्रगढेन्द्रमहाराजसग्रामसिंहविरचितग्रन्थोंकी सूची आदि		,,	प्रकीर्ण	२९	,,	

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी

****

प्रकाशित ग्रन्थ

१-संस्कृत ग्रन्थ

१ प्रमाणमंजरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, सम्पादक—मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिराम-शास्त्री, विद्यासागर। मूल्य-६.००

२ यन्त्रराजरचना, महाराजा-सवाई-जयसिंह-कारित। सम्पादक—स्व० पं० केदारनाथ, ज्योतिर्वित्। मूल्य-१.७५

३, महर्षिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदन ओझाप्रणीत, सम्पादक—म०म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी। मूल्य-१०.७५

४, तर्कसंग्रह, अन्नंभट्ट, सम्पादक—डा० जितेन्द्र जेटली, एम. ए., पी-एच. डी., मूल्य-३.००

५. कारकसंबंधोद्योत, पं० रभसनन्दी, सम्पादक—डॉ हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी., मूल्य-१.७५

६. वृत्तिदीपिका, मौनिकृष्ण-भट्ट, सम्पादक—पं० पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य। मूल्य-२.००

७ शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञात कर्तृक, सम्पादक—डॉ हरिप्रसादशास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी.। मूल्य-२.००

८. कृष्णगीति, कवि सोमनाथ, सम्पादिका—डा॰ प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य-१.७५

९ नृत्तसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका—डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य-१.७५

१०. शृङ्गारहारावली, श्री हर्ष-कवि-रचित, सम्पादिका—डा॰ प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य-२.७५

११. राजविनोद महाकाव्य, महाकवि-उदयराज, सम्पादक—पं. श्री गोपालनारायण बहुरा एम. ए., उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य-२.२५

१२, चक्रपाणिविजयमहाकाव्य, भट्ट लक्ष्मीधर विरचित, सम्पादक—केशवराम काशीराम शास्त्री। मूल्य-३.५०

१३ नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्ण रचित, सम्पादक—प्रो. रसिकलाल छोटालाल पारीख, तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य-३.७५

१४ उक्तिरत्नाकर, साधुसुन्दर-गणी-विरचित, सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य श्री जिनविजय मुनि। सम्मान्य सचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य-४.७५

१५ दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदीकृत, सम्पादक—पं० गङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य। मूल्य-४.२५

महाकवि भोलानाथ विरचित, सम्पादक—प० श्री गोपालन...
एम ए , उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । इसी अपर कृति 'श्रीकृष्णलीलामृत' सहित ।
मू०

१७ ईश्वरविलास—महाकाव्य, कविकलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट विरचित, सम्पादक—श्री मथुरा... शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर । मूल्य—११ ५

१८ रसदीर्घिका, कवि विद्याराम प्रणीत, सम्पादक—प०श्री गोपालनारायण बहुरा, उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य—२.००

१९ पद्यमुक्तावली, कविकलानिधि कृष्ण भट्ट, सम्पादक—प० मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य । मूल्य—४.००

२०. काव्यप्रकाशसकेत, सोमेश्वर भट्ट कृत, सम्पादक—श्री रसिकलाल छो० परीख
भाग १ मूल्य—१२ ००

२१ " " " भाग २ मूल्य— ८ २५

२२ वस्तुरत्नकोश, अज्ञात कर्तृक, सम्पादिका—डॉ प्रियबाला शाह । मूल्य—४ ००

२—राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ

२३ कान्हडदे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ रचित, सम्पादक—प्रो के बी व्यास, एम. ए. ।
मूल्य—१२.२५

२४ क्यामखां रासा, कविवर जान रचित, सम्पादक—डॉ दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द भवरलाल नाहटा । मूल्य—४.७५

२५ लावारासा, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पादक—श्री महतावचन्द खारैड ।
मूल्य—३ ७५

२६. वांकीदासरी ख्यात, कविवर वांकीदास, सम्पादक—श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम ए. ।
मूल्य—५ ५०

२७ राजस्थानी साहित्यसग्रह, भाग १, सम्पादक—श्री नरोत्तमदास स्वामी एम ए । मूल्य—२ २५

२८ कवीन्द्रकल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचित, सम्पादक—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत । मूल्य—२.००

२९ जुगलविलास, महाराजा पृथ्वीसिंह कृत, सम्पादिका—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत । मूल्य—१.७५

३० भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारण कृत, सम्पादक—उदैराजजी उज्ज्वल मूल्य—१ ७५

३१ राजस्थान पुरातत्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थो की सूची—भाग १ मूल्य—७.५०

३२ " " " " भाग २ मूल्य—१२.००

३३ मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुहता नैणसी कृत, सम्पादक—श्री बदरीप्रसाद साकरिया ।
मूल्य—८ ५०

३४ रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढा कृत, सम्पादक—श्री सीताराम लाळस मूल्य—८ २५

३५ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोकी सूची, भाग १, सम्पादक—श्री मुनि जिनविजयजी ।
मूल्य—४ ५०

३६. वीरवाण, ढाढी बादर कृत, सम्पादिका—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूडावत ।
मूल्य—४ ५०

प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत ग्रंथ

	शकुनप्रदीप, लावण्य शर्मा रचित	सम्पादक—मुनि श्री जिनविजयजी
२	त्रिपुरा भारती लघुस्तव, धर्माचार्य प्रणीत	,, ,, ,,
३	करुणामृतप्रपा, ठक्कुर सोमेश्वर-विनिर्मित	,, ,, ,,
४	बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंह विरचित	,, ,, ,,
५	पदार्थरत्नमंजूषा, पं० कृष्ण मिश्र रचित	,, ,, ,,
६	वसन्तविलास फागु, अज्ञात कर्तृक	,, एम. सी. मोदी
७.	नन्दोपाख्यान, अज्ञात कर्तृक	,, ,, बी. जे. सांडेसरा
८	चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमि विरचित	,, श्री बी डी. दोशी
९	वृत्तजातिसमुच्चय, कवि विरहाङ्क विनिर्मित	,, ,, एच डी. वेलणकर
१०	कविदर्पण, अज्ञात कर्तृक	,, ,, ,,
११	स्वयम्भूछन्द, कवि स्वयम्भू विनिर्मित	,, ,, ,,
१२	प्राकृतानन्द, रघुनाथ कवि रचित	,, मुनि श्री जिनविजयजी
१३	कविकौस्तुभ, पं० रघुनाथ विरचित	,, श्री एम एन गोरे
१४.	दशकण्ठवधम्, पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी	,, ,, गङ्गाधर द्विवेदी
१५	नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुंभा प्रणीत	,, डॉ प्रियबाला शाह
१६	भुवनेश्वरी स्तोत्र (सभाष्य), पृथ्वीधराचार्य रचित	,, श्री गोपालनारायण बहुरा
१७	इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध	,, डॉ दशरथ शर्मा

२–राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ

१८	मुहता नैणसी री ख्यात, भाग २, नैणसी मुहता	सम्पादक–श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१९	गोरा बादल पदमिणी चउपई, कवि हेमरतन विनिर्मित	सम्पादक–श्री उदयसिंह भटनागर
२०	राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज मूल लेखक श्री आर. एम. भण्डारकर	अनुवादक–श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी।
२१	राठोडारी वंशावली	सम्पादक–मुनि श्री जिनविजयजी
२२	सचित्र राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रन्थ-सूची	,, ,, ,,
२३	मीरां बृहत् पदावली	,, विद्याभूषण स्व. पुरोहित हरिनारायणजी द्वारा संकलित
२४	राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २ (देवजी बगडावत और प्रतापसिंह वार्ता आदि)	सम्पादक श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
२५	पुरोहित बगसीराम हीरां और अन्य वार्ताएं	,, श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी

इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी भाषाके ग्रंथोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।

'राजस्थान पुरातत्त्व' नामसे एक शोध-पत्र (जर्नल) निकालने की योजना भी विचाराधीन है।